❀ ओ३म् ❀

क़ुरआन

अनुवादक—

श्री प्रेमशरण जी, प्रणत,

आर्य प्रचारक.

* ओम *

कुरआन

[मूल और भाषानुवाद]

[जिसमें अअ्राफ, अन्फाऽल , तौबा, यूनस, हूद, यूसुफ, रअ्द और इब्राहीम ८ सूरतें हैं]

—:०:—

अनुवादक तथा सम्पादक—

मुहम्मद मीमांसा—मुहम्मद साहब का विचित्र जीवन, देवदूत दर्पण (जब्त) आदि अनेक पुस्तकों के लेखक, कुल्लियात आर्य मुसाफिर के हिन्दी अनुवादक—

श्री प्रेमशरण जी प्रणत,

आर्य-प्रचारक।

—:०:—

प्रथम संस्करण मू० १)

Publishers:—
The Manager
Prem Pustakalaya Agra.

द्रष्टव्य ।

.कुर्आन् का यह अनुवाद
श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती के
आदेशानुसार माननीय महात्मा गान्धी के विचारों से प्रेरित होकर हिन्दू जनता को .कुर्आन की शिक्षा का परिचय कराने मात्र के उद्देश्य से तय्यार किया गया है।

Printer:—
J. S. Printing Press
Agra.

समर्पण

पतितोद्धार प्रेमी, शुद्धि और संगठन के सहायक
और हिन्दू जाति के सच्चे हितैषी, दानवीर
श्री सेठ जुगलकिशोरजी बिडला
के कर कमलों मे यह पुस्तक सादर
समर्पित की जाती है। आशा है
कि वह इस भेट को
अवश्य स्वीकार
करेंगे।

प्रेमशरण आर्य,

नम्र निवेदन।

.कुर्आन् का चतुर्थ खण्ड अपने सहृदय पाठकों के सन्मुख प्रस्तुत करते हुए, बिलम्ब के लिये क्षमा प्रार्थी होना अति आवश्यकीय प्रतीत होता है। और इसीलिये कुछ शब्द नम्र निवेदन के रूप में यहां प्रस्तुत किये जाते हैं, जिससे हमारी बिलम्ब विषयक विवशता पाठकों पर विदित होजावे।

.कुर्आन का सारा अनुवाद एक साथ छप जाता, परन्तु धन के अभाव से ऐसा नहीं हो सका और आगरे के जिस प्रेस को .कुर्आन के लिये पेशगी रुपया दिया था वह अभी तक न रुपये वापिस करता है और न पुस्तक ही छापता है। इसके अतिरिक्त "देवदूत दर्पण" पुस्तक के जब्त हो जाने से भी भारी क्षति उठानी पड़ी; अन्यथा वह पुस्तक इतनी अच्छी थी कि उसकी अभी तक मांग बनी हुई है। सच पूछो तो "देवदूत दर्पण" विचित्र जीवन से भी प्रमाण पूर्ण पुस्तक थी, क्योंकि विचित्र जीवन में तो केवल मुहम्मद साहब का आलोचनात्मक जीवन दिखाया गया था परन्तु देवदूत दर्पण में ईसाई और मुसलमानों के सभी मान्य पैग़म्बरों की कलई खोलकर रखदी गई थी और वह भी ऐसे सभ्य और प्रमाणिक ढंग से कि यदि धन होता और हमारी ओर से तनिक भी उद्योग किया जाता तो इसकी जब्ती रद्द हो सकती थी। वह तो दूर अबभी धन के अभाव से हमारे पास बहुतसा उपयोगी साहित्य रुका हुआ है। वह शनैः शनैः अपने प्रेमियों की कृपा और सहायता से ही प्रकाशित किया जा सकता है। आशा है हमारे आर्य साहित्यप्रेमी उदार सज्जन इस ओर ध्यान देने की कृपा करेंगे।

विनीत–प्रेमशरण आर्य्य,

अनुवादक।

* ओम् *

सूरतुऽल अअ़राफ़+

वलउ अन्नना-पारा, शेषांश ।

[मं० २ पारा ८, रु० १ । १०]

(१) [अलिफ लाऽम्मीऽम् स्वाद]

नोट—इन अक्षरों के अर्थों के सम्बन्ध में मननशील मुसल्मानों की सम्मति है कि इनका अर्थ केवल अल्लाह ही जानता है। फिर भी, कुछ मनुष्यों की कल्पना है कि अलिफ अल्लाह के लिये, लाम जिब्राईल के लिये और मीम मुहम्मद के लिये आते हैं * और कुछ लोग इन अक्षरों को इस अर्बी वाक्य के आदि अक्षर बतलाते हैं—"अमरा लि मुहम्मद मर्द कु" जिसका अर्थ है, "इस प्रकार सच्चे मुहम्मद ने मुझ से कहा।"

+अअ़राफ का अर्थ है, बहिश्त और दोज़ख के मध्य की भेदक भित्ति। मुहम्मद साहब की पैग़म्बरी की सातवीं साल से उनकी हिजरत के समय तक याने सन् ६१९ ई० से ६२२ ई० तक के दर्मियान में यह आयत मक्के में उतरी है इसमें २४ रुकूअ़ और २०५ आयतें हैं।

* तफ़सीर इत्तिक़ान 'अहमदी' प्रेस से प्रकाशित के पृ० ४४६ पंक्ति २ में जलालुद्दीन सेवती लिखते हैं—"सूरये अअ़राफ पा० ८, रु० ८ का प्रारम्भ वर्तमान कुरआन में 'अलिफ लाऽम्मीऽम् स्वाद' से होता है। यह वाक्य में केवल अलिफ लाऽम्मीऽम् तीन अक्षर थे उसमें एक अक्षर 'स्वाद' इस लिये बढ़ा दिया गया है कि इसमें नबियों के किस्सों का वर्णन है।

(२) किताबुन् उन्ज़िला इलय्का फ़लाऽ यकुन् फ़ी सद्रिका हर्जुम्मिन्हु लि तुन्ज़िरा बिही व ज़िक्रा लिल्-मुअ्मिनीन् ॥

(हे पैग़म्बर ! यह) पुस्तक तुझ पर उतारी गई है । अतः इससे तेरा हृदय संकुचित न हो, जिस से कि तू इसके द्वारा (काफ़िरों को अल्ला के आतङ्क की) सूचना दे; और विश्वासियों (ईमान वालों) को शिक्षा मिले ।

(३) इत्तबिऊऽ माऽउन्ज़िला इलय्कुम्मिर्रब्बिकुम् व लाऽ तत्तबिऊऽ मिन्दूनिहीऽ अउलियाऽआ, क़लीलऽ-म्माऽ तज़क्करून् ॥

जो तुम पर तुम्हारे पालनकर्त्ता की ओर से उतरा है, उसी पर चलो; और उसके अतिरिक्त अन्य मित्रों के पीछे मत चलो; परन्तु तुम कुछ कम ध्यान देते हो !

(४) व कम्मिन् क़र्यतिन् अह्लक्नाहाऽ फ़ जाऽअहाऽ बअ्सुनाऽ बयाऽतऽन् अउ्हुम् क़ाऽइलून् ॥

और, हमने कितने (ही) नगरों का नष्ट कर दिया ! फिर रात को या दोपहर को, जब कि वे (नगर-निवासी) निद्रा में निमग्न थे, उन पर हमारा प्रकोप पहुंचा ।

(५) फ़ माऽकाऽना दअ्वाहुम् इज् जाऽअहुम् बअ्सुनाऽ इल्लाऽ अन् क़ाऽलूऽ इन्नाऽ कुन्नाऽ ज़ालिमीन् ॥

बस, जिस समय, उन पर हमारा प्रकोप पहुंचा तो उनका यही एक आर्त्तनाद था, कि वे बोल उठे, "वस्तुतः हम हो अत्याचारी हैं।"

(६) फ़ लनस् अलन्नऽल्लज़ीना उर्सिला इलय्हिम् व लनस् अलन्नऽल् मुर्सलीन् ॥

फिर जिन लोगों को ओर पैग़म्बर प्रेषित किये गये थे, उनसे हम (क़यामत के दिन) अवश्य प्रश्न करेंगे; और स्वयं पैग़म्बरों से भी अवश्य पूछेंगे।

(७) फ़ लनकुस्सन्ना अलय्हिम् बिइ़ल्मिऽव माऽ कुन्नाऽ ग़ाइबीन् ॥

फिर, हम उनको अपने ज्ञान से वृत्तान्त सुनावेंगे; और हम कहीं उनसे अनुपस्थित न थे।

(८) वऽल् वज़्नु यउ्मा इज़ि (नि) ऽल् .हक्कु, फ़मन् स.कुलता मवाऽज़ीनुहू फ़ उलाइका हुमुऽल् मुफ़्लहू.न् ॥

और (कर्मों की) तोल, उस दिन, ठीक-न्यायतः-होगी! फिर जिनके (शुभ) कर्मों का बोझ भारी होगा, वही लोग नेक होंगे।

(९) व मन् ख़.फ़्फ़त् मवाऽज़ीनुहू फ़ उलाइकऽ-ल्लज़ीना ख़सिरूउ अन्फुसहुम् बिमा काऽनू बि आयातिना यज़्लिमून् ॥

और, जो तोल में हलके हैं, उन्हों ने अपने जीवन (व्यर्थ) नष्ट किये; क्योंकि उन्हों ने हमारी आयतों पर अत्याचार किया।

(१०) व लक़द् मकन्नाकुम् फ़िऽल् अर्ज़ि व जअ़ल्नाऽ लकुम् फ़ीहाऽ मआ़ऽयिशा, क़लीलऽम्माऽ तश्कुरून् ॥

और, हमने तुमको पृथिवी में स्थान दिया; और उसी में तुम्हारी जीविका स्थापित करदी; फिर भी तुम बहुत ही कम धन्यवाद देते हो !

[मंजिल २, पारा ८, रुकूअ़ २ । १५]

(१) व लक़द् ख़लक़्नाकुम् सुम्मा सव्वर्नाकुम् सुम्मा क़ुल्नाऽ लिल्मलाइकतिऽस्जुदूऽ लि आदमा फ़ सजदू३ इल्ला३ इब्लीस; लम् यकुम्मिन-स्साजिदीन् ॥

और, हमने तुम्हें पैदा किया; फिर सूरत दी; फिर फ़रिश्तों से कहा, "आदम के आगे सिर झुकाओ"—तो सिवाय शैतान के—जो प्रणाम करने वालों में नहीं था—सबने (श्रद्धा-से) शिर झुकाया ।

(२) क़ाऽला माऽ मनअ़का अल्ला तस्जुदा इज़् अमर्तुका क़ाऽला अना ख़ैरुम्मिन्हु ख़लक़्तनी मिन्नाऽरिंव ख़लक़्तहू मिन्तीन् ॥

(उसने) कहा—"तुझ को क्या प्रतिबन्ध था कि जब

मैंने आज्ञा दी,(तूने) सिजदा न किया,अर्थात् सिर न झुकाया ? वह बोला—"मैं इससे श्रेष्ठ हूँ; मुझ को तूने अग्नि से रचा है; और उसको मिट्टी से बनाया है।"

(३) क़ाऽला फ़ऽह् बित् मिन्हा फ़माऽ यकूनु लका अन्ततकब्बरा फ़ीहा फ़ऽख़्रुज् इन्नका मिन-स्साग़िरीन् ॥

(अल्ला ने) कहा—"तू उतर यहां से, तुझ को (ऐसा अवसर) न मिलेगा कि तू यहां अभिमान करे। अतः निकल; तू पामर है।"

(४) क़ाऽला अन्ज़िर्नी३ इला यउमि युब्अस़ून ॥

(उसने) कहा—"मुझे (उस समय तक) अवसर दे (जब-तक) कि लोग (क़यामत में) जी उठें।"

(५) क़ाऽला इन्नका मिनऽल् मुन्ज़रीन् ॥

(अल्लाह ने) आज्ञा दी—"तुझ को छुट्टी है।"

[६] क़ाऽला फ़ बिमा३ अग़्वय्तनी ल अक़्उदन्ना लहुम् सिराऽतकऽल् मुस्तक़ीम् ॥

उसने कहा—"फिर जैसे तूने मुझे कुमार्गी बनाया है (वैसे ही उन्हें कुमार्गी बनाने के लिए) मैं उनकी प्रतीक्षा में तेरे सीधे मार्ग पर बैठूंगा।"

[७] सुम्मा ल आतियन्नहुम्मिन् ँ बय्नि अय्दीहिम् व मिन् ख़ल्फ़िहिम् व अन् अय्मानिहिम् व अन् शमा३ इ लिहिम् ; वलाऽ तजिदु अक्सर हुम् शाकिरीन् ॥

फिर उन पर आगे से और पीछे से और दाहिने से और बांये से आऊँगा; और तुझे उन में से प्रायः कोई कृतज्ञ न मिलेगा ।

[८] क़ाऽलऽख़्रुज् मिन्हाऽ मज़्ऊमऽम्मद्हू.रऽन्, लमन् तबिअ़का मिन्हुम् ल अम्लअन्ना जहन्नमा मिन्कुम् अज्मई.न् ॥

(अल्लाह ने) कहा—"निकल यहां से, धूर्त ! दूर भाग !! उन में जो कोई तेरे अनुयायी होंगे, मैं (उन्हें और) तुम्हें, सब को, एकत्रित करके दोज़ख़ को भरूंगा ।

[९] व या ३ आदमुऽस्कुन् अन्ता व ज़ऊ्जुकल्ऽ जन्नता फ़कुलाऽ मिन् .हय्सु शिअ्तुमाऽ वला ऽ तक़्बाऽ हाज़िहि-श्शजरता फ़ तकूनाऽ मिन-ज़्ज़ालिमीन् ॥

और, हे आदम ! तू और तेरी स्त्री (दोनों) इस बहिश्त में बसो; और दोनों जहां से चाहो, खाओ । एवं उस वृक्ष के के पास न जाओ; अन्यथा तुम पापी हो जाओगे ।

[१०] फ़ वस्वसा लहुमऽ-श्शय्त्.ानु लि युब्दिया लहुमाऽ माऽवूरिया अ़न्हुमाऽ मिन्सउ् आतिहिमाऽ व क़ाऽला माऽ नहाकुमाऽ रब्बुकुमाऽ अन् हाज़िहि-श्शजरति इल्ला३ अन्तकूनाऽ मलकयूनि अउ्तकूना मिनऽल् ख़ालिदीन् ॥

फिर उनको शैतान ने बहका दिया; और जो (अंग उनका) गुप्त था, उन पर प्रगट कर दिया; और कहा—"तुम्हारे पालन-कर्त्ता ने इस वृक्षके (ऊपर से) खाने को इसलिए वर्जित किया है कि ऐसा न हो कि तुम फ़रिश्ते बन जाओ अथवा अमर हो जाओ।

[११] व क़ाऽ सम हुमा२ इन्नी लकुमाऽ लमिन-—नासि.हीन्— ॥

और उनके सामने शपथ खाकर कहा कि मैं तुम्हारा शुभ-चिन्तक हूँ।

[१२] फ़दल्लाहुमाऽ वि गुरूरिन् फ़लम्माऽ ज़ाऽक़ऽ—श्शजरता बदत् लहुमाऽ सउ्आतु हुमा व त.फ़िक़ाऽ यख़्सिफ़ानि अलयहिमा मिन्वरक़िऽल् जन्नति, व नाऽदा-हुमाऽ रब्बु हुमा२ अलम् अन्हकुमाऽ अ़न्तिल् कुमऽ—श्शजरति व अक़ुल्लकुमा२ इन्न-श्शय्त.ना लकुमाऽ अ़दुव्वुम्मुबीन्।

फिर उनका अपने फ़रेब में फांस लिया; और जब उन दोनों ने उस वृक्ष से खाया; तो उन दोनों को अपने गुप्त स्थल (नग्न) दिखायी दिये। और, बहिश्त के पत्तों को सीं के अपने आपको छिपाने लगे, और उनके पालनकर्त्ता ने कहा—"(क्या) मैंने तुमसे (खाने के लिये) इस वृक्ष को वर्जित नहीं कर दिया था ?, और तुम्हें कह न दिया था कि शैतान तुम्हारा साक्षात् शत्रु है ?"

[१३] क़ाऽलाऽ रब्बनाऽ ज़लम्नाऽ अन्फ़ुसना, व इल्लम् तग़्.फ़िर्लनाऽ व तर्ह.म्नाऽ लनकूनन्ना मिनऽल् ख़ासिरीन् ॥

वह बोले, "हे हमारे पालकर्त्ता ! हमने अपनी अन्तरात्मा पर अत्याचार किया है और, यदि तू हमको क्षमा न करे और हम पर दया न करे: तो हमारा सर्वनाश हो जायगा।

[१४] क़ाऽलऽह् बितूऽ बअ्.जुकुम् लिबअ्.ज़िन् अ़दुव्वुन्, व लकुम् फ़िऽल् अर्ज़ि मुस्तक़र्रुंव्व मताउ़न् इला,हीन् ॥

कहा—"तुम यहाँ से उतरो, तुम परस्पर-एक एक के शत्रु हो, और तुम को भूमि पर निवास एवं एक विशेष समय तक भोजनार्थ पदार्थ मिलेंगे।"

[१५] क़ाऽला फ़ीहा तह़्.यूना व फ़ीहा तमूतूना व मिन्हा तुख़्.रजून् ॥

कहा—"उसमें तुम जीवित रहोगे; और उसही में तुम मरोगे, एवं उसी से निकाले जाओगे।"

[पारा ८, मं० २, रु० २]

[१] या बनीऽ आदमा क़द् अन्ज़ल्ना अ़लय्.कुम् लिबासऽय्युवारी सउ् आतिकुम् वरीशन्; व लिबासु-

चक्वा ज़ालिका ख़य्रुन् ; ज़ालिका मिन् आयातिऽल्लाहि लअ़ल्लहुम् यज़्ज़क्करून् ॥

हे आदम के वंश ! हमने तुम्हारे लिये वस्त्र उतारे, जिससे कि तुम अपने गुप्त अंगों को ढको और (जिस से) शोभा हो। और (यह स्मरण रक्खो कि) संयम के वस्त्र यह कल्याणकारी है, यह अल्लाह के चिन्ह हैं कि कदाचित् तुम्हें ध्यान हो।

[२] या बनी३ आदमा लाऽ यफ़्तिनन्ना कुमु-श्शाय्तानु कमा३ अख़्रजा अबवय्कुम् मिनऽल् जन्नति यन्ज़िउ अ़न्हुमाऽ लिबाऽस हुमा लियुरिया हुमा सउ्आति हिमा, इन्नहू यराकुम् हुवा व क़बीलुहू मिन् हय्सु लाऽ तरउ्नहुम् ; इन्नाऽ जअ़ल्नऽश्शयातीना अउ्लियाऽ३आ लिल्लज़ीना लाऽ युअ्मिनून् ॥

हे आदम के वशजो ! तुम को शैतान विचलित न करदे, जिस प्रकार कि उसने तुम्हारे माता-पिता (पूर्व पुरुषाओं) को (विचलित करके) बहिश्त से बहिष्कृत कराया, उनके वस्त्र उनसे उतरवाये, जिससे उनके गुप्त स्थल उन को दिखाई देने लगे, जहां से कि तुम उन्हें नहीं देख सकते, वह और उसकी जाति तुमको देखते हैं। हमने उन लोगों के, जो (इस्लाम पर) ईमान नहीं लाते, शैतान साथी नियत किये हैं।

[३] व इज़ाऽ फ़अ़लूऽ फ़ाऽहिशतन् क़ाऽलूऽ वजद्ना

अलय्हाऽ आबाऽअ नाऽवऽल्लाहु अमरना बिहाऽ कुल्
इनऽल्लाह ला ऽ यअ्मुरु बिऽल् फ़ह्शाऽइ अतक़ूलूना
अलऽल्लाहि माऽलाऽ तअ्लमून् ॥

और, जब कुछ निन्द्य (अश्लील) कर्म करें, (तो झट) कह देंगे कि हमने अपने पिता प्रपितामहों को इस प्रकार करते देखा और अल्लाह ने हमको इस (के करने) की आज्ञा दी है। (हे पैग़म्बर!) तुम इन्हें बतलाओ कि अल्लाह अश्लील आचरणों की आज्ञा नहीं देता; अल्लाह पर क्यों (ऐसे) असत्य आक्षेप लगाते हो, जो तुम्हें ज्ञात नहीं ?

[४] क़ुल् अमरा रब्बी बिऽल् क़िस्ति व अक़ीमूऽ
वुजूहकम इ़न्दा कुल्लि मस्जिदि व्वऽद्ऊहु मुख़्लिसीना
लहुद्दीना; कमाऽबदा अकुम् तऊ़दून् ॥

(हे पैग़म्बर! तुम इन्हें) बतला दो, मेरे पालनकर्त्ता ने न्याय (दीन इस्लाम की शिक्षा) की आज्ञा दी है, प्रत्येक नमाज़ के समय अपने मुख सीधे करो और केवल उसी को पुकारो। उसीके आज्ञानुवर्त्ती होकर ही तुम जैसा तुमको पहले बनाया, वैसे बनोगे।

[५] फ़रीक़ऽन् हदा व फ़रीक़ऽन् ,हक़्क़ा अलय्-
हिमु-ज़्ज़लालतु, इन्नहुमुऽत्तख़ज़ुऽ-श्शयातीना अउ्-
लियाऽआ मिन्दूनिऽल्लाहि व यह्सबूना अन्नहुम्मुह्तदून् ॥

एक समुदाय को मार्ग बताया, और दूसरे समुदाय को

मार्ग-च्युत ठहराया, उन्होंने अल्लाह को छोड़ कर शैतानों को सखा स्वीकार किया और [फिर भी] समझते हैं कि [ठीक] मार्ग पर हैं !

[६] या बनी२ आदमा खुज़ूऽ ज़ीनतकुम् इ,न्दा कुल्लि मस्जिदिव्वकुलूऽ वऽश्रबूऽ वलाऽ तुस्रिफ़ूऽ, इन्नहू लाऽ युहिब्बुऽल् मुस्रिफ़ीन् ॥

हे आदम की औलाद ! प्रत्येक नमाज़ के समय (वस्त्रों से) अपनी शोभा सजावट कर लिया करो ❀ और खूब खाओ पीओ, और (व्यर्थ धन) मत उड़ाओ, (क्योंकि) वह (अल्लाह) (व्यर्थ) उड़ाने वालों से प्रसन्न नहीं होता।

(पारा आठवां मं० २, रुकूअ . ४ । ८)

(१)कुल् मन् हर्रमा ज़ीनतऽल्लाहिऽल्लती२ अख़्जा लिइबाऽदिही व-त्त़य्यिबाति मिन-रिज़्क़ि; कुल् हिया

❀ सीरतुरसूल नामक मुहम्मद-चरित्र में कहा है कि अरब वासियों के हृदय में काबा तथा अन्य पवित्र स्थानों को अधिक प्रतिष्ठा पैदा करने के लिए कुरैश लोगों ने जलूस के समय में खाने पीने की मनाही कर दी थी और यह प्रथा प्रचलित कर दी थी कि मक्कावासियों से मांगे हुए कपड़ों के अतिरिक्त यात्रियों को कुछ न पहिनना चाहिये अथवा जो कपड़े वह अपने पहने हों उन्हें पवित्र समझकर अल्ला के अर्पण करदें। यही कारण था कि बहुत से हाजी इन पवित्र स्थानों का, नितान्त नंगे होकर दर्शन करते थे। इस आयत द्वारा यह प्रथा निषिद्ध निश्चित की गई। —सं०

लिल्लज़ीना आमनूऽ फ़िऽल् हयाति-द्दुन्याऽ ख़ालि सतय्यउमऽल् क़ियामति, कज़ालिका नुफ़स्सिलुऽल् आयाति लिक़उमि य्यअ्लमून् ॥

(हे पैग़म्बर! तुम इन लोगों से) पूछो कि अल्ला ने जो (वस्त्र-भोजनादि) सजावट की और खाने की पवित्र वस्तुएँ, अपने भक्तों के लिए, उत्पन्न की हैं, उन्हें किसने निषिद्ध किया? इनको कह दो कि जो लोग सांसारिक जीवन में (इन वस्तुओं पर) विश्वास रखते हैं कि उन्हीं के लिए विशेषतः (यह वस्तुएं) क़यामत के दिन मिलेंगी। जिन लोगों को बोध है, उन्हें हम अपनी आयतें इस प्रकार (स्पष्ट रीति से) बतलाते हैं।

(२) क़ुल् इन्नमाऽ हर्रमा रब्बियऽल् फ़वाऽहिशा माऽ ज़हरा मिन्हाऽ वमाऽ बतना वऽल् इस्मा वऽल् बग़्या बिग़य्रिऽल् हक़्क़ि व अन्तुश्रिकूऽ बिऽल्लाऽ हि माऽलम् युनज़्ज़िल् बिही सुल्तानऽव्व अन्तक़ूलूऽ अलऽल्लाहि माऽलाऽ तअ्लमून् ॥

उन्हें कहो कि मेरे पालनकर्त्ता ने—अश्लील निर्लज्जता पूर्ण कार्य जो प्रगट हों अथवा गुप्त, और पाप और व्यर्थ अत्याचार, और यह (बात) कि अल्ला के साथ किसी और को साझी (शरीक) करो जिसका उसने (कोई) प्रमाण नहीं उतारा, और यह कि अल्ला पर, जो तुम्हें विदित नहीं, ऐसा मिथ्या आक्षेप लगाओ, यह सभी बातें निषिद्ध ठहराई हैं।

(३) व लिकुल्लि उम्मतिन् अजलुन्, फ़इज़ाऽ जाऽअ अजलु हुम् लाऽयस्तअ्ख़िरूना साऽअ्तव्वलाऽ यस्तक़्दिमून् ॥

और, प्रत्येक जाति की एक नियत अवधि है; और फिर जब उनकी अवधि आ पहुंचे तो, न एक घड़ी भर की देर करें और न शीघ्रता।

(४) या बनीऽ आदमा इम्माऽ यअ्तियन्नकुम् रुसुलुम्मिन्कुम् यकुस्सूना अलय्कुम् आयाती फ़मनिऽत्तक़ा व अस्लह़ा फ़लाऽ ख़ऊफ़ुन् अलय्हिम् वलाऽहुम् यह़्ज़नून्॥

हे आदम का औलाद! यदि तुम्हारे पास तुम्हीं में से कोई पैग़म्बर पहुंचे–तुमको मेरी आयतें सुनावें, तो जिसने सन्तोष और सुधार स्वीकार किया, उसे न भय है; और न वह (किसी प्रकार) सताप–संतप्त ही होगा।

(५) वल्लज़ीना कज़्ज़बूऽ बिआयातिना वऽस्तक्-बरूऽ अन्हाऽ उलाऽइका अस्हा.बु-न्नाऽरि, हुम्फ़ी.हा ख़ालिदून् ॥

और, जिन्होंने हमारी आयतें असत्य समभीं; और उनकी ओर से अभिमान किया, वह नारकीय हैं; और सदा वहीं रहेंगे।

(६) फ़मन् अज़्लमु मिम्मनिऽफ़्तरा अलऽल्लाहि कज़िबऽन् अउ् कज़्ज़बा बिआयातिही, उलाऽइका यनाऽ

लुहुम् नसीबुहुम्मिनऽल् किताबि; ह.त्ता२ इज़ाऽ जा३अत्-हुम् रुसुलुनाऽ यतव.फ़्फ़उ्नहुम् क़ाऽलू३ अय्ना माऽ कुन्तुम् तद्ऊ्ना मिन्दूनिऽल्लाहि, क़ाऽलूऽ ज़ल्लूऽ अ़न्नाऽ शहिदूऽ अ़ला३ अन् फ़ुसिहिम् अन्नहुम् काऽनूऽ काफ़िरीन् ॥

फिर उससे अधिक अत्याचारी कौन होगा, जो अल्ला पर असत्य आक्षेप आरोपित करे अथवा अल्लाह के आदेश को असत्य ठहरावे ?-वह लोग, जिनकी प्रारब्ध पुस्तक में (लिखी) है, (उसे तो) प्राप्त करेंगे (ही) यहां तक कि जब हमारे प्रेषित (मृत्यु के दूत) उनके प्राण निकालने को पहुंचेंगे तो (उनसे) पूछेंगे— "वह (प्रतिमा कहां हैं, जिन्हें तुम अल्लाह के अतिरिक्त बुलाते थे ?" वह बतलायँगे—"हम से श्लोप हो गईं," इस प्रकार वह अन्तरात्मा के विरुद्ध स्वयं साक्षी हो गये कि वह काफ़िर थे।

(७) क़ाऽलऽद् ख़ुलूऽ फ़ी२ उममिन् क़द्ख़लत् मिन् क़ब्लि कुम्मिनऽल् जिन्नि वऽल् इन्सि फ़िन्नाऽरि, कुल्लमाऽ दख़लत् उम्मतुल्लअ़नत् उख़्तहाऽ; ह.त्ता२ इज़ाऽऽद्दाऽरकूऽ फ़ीहाऽ जमीअ़ऽन् क़ाऽलत् उख़्राहुम् लिऊलाहुम् रब्बनाऽ हा३उला३इ अज़ल्लुनाऽ फ़ आतिहिम् अ़ज़ाऽबऽन् ज़िअ़्फ़ऽम्मिन-न्नार । क़ाऽला लिकुल्लिन् ज़िअ़्फ़ुव्वला किल्लाऽ तअ़्लमून् ॥

(इस पर अल्ला क़यामत के दिन उनसे) कहेगा कि जिन्न और मनुष्य (आदि) अन्य जातियों के साथ, जो तुम से पूर्व हो चुकी हैं, नर्काग्नि में प्रवेश करो, जहां एक जाति प्रविष्ट हो कर दूसरी जाति को धिक्कारने लगे, यहां तक कि उसमें समस्त जातियां प्रवेश कर चुकें। (फिर) पश्चात् आने वाले पूर्व वालों के सम्बन्ध में कहने लगेंगे—"हे हमारे पालनकर्त्ता! हमको इन्होंने मार्ग भ्रष्ट किया है, अतः तू इनको दोज़खाग्नि का दुःसह दुःख दूना दे ॥" (तब अल्ला) कहेगा-"दोनों को दूना है, परन्तु तुम नहीं जानते।

(८) व क़ाऽलत् ऊलाहुम् लि उख़्राहुम् फ़माऽ काऽनाऽ लकुम् अलय्ना मिन् फ़ज़्लिन् फ़ज़ूकुऽऽल् अज़ाऽबा बिमाऽ कुन्तुम् तक्सिबून् ॥

और पहले आने वाले पश्चात् आने वालों के पश्चात् आने वालों से कहेंगे-"तुमको हमसे क्या उत्कृष्टता प्राप्त हुई? अतः अपनी करनी का फल चखो।"

[मांज़िल १ पा० ८ रु० ५.८]

[१] इन्न ऽल्लज़ीना कज़्ज़बूऽ बि आयातिनाऽ वऽस्तक्बरूऽ अन्हाऽ लाऽ तुफ़त्तहु लहुम् अब्वाऽबु-स्समाऽइ व लाऽ यद्खुलूनऽल् जन्नता ह़त्ता यलिजऽल् जमलु फ़ी सम्मिऽल् ख़ियाऽति; व कज़ालिका नज्ज़िऽल् मुज्रिमीन् ॥

निस्सन्देह, जिन्होंने हमारी आयतें असत्य बतलाईं और उसके समक्ष गर्व किया, उनके लिए आस्मान के द्वार न खुलेंगे; और (वे उस समय तक) बहिश्त में प्रविष्ठ न किये जायँगे; यहाँ तक कि ऊँट सुई के नाके (छिद्र) में प्रवेश करे; और इस प्रकार हम अपराधियों को फल देते हैं।

[२] लहुम्मिन् जहन्नमा मिहाऽदुन्व मिन् फ़उ-क़िहिम् ग़वाऽशिन्; व कज़ालिका नज्ज़ि-ज़्ज़ालिमीन् ॥

उनको दोज़ख़ (नर्काग्नि) की दरियां देंगे और उनको) (अग्नि के) ओढ़ने भी और इस प्रकार हम अत्याचारियों को बदला देते हैं।

[३] वऽल्लज़ीना आमनूऽव अमिलु–स्सालिहाति लाऽ नुकल्लिफु नफ़सऽन् इल्लाऽ वुसअ़हाऽ, उलाऽइका अस्हाबुऽल् जन्नति, हुम् फ़ीहा ख़ालिदून् ॥

हम किसी पर उसकी शक्ति से अधिक भार नहीं डालते; और जिन्होंने (अल्ला और उसके पैग़म्बर मुहम्मद अथवा मुहम्मदी मन्त्रों पर) विश्वास किया और शुभ कर्म किये वह बहिश्त के मनुष्य हैं वह वहीं सदा रहेंगे।

[४] व न ज़अ़्ना माऽ फ़ी सुदूरिहिम्मिन् ग़िल्लन् तज्री मिन्तह्तिहिमुऽल् अन्हारु, व क़ाऽलुऽऽल् हम्दु-लिल्लाहिऽल्लज़ी हदानाऽ लिहाज़ाऽ वमाऽ कुन्नाऽ लिनह्तदिया लउलाऽअन् हदानऽल्लाहु, लक़द् जाऽअत

रुसुलु रब्बिना बिऽल् ,हक़्क़ि; व नूदू३ अन्तिल्कुमुऽल् जन्नतु ऊरिस्तुमूहाऽ बिमाऽ कुन्तुम् तअ्मलून् ॥

और, हम उनके मनों से समस्त द्वेष दूर कर देंगे, उनके पैरों के नीचे नहरें बहेंगी और वह कहेंगे –"अल्लाह को–जिसने हमें यहां पहुंचा दिया है–धन्य है; क्योंकि हम सन्मार्ग ग्रहण न करते, यदि अल्लाह हमें सन्मार्ग न सुझाता। निस्सन्देह, हमारे पालन कर्त्ता के पैग़म्बर हमारे पास सत्य बात लेकर आये थे।" और यह आवाज आई कि यह बहिश्त है, तुम अपने कामों के परिणाम-स्वरूप उसके संरक्षक (नियत) हुए।"

[५-६] व नाऽ दा३ अस्ह,ाबुऽल् जन्नति अस्ह,ाऽब-न्नाऽरि अन् क़द् वजद्नाऽ माऽ वअ्दनाऽ रब्बुना ,हक़्क़ऽन् फ़हल् वजत्तुम्माऽ व अ्दा रब्बुकुम् ,हक़्क़ऽन्; क़ाऽलूऽ नअ्म्, फ़अज़्ज़ना मुअज़्ज़िनुन्ँ बय्नहुम् अन् लअ्न-तुऽल्लाहि अ्लऽज़्ज़ालिमीनऽल्लज़ीना यसुद्दूना अन् सबीलिऽल्लाहि व यब्ग़ून्हाऽ इ,वजऽन्, व हुम् बिऽल् आख़िरति काफ़िरून्।

और, जन्नत वाले दोज़ख वालों को पुकारेंगे-जो हमारे पालनकर्त्ता ने हमसे प्रतिज्ञा की थी, उसे हम यथावत् प्राप्त कर चुके; और तुम भी, जो तुम्हारे पालनकर्त्ता ने तुमसे प्रतिज्ञा की थी, उसे यथावत् प्राप्त कर चुके।" (वे) उत्तर देंगे, "हां"

फिर उनमें से एक, घोषक * ढिंढोरा पीटेगा-"(उन) अत्याचारियों को अल्लाह की (ओर से) धिक्कार है कि जो अल्लाह के के मार्ग से रोकते हैं और उसमें दोष ढूंढते हैं और जो आख़रत (परलोक पर विश्वास नहीं करते।"

(७) व बय्नहुमाऽ हिजाऽबुन्, व अलऽल्-अअ़्राऽफ़ि रिजाऽलु य्यअ़्रिफ़ूना कुल्लऽन् ँ् बिसीमाहुम्, व नाऽ दउ्ऽ अस्हा़ऽबऽल् जन्नति अन्सलामुन् अलयकुम् लम् यद्ख़ुलूहाऽ व हुम् य़्तमऊ़न्॥

और दोनों के मध्य में एक भित्ति * है और उसके सिरे पर मनुष्य है, जो प्रत्येक को (परस्पर) उसके चिन्ह * से पहचानते हैं और बहिश्त (स्वर्ग) वालों को पुकार कर कहेंगे कि तुम्हें सुख शान्ति हो। अभी बहिश्त में प्रविष्ठ नहीं होंगे; यद्यपि वे उसके इच्छुक हैं।

(८) व इज़ाऽ सुरिफ़त् अब्साऽरुहुम् तिल्क़ाऽअ़्आ अस्हा़बि-न्नाऽरि क़ाऽलूऽ रब्बनाऽ लाऽ तज्अ़ल्नाऽ मअ़ऽल् क़ौमि-ज़्ज़ालिमीन् ॥

---

* कुछ इस घोषक अर्थात् ढिंढोरा पीटनेवाले से तात्पर्य इस्राफील फ़रिश्ता बतलाते हैं।—स०

* इस भित्ति का नाम 'अअ़्राफ़' है वहाँ से बहिश्ती और दोज़खी दोनों देख पड़ेंगे।

* बहिश्त वाले अपने चहरों के सफेद रंग से पहचाने जायंगे और दोज़ख़ वाले अपने काले चहरों से। —अनुवादक

और जब उनकी दृष्टि से दोज़ख़ वालों की ओर फिरी तो बोले, "हे हमारे पालनकर्ता! हमको अत्याचारी लोगों के साथ न कर।"

[पारा ८, मं० २, रु० ६।६]

(१) व नाऽदा३ अस्हाबुऽल् अअ़राऽफ़ि रिजाऽलऽ य्यअ़रिफ़ूनहुम् बिसीमाहुम् क़ाऽलूऽ मा३ अग़्ना अ़न्कुम् जम्उ़कुम् वमाऽ कुन्तुम् तस्तक्बिरून् ॥

और अअ़राफ़ अर्थात् भित्ति के सिरे वालों ने उन लोगों को पुकारा जिनको यह चिन्हों से पहचानते हैं। कहा, तुम को एकत्र करना क्या काम आया और जो तुम गर्व करते थे।

(२) अहा३उला३इऽल्लज़ीना अक़्सम्तुम् लाऽ यनाऽलुहुमुऽल्लाहु बिरह्मतिन्; उद्ख़ुलुऽल् जन्नता लाऽ ख़ौफ़ुन् अ़लयकुम् वला३ अन्तुम् तह्ज़नून् ॥

क्या यह वही लोग हैं, जिनके विषय में तुम शपथ खा के कहते थे कि उन पर अल्लाह अपनी अनुग्रह न करेगा। तुम बहिश्त में प्रवेश करो; तुम्हें न भय है और न तुम शोकातुर ही होगे।

(३-४) वनाऽदा३ अस्हाबु-न्नाऽरि अस्हाबऽल् जन्नति अन् अफ़ीज़ूऽ अ़लयनाऽ मिनऽल् मा३इ अउ मिम्माऽ रज़क़कुमुऽल्लाहु; क़ाऽलू३ इन्नऽल्लाहा हर्रमहुमा

अलऽल् काफ़िरीनऽल्लज़ीनऽत्तख़ज़ूऽ दीनहुम् लह्वऽव लइ.बऽव्व ग़र्रत् हुमुऽल् .हयातु-दु न्याऽ फ़ऽल् यउ्मा नन्साहुम् कमाऽ नसूऽ लिक़ाऽआ यउ्मिहिम् हाज़ाऽ वमाऽ काऽनूऽ बिआयातिनाऽ यज्ह.दून् ॥

और दोज़खी बहिश्त-वासियों को कहेंगे कि हम पर स्वल्प जल बहाओ अथवा जो भोजन तुमको अल्लाह ने प्रदान किया है। वह कहेंगे कि अल्लाह ने दोनों द्वार काफ़िरों पर बन्द किये कि जिन्होंने अपना मत हंसी और खेल समझ रक्खा है और (जो,) सांसारिक जीवन पर मुग्ध है अतः आज हम उनको उसी प्रकार भुला देंगे जैसे वह अपने उस दिन का मिलना भूले और जैसे वह हमारी आयतों को अस्वीकार करते थे।

(५) व लक़द् जिअ्नाहुम् बिकिताबिन् फ़स्सल्नाहु अला इ.ल्मिन् हुदऽव्व र.ह्मतल्लिक़उ्मिय्युअ्मिनून् ॥

और हमने उनको पुस्तक पहुंचा दी है जो ज्ञान की विस्तृत विवेचना करती है और विश्वासियों की समुदाय को सन्मार्ग और दया दिखाती है।

(६) हल् यन्ज़ुरूना इल्लाऽ तअ्वीलहू; यउ्मा यअ्ती तअ्वीलुहू यक़ूलुऽल्लज़ीना नसूहु मिन्क़ब्लु क़द्जा-अत् रुसुलु रब्बिनाऽ बिऽल् .हक़्क़ि. फ़हल्लनाऽ मिन्शु-फ़आऽअ फ़यश्फ़अूऽ लनाऽ अउ् नुरद्दु फ़नअ्मला ग़य्रऽ-

ल्लज़ी कुश्राऽ नअ्मलु; क़द् ख़सिरूऽ अन्फ़ुसहुम् वज़ल्ला अन्हुम्माऽ काऽनूऽ य़फ़्तरून् ॥

क्या प्रतीक्षा करते हैं, केवल यही कि इसका स्पष्टीकरण (तावील) हो और जिस दिन इसका स्पष्टीकरण होगा तो जो उसको भूल रहे थे, कहने लगेंगे—"निस्सन्देह, हमारे पालन-के प्रेरित (पैगम्बर) सत्य सन्देश लाये थे। अब क्या कोई हमारा प्रशंसक है कि जो हमारे निमित्त प्रार्थना करे अथवा हम (संसार में) पुनः प्रेषित किये जावें, जिससे हम जो पूर्व करते थे, उसके विपरीत आचरण करें। निस्सन्देह, हमने आत्म हानि की और जिस मिथ्या (मन्तव्य*) को माना था, वह भी उनसे नष्ट हो गया।

[मंज़िल १ पा० ८ रु० ७।५]

(१) इन्ना रब्बकुमुऽल्लाहुऽल्लज़ी ख़लक़—स्समावाति वऽल् अर्ज़ा फ़ी सित्तति अय्याऽमिन् सुम्मऽस्तवा अलऽल् अर्शि युग् शिऽल्लयल्—न्नहाऽरा यत्लुबुहू हसीस्ऽव्व-श्शम्सा वऽल् क़मरा व—न्नुजूमा मुसख़्ख़रातिन् ँ बिअम्रिही अलाऽ लहुऽल् ख़ल्क़ु वऽल् अम्रु; तबारकऽल्लाहु रब्बुऽल् आलमीन् ॥

तुम्हारा पालनकर्त्ता अल्ला है, जिसने धरती और आकाश को छः दिन में रचा, फिर अर्श (अर्श) पर आसीन

* अल्ला के अतिरिक्त अन्य को मानना।

हुआ, जो रात्रि को दिन से ढकता है और सूर्य, चन्द्रमा और तारागण उसकी आज्ञानुकूल आचरण करते हैं। सुनो, (सृष्टि का) सृजन और आज्ञा प्रदान करना उसी का कार्य है। अल्लाह का–जो सम्पूर्ण संसार का स्वामी है–अनेकानेक धन्यवाद हैं।

(२) उद्ऊऽ रब्बकुम् तज़र्रुअऽव्व ख़ुफ़्यतन्; इन्नहू लाऽ युहिब्बुल्-मुअ्तदीन् ॥

अपने पालनकर्ता को घिघिआते हुए (विनयपूर्वक) अप्रकट में (अथवा एकान्त में) आह्वान (आवाहन) करो; क्योंकि उसे अत्याचारी * प्रिय नहीं।

(३) व लाऽ तुफ़्सिदूऽ फ़िऽल्-अर्ज़ि बअ्दा इस्लाऽहिहाऽ वऽद्ऊहु ख़ौफ़ऽव्व तमअ़ऽन्; इन्ना रह्मतऽल्लाहि क़रीबुम्मिनऽल्-मुह्सिनीन् ॥

और पृथिवी में, सुधार होने के उपरान्त उपद्रव उत्पन्न न करो, और उसको आशङ्का तथा आकांक्षा पूर्वक आवाहन करो। निस्सन्देह, अल्लाह का अनुग्रह उपकारियों के उपान्त उपस्थित है।

(४) व हुवऽल्लज़ी युर्सिलु-र्रीहा *बुश्रऽन् बयना

---

*अत्याचारी का तात्पर्य उन लोगों से है जो प्रार्थना के समय परस्पर अशिष्टाचरण करें अथवा कोलाहलकारी स्वर में अथवा व्यर्थ में बार बार कहकर शब्दों की भरमार करदें।

*कुरान की किन्हीं किन्हीं प्रतियों 'बुश्रन्' के स्थान पर 'नुश्रन्' है जिसके अर्थ 'बिछाना, फैलाना' (Spread abroad) होते हैं।

यदय् र.ह्मतिही; .हत्ता३ इज़ा३ अक़ल्लत् स.हाऽबऽन् सिक़ाऽलऽन् सुक़्नाहु लिबलदिम्मय्यितिन् फ़ अन्ज़ल्नाऽ बिहिऽल् मा३आ फ़ अख़्रज्नाऽ बिही मिन् कुल्लि—स्समराति, कज़ालिका नुख़्रिजु‌ऽल् मउ्ता लअ़ल्लकुम् तज़क्करून् ॥

और, वही है जो पवन को पहले ही से अपनी प्रसन्नता का प्रशस्त समाचार देकर अपने अनुग्रह के साथ भेजता है, यहां तक कि वह घहराती हुई घटाओं वाले घन उठा कर (घुमड़ा घुमड़ा कर) मृतक (शुष्क) भूमि की ओर ले जाती हैं और फिर हम उससे वारि वर्षा करते हैं। इसी प्रकार हम (मुसलमानो) प्रलय के दिन मृतकों को उठायेंगे, जिससे तुम शिक्षा ग्रहण करो।

(५) वऽल् बलदु—त़य्यिबु यख़्रुजु नबाऽतुहू बि इज़्नि रब्बिही, वऽल्लज़ी ख़बुसा लाऽ यख़्रुजु इल्लाऽ नकिदऽन् ; कज़ालिका नुसर्रिफ़ुल् आयाति लिक़उ्मि‌य्यश्कुरून् ॥

उर्व्वरा भूमि बनस्पति को अपने पालनकर्त्ता की आज्ञा से उत्पन्न करती है, और जो निकृष्ट है, वह कुछ उत्पन्न नहीं करती। हम अपनी आयतों का अल्पांश—मात्र उलट फेर कर उस जाति के सन्मुख वर्णन करते हैं जो कि धन्यवादी हैं।

[मं० २, पारा ८, रु० ६।८]

(१) लक़द् अर्सल्नाऽ नूह.ऽन् इला क़उ्मिही

फ़क़ाऽला या क़उ्मिऽअ्बुदुऽऽल्लाहा माऽ लकुम्मिन् इला-हिन् ग़यरुहू ; इन्नीऽ अख़ाऽफु अलयकुम् अज़ाऽबा यउ्मिन् अज़ीम् ॥

निस्सन्देह, हम ही ने नूह ❀ को उनकी जाति वालों के पास (पैग़म्बर बना कर) भेजा तो उन्हों ने (लोगों को जाकर) समझाया कि भाइयो ! अल्लाह ही की उपासना करो; उसके अतिरिक्त अन्य (कोई) तुम्हारा उपास्य नहीं। (और यदि तुम मेरी आज्ञा न मानोगे तो) मुझ को तुम्हारे सम्बन्ध में (प्रलय के) बड़े (भारी) प्रकोप का भय है। वह लोग, जो उस की जाति में पैदा हुए थे, कहने लगे कि हमारे निकट तो तुम बिल्कुल भ्रम में पड़े हो।

(२) क़ाऽलऽल्मलउमिन् क़उ्मिहीऽ इन्नाऽल न राका फ़ी ज़लालिम्मुबीन् ॥

उसकी जाति के मुखिया उससे कहने लगे "हम तुझे देखते हैं, तू साक्षात् भ्रान्त है।"

❀ नूह, मुसल्मानों के मतानुसार, उन छः पैगम्बरों में से एक था, जिन्हें इलहाम मिला है। यद्यपि उसने अपने इलहाम को पुस्तक का रूप नहीं दिया। अपने पुरुखा उदरेस के पश्चात् यह प्रथम पैग़म्बर था। अल-जमख़सरी का कथन है कि नूह बढ़ई था क्योंकि उसने नौका निर्माण किया और ५० वर्ष की आयु में पैग़म्बर हुआ। कोई ४० वर्ष की आयु में बतलाते हैं। विशेष विवरण हमारी पुस्तक "देवदूतदर्पण" पढ़ने वालों को विदित होगा। —अनुवादक

(३) क़ाऽला या क़ौमि लयसा बी ज़लालतुव्वला किन्नी रसूलुम्मिर्रब्बिऽल् आलमीन् ॥

वह बोले, "हे जातीय पुरुषो ! मैं किञ्चित् भ्रम में नहीं । परन्तु संसार के स्वामी का भेजा हुआ हूँ ।"

(४) उबल्लिग़ु कुम् रिसालाति रब्बी व अन्सहु लकुम् व अअ़लमु मिनऽल्लाहि माऽलाऽ तअ़लमून् ॥

और अपने पालनकर्त्ता के सन्देश तुम्हें पहुंचाता हूँ और [तुम्हें] उपदेश करता हूँ; और अल्लाह की ओर से [बताई हुई ऐसी २] बातें जानता हूं, जो तुम नहीं जानते ।

(५) अ व अजिब्तुम् अन् जा३अकुम् ज़िक्रुम्मिर्रब्बि-कुम् अ़ला रजुलिम्मिन् कुम् लियुन्ज़िरकुम् वलितत्तक़ूऽ वलअ़ल्लकुम् तुर्हमून् ॥

क्या तुम्हें आश्चर्य है कि तुम्हारे पालनकर्त्ता की ओर से तुम्हीं में से एक मनुष्य ‡ के द्वारा शिक्षा आई है, जिसमे वह तुम्हें भय सुनावे और जिससे तुम संयम से रहो और कदाचित् तुम पर अनुग्रह हो ।

(६) फ़ कज़्ज़बूहु फ़ अन्जय्नाहु वऽल्लज़ीना मअ़हू फ़िऽल् फ़ुल्कि व अग़्रक़्नऽऽल्लज़ीना कज़्ज़बूऽ बि आयातिनाऽ; इन्नहुम् काऽनूऽ क़ौमऽन् अमीन् ॥

---

‡ क्योंकि 'आद' वह लोग कहते थे कि यदि अल्ला की इच्छा होती तो वह मनुष्य न भेजता; प्रत्युत एक फरिश्ता भेज देता । क्योंकि हरु न अपने पुरुषाओं के समय में ऐसा कोई दृष्टान्त नहीं सुना । —बेजावी

तब उन्होंने उसे झूठा बताया, अतः हमने उसको और जो उसके साथ नौका में थे, उनकी रक्षा की; और उन्हें जो हमारी आयतों को असत्य बतलाते थे—डुबो दिया; (क्योंकि) वह मनुष्य थे ही अन्धे।

(पारा आठवां मं० २, रुकूअ' ९ । ८)

(१) व इला आऽदिन् अख़ाहुम् हूदऽन्; क़ाऽला या क़ौमिऽअ्बुदुऽऽल्लाहा माऽ लकुम्मिन् इलाहिन् ग़य्रुहू; अफ़लाऽ तत्तक़ून् ॥

और आद ❀ की ओर उनके भाई हूद† को भेजा। (उसने) कहा, "हे भाइयो! अल्लाह की आराधना करो। उसके अतिरिक्त अन्य कोई तुम्हारा स्वामी नहीं। क्या तुम को भय नहीं?"

(२) क़ाऽलऽल् मलउऽल्लज़ीना कफ़रूऽमिन् क़ौ-मिही३ इन्ना ल नराका फ़ी सफ़ाहतिंव इन्ना ल नज़ुन्नुका मिनऽल् काज़िबीन् ॥

उसकी जाति में—जो अविश्वासी मुखिया थे—बोले, "हमें

❀आद अरब की प्राचीन और बलशाली जाति थी उसका मूर्ति पूजा में महान् विश्वास था।

†हज़रत हूद इसी आदि जाति के सुधार के लिए भेजे हुए पग़म्बर कहे जाते हैं इनका विशेष हाल 'पैग़म्बर प्रकाश' में दिया जायगा।

तो निश्चय पूर्वक देखते हैं कि तुझमें बुद्धि नहीं और हमारे विचार में तू झूठा है।"

(३) क़ाऽला या क़ उ् मि लयसा बी सफ़ाऽहतुञ्वला किन्नी रसूलुम्मिर्रब्बिऽल् आलमीन् ॥

(नूह) बोला—"हे जाति वालो ! मैं कोई निर्बुद्धि नहीं; किन्तु मैं संसार के स्वामी का प्रेरित (पैग़म्बर) हूं।

(४) उबल्लिग़ु कुम् रिसालाति रब्बी व अनाऽ लकुम् नाऽसिहुन् अमीन् ॥

मैं तुम्हें तुम्हारे पालनकर्ता के सन्देश पहुंचाता हूँ और विश्वसनीय उपदेष्टा हूँ।

(५) अ व अजिब्तुम् अन्जा३अकुम् ज़िक्रुम्मिर्रब्बिकुम् अला रजुलिम्मिन् कुम् लियुन्ज़िर कुम् वऽज़्कुरूऽ इज् ज अलकुम् खुलफ़ा३आ मिन् ँ बअ़्दि क़उमि नूहिंव्-ज़ाऽद कुम् फ़िऽल् ख़ल्क़ि बस्त़तन्, फ़ऽज़्कुरू३ आला३ अऽल्लाहि लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून ॥

क्या तुम आश्चर्य करते हो कि तुम्हारे पास तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से तुम्हीं में से एक मनुष्य के द्वारा शिक्षा आई कि (वह) तुमको (अल्लाह के आतंकर का) डर सुनावे और स्मरण रक्खो कि किस प्रकार उसने तुमको नूह की जाति के पश्चात् (उसका उत्तराधिकारी) मुखिया बना दिया और उसने तुम्हें शरीर में विशाल कर दिया। अतः अल्लाह

के उपकारों का स्मरण करो, कदाचित् तुम्हें सफलता प्राप्त हो।

(६) क़ाऽलू३ अजिअ्तनाऽ लिनअ्बुदऽल्लाहा वह्दहू व नज़र माऽ काऽना यअ्बुदु आबा३उनाऽ, फ़-अ्तिनाऽ बिमा तइ्दुना३ इन्कुन्ता मिन-स्सादिक़ीन् ॥

बोले—"क्या तू हमारे समीप इसलिए आया कि हम केवल अल्लाह की आराधना करें और (उन देवों का) परित्याग करदें, जिनको हमारे पुरुषा (पिता-प्रपितामहादि) पूजते रहे ? फिर यदि तू सच्चा है, तो वह वचन लेआ, जिससे हमें भय दिखाता है।

(७) क़ाऽला क़द् वक़आ अलय्कुम्मिर्रब्बिकुम् रिज्सु न्व ग़ज़बुन्; अतुजाऽदि लूननी फ़ी३ अस्मा३इन् सम्म-य्तुमूहा३ अन्तुम् व आबा३उकुम्माऽ नज़्ज़लऽल्लाहो बिहामिन् सुल्तानिन् फ़ऽन्तज़िरू३ इन्नी मअ़कुम्मिनऽल् मुन्तज़िरीन् ॥

उसने कहा—"तुम पर तुम्हारे पालनकर्त्ता के यहां से आपत्ति और कोप प्रगट हो चुका है। मुझ से अनेक नामों के लिए—जो तुमने और तुम्हारे पुरुषाओं (पिता-प्रपितामहादि) ने रख लिए हैं, जिन का अल्लाह ने कोई प्रमाण पत्र नहीं उतारा—क्यों विवाद करते हो ? अतः (प्रकोप की) प्रतीक्षा करो और मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करता हूँ।"

(८) फ़ अन्जयनाहु वऽल्लज़ीना मअहू बिर्ह्मतिम्मिन्ना ऽ व क़तअ्नाऽ दाऽबिरऽल्लज़ीना कज़्ज़बूऽ बि आयातिनाऽ वमाऽ काऽनूऽ मुअ्मिनीन् ॥

फिर हमने उसको और जो उसके साथ थे,उनको अपने अनुग्रह से बचा लिया और जिन्हों ने हमारी आयतों को असत्य ठहराया था;और जो विश्वासियों में नहीं थे,उनको समूल नष्ट किया ।

[मं० २ सिपारा ८ रुकूअ १०।१२]

(१) व इला समूदा अख़ाऽहुम् सालिहऽन् क़ाऽला या क़ौमिऽअ्बुदुऽऽल्लाहा माऽ लकुम्मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू; क़द् जाऽअत् कुम् बय्यिनतुम्मिर्रब्बिकुम् ; हाज़िही नाऽक़तुऽल्लाहि लकुम् आयतन् फ़ज़रूहाऽ तअ्कुल् फ़ीऽ अर्ज़िऽल्लाहि वलाऽ तमस्सूहाऽ बिसूऽइन् फ़ यअ्ख़ुज़कुम् अज़ाऽबुन् अलीम् ॥

और हमने समूद (समुदाय) की ओर उनका सगा सालह भेजा । उसने कहा—"हे जातिवालो ! अल्लाह की आराधना करो । उसके अतिरिक्त अन्य कोई तुम्हारा स्वामी नहीं । तुमको तुम्हारे पालनकर्त्ता की ओर से प्रमाण प्राप्त हो चुका है । यह ऊँटनी अल्लाह की तुम्हारे लिए प्रमाण है । अतः इसको छोड़ दो कि यह अल्लाह की भूमि में चरे; और

इसे कष्ट पहुंचाने के नाम पर स्पर्श (तक) मत करो; अन्यथा दैवी दण्ड का दुःख तुम्हें निग्रहीत करेगा।

(२) वऽज़्कुरू३ इज़् जअलकुम् ख़ुलफ़ा३आ मिन् बअ्दि आऽदिंव्व बव्वअकुम् फ़िऽल् अर्ज़ि तत्तख़िज़ूना मिन्सुहूलिहाऽ कुसूरऽव्व तन्हितूनऽल् जिबाऽला बुयूतऽन्, फ़ऽज़्कुरू३ आला३अऽल्लाहि वलाऽ तअ्सउ्ऽ फ़िऽल् मुफ्सदीन् ॥

और वह (समय) स्मरण करो जब कि तुमको आद के पश्चात् उन (लोगों) का उत्तराधिकारी बनाया और भूमि में निवास दिया। इससे स्वच्छ भूमि में दुर्ग रचते हो और पर्वतों को काट काट कर गृह-बनाते हो। अतः अल्लाह के अनुग्रह का स्मरण करो और पृथिवी में उत्पात उत्पन्न न करते फिरो।

(३) क़ाऽलऽल् मलऽउल्लज़ीनऽस्तक् बरूऽ मिन्क़उ्-मिही लिल्लज़ीनऽस्तुज़् इ्.फूऽ लिमन् आमना मिन्हुम् अ तअ्लमूना अन्ना सालिहऽम्मुर्सलुम्मिर्रब्बिही; क़ाऽलू३ इन्नाऽ बिमा३ उर्सिला बिही मुअ्मिनून् ॥

उसकी जाति के वह प्रधान पुरुष—जिन्हें अहंकार था, जाति के उन निर्बल पुरुषों से, जो विश्वास रखते थे—कहने लगे, "यह तुमको विदित है कि सालह अपने पालनकर्त्ता का प्रेषित (पैग़म्बर) है।" वह बोले—"हमको, जो उस पर और उसके द्वारा भेजा गया है, विश्वास है।"

(४) क़ाऽलऽल्लज़ीनऽस्तक्बरू२ इन्नाऽ बिऽल्लज़ी२ आमन्तुम् बिही काफ़िरून् ॥

परन्तु जो अहंकारी थे. कहने लगे—"जो तुमने विश्वास किया, सो हम स्वीकार नहीं करते।"

(५) फ़ अक़रुऽ—न्नाऽक़ता व अ़तउ़ऽ अ़न् अम्रि रब्बिहिम् व क़ाऽलूऽ या सालिहु ऽअ्तिनाऽ बिमाऽ त.इ-दुनाऽ इन्कुन्ता मिनऽल्मुर्सलीन् ॥

फिर (अल्लाह की) उंटनी (के पैरों) को काट डाला, और अपने पालकर्त्ता की आज्ञा से पराङ्मुख हो गये, और कहने लगे—"हे सालह ! यदि तू प्रेषित (पैग़म्बर) है, तो जो भय दिखलाता है, उसे लेआ।"

(६) फ़ अख़ज़त्हुमु—र्रज्फ़तु फ़ अस्ब.हूऽ फ़ी दाऽरि-हिम् जासिमीन् ॥

तब भूकम्प * ने उन पर आक्रमण किया; अतः प्रातःकाल ही को अपने गृह में औंधे गिर कर मर गए।

(७) फ़ तवल्ला अ़न्हुम् व क़ाऽला या क़ौमि लक़द् अब्लग़्तुकुम् रिसाऽलता रब्बी व नसह्तु लकुम् वला किल्लाऽ तुहिब्बून—न्नासि.हीन् ॥

फिर (सालहने) उनसे मुंह मोड़ा और कहा "हे जाति-वालो ! मैं तुमको अपने पालनकर्त्ता का सन्देश पहुंचा चुका

* किन्हीं किन्हीं का कथन है कि वह जिब्राईल का शब्द था।

और (मैंने) तुम्हारा शुभचिन्तन किया, परन्तु तुम्हें शुभचिन्तक प्रिय नहीं लगते।

(८) व लूतऽन् इज़्क़ाऽला लिक़ौमिही३ अतअ्तूनऽल् फ़ाऽहिशता माऽ सबक़कुम् बिहाऽ मिन् अ़हदिम्मिनऽल् आलमीन् ॥

और [स्मरण करो, जब] लूतने अपनी जाति से कहा--"क्या तुम ऐसा अश्लील [निन्द्य] कार्य करते हो जो तुम से पूर्व संसार में किसी ने नहीं किया।

(९) इन्नकुम् लतअ्तून-रिंजाऽला शह्वतम्मिन्दूनिन्निसा३इ; बल् अन्तुम् क़ौमुम्मुस्रिफून् ॥

तुम तो महिलाओं से मुख मोड़ कर, मदनमत्त हो, मनुष्यों पर मरते हो; किन्तु तुम लोग मर्यादा पर स्थिर नहीं रहते।

(१०) व माऽ काऽना जवाऽबा क़ौमिही३ इल्ला३ अन्क़ाऽलू ३ अख़्रिजूहुम्मिन् क़र्यतिकुम्, इन्नहुम् उनाऽसुय्यत तह्हरून् ॥

और उसकी जाति वालों ने कुछ उत्तर नहीं दिया; परन्तु [इसके विपरीत परस्पर यह] कहने लगे कि इन्हें अपने नगर से निकालो; क्योंकि ये पवित्रता चाहते हैं।"

(११) फ़ अन्जयनाहु व अह्लहू३ इल्लऽम्रअ़तहू, काऽनत मिनऽल ग़ाबिरीन् ॥

फिर हमने उसको और उसके गृहियों की रक्षा की; परन्तु उसकी स्त्री मरनेवालों में सम्मिलित हो गई।

(१२) व अम्तर्ना ऽ अ़लय्हिम्मतरऽन्, फ़ऽन्ज़ुर् कय्फ़ा का ऽना आ ऽक़िबतु ऽल्मुज्रिमीन् ॥

और उन पर [पत्थरों का] मेह बरसाया; अतः देख, अपराधियों का क्या अन्त हुआ !

[मंज़िल १ पा० ८ रु० ११।६]

(१) व इला मद्यना अख़ा ऽहुम् शुअ़य्बऽन् ; क़ा ऽला या क़ौमिऽअ़्बुदु ऽऽल्लाहा मा ऽ लकुम्मिन् इलाहिन् ग़य्रुहू; क़द् जा ३अत्कुम् बय्यिनतुम्मिर्रब्बिकुम् फ़अउ फ़ुऽअ़्ल् कय्ला वऽल् मीज़ा ऽना वला ऽ तब्ख़सुऽ-न्ना ऽसा अश्या ३ अहुम् वला ऽ तुफ़्सदू ऽ फ़िऽल् अर्ज़ि बअ़्दा इस्ला ऽहिहा ऽ; ज़ालिकुम् ख़य्रुल्लकुम् इन्कुन्तुम्मुअ़्मिनीन् ॥

और मदियनों * में हमने उनके भाई शुऐब को (पैग़म्बर बना कर) भेजा। उसने कहा—"हे जातिवालो! अल्लाह की आराधना करो। उसके अतिरिक्त अन्य कोई तुम्हारा स्वामी नहीं। तुमको तुम्हारे पालकर्त्ता की ओर से प्रमाण प्राप्त हो चुका है। अतः नाप तोल पूरी करो; और मनुष्यों को उनकी वस्तुएँ न्यून मत दो; और न पृथिवी में ही, उसके सुधार के

* मिदियन हेजाज में एक नगर था। वहाँ के निवासी मदियन कहलाते थे।

उपरान्त, उपद्रव उत्पन्न करो, यदि तुमको विश्वास है। यह तुम्हारे लिए हितकर है।

(२) वलाऽ तकूउ.दूऽ बिकुल्लि सिराऽतिन् तूइ.दूना व तसुद्दूना अन् सबीलिऽल्लाहि मन् आमना बिही वतब्गूनहाऽ इ.वजऽन्, वऽज़्कुरूऽ इज् कुन्तुम् क़लीलऽन् फ़क.स्सरकुम् वऽन्जुरूऽ कय्फ़ा काऽना आऽक़िबतुऽल् मुफ़्सदीन् ॥

और प्रत्येक मार्ग पर न बैठो और अल्लाह के मार्ग से उनको, जो उस पर विश्वास लाते हैं, भय दिलाते हुए और उसमें दोष ढूँढते हुए न रोको; और उस समय का स्मरण करो जब कि तुम अल्प संख्यक थे, तो तुमको (अल्लाह ने) बहु संख्यक किया और देखो अन्त में उत्पातियों की कैसी अवस्था हुई !

(३) व इन् काऽना ताऽइफ़तुम्मिन्कुम् आमनूऽ बिल्लज़ीऽ उर्सिल्तु बिही व ताऽइफ़तुल्लम् युअ्मिनूऽ फ़ऽस्बिरूऽ हत्ता यह.कुमऽल्लाहो बय्नना व हुवा खय्रुऽल् हाकिमीन् ।

और जो मेरे हाथ भेजा गया है, उसे यदि तुममें से एक समुदाय ने स्वीकार किया है और दूसरे ने नहीं तो उस समय तक धैर्य धारण करो जब तक कि अल्लाह हमारे मध्य निर्णय करे और वह सर्वोत्तम न्यायकारी है।

पारा [९] क़ालऽल्मलाऽ

(४) क़ाऽलऽल् मलउऽल्लज़ीनऽस्तक्बरूऽमिन् क़उ-मिही लनुख़्रिजन्नका या शुअ़ैबु वऽल्लज़ीना आमनूऽ मअ़का मिन् क़र्यतिनाऽअउ लतऊ़दुन्ना फ़ी मिल्लतिनाऽ, क़ाऽला अव लउ कुन्ना कारिहीन् ॥

उसकी जाति के वह लोग—जो कुलीन थे—कहने लगे, "हे शुऐब! हम तुझको और उनको—जिन्हों ने तेरे साथ विश्वास किया है—अपने नगर से निश्चय बाहर निकाल देंगे; अन्यथा तुम हमारे मत में पुनः आजाओ!" उन्होंने उत्तर दिया—"क्या, हम उससे विमुख हों तो भी?"

(५) क़दिऽफ़्तरयनाऽ अ़लऽल्लाहि कज़िबऽन् इन् उ़द्नाऽ फ़ी मिल्लतिकुम् बअ़्दा इज़् नज्जानऽऽल्लाहु मिन्हाऽ; वमाऽ यकूनु लनाऽ अन्नऊ़दा फ़ीहाऽ इल्लाऽ अय्यशाऽअऽल्लाहु रब्बुनाऽ; वसिअ़ा रब्बुना कुल्ला शय्इन् इ़ल्मऽन्; अ़लऽल्लाहि तवक्कल्नाऽ; रब्बनऽऽ-फ़्तह् बय्ननाऽ व बय्ना क़उमिनाऽ बिऽल् हक़्क़ि व अन्ता ख़य्रुल् फ़ाऽतिहीन् ॥

यदि हम तुम्हारे मत में पुनः मिल जायं तो हम अल्लाह पर असत्याक्षेप आरोपित करेंगे। जब अल्लाह हमको उससे

मुक्त कर चुका तो हमारा काम नहीं कि उसमें पुनः आवें। परन्तु (यदि) कभी हमारा पालक अल्लाह चाहे (तो आसकते हैं) हमारे पालक के ज्ञान में प्रत्येक वस्तु का बोध है; हमने अल्लाह पर विश्वास किया है। हे पालनकर्ता! हमारे और हमारी जाति के मध्य न्यायतः निर्णय कर; और तू सर्वोत्तम न्यायाधीश है।

(६) व क़ाऽलऽल् मलउऽल्लज़ीना कफ़रूऽ मिन् क़उ्मिही लइनिऽत्तबअ्तुम् शुअ्य् बऽन् इन्नकुम् इज़ऽल्ल ख़ासिरून ॥

और उसकी जाति के कुलीन लोग, जो काफ़िर थे, कहने लगे—"यदि तुम शुऐब (की शिक्षा) के शरणागत हुए तो निश्चय नष्ट हुए।

(७-८) फ़ अख़ज़त्हुम्-रेज्फ़तु फ़ अस्ब .हूऽ फ़ी दाऽरिहिम् जासिमीनऽल्लज़ीना कज़्ज़बूऽ शुअ्य् बऽन् कअल्लम् यग़्नउ्ऽ फ़ीहाऽ, अल्लज़ीना कज़्ज़बूऽ शुअ्य् बऽन् काऽनूऽ हुमुऽल् ख़ासिरीन् ॥

अतः आकाश से एक आंधी ने उन पर आक्रमण किया और प्रातः काल वे अपने गृहों में मृतक और औंधे पड़े पाये गये। वह—जिन्होंने शुऐब को दोषी ठहराया—ऐसे हो गये, जैसे (मानो) वहां कभी न थे। जिन्होंने शुऐब को दोषी ठहराया, वही नष्ट हुए।

(९) फ़ तवल्ला अन्हुम् व क़ाऽला या क़उ्मि लक़द्

अब्लग़्तुकुम् रिसालाति रब्बी व नसह्तु लकुम्, फ़ कय्फ़ा आसा अ़ला क़उ्मिन् काफ़िरीन् ॥

फिर वह उनसे पृथक् हुआ और बोला "हे जातीय पुरुषो! तुमको मैं अपने पालनकर्ता का प्रतिशासन प्रदान कर चुका और तुम्हें शुभ शिक्षा भी सुना चुका हूँ, फिर मैं क्यों अविश्वासी लोगों से शोकातुर होऊं ?"

[मंजिल २, पारा ६, रुकूअ़ १२ । ६]

(१) व मा अर्सल्नाऽ फ़ी क़र्यतिम्मिन्नबिय्यिन् इल्ला२ अख़्ज़्ना२ अह्लहाऽ बिऽल् बअ्साऽइ व-ज़्ज़र्राइ लअ़ल्लहुम् यज़्ज़र्रऊन् ॥

और हमने किसी नगरी में नबी नहीं भेजा; जब तक कि हमने वहां के लोगों को क्लेश और विषाद के पाश में ग्रसित न किया हो, (जिससे) कदाचित् वह घिघियावें।

(२) सुम्मा बद्दल्नाऽ मकाऽन-स्सय्यिअतिऽल् ह़सनता ह़त्ता अ़फ़उ्ऽव्व क़ाऽलूऽ क़द् मस्सा आबा२ अनऽज़्ज़र्राउ व-स्सर्राउ फ़ अख़ज़्नाहुम् बग़्तत व्वहुम् लाऽ यश्उ़रून् ॥

फिर हमने उनकी बुराई को भलाई के रूप में परिवर्तित कर दिया; यहां तक कि उनकी वृद्धि हुई और वह कहने लगे कि हमारे पिता-प्रपितामहादि को भी हानि और प्रसन्नता प्राप्त होती रही हैं। अतः हमने उन पर अकस्मात् आक्रमण किया और उन्हें ज्ञात न था।

(३) वलउ् अन्ना अह्लऽल् क़ुरा२ आमनू वऽत्तक़उ्ऽ लफ़तह्ना ऽ अलय्हिम् बरकातिम्मिन-स्समा२इ वऽल् अर्ज़ि वला किन् कज़्ज़बूऽ फ़ अख़ज़्नाहुम् बिमाऽ काऽनूऽ यक्सिबून् ॥

और कभी इन नगरों के निवासी हमारा विश्वास और भय करते तो हम उन पर, निस्सन्देह, आकाश और पृथिवी की आशीर्वादें खोल देते; परन्तु वे हमारी आयतों को असत्य निश्चित करने लगे। इसलिए हमने उनसे उनकी कृति का प्रतिकार ग्रहण किया।

(४) अ फ़ अमिना अह्लुऽल् क़ुरा२ अ य्यअ्तिय हुम् बअ्सुनाऽ बयाऽतऽव्वहुम् ना२इमून् ॥

अतः क्या उन नगरों के निवासी निर्भय हैं कि उन पर हमारा प्रकोप सायंकाल के समय, जब कि वे सोते हों, नहीं आवेगा ?

(५) अव अमिना अह्लुऽल् क़ुरा२ अय्यअ्तियहुम् बअ्सुनाऽ ज़ुह-ऽव्वहुम् यल्अबून् ॥

अथवा क्या (इस बात से) नगर-निवासी निर्भय हैं कि हमारा प्रकोप उन पर प्रातःकाल—दिन चढ़े—जब खेलते हों, नहीं आवेगा ?

* यह आयत उस दुष्काल की ओर संकेत करती है जो मक्का में पड़ा था और जिसका वर्णन १२७ वीं आयत में आगे आता है।

(६) अ फ़ अमिनूऽ मक्रऽल्लाहि, फ़ लाऽ यअ्मनु मक्रऽल्लाहि इल्लऽल् क़उमुऽल् ख़ासिरून् ॥

क्या, फिर, अल्लाह के कपट से निर्भय हो गये ?-अतः उन लोगों के अतिरिक्त-जो नष्ट होंगे-अन्य लोग अल्लाह के कपट से सुरक्षित नहीं।

[मं० २, पारा ६, रु० १३। ६]

(१) अ व लम् यह्दि लिल्लज़ीना यरिसूनऽल् अर्ज़ा मिन् ँ् ब अ्दि अह्लिहा२ अल्लउ् नशा२उ अस-ब्नाहुम् विज़ुनूबिहिम्, व न.त्बउ् अ़ला कुलूबिहिम् फ़हुम्लाऽ यस्मऊ़न् ॥

क्या उन लोगों को शिक्षा नहीं मिली, जिन्होंने पृथिवी पर, उसके अधिकारियों के पश्चात्, स्वत्व स्थिर किया, जिससे यदि हम चाहें तो उनको उनके पापों के कारण पकड़ें और उनके मनों का मुद्राबद्ध (मुहर) करदें जिससे वह सुन न सकें।

(२ तिल्कऽल्कुरा नकुस्सु अ़लय्का मिन् अन् ँ् बा२इहाऽ, व लक़द् जा२अत् हुम् रुसुलुहुम् बिऽल् बय्यि-नाति फ़ माऽ काऽनूऽ लियुअ्मिनूऽ बिमाऽ कज़्ज़बूऽ मिन् क़ब्लु, कज़ालिका यत्बउ़ऽल्लाहु अ़ला कुलूबिऽल् काफ़िरीन् ॥

यह नगर है कि जिसका कुछ समाचार हम तुमको सुनाते हैं: और उनके समीप उनके पैग़म्बर प्रमाण, लेकर पहुंच चुके। अतः यह कदापि नहीं हुआ कि जो बात पहले मिथ्या कह चुके, उस पर विश्वास करलें। इस प्रकार, अल्लाह अविश्वासी लोगों—मुनकिरों के मनों को मुद्राङ्कित (आधीन) करता है।

(३) वमाऽ वजद्ना लि अक्सरिहिम्मिन् अहदिन्, व इव्वजद्नाऽ अक्सर हुम् लफ़ासिक़ीन् ॥ १०० ॥

और हमने उनमें से प्रायेण सब को नियम पर निश्चित नहीं पाया और उनमें से प्रायेण सभी अनियन्त्रित पाये गये।

(४) सुम्मा बअस्ना मिन् ँ बअदिहिम्मूसा बि आयातिनाऽ इला फ़िर्अउना व मलाऽइही फ़ ज़लमूऽ बिहाऽ, फ़ऽन्ज़ुर्कय्फ़ा काऽना आऽक़िबतुऽल् मुफ़्सदीन् ॥

फिर हमने उनके पश्चात् मूसा को फ़िऔन् और उसके कुलपतियों के दास; सहित अपने चिन्ह (प्रमाण) देकर प्रेषित किया। फिर उनके सन्मुख अत्याचार किया, अत: देखो उपद्रवियों की अन्त में कैसी (अधम) अवस्था हुई!

(५) व क़ाऽला मूसा या फ़िर्अउनु इन्नी रसूलुम्मिर्रब्बिऽल् आलमीन् ॥

और मूसा ने कहा—"हे फ़िऔन! मैं संसार के स्वामी का प्रेरित (भेजा हुआ-रसूल) हूँ।

(६) ,हक़ीक़ुन् अ़ला३ अल्ला३ अक़ूला अ़लऽ-ल्लाहि इल्लऽऽल् ,हक्क़ा, क़द् जिअ्तुकुम् बिबय्यिनतिम्मिरब्बिकुम् फ़ अर्सिल् मइ़या बनी३ इस्ना३ईल् ॥

इस बात पर दृढ़ स्थिर हूँ कि अल्लाह के सम्बन्ध में सत्य के अतिरिक्त अन्य कुछ न कहूँ; क्योंकि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे पालनकर्ता का प्रमाण लेकर आया हूं। अतः मेरे साथ इस्राईल के वंश को भेज दे।

(७) क़ाऽला इन् कुन्ता जिअ्ता बिआयतिन् फ़अ्ति बिहा३ इन् कुन्ता मिन–स्सादिक़ीन् ॥

उसने कहा--"यदि तू कुछ प्रमाण लेकर आया है तो वह ला, यदि तू सच्चा है।"

(८–९) फ़ अल्क़ा अ़साऽहु फ़ इज़ाऽ हिया सुअ्-बाऽनुम्मुबीनुव्व नज़आ़ यदहू फ़ इज़ाऽ हिया बय्ज़ा३उ लिन्नाज़िरीन् ॥

फिर उसने अपना डंडा डाला तो उसी समय वह साक्षात् सर्प बन गया। और अपना हाथ निकाला तो उसी समय वह दर्शकों को श्वेत * दिखाई दिया।

---

* रिवायत है कि मूसा बड़ा काला आदमी था और जब वह अपना हाथ सीने में रखता और उसे फिर बाहर निकालता, यह अत्यन्त श्वेत और इतना प्रकाशित हो जाता कि इसके सामने सूर्य का प्रकाश मन्द पड़ जाता

[मंजिल २, पारा ९, रु० १४।१८]

(१-२) क़ाऽलऽल् मलउ मिन् क़ौमि फ़िर्औना इन्ना हाज़ा ल साहिरुन् अलीमुय्युरीदु अय्युख़्रिजकुम्मिन् अर्ज़िकुम् , फ़माऽज़ाऽ तअ्मुरून् ॥

फ़िर्औन की जाति के मुखियागण कहने लगे--"निस्सन्देह, यह कोई बड़ा जादूगर है, (जो) तुमको तुम्हारे देश में से बहिष्कृत किया चाहता है। अतः अब किस आज्ञा का पालन किया जाय।"

(३-४) क़ाऽलू३ अर्जिह् वअख़ाऽहु व अर्सिल फ़िऽल् मदाइनि हाशिरीना । यअ्तूका बिकुल्लि साहिरिन् अलीम् ॥

वे कहने लगे--"उसको और उसके भाई को ठहरा ले और अपने परगनों में मुखियाओं को भेज, जिससे वह तेरे समीप पढ़ा लिखा जादूगर लावें।"

(५) वजाअस्सहरतु फ़िर्औना क़ाऽलू३ इन्ना लनाऽ लअज्रऽन् इन् कुन्नाऽ नह्नुऽल ग़ालिबीन् ॥

और फ़िर्औन के पास जो जादूगर आये, उन्होंने कहा--"क्या हमें अवश्यमेव पारितोषिक प्रदान किया जायगा, यदि हम विजयी होवें !"

(६) क़ाऽला नअम् व इन्नकुम् लमिनऽल् मुक़र्रबीन् ॥

उसने कहा—"हां, और तुम मेरे समीप रहा करोगे।"

(७) क़ाऽलूऽ या मूसा३ इम्मा३ अन्तुऽल् क़िया व इम्मा३ अन्नकूना नह्नुऽल् मुल्क़ीन् ॥

उन्होंने कहा—" हे मूसा ! या तो तू डाल अथवा हम डालते हैं ।"

(८) क़ाऽला अल्कूऽ, फ़लम्मा३ अल्क़उऽसह्रूर३ अअ्युनन्नाऽसि वऽस्तर्हबूहुम् वजा३ऊ बिसिह्रिन् अज़ीम् ॥

(मूसाने) कहा—"तुम डालो।" फिर जब उन्होंने डाला तो उसने मनुष्यों की दृष्टि बांध दी और उनको डरा दिया, और बडा जादू का कार्य पूरा किया।

(९) व अउ्हय्ना३ इला मूसा३ अन् अल्क़ि असाऽका, फ़इज़ाऽ हियतल् क़फ़ु माऽ यअ्फ़िकून् ॥

और हमने मूसा को आज्ञा दी कि (तू) अपना डंडा डाल। अतः (जब डाला जावे) वह उनके जादू के डाले हुए पदार्थों को (सर्प बन कर) निगलने लगा।"

(१०) फ़ वक़अऽल्, हक़्क़ु व बत़ला माऽ काऽनूऽ यअ्मलून् ।

तब सत्य का पासा प्रबल प्रमाणित हुआ और जो वह करते थे, मिथ्या सिद्ध हुआ।

(११) फ़ ग़ुलिबूऽ हुनाऽलिका वऽन् क़लबूऽ साग़िरीन् ॥

अतः वहां पर पराजित हुए और लज्जित होकर लौट गए।

(१२-१३-१४) व उल्क़िय-स्सह.रतु साजिदीन् क़ाऽलूऽ आमन्नाऽ बिरब्बिऽल्‌ ब्रालमीन् । रब्बि मूसा व हारून् ॥

और अन्य जादूगरों ने श्रद्धा से शिर झुकाया और कहा "हमने संसार के स्वामी को स्वीकार किया जो मूसा और हारून का पालनकर्ता है।"

(१५) क़ाऽला फ़िर्औ़नु आमन्तुम् बिही क़ब्ला अन् आज़ना लकुम्, इन्ना हाज़ा ल मक्रुम्मकर्तुमूहु फ़िऽल् मदीनति लितुख़्रिजूऽ मिन्हाऽ अह्लहाऽ, फ़स-उ्फ़ा तअ़्लमून् ॥

फ़िर्औन ने कहा—"अभी मैंने तुम्हें आज्ञा प्रदान नहीं की; पर तुमने उसे स्वीकार कर लिया। यह एक बड़ा षड्यंत्र (कपट) है जिसे तुमने मेरे नगर में रचा है जिससे कि तुम नगर-निवासियों को नगर से बाहर निकालो। परन्तु तुम अन्त में देखोगे क्या होता है।"

(१६) ल उक़त्तिअ़न्ना अय्दियकुम् व अर्जुलकुम्मिन ख़िलाऽफ़िम् सुम्मा ल उसल्लिबन्नकुम् अज्मई.न् ॥

मैं निश्चय ही, तुम्हारे हाथ और दूसरी ओर के पांव काटूंगा और फिर मैं तुम्हें सूली पर चढ़ाऊँगा।

(१७) क़ालू३ इन्ना३ इला रब्बिनाऽ मुन्-क़लिबून् ॥

उन्होंने कहा—"हमें अपने प्रभु की ओर पुनः (लौट कर) जाना पड़ेगा।"

(१८) व माऽ तन्क़िमु मिन्ना३ इल्ला३ अन् आ-मन्नाऽ बि आयाति रब्बिनाऽ लम्माऽ जा३अत्नाऽ, रब्बना३ अफ़्रिग् अलयनाऽ सब्रव्व तवफ़्फ़नाऽ मुस्लि-मीन् ॥

और तू हमसे इस बात का प्रतिकार लेता है कि हमने अपने प्रभु (के प्रमाणों) पर—जब कि वे हमारे सामने प्रस्तुत किये गए—विश्वास कर लिया। प्रभो! हमें स्थिरता अथवा धैर्य प्रदान कर और हम को मुसल्मान ही मार!"

[मंजिल २ पारा ६ रु० १५।३]

(१) व क़ाऽलऽल् मलउ मिन् क़उमि फ़िर्अउ्ना अतज़रु मूसा व क़उ्महू लि युफ़्सदूऽ फ़िऽल् अर्ज़ि व यज़रका व आलिहतका, क़ाऽला सनुक़त्तिलु अब्ना३-अहुम्, व नस्तह़्यी निसा३अहुम् व इन्नाऽ फ़उ्क़हुम् क़ाऽहिरून् ॥

और फ़िर्औन की जाति के मुखिया कहने लगे--"मूसा और उसके साथियों को क्यों (जीवित) छोड़ता है कि देश में उपद्रव उत्पन्न करें और तुझको और तेरी मूर्तियों को विमुख करें। वह कहने लगा कि अब हम उनके पुत्रों का बध करेंगे और उनकी पुत्रियों को जीवित रहने देंगे और फिर हम इनके स्वामी-शासक--हो जायंगे।

(२) क़ाऽलाऽ मूसा लिक़उमिहिऽ स्तई.नऽ बिऽ-ल्लाहि वऽस्बिरूऽ, इन्नऽल् अर्ज़ा लिल्लाहि यूरिसुहा मय्यशा३उ मिन् इ.बा दिही, वऽल् आ क़िबतु लिल् मुत्तक़ीन् ॥

मूसाने अपनी जाति से कहा--"अल्लाह से सहायता की प्रार्थना करो और धैर्य धारण करो। पृथिवी अल्लाह की है, वह अपने भक्तों में से जिसको चाहे उसका संरक्षक नियत करे और अन्त में भय करने वालों का भला है।"

(३) क़ाऽलू३ ऊज़ीनाऽ मिन्क़ब्लि अन्तअ् तियनाऽ व मिन् ॅ बअ्दि माऽ जिअ्तनाऽ; क़ाऽला असा रब्बुकुम्

* फ़िर्औन् इस्राईलियों को अपने आधीन रखने के लिए यह अत्याचार करता था। भाष्यकारों का कथन है कि फ़िर्औन् को स्वप्न हुआ था कि इस्राईल वंश का बालक ने उसका नाश कर दिया अथवा ज्योतिषियों ने उससे कहा था कि इस्राईल वंश का शासक मेरा बालक होगा।

अय्युह्लिका अदु व्व कुम् व यस्तख़्लिफ़कुम् फ़िऽल अर्ज़ि फ़ यन्ज़ुरा कय्फ़ा तअ़्मलून् ॥

उन्होंने कहा—"हम को तेरे हमारे मध्य आने से पूर्व कष्ट रहा, और जबकि तू हमारे पास आगया है।" उसने कहा—"कदाचित् तुम्हारा प्रभु तुम्हारा शत्रु को नष्ट करेगा और देश में तुम लोगों को उसका उत्तराधिकारी बना देगा और वह देखेगा कि उसके अन्दर तुम किस प्रकार काम करोगे?"

[मंजिल २ पारा ९ रु १६।१२]

(१) व लक़द् अख़ज़्ना३ आल फ़िर्अ़ौना बि—स्सिनीना व नक़्सिम्मिन-स्समराति ल अ़ल्लहुम् यज़्ज़क्करून् ॥

और हमने फ़िऔन वालों को दुर्भिक्षों के दुःख और फलों में हानि पहुंचा कर पीड़ित किया है। कदाचित् वह ध्यान दें।

(२) फ़ इज़ा जा३अत्हुमुऽल् .हसनतु क़ाऽलूऽ लनाऽ हाज़िही, व इन् तुसिब् हुम् सय्यिअतु य्यत्तय्यरूऽ बिमूसा व मम्मअ़हू, अला३ इन्नमाऽ ता३इरुहुम् इ.न्दऽल्लाहि वला किन्ना अक्सरहुम् ला यअ़्लमून् ॥

फिर जब उनको पुण्य उपकार प्राप्त हुआ तो कहने लगे कि यह हमारे निमित्त है और यदि क्लेश पहुंचा तो वह उसे मूसा और उसके साथ वालों का दुर्भाग्य कहने लगे। सुनलो!

उनका दुर्भाग्य अल्लाह ही के पास है; परन्तु बहुधा मनुष्य ध्यान नहीं देते।

(३) व क़ाऽलूऽ महमाऽ तअ्तिनाऽ बिही मिन् आयाति ल्लि तस्ह़रनाऽ बिहाऽ फ़माऽ नह़्नु लका बि मुअ्मिनीन् ॥

और वे कहने लगे—"जो तू हमारे पास ऐसा प्रमाण प्रस्तुत करेगा कि जिससे हम पर उससे जादू करे तो हम तुझ पर विश्वास न करेंगे।"

(४) फ़ असल्नाऽ अलयहिमु-त्तूफ़ाऽना वऽल् जराऽदा वऽल् कुम्मला व-ज़्ज़फ़ाऽदिअ़ा व-द्दमा आ-यातिम्मु फ़स्सलातिन् फ़ऽस्तक् बरूऽ व काऽनूऽ क़ौमऽ-म्मुजि्रमीन् ॥

तब हमने उन पर जल-प्लावन (आँधी), टिड्डी दल, चिचड़ी मेंढक और लोहू (आदि) अनेक चिन्ह पृथक् प्रेषित किये। फिर (भी) यह लोग अहङ्कार करते रहे और पाप तो इनका काम ही था। *

* शाह अब्दुल क़ादिर कहते हैं "हज़रत मूसा को फ़िरऔन से इस बात पर ४० वर्ष तक मुक़ाबला रहा कि बनी इस्राईल को अपने देश जाने दे। उसने न माना उनके स्राप से यह आपत्तियां आईं—नील नदी चढ़ गई खेत, बाग और घर बहुत नष्ट हुए और टिड्डी खेत खागईं। मनुष्यों के शरीरों और कपड़ों में चिचड़ियां पड़ गईं। इसी प्रकार प्रत्येक पदार्थ में मेंढक फल गये और प्रत्येक पानी लोहू बन गया। परन्तु कदापि न माना"।

(५) व लम्माऽ वक़आ अलय्हिमु-र्रिज्ज़ु क़ाऽलूऽ या मूसऽद्दु उलनाऽ रब्बका बिमाऽ अहिदा इन्दका. लइन् कशफ़्ता अन्नऽ-र्रिज़्ज़ा लनुअ्मिनन्ना लका व लनुर्सिलन्ना मअका बनीऽ इस्राईल ।

और, जब उन पर प्रकोप प्रगट हुआ तो कहने लगे--"हे मूसा ! हमारे वास्ते अपने प्रभु की प्रार्थना (उसी प्रकार) कर जैसा कि उसने तुझे शिक्षा रक्खी है। यदि तूने हमसे यह प्रकोप हटाया तो, निस्सन्देह, हम तुझ पर निश्चय (विश्वास) करेंगे और तेरे साथ इस्राईल की सन्तान को भेज देंगे ।

(६) फ़लम्माऽ कशफ़नाऽ अन्हुमु-र्रिज़्ज़ा इलाऽ अजलिन् हुम् बऽलिग़ूहु इज़ाऽहुम् युन्कुसू.न् ॥

फिर जब हमने एक अवधि तक उन पर से अपना प्रकोप हटा लिया; और जो अवधि अल्लाह ने निश्चित की थी, व्यतीत हो गई तो फिर अविश्वासी हो गये ।

(७) फ़ऽन्तक़म्नाऽ मिन्हुम् फ़ अग़रक़्ना हुम् फ़िऽल्यम्मि बि अन्नहुम् कज़्ज़बूऽ बि आयातिनाऽ व काऽनूऽ अन्हाऽ ग़ाफ़िलीन् ॥

अतएव हमने उनके साथ प्रतिकार की नीति का अवलम्बन किया और उन्हें गम्भीर जल (समुद्र) में डुबो दिया क्यों के

उन्होंने हमारी आयतें (आज्ञायें) असत्य ठहराईं थीं; और उन पर ध्यान न देते * थे।

(८) व अउ्रस्नऽऽल् क़उ्मऽल्लज़ीना काऽनूऽ यस्तज़्अफ़ूना मशाऽरिक़ऽल् अर्ज़ि व मग़ाऽरिबहऽऽल्लती बारक्नाऽ फ़ीहाऽ; व तम्मत् कलिमातु रब्बिकऽल् हुस्ना अ़ला बनी३ इस्राईला बिमा सबरूऽ; व दम्मर्नाऽ माऽ काऽना यस्नउ् फ़िर्अउ्नु व क़उ्मुहू व माऽ काऽनूऽ यअ्रिशून्॥

हमने उन मनुष्यों को—जो (फ़िऔन के यहां) बलहीन बन गये थे—उस (शाम की) भूमि के पूर्वीय भाग और पश्चिमीय भाग का, जिनमें, हमने (उपजाऊ होने को) समृद्धि दे रक्खी है, उत्तराधिकार दिलवाया; और इस्राईल वंश पर,

* शाह अब्दुलकादिर लिखते है—यह सब आपत्तियें उन पर एक सप्ताह के अन्तर से आईं। प्रथम हजरत मूसा फ़िऔन को कह आते कि अल्लाह, तुम पर यह आपत्ति भेजेगा फिर वही आपत्ति आती। जब घबराते, मूसाकी खुशामद करते। उनकी आशीर्वाद से आपत्ति हट जाती। परन्तु फिर अविश्वासी हो जाते। अन्त में यह प्रकोप आया कि आधी रात को सारे नगर में प्रत्येक पुरुष का प्रथम पुत्र मर गया। लोग मृतकों का शोक मनाने लगे मूसा अपनी जाति को लेकर नगर से निकल गये। फिर कई दिन बाद फ़िऔन ने पीछा किया और क़ुलज़म नदी पर जा पकड़ा। मूसाकी जाति बच गई, और फ़िऔन सारी सेना समेत डूब गया।

तेरे प्रभु के उपकार की प्रतिज्ञा पूर्ण* हुई; क्योंकि उन्होंने धैर्य-धारणा स्थिर रक्खी। और, हमने फ़िऔंन और उसकी प्रजा के बनाये हुई भवनों और कारीगरी को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया।

(९) व जाऽ वज़्नाऽ बि बनी३ इस्राईलऽल् बह्‌र फ़ अतउ्ऽ अ़ला क़उ्मि य्य अ्कुफ़ूना अ़ला३अस्नाऽमिल्ल-हुम् क़ाऽलूऽ या मूसऽज् अ़ल्लना३ इलाहऽन् कमाऽलहुम् आलिहतुन ;'क़ाऽला इन्नकुम् क़उ्मुन् तज्‌हलून् ॥

और, हमने इस्राईल वंशजों को समुद्र पार उतारा, फिर ऐसी जाति के पास पहुंचे, जो अपनी मूर्तियों की पूजा में प्रवृत्त थी; और (जिसे देख कर उन्होंने मूसासे) कहा—"हे मूसा! हमारे लिए भी एक ऐसीही मूर्तिकी रचना करदे, जैसी कि इनके पास हैं।" (मूसा ने) कहा—"तुम लोग मूर्खता करते हो।"।

(१०) इन्ना हा३ उला३इ मुतबर्रुम्माऽ हुम् फ़ीहि व बातिलुम्माऽ काऽनूऽ यअ्मलून् ॥

यह लोग जो (पूजा) कार्य्य कर रहे हैं, वह नष्ट होना है, और जो यह कर रहे हैं, मिथ्या है।

*प्रतिज्ञा पूर्ण होने का तात्पर्य शाम पर इस्राईलियों का शासन होने से है।

※ मूर्ति पूजा और जैसा कि बेजावी कहता है कि इनकी मूर्तियां बैलों की नकल थी। इसीसे उन्होंने सोने का बछड़ा बना कर पूजा की।

(११) क़ाऽला अग़य्रऽल्लाहि अब्ग़ीकुम् इलाहऽव् हुवा फ़ज़्ज़लकुम् अलऽल् आलमीन् ॥

कहा--"क्या तुम्हारे लिए अल्लाह के—जिसने तुमको समग्र संसार में श्रेष्ठता प्रदान की है--अतिरिक्त अन्य आराध्य देव लादूं ?"

(१२) व इज् अन्जय्नाकुम्मिन् आलि फ़िर्औ़ना यसूमूनकुम् सू३अऽल् अज़ाऽबि. युक़त्तिलूना अब्ना३-अकुम् व यस्तह्यूऩ निसा३अकुम्, व फ़ी ज़ालिकुम् बला३उम्मिर्रब्बिकुम् अज़ीम् ॥

और, उस समय का स्मरण करो, जब कि हमने फ़िऔन के वंशजों से—जो तुम को घोर दुःख देते थे, तुम्हारे पुत्रों का बध कर डालते; और तुम्हारी पुत्रियों को जीवित रहने देते थे--तुम्हें सुरक्षित रक्खा; और इस में तुम्हारे पालनकर्ता का अत्यन्त अनुग्रह है।

[मंजिल २ पारा ९ रु० १७ । ६]

(१) व वा अद्नाऽ मूसा सलासीना लय्लतव्व अत् मम्नाहाऽ बि अश्रिन् फ़तम्मा मीक़ाऽतु रब्बिही३ अर्बई.ना लय्लतन्, व क़ाऽला मूसा लि अख़ीहि हारू-नऽख़्लुफ़्नी फ़ी क़ौमी व अस्लिह् वलाऽ तत्तबिअ् सबीलऽल् मुफ़्सिदीन् ॥

और, मूसा से हमने ३० रात्रि की अवधि निश्चित की और उसको (उस में) दस मिला कर पूर्ण किया, तब तेरे प्रभु की चालीस दिवस की अवधि पूरी हुई। और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा—"मेरी जाति में मेरा स्थानापन्न होकर रह, और अपना सुधार कर तथा कुमार्ग गामियों के पथ का अनुसरण न कर।"

(२) व लम्माऽ जाऽअ मूसा लिमीक़ाऽतिनाऽ व कल्लमहू रब्बुहू क़ाऽला रब्बि अरिनीऽ अन्ज़ुर् इल-यका; क़ाऽला लन्तरानी वला किनिऽन्ज़ुर् इलऽल् जबलि फ़ इनिऽस्तक़र्रा मकाऽनहू फ़ सउ्फ़ा तरानी, फ़लम्माऽ तजल्ला रब्बुहू लिल् जबलि जअ़लहू दकऽव्व ख़र्रा मूसा सइ्क़न्, फ़लम्माऽ अफ़ाऽक़ा क़ाऽला सुब्हानका तुब्तु इलय्का व अनाऽ अव्वलुऽल् मुअ्मिनीन् ॥

*मूसा से ख़ुदा ने प्रतिज्ञा की थी कि तुम तूर पर्वत पर एक मास तक अल्ला की आराधना करो, हम तुमको तौरेत प्रदान करेंगे। पीछे ख़ुदा ने १ मास के बजाय ४० दिन चिल्ला—कर दिया कि मूसा अपनी आराधना करलें। चिल्ला पूरा होने पर तौरेत मिली और वह तूर से चले आये। कुछ भाष्यकार यह भी कहते हैं कि मूसा को अल्ला ने ३० दिन तक उपवास करने की आज्ञा दी थी, परन्तु जब ३० दिन बाद मूसा के मुंह में बदबू आने लगी तो उसने अपने दांत साफ़ किये। इस पर उसे आज्ञा हुई कि उसके मुंह से जो कस्तूरी की गन्ध आती थी वह दांतन से दूर होगई। उसे चाहिये कि १० दिन और रोजा रक्खे औरमूसा ने ऐसा ही किया।

और, जब मूसा हमारी (नियत की हुई) अवधि पर उपस्थित हुआ; और उससे उसके प्रभु ने वार्ता की तो (मूसा) कहने लगा--"हे पालनकर्ता ! तू मुझ को अपना दर्शन दे, जिससे कि मैं तुझ पर दृष्टि डाल सकूं ।" (अल्लाह) बोला—"तू मुझे कदापि न देख सकेगा; परन्तु पर्वत की ओर देखता रहा अब वह(पर्वत)अपने स्थान पर स्थिर होजायगा तो तू मुझे आगे देख सकेगा ।" फिर जब उसका पालनकर्ता पर्वत की ओर प्रगट हुआ तो उसको मिट्टी में मिला दिया; और मूसा अचेत होकर गिर पड़ा। फिर जब सावधान हुआ, कहने लगा—"तेरा स्वरूप शुद्ध है; मैं तेरे पास तोबा (पाप-क्षमा-प्रार्थना) करता हूँ; और मैंने सब से प्रथम विश्वास किया।"

(३) क़ाऽला या मूसा३ इन्निऽस्तफ़य्तुका अ़ल-न्नाऽसि बिरिसालाती व बिकलाऽ मी फ़ख़ुज़्मा३ आतय्तुका व कुम्मिन-श्शाकिरीन् ॥

(अल्लाहने)—कहा,"हे मूसा ! मैंने अपना संदेश भेजकर और (तुझ से) अपने साथ वार्तालाप करके तुझे ।अन्य मनुष्यों में विशिष्टता प्रदान की। अतः जो मैंने तुझको प्रदान किया, उसे ग्रहण कर और कृतज्ञ रह।

(४) व कतब्नाऽ लहू फ़िऽल् अल् वाऽहि मिन् कुल्लि शय्इम्मउ् इ,ज़त व्व त,फ़्सीलऽ ल्लिकुल्लि शय्इन्,

फ़ख़ुज़् हाऽ बिक़ुव्वति व्वअ्मुर् क़उ्मका य अ्ख़ुज़ूऽ बि अह्सनिहाऽ, साऽवुरीकुम् दाऽरऽल् फ़ा सिक़ीन् ॥

और, हमने उसको पट्टिकाओं पर प्रत्येक पदार्थके सम्बन्ध में शिक्षा और प्रत्येक वस्तु को विस्तृत व्याख्या लिख दी। अतः उनको शक्ति के साथ ग्रहण कर, और अपनी जाति से कह कि उसकी श्रेष्ठ शिक्षाओं को ग्रहण किये रहे। अब मैं तुमको दुष्टात्माओं का वास स्थान दिखलाऊँगा।

(५) स अस्रिफ़ु अन् आयातियऽल्लज़ीना यतकव्वरूना फ़िऽल् अर्ज़ि बि ग़य्रिऽल् .हक्क़ि व इय्यरउ्ऽ कुल्ला आयतिल्लाऽ युअ्मिनूऽ बिहाऽ, व इय्यरउ्ऽ सबील–रु श्दि लाऽ यत्तख़िज़ूहु सबीलऽन्; व इय्यरउ्ऽ सबीलऽल् ग़य्यि यत्तख़िज़ूहु सबीलऽन्; ज़ालिका वि अन्नहुम् कज़्ज़बूऽ बि आयातिनाऽ व काऽनूऽ अ़न्हाऽ ग़ाफ़िलीन् ॥

और, पृथिवी पर व्यर्थ अहङ्कार करने वाले लोगों को मैं अपनी आयतों से विमुख कर दूगा। और यदि वे समग्र आयतों को भी देखें तो विश्वास न करें; और यदि वे सुधार का मार्ग देखें तो वे उसे अपना मार्ग निश्चित नहीं करते, और यदि विपरीत मार्ग देखें तो उसे (अपने लिए सीधा) मार्ग निश्चित करें। यह इसलिए कि उन्होंने हमारी आयतों को असत्य समझा और उनसे अनभिज्ञ रहे।

(६) वऽल्लज़ीना कज़्ज़बूऽ बिआयातिनाऽ व लिक़ाइइऽल् आख़िरति ,हबितत् अअ्मा^ऽलु हुम् , हल् जज़उ्ना इल्लाऽ माऽ काऽनूऽ यअ्मलून् ॥

और जिन्होंने हमारी आयतें और अन्तिम (प्रलय की) भेट असत्य समझीं, उनके कर्म नष्ट हुए, और जो आचरण करते थे, वही परिणाम प्राप्त करेंगे।

(मंज़िल २ पारा ९, रु० १८।४)

(१) वऽत्तख़ज़ा क़उ्मु मूसा मिन् ँ बअ्दिही मिन् ,हुलिय्यिहिम् इ,जलऽन जसदऽल्लहू ख़ुवाऽरुन् ; अलम् यरउ्ऽ अन्नहू लाऽ युकल्लिमुहुम् वलाऽ यह्दीहिम् सबीलऽन इत्तख़ज़ूहु व काऽनूऽ ज़ालिमीन ॥

और, मूसा की अनुपस्थिति में उसकी जातिने अपने आभूषणों से एक वत्स बना लिया, उसमें एक धड़ और गाय के रंभाने का शब्द था। उन्होंने यह न देखा कि वह उनसे वार्तालाप नहीं करता और न मार्ग दिखाता है; उसको (उसको पूजार्थ) ग्रहण किया और वह अन्यायी थे।

(२) वलम्माऽ सुक़िता फ़ी‌इ अय्दीहिम व राअउ्ऽ अन्नहुम् क़द् ज़ल्लूऽ क़ाऽलूऽ लइल्लम् य‚र्हम्नाऽ रब्बुऽनाऽ व यग़्फ़िर्लनाऽ लनकूनन्ना मिनऽल् ख़ासिरीन् ॥

और, जब (उन्होंने) पश्चात्ताप किया और समझा कि

हमने भूल की, तो कहा—"यदि हम पर हमारा पालनकर्ता अनुग्रह न करे और हमें क्षमा न करे तो हम निश्चय नष्ट होंगे।"

(३) व लम्माऽ रजअ़ा मूसा३ इला क़ौमिही ग़ज़्बाऽना असिफ़ऽन् क़ाऽला बिअ्‌समाऽ खलफ़्तुमूनी मिन् बअ्‌दी अ अजिल्तुम् अम्रा रब्बिकुम्; व अल्क़ऽल् अल्वाह़। व अख़ज़ा बिरअ्‌सि अख़ीहि यजुर्रुहू३ इलय्‌हि; क़ाऽलऽब्ना उम्मा इन्नऽल् क़ौमऽस्तज़्अ़फ़ूनी व काऽदूऽ यक्तुलूननी फ़लाऽ तुश्मित् बियऽल् अअ्‌दा३अ वला तज्‌अ़ल्नी मअ़ऽल् क़ौमि-ज़्ज़ालिमीन्॥

और जब मूसा कुपित और शोकातुर हो अपनी जाति की ओर पुनः आया तो कहने लगा—"तुमने मेरे पश्चात् मेरा क्या बुरा प्रतिनिधित्व किया, अपने पालनकर्ता की आज्ञा में क्यों शीघ्रता की?"

और, (यह कह कर) वह पट्टिकाएँ पटक दीं; और अपने भ्राता के शिर (के केशों) को पकड़ा, और उन्हें अपनी ओर खींचने लगा। उसने कहा—'हे मेरी जननी के जनित! लोगों ने मुझे निर्बल समझा; और प्रायः मुझे बध करने को तत्पर थे। अतः मेरे ऊपर मेरे शत्रुओं को मत हंसा, और मुझे पापी पुरुषों में सम्मिलित न कर।'

(४) क़ाऽला रब्बिग़्फ़िर्ली वलि अख़ी व अद्‌ख़िल्नाऽ फ़ी रह़्मतिका व अन्ता अर्‌हमु-र्राहिमीन्॥

(तब मूसा) कहने लगा—"हे पालनकर्ता ! मुझको और मेरे भाई को क्षमा कर; और हमारा अपने अनुग्रह में प्रवेश करा; और तू सर्वोपर र अनुग्रह कर्ता है ।

[मं० २ सिपारा ६ रूकूअ १६।६]

(१) इन्नऽल्लज़ीनऽत्तख़ज़ऽऽल् इ.ज्ला सयनाऽ लुहुम् ग़ज़बुम्मिर्रब्बिहिम् व ज़िल्लतुन् फ़िऽल् ह.याति-द्दुन्याऽ, व कज़ालिका नज्ज़िऽल् मु.फ्तरीन् ॥

हां, जिन्होंने वत्स (की मूर्ति) की रचना की, उनको अपने पालनकर्ता का प्रकोप पहुंचेगा और वे सांसारिक जीवन में नष्ट होंगे. और असत्यारोपण करने वालोंको हम यही दण्ड देते हैं।

(२) वऽल्लज़ीना अमिलुऽ-स्सय्यिआति सुम्मा ताऽबूऽमिन् बअ्दिहाऽ व आमनू२ इन्ना रब्बका मिन् बअ्दिहाऽ लग़फ़ूरुर्र.हीम् ॥

और, जिन्होंने कुकर्म कमाये, और उसके पश्चात् क्षमा-प्रार्थना की तथा विश्वास किया, उन्हें तेरा दयालु पालनकर्ता क्षमा प्रदान करता है ।

(३) वलम्माऽ सकता अम्मूसऽल् ग़ज़बु अख़ज़ऽल् अल्वा.हा व फ़ी नुस्ख़तिहाऽ हुदऽव्व र.ह्मतु ल्लिल्लज़ीनहुम् लिरब्बिहिम् यर्हबून् ॥

और, जब मूसा का प्रकोप शान्त हुआ, उसने पट्टिकाएँ

उठालो; और उनके लिखित निबन्ध में, उनके निमित्त—जो अपने पालनकर्ता से भय करते हैं—पथप्रदर्शन है, अनुग्रह है।

(४) वऽख़्ताऽरा मूसा क़उमहू सब्ई़ना रजुलऽ-ल्लि मीक़ाऽतिनाऽ, फ़लम्मा२ अख़ज़त्हुमु-र्जफ़तु क़ाऽला रब्बि लउ् शिअ्ता अह्लक्तहुम्मिन् क़ब्लु व इय्याऽया, अतुह्लिकुनाऽ बिमाऽ फ़अ़ल-स्सुफ़हा२उ मिन्नाऽ इन् हिया इल्लाऽ फ़ित्नतुका, तुज़िल्लु बिहाऽ मन्तशा२उ व तह्दी मन्तशा२उ; अन्ता वलिय्युनाऽ फ़ऽग़्फ़िर्लनाऽ वऽर्हम्नाऽ व अन्ता ख़य्रुऽल् ग़ाऽफ़िरीन्॥

और, मूसा ने अपनी जाति से चालीस मनुष्य हमारे निश्चित समय को लाने के लिए ग्रहण किये; और जब भूचाल ने उन पर आक्रमण किया, (मूसा) कहने लगा—"हे हमारे पालनकर्ता! यदि तू चाहता, पहले ही उनको और मुझको नष्ट करता। क्या तू एक कार्य के कारण जो हमारे मूर्ख लोगों ने किया-हमको नष्ट करेगा? यह सब तेरा परीक्षण है। जिसको चाहे, तू मार्गच्युत करे और जिसको चाहे सन्मार्ग पर प्रवृत्त करे। तूही हमारा संरक्षक है। अतः हमें क्षमा कर; और हम पर दया कर, और तू क्षमा करने वालों में सर्वोपरि है।

(५) वऽक्तुब्लनाऽ फ़ी हाज़िहि-द्दुन्याऽ ह़सनतऽ

त्व फ़िऽल् आख़िरति इन्नाऽ हुद्नाइ इलयका; क़ाऽला अ़ज़ाबीइ उसीबु बिही मन् अशाइउ, व रह्म.ती वसिअ़त् कुल्ला शयइन्, फ़ सअक्तुबुहाऽ लिल्लज़ीना यत्तक़ूना व युअ्तून-ज़्ज़काता वऽल्लज़ीनहुम् बि आयातिना युअ्मिनून् ॥

और, इस संसार में हमारे निमित्त नेकी लिखदे; और अन्त (आख़िरत) में हम तेरी ओर लौटें। (तब इसने) कहा कि मैं अपने प्रकोप को, जिसपर मैं चाहूं, डालता हूँ; और मेरी दया प्रत्येक वस्तु पर विस्तृत है। अतः जो भय रखते हैं, ज़कात (दान) देते हैं और हमारी आयतों पर विश्वास रखते हैं, उनके नाम उस (दया) को लिख देंगे।

(६) अल्लज़ीना यत्तबिऊ.न-र्रसूल-न्नबिय्यऽल् उम्मिय्यऽल्लज़ी यजिदूनहू मक्तूबऽन् इ.न्दहुम् फ़ि-त्तउ. राति वऽल् इन्जीलि यअ्मुरुहूम् बिऽल् मअ्रूफि व यन्हाहुम् अ़निऽल् मुनकिरा व युहि.ल्लु लहुमु-त्तय्यिबाति व युहर्रिमु अ़लयहिमुऽल् ख़बाइइसा व यज़उ अ़न्हुम् इस्रहुम् वऽल् अग्लालऽल्लती काऽनत् अ़लयहिम्, फ़ऽल्लज़ीना आमनूऽ बिही व अ़ज़्ज़रूहु व नसरूहु वऽत्तबउ.ऽ-न्नूरऽल्लज़ीइ उन्ज़िला मअ़हूइ उलाइइका हुमु-ल्मुफ्लिहू.न् ॥

रसूल, उस निरक्षर नबी,का जो अनुसरण करते हैं कि जिस के सम्बन्ध में तौरेत और इंजील में अपने पास लेख पाते हैं,जो शुभ कर्म करने की आज्ञा देता है; और अशुभ कर्मों का निवारण करता है और उनके वास्ते पवित्र पदार्थ विहित बतलाता है तथा अपवित्र पदार्थों को निषिद्ध नियत करता और जुआ, जो उन पर था, उतारता है। अतः जिन्होंने उस पर विश्वास किया और उससे प्रेम किया तथा उसकी सहायता की, प्राचीनता और उसके प्रकाश * का—जो उसके साथ उतरा है—जिन्होंने अनुसरण किया, वही सफल हुए।

[मं० २ पारा ६, रु० २०।५]

(१) क़ुल् याऽ अय्युहऽ—न्नाऽसु इन्नी रसूलुऽल्लाहि इलय्कुम् जमीअ़ऽ (नि) ऽल्लज़ी लहू मुल्कु—स्समावाति वऽल्‌ अर्ज़ि लाऽ इलाहा इल्लाऽ हुवा युह्यी व युमीतु फ़ आमिनूऽ बिऽल्लाहि व रसूलिहि—न्नबिय्यिऽल् उम्मिय्यिऽल्लज़ी युअ्मिनु बिऽल्लाहि व कलिमातिही वऽत्तबिऊहु लअ़ल्लकुम् तह्तदून् ॥

तू कह, "हे लोगो! मैं तुम सब के लिए अल्लाह का पैग़म्बर हूँ कि जिसका आसमान और पृथिवी में शासन है। उसके अतिरिक्त अन्य की आराधना (योग्य) नहीं। वह जीवित करता है और मारता है। अतः अल्लाह पर और

* कुरान

उसके प्रेषित उम्मी, अर्थात् निरक्षर नबी, पर-जो अल्लाह और उसके सब वाक्य पर विश्वास करता है—विश्वास करो और उसके आधीन हो, कदाचित् तुम्हें सन्मार्ग विदित हो।

(२) व मिन् क़ौमि मूसा३ उम्मतुय्यह्दूना बिऽल्हक़्क़ि व बिही यअ़्दिलून् ॥

और मूसा की जाति में (कुछ लोगों का) एक समुदाय है, जो सत्य का मार्ग बतलाते है; और उसी (की अनुकूलता) पर न्याय करते हैं।

(३) व क़त्तअ़्नाहुमुऽस्नतय् अश्रता अस्बाऽत़ऽन् उममऽन्; व अउ्हय्ना३ इला मूसा३ इज़िऽस्तस्क़ाहु क़ौमुहू३ अनिऽ ज़्रिब्बि असाऽकऽल् हजरा, फ़ऽन्ँ बजसत् मिन्हुऽस्नताऽ अश्रता अयनऽन्; क़द् अ़लिमा कुल्लु उनाऽसिम्मश्रबहुम्; व ज़ल्लल्नाऽ अलय्हिमुऽल् ग़माऽमा व अन्ज़ल्ना अलय्हिमुऽल्मन्ना व-स्सल्वा; कुलूऽमिन्तय्यिबाति माऽ रज़क़्नाकुम्; व माऽ ज़लमूनाऽ वला किन् काऽनू३ अन्फुसहुम् यज़्लिमून्।

और, हमने उन (इस्राईलियों) को बारह जातियों में विभाजित किया, और जब इन जातियों ने उस (मूसा) से पानी मांगा तो हमने मूसा को आज्ञा भेजी—"अपनी लाठी से यह पत्थर मार!" तब उससे बाहर वारि-धाराएं फूट निकलीं लोगों ने अपने अपने घाट पहिचान लिये, हमने उन पर मेघ

की छाया की और उन पर मन्ना व सल्वा उतारे "तुम (उन) पवित्र वस्तुओं का भोजन करो कि जो हमने तुम्हें आहार में प्रदान की हैं।" परन्तु उन्होंने हमारी तो कोई हानि नहीं की किन्तु अपनी हानि करते रहे।

(४) व इज् क़ीला लहुमुऽस्कुनूऽ हाज़िहिऽल् क़र्यता व कुलूऽ मिन्हाऽ ,हय्‌सु शिअ्‌तुम् व कूलूऽ ,हित्ततु न्वऽद्‌खुलुऽऽल् बाऽवा सुज्जदऽ नग़्फ़िर्‌लकुम् ख़ती़आतिकुम्, सनज़ीदुऽल् मुह्‌सिनीन् ॥

और, जब उनको आज्ञा हुई कि इस नगर में निवास करो; और उस में से, जहां से चाहो, लाओ एवं 'हित्तत्तुं (अर्थात् पाप क्षमा करें) कहो; और द्वारमें सिजदा(अर्थात् प्रमाण)करते हुए प्रवेश करो, तब हम तुम्हारे पास क्षमा करेंगे और उपकारियों को विशेष देंगे।

(५) फ़बद्दलऽल्लज़ीना ज़लमूऽ मिन् हुम् क़ौलऽन् ग़य्‌रऽल्लज़ी क़ीला लहुम् फ़अर्सल्नाऽ अलय्‌हिम् रिज्‌ज़ऽम्मिन-स्समाऽइ बिमाऽ काऽनूऽ यज़्लिमून् ॥

फिर अन्यायियों ने उसके अतिरिक्त-कि जो उन्हें बताया गया था—और शब्द लिख दिया। अतः हमने उन पर उनके अन्याय के प्रतिकार में आस्मान से प्रकोप (अज़ाब) अवतीर्ण किया।

[मंजिल २, पारा ९ रु० २१। ६]

(१) वस् अल्हुम् अनिऽल् क़र्यतिऽल्लती काऽनत्
हाऽज़िरतऽल् बह्रि इज़् यअ्दूना फ़ि-स्सब्ति इज़् तअ्ती-
हिम् हीताऽनुहुम् यउ्मा सब्तिहिम् शुर्रअऽव्व यउ्मा लाऽ
यस्बितूना-लाऽ तअ्तीहिम्, कज़ालिका, नब्लूहुम्;
बिमाऽ काऽनूऽ यफ़्सुकून्।

और, उनसे उस नगरी की दशा पूछो कि जो समुद्र के तट पर थी। जब सब्त की आज्ञा के सम्बन्ध में मर्यादा का उल्लंघन करने लगे, तो फिर उन पर सब्त के दिवस पानी के ऊपर मछलियां आने लगीं और जिस दिन सप्ताह न हो, न आतीं। इस प्रकार हम उनकी परीक्षा करने लगे, क्योंकि वह अनाज्ञाकारी थे।

(२) व इज़् क़ाऽलत् उम्मतुम्मिन्हुम् लिमा तइ-
ज़ना क़उमऽ (नि) ऽल्लाहु मुह्लिकुहुम् अउ् मुअ़ज़्ज़ि-
बुहुम् अज़ाऽबऽन् शदीदऽन्; क़ाऽलूऽ मअ़ज़िरतन् इला
रब्बिकुम् व लअ़ल्लहुम् यत्तक़ून्॥

और, जब उनमें एक समुदाय कहने लगा—"उन लोगोंको क्यों शिक्षा करते हो, जिन्हें अल्लाह मारना चाहता है अथवा उन पर प्रचण्ड प्रकोप प्रगट करना चाहता है।"(इस पर वह) कहने लगा—तुम्हारे पालनकर्ता के सन्मुख आक्षेप दूर करने को और कदाचित् वह भय करें।

(३) फ़लम्माऽ नसूऽ माऽ ज़ुक्किरूऽ बिही२ अन्जयनऽऽल्लज़ीना यन्हउ्ना अनि-स्सू३इ व अख़ज़्नऽऽल्लज़ीना ज़लमूऽ बि अज़ाऽबिन् बईसिन् बिमाऽ काऽनूऽ यफ़्सुक़ून् ।

फिर जो उन्हें बतलाया गया था, जब उन्होंने भुला दिया. (तो) हमने उनको बचा लिया जो कुकर्मों का निषेध करते थे और पापियों को उनके आज्ञा-उलंघन के प्रतिकारस्वरूप प्रचण्ड प्रकोप में ग्रस्त किया ।

(४) फ़ लम्माऽ अतउ्ऽ अम्माऽ नुहूऽ अन्हु क़ुल्नाऽ-लहुम् कूनूऽ क़िरदतन् ख़ासिईन् ।

अतः जो काम निषिद्ध बतलाया गया था, जब उससे बढ़ने लगे तो हमने आज्ञा दी कि स्थापित वानर बन जाओ ।

(५) व इज़् तअज़्ज़ना रब्बुका लयब्अ़सन्ना अलयहिम् इला यउ्मिऽल् क़ियामति मय्यसूमुहुम् सू३अऽल् अज़ाऽबि; इन्ना रब्बका लसरीउ्ल् इ.क़ाऽब, व इन्नहू लग़फ़ूरुर्.हीम् ॥

और, वह समय स्मरण करो, जब तुम्हारे पालनकर्ता ने घोषित किया कि प्रलय (क़यामत) के दिवस पर्यन्त, वह अवश्यमेव उन (यहूदियों) के विरुद्ध भेजेगा जो कि उनके साथ कुव्यवहार करेंगे। तेरा पालनकर्त्ता शीघ्र दण्ड देता है; और वह क्षमाशील और दयालु है ।

(६) व क़त्त‍अ्‌नाहुम् फ़िऽल् अर्ज़ि उममऽन्, मिन्हु-मु-स्सालिहूना व मिन्हुम् दूना ज़ालिका व बलउ्‌ना हुम् बिऽल् हसनाति व-स्सय्यिआति लअ़ल्लहुम् यर्जिऊन् ॥

और, हमने उनको भूमि पर विभिन्न समुदायों में विभाजित किया। उनमें से कुछ शुभाचारी और कुछ अन्य प्रकार के थे, और उनकी गुणों और अवगुणों में परीक्षा ली। कदाचित् वह पुनः लौटें।

(७) फ़ ख़लफ़ा मिन् ॅ व अ्‌दि हिम् ख़ल्फु व्वरि सुऽऽल् किताबा यअ्‌ख़ुज़ूना अ़रज़ा हाज़ऽऽल् अद्‌ना व यक़ूलूना सयुग़्फ़रु लनाऽ, व इय्यअ्‌तिहिम् अ़र्जुम्मि स्लुहू यअ्‌ख़ुज़ूहु अलम् युअ्‌ख़ज् अ़लय्‌हिम् मीसाऽक़ुल् किताबि अल्लाऽ यक़ूलुऽ अ़लऽल्लाऽहि इल्लऽल् हक़्क़ा व दरसूऽ माऽ फ़ीहि, व-द्दारुऽल् आख़िरतु ख़य्‌रुल्लिल्लज़ीना यत्तक़ूना, अफ़लाऽ तअ्‌क़िलून् ॥

और, उनके पश्चात् उनके पीछे उत्तराधिकारी आये, जो पुस्तक के उत्तराधिकारी थे। वे तुच्छ जीवन की सामग्री लेते हैं, और कहते हैं कि (हमारा अपराध) हमको क्षमा होगा;

* यहूदियों को अल्लाह के साथ विशेषता प्राप्त होने का गर्व था। वह कहा करते थे 'नह्नु अब्नाअल्लाह व अहब्बाउहू" अर्थात् हम अल्लाह के पुत्र और उसके प्रिय हैं और कुछ दिन के अतिरिक्त नर्काग्नि हमें स्पर्श भी न करेगी।

और यदि ऐसी ही सामग्री पुनः आवे तो ले लेवें। क्या उनसे पुस्तक के सम्बन्ध में प्रतिज्ञा नहीं ली गई कि अल्लाह पर सत्यके अतिरिक्त (अन्य असत्य बात) न बोलें, और जो उसमें लिखा है, वही पढ़ें और संयमियों को अन्तिम गृह (अर्थात् क़यामत काल) श्रेष्ठ है। क्या तुम्हें ज्ञान नहीं ?

(८) वऽल्लज़ीना युमस्सिकूना बिऽल् किताबि व अक़ाऽमुऽस्सलाता; इन्नाऽ ला नुज़ीउ़ अज्रऽल् मुस्लिहीन् ॥

और जो पुस्तक को दृढ़ता से ग्रहण करते हैं, प्रार्थनाऐं (नमाज़)स्थिर रखते हैं,हम उन सुधारकों का फल नष्ट न करेंगे।

(९) व इज़् नतक़्नऽल् जबला फ़ौक़हुम् कअन्नहू ज़ुल्लतुंव्व ज़न्नू३ अन्नहू वाऽक़िउ़न् बिहिम् खुज़ूमा३ आतय्नाकुम् बिक़ुव्वति व्वऽज़्कुरूऽ.माऽफ़ीहि लअ़ल्लकुम् तत्तक़ून् ॥

और, जब हमने उनके ऊपर बितान के मानिन्द पर्वत को उठाया तो वे डरने लगे कि वह उनके ऊपर गिरेगा। (हमने कहा-) "जो हमने तुम्हें प्रदान किया है, उसे दृढ़ता से पकड़े रहो, और उसे स्मरण करते रहो। कदाचित् तुम्हें भय हो।"

[मंजिल २, पारा ९, रुकूअ़ २२। १०]

(१) व इज़् अख़ज़ा रब्बुका मिन् बनीऽ आदमा

मिन् ज़ुहूरिहिम् ज़ुर्रिय्यतहुम् व अशहद हुम् अला३ अन्फ़ुसिहिम्; अलस्तु बिरब्बिकुम्; क़ाऽलुऽ बला, शहिद्नाऽ. अन्त.क़ूलुऽ यउमऽल् क़ियामति इन्नाऽ कुन्नाऽ अन् हाज़ाऽ ग़ाफ़िलीन् ॥

और, जिस समय तेरे पालनकर्त्ता ने आदम के पुत्रों की पीठ में से उनकी सन्तान निकाली और उनसे उनके जीवन पर (इस प्रकार) वचन भराया कि, "क्या मैं तुम्हारा पालन-कर्त्ता नहीं हूँ ?" यह (इसलिए किया कि) कहीं अन्तिम दिवस (क़यामत)में यह न कहें कि-"हम उससे अचेत थे।"

(२) अउ्तक़ूलू३ इन्नमा३ अश्रका आबा३उनाऽ मिन् क़ब्लु व कुन्ना ज़ुर्रिय्यतम्मिन् ँ बअ्दिहिम्, अफ़ तुह्लिकुनाऽ बिमाऽ फ़ अलऽल् मुब्तिलून् ॥

अथवा कहो कि शिर्क (द्वैतवाद) तो हमारे पुरुषाओंने पहले ही निकाल दिया और हम तो उनके पश्चात् उत्पन्न हुई (उनकी) सन्तान हैं। तू हमको एक कर्म पर, जो अपराधियों ने किया है, क्यों नष्ट करता है ?

(३) व कज़ालिका नुफ़स्सिलुऽल् आयाति व लअ़ल्लहुम् यर्जिऊन् ॥

और, इस प्रकार हम आज्ञाओं की विस्तृत व्याख्या करते हैं। कदाचित् वह लोग लौट आवें।

(४) वऽत्लु अ़लय्हिम् नबअऽल्लज़ी२ आतय्नाहु आयातिनाऽ 'फ़ऽन्सलख़ा मिन्हाऽ फ़अत्बअ़हु–श्शय्त़ानु फ़ काऽना मिनऽल् ग़ावीन् ॥

और, उनको उस मनुष्य का समाचार सुनाओ कि जिसे हमने अपनी आयतें प्रदान कीं। पश्चात् वह उन्हें त्याग बैठा, फिर उस पर शैतान ने शासन जमाया। फिर वह मार्ग-भ्रष्टों में हुआ।

(५) व लउ् शिअ्नाऽ लरफ़अ्नाहु बिहाऽ वला किन्नहू२ अख़्लदा इलऽल् अर्ज़ि वऽत्तबअ़ा हवाहु. फ़ मस़-लुहू कमस़लिऽल् कल्बि, इन्तह़्मिल् अ़लय्हि यल्हस् अउ-तत्रुक्हु यल्हस्; ज़ालिका मस़लुऽल् क़उ्मिऽल्लज़ीना कज़्ज़बू बि आयातिना फ़ऽक़्सुसिऽल्क़ससा लअ़ल्लहुम् यतफ़क्करून् ॥

यदि हम चाहते तो उसे ऊंचा उठा लेते, परन्तु वह पृथिवी पर गिर पड़ा और अपनी इच्छानुकूल चला। अतः उसका दृष्टांत कुत्ते के मानिन्द है कि उस पर यदि तू कुछ लाद दे तो वह जीभ निकाल दे और छोड़ दे तो जीभ निकाल दे। यह उन लोगों का दृष्टांत है, जो हमारी आयतों को असत्य बतलाते हैं। अतः तू गाथाओं का वर्णन कर, कदाचित् वह ध्यान करें।

(६) साउअ मस्लऽ (नि) ऽल् क़उ मुऽल्लज़ीना कज़्ज़बूऽ बि आयातिनाऽ व अन्फुसहुम् काऽनूऽ यज़्लिमून् ॥

जो हमारी आयतों को असत्य बतलावें उनका दृष्टांत दूषित है, और वे आत्म-अत्याचार करते हैं।

(७) मय्यह् दिऽल्लाहु फ़ हुवऽल् मुह् तदी, व मय्युज़्लिल् फ़ उलाउइका हुमुऽल् ख़ासिरून् ॥

जिसको अल्लाह मार्ग दिखलावे, वही सन्मार्ग को प्राप्त करता है, और जिसको अल्लाह मार्ग-च्युत कर दे, वह हानि उठावेगा।

(८) वलक़द् ज़रअ्नाऽ लि जहन्नमा कसीऽरम्मिनऽल् जिन्नि वऽल् इन्सि लहुम् क़ुलूबुल्लाऽ यफ़्क़हूना बिहाऽ व लहुम् अअ्युनुल्लाऽ युब्सिरूना बिहाऽ व लहुम्-आज़ाऽनु ल्लाऽ यस्मऊना बिहाऽ; उलाउइका काऽल् अनआऽमि बल् हुम् अज़ल्लु उलाउइका हुमुऽल् ग़ाफ़िलून् ॥

और, हमने नर्क के निमित्त अनेकों मनुष्यों और जिन्नों (देवों) की सृष्टि की है। जिनके हृदय है, वह समझते नहीं, जिनके नेत्र हैं, वह देखते नहीं, और कान हैं, उनसे श्रवण नहीं

करते। यह लोग चौपायों के मानिन्द हैं; प्रत्युत उनसे अधिक मार्ग-भ्रष्ट वह लोग हैं, जो अचेत हैं।

(९) व लिल्लाहिऽल् अस्माउऽल् हुस्ना फ़ऽद्ऊहु बिहाऽ वज़रुऽऽल्लज़ीना युल्हिदूना फ़ी अस्माइही; सयुज्ज़ूना माऽ काऽनूऽ यअ्मलून् ॥

अल्लाह के सब नाम सुन्दर हैं, अतः वह (नाम) बोलकर ही उसका आवाहन करो; और जो उसके नामों के विषय में टेढ़े मार्ग पर चलते हैं, उन्हें त्याग दो। यह अपनी कृति का प्रतिफल प्राप्त करेंगे।

(१०) व मिम्मन् ख़लक़्नाऽ उम्मतुं यह्दूना बिऽल् हक़्क़ि व बिही यअ्दिलून् ॥

और, हमारी सृष्टि में एक ऐसा भी समुदाय है, जो सन्मार्ग सिखलाता है; और उसी के अनुकूल न्याय करता है।

[मंजिल २, पारा ९, रु० २३ । ७]

(१) वऽल्लज़ीना कज़्ज़बू बि आयातिनाऽ सनस्तद्रिजुहुम्मिन् हय्सु लाऽ यअ्लमून् ॥

और, जिन्होंने हमारी आयतें असत्य बतलाईं, उनको हम शनैः-शनैः इस प्रकार पकड़ेंगे कि जिससे उन्हें पता न चले।

---

* क़ुरआन में अल्लाह के निन्यानवे नाम कहे जाते हैं।

(२) व उम्ली लहुम् ; इन्ना कय्दी मतीन् ॥

और उन्हें ढील दूँगा; यद्यपि मेरा कपट पक्का है।

(३) अव लम् यतफ़क्करू ऽ माऽ । बिसाऽहिबिहि-
म्मिन् जिन्नतिन् ; इन् हुवा इल्ला, नज़ीरुम्मुबीन् ॥

क्या उन्होंने नहीं सोचा कि उनके हितैषी (मुहम्मद) की मति पर कुछ शैतान का शासन नहीं है; वह तो साक्षात् भय दिलाने वाला है ?

(४) अव लम् यन्ज़ुरू ऽ फ़ी मलकूति-स्समावाति वऽल् अर्ज़ि व माऽ ख़लक़ऽल्लाहु मिन् शय्इ व्व अन् असाऽ अय्यकूना क़दिऽक्तरबा अजलुहुम् फ़ बिअय्यि हदीसिन् बअ्दहू युअ्मिनून् ॥

क्या आकाश और पृथिवी के साम्राज्य तथा उस वस्तु पर जो अल्लाह ने रची है—दृष्टि नहीं डाली ? और यह इस-लिए हो कि कदाचित् उनका निश्चित काल (नाश) निकट आपहुंचा है। अतः इसके पश्चात् किस पर विश्वास लाएंगे।

(५) मय्युज़्लि लिऽल्लाहु फ़ लाऽ हाऽदिया लहू; व यज़रुहुम् फ़ी तुग़्याऽनिहिम् यअ्महून् ॥

जिसे अल्लाह मार्ग-भ्रष्ट करे, उसे कोई सन्मार्ग सुझाने-वाला नहीं; और वह उनको उनकी उद्दण्डता में भटकते हुए छोड़ रखता है।

(६) यस्अलूनका अनि-स्साअ़ति अय्याऽना मुर्साहाऽ, कुल् इन्नमाऽ इ.ल्मुहाऽ इ.न्दा रब्बी, लाऽ युजल्लीहाऽ लिवक़्तिहा३ इल्लाऽ हुवा, सक़ुलत् फ़ि-स्समावाति वऽल् अर्ज़ि; लाऽ तअ्तीकुम् इल्लाऽ बग़्ततन्, यस्अलूनका क अन्नका .हफ़िय्युन् अ़न्हाऽ; कुल् इन्नमाऽ इ.ल्मुहाऽ इ.न्दऽल्लाहि वला किन्ना अक्सर-न्नाऽसि लाऽ यअ़्लमून् ॥

(हे पैग़म्बर ! लोग) तुझ से उस साइत के सम्बन्ध में पूछते हैं कि (उस क़यामत का) कहीं ठिकाना भी है ?— (तू इनसे) कह कि इस (क़यामत) का बोध तो केवल मेरे पालनकर्त्ता अल्लाहके पास है। वही उसको अपनी उस अवधि पर प्रगट करके दिखलावेगा। वह आकाश और पृथिवी में एक भारी घटना है, जो तुम पर आवेगी तो अकस्मात् आवेगी। हे पैग़म्बर ! यह लोग) तुझ से पूछने लगते हैं, मानो तू उसका खोजी है। तू कह—"उसका ज्ञान केवल अल्लाह के पास है; परन्तु प्रायः लोगों में बुद्धि नहीं।

(७) कुल्ला३ अम्लिकु लिन.फ्सी नफ़्अ़ऽव्वलाऽ ज़र्राऽ इल्लाऽ माऽशाअ३अऽल्लाहु; वलउ् कुन्तु अअ्लमुऽल् ग़ैबा लऽस्तक्सर्तु मिनऽल् ख़ैरि, व माऽ मस्सनिय-

स्सू३उ, इन् अना॑ इल्ला॑ नज़ीरुव्व बशीरुल्लि क़ौमिं युअ्मिनून् ॥

(हे पैग़म्बर!) तू कह कि मैं न अपने आत्मलाभ का ही स्वामी हूँ और न हानि का; परन्तु (वही होकर रहता है। यदि मैं परोक्ष का भेद जानता होता तो मुझे अनेक लाभ होते और हानि कदापि न पहुंचती। मैं तो (केवल) इतना ही हूँ कि विश्वासी लोगों को भय और हर्ष सुनाऊँ।

[मंजिल २ पारा ९ रु० २४।१८]

(१) हुवल्लज़ी ख़लक़कुम्मिन्नफ़्सिव्वाहिदतिंव जअ़ला मिन्हा॑ ज़ौजहा॑ लयस्कुना इलयहा॑; फ़लम्मा॑ तग़श्शाहा॑ हमलत् हम्लन् ख़फ़ीफ़न् फ़मर्रत् बिही, फ़लम्मा॑ अस्क़लद्दअ़वल्लाहा रब्बहुमा॑ लइन् आतयतना॑ स्सालिहल्लनकूनन्ना मिनश्शाकिरीन् ॥

वही (अल्लाह) है, जिसने तुमको एक ही व्यक्ति से बनाया; और उसी से उसका जोड़ा (हव्वा स्त्री को) बनाया, जिससे कि वह उसके साथ निवास करे। फिर जब पुरुषने स्त्री को ढांपा, उसे हलकासा गर्भ* स्थिर हुआ, फिर उसके साथ चलने फिरने लगी। फिर जब बोझल हुई तो दोनों ने अपने पालक

* रिवायत है कि जब हव्वा को हमल (गर्भ) रह गया, तो उसे शैतान

कर्त्ता अल्लाह को (इन शब्दों में) आहूत किया कि यदि तू हमको सर्वथा स्वस्थ (सन्तान) प्रदान करे तो हम तुझे धन्यवाद दें ।

(२) फ़ लम्मा२ आताहुमाऽ साऽलि,हऽन् जअ़ला लहू शुरका३आ फ़ीमा२ आताहुमाऽ फ़तआ़लऽल्लाहु अ़म्माऽ युश्रिकून् ॥

फिर जब उनको सर्वथा स्वस्थ (बालक) प्रदान किया गया तो उसके प्रदत्त पदार्थमें समांश (शरीक) निश्चित करने लगे । फिर अल्लाह उनके समांश बताने से परे (पृथक्) है ।

(३) अयुश्रिकूना माऽलाऽ यख़्लुक़ु शय्अऽव्वहुम् युख़्लक़ून् ॥

किन को समांश (साझीदार) बताते हैं ?—जो एक पदार्थ भी उत्पन्न न कर सके और जो स्वयं उत्पन्न होते हैं ।

ने दर्शन दिये और प्रतिज्ञा की कि यदि वह बालक का नाम अब्दुल्ला (अल्लाह का सेवक जैसा कि आदम ने तजवीज़ किया था) के स्थान में अब्दुल हारस अथवा अलहारिस (फरिश्तों में शैतान का नाम) रक्खेगी तो वह उसे सुखपूर्वक बालक जनेगी, आदम इस बात पर सहमत हो गया और जब बालक उत्पन्न हुआ, उसे उसी नाम से पुकारा गया जिससे वह तत्काल मर गया । यह कहानी कदाचित 'हारस' शब्द से—जिसका अर्थ अर्बी में खेती जोतने वाला और जो अर्बी में अब्दुल हारिस पढ़ाजाता है-निष्कासित की गई है ।

(४) व लाऽ यस्ततीऊ़ना लहुम् नस्रऽन्वलाऽ अन्फ़ुसहुम् यन्सुरून् ॥

और न, उसको सहायता कर सकते हैं, और अपनी ही सहायता करते हैं।

(५) व इन्तद्‌ऊ़हुम् इलऽल् हुदा लाऽ यत्तबिऊ़कुम्, सवाऽउन् अ़लयकुम् अदअ़उतुमूहुम् अम् अन्तुम् साऽमितून् ॥

और, यदि उनको सन्मार्ग पर बुलाओ तो तुम्हारे बतलाने पर न चलें, अतः तुम्हारे लिए एक-सा है चाहे उन्हें बतलाओ अथवा मौन रहो।

(६) इन्नऽल्लज़ीना तद्‌ऊ़ना मिन्दूनिऽल्लाहि इ़बाऽदुन् अम्साऽलुकुम् फ़ऽद्‌ऊ़हुम् फ़ल्यस्तजीबूऽलकुम् इन्कुन्तुम् सादिक़ीन् ॥

जिनको तुम अल्लाह के अतिरिक्त आह्वत करते हो, वह तुम्हारे जैसे अल्लाह के आराधक हैं, कि यदि उनको निमन्त्रित करो तो उन्हें उचित है कि यदि वह सच्चे हैं तो तुम्हारा निमन्त्रण स्वीकार करें।

(७) अलहुम् अर्जुलुंय्यम्शूना बिहाऽ अम् लहुम् अयदिंय्यब्तिशूना बिहाऽ, अम् लहुम् अअ़्युनुंय्युब्सिरूना बिहाऽ अम् लहुम् आज़ाऽनुंय्यस्मऊ़ना बिहाऽ, क़ुलिऽ

हूऊ, शुरकाऽअा कुम् सुम्मा कीदूनि फ़लाऽ तुन्ज़िरूनु ॥

क्या उन (देवों) के पैर हैं जिनसे चलते हैं; अथवा उनके हाथ हैं जिनसे ग्रहण करते हैं, अथवा उनके नेत्र हैं जिनसे देखते हैं, अथवा उनके कान हैं जिनसे श्रवण करते हैं? तू कह–अपने साथियों को बुलाओ, फिर मेरे निमित्त षड्यन्त्र रचो और विलम्ब न करो।

(८) इन्ना वलिय्यि यऽल्लाहुऽल्लज़ी नज़्ज़लऽल् किताबा व हुवा यतवल्ल–स्सालि,हीन् ॥

मेरा संरक्षक अल्लाह है, जिसने पुस्तक उतारी है, और शुभ उपासकों की संरक्षता करता है।

(९) वऽल्लज़ीना तद्ऊ,ना मिन्दूनिही लाऽ यस्त-तीऊ,ना नस्रकुम् वलाऽ अन्फुसहम् यन्सुरून् ॥

और, जिन्हें तुम अल्लाह के अतिरिक्त आहूत करते हो, वह तुम्हारी सहायता नहीं कर सकते और न आत्म-रक्षा कर सकते हैं।

(१०) व इन् तद्ऊ,हुम् इलऽल् हुदा लाऽ यस्म-ऊ,ऽ; व तराहुम् यन्ज़ुरूना इलय्का वहुम् लाऽ युब्सिरून् ॥

और, यदि उनको सन्मार्ग की ओर आमन्त्रित करो, तो कुछ न सुनें; और तू देखे कि वे तेरी ओर घूरते हैं; और कुछ नहीं देखते।

(११) खुज़िऽल् अ़फ्वा वअ्मुर्बिऽल् उ.र्फ़ि व अअ्रिज् अ़निऽल् जाहिलीन् ॥

पूर्णतः क्षमा कर, और शुभ कर्म की आज्ञा दे तथा मूर्खों से पृथक् रह।

(१२) व इम्माऽ यन्ज़ा ग़न्नका मिन-श्शय्तानि नज्.गुन् फ़ऽस्तइ.ज् बिऽल्लाहि, इन्नहू समीऽन् अ़लीम् ॥

और, यदि तुझे कभी शैतान की उत्तेजना आवेशयुक्त कर दे तो अल्लाह की शरण पकड़, वही सुनता है, जानता है।

(१३) इन्नऽल्लज़ीनऽत्तक़उऽ इज़ाऽ मस्सहुम् ता़३-इफुम्मिन-श्शय्तानि तज़क्करूऽ फ़ इज़ाऽ हुम्मुब्सिरून् ॥

जो (अल्लाह का) भय रखते हैं, उन पर जब शैतान की माया का प्रभाव पड़े, अल्लाह का स्मरण करते हैं। फिर तभी उनको बोध हो गया।

(१४) व इख्.वाऽनुहुम् यमुद्दूनहुम् फ़िऽल् ग़य्यि सुम्मा लाऽ युक़्सिरून् ॥

और, उन (शैतानों) के भाई उनको भूल की ओर प्रवृत्ति करते हैं। फिर उसमें कोई न्यूनता नहीं करते।

(१५) व इज़ाऽ लम् तअ्तिहिम् बिआयतिन् क़ाऽलूऽ लउलऽज्तबय्तहाऽ; क़ुल् इन्नमा३ अत्तबिउ माऽ यू.हा३ इलय्या मिर्रब्बी हाज़ाऽ बसा३इरु मिर्रब्बिकुम् व हुदव्व र.ह्मतुल्लि क़उ्मिय्युअ्मिनून् ॥

और, यदि कहीं तू उनके पास कुरान की कोई आयत न लेकर जावे तो कहें-"तू क्यों छांटकर न लाया ?" (हे पैग़म्बर! इन्हें) तू कह कि मैं उसी पर चलता हूँ, जो मेरे पालनकर्त्ता की ओर से मुझ पर आज्ञा आवे।

(१६) व इज़ाऽ कुरिअऽल् कुर्आनु फ़ऽस्तमिऊ ऽ लहू व अन्सितूऽ लअ़ल्लकुम् तु ह्मून् ॥

और, जब कुरान पढ़ा जावे तो उस ओर कान रक्खो और मौन रहो; कदाचित् तुम पर अनुग्रह हो।

(१७) वऽज़् कुर्रब्बका फ़ी नफ़्सका तज़र्रुअ़ऽव्व ख़ीफ़तऽव्वदूनऽल् जह्रि मिनऽल् क़ौलि बिऽल् ग़ुदुव्वि वऽल् आसाऽलि वऽलाऽ तकुम्मिनऽल् ग़ाफ़िलीन् ॥

और, अपने अन्तःकरण में डर कर और (साधारण) वाणी के शब्द से धीमे शब्द में प्रातः और सायं के समय*, अपने पालनकर्त्ता का सुमिरन कर और अचेत मत हो।

(१८) इन्नऽल्लज़ीना इ न्दा रब्बिका लाऽ यस्तक्बिरूना अ़न् इ बाऽदतिही व युसब्बिहूनहू व लहू यस्जुदून् ॥

जो लोग तेरे पालनकर्त्ता के पास हैं, प्रार्थना से प्रमाद नहीं करते, और उसके शुद्ध स्वरूप का स्मरण करते हैं; और उसी को सिजदा (साष्टांग दण्डवत) करते हैं।

---

* कुरान में पञ्चकालीन नमाज का कहीं वर्णन नहीं। हां, इस आयत में स्पष्टतः सायं प्रातः मानसिक प्रार्थना की ओर संकेत है जो आर्य्यों की सन्ध्या का अनुकरण है।

* ओम् *

सूरये-अन्फ़ाऽल*

नवें पारे का शेषांश

मँजिल २ पारा ९ रु० १०

(१) यस् अलूनका अ़निऽल् अन्फ़ाऽलि; कुलिऽल् अन्फ़ाऽलु लिल्लाहि व-र्रसूलि, फ़ऽत्तकुऽऽल्लाहा व अस्लिहूऽ ज़ाऽता बय्नि कुम् व अतीउऽऽल्लाहा व रसूलहू२ इन् कुन्तुम्मुअ्मिनीन् ॥

(हे पैग़म्बर!) लोग तुझ से लूट के धन के सम्बन्ध में पूछते हैं, तू कह "लूट का माल अल्लाह का और पैग़म्बर (मुहम्मद सा०) का है। अतः अल्लाह से डरो और परस्पर

---

* यह सूरत मदीने में हिजरी के दूसरे वर्ष में उतरी। इसमें १० रुकूअ और ७५ आयतें हैं। इसका अधिकांश बद्र के युद्ध सम्बन्धी चमत्कारों के सम्बन्ध में है। अनफ़ाल का शब्दार्थ लूट का माल, अतः सूरत का आरम्भ हो काफ़िरों से लूटे हुए माल के विभाजन की मीमांसा करते हुए होता है। बद्र के युद्धमें लूटे हुए मालके सम्बन्ध में मुहम्मद साहब के डेरे के रक्षकों ने मुहम्मदसाहब से यह प्रश्न पूछा था, जिसका उत्तर हजरत ने यह दिया कि लूट का माल अल्लाह और पैगम्बर का है।

सन्धि करो, और यदि विश्वासी हो तो अल्लाह और उसके पैग़म्बर की आज्ञा का अनुसरण करो।

(२-३) इन्नमऽऽल् मुअ्मिनूनऽल्लज़ीना इज़ाऽ ज़ुकिरऽल्लाहु व जिलत् क़ुलूबुहुम् व इज़ाऽ तुलियत् अलय्हिम् आयातुहू ज़ाऽदत्हुम् ईमाऽनऽ व्व अला रब्बिहिम् यतवक्कलूनऽल्लज़ीना युक़ीमून-स्सलाता व मिम्माऽ रज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून् ॥

विश्वासी (मुसल्मान) वही हैं कि जब अल्लाह का वर्णन आता है, उनके हृदय भयभीत हो जाते हैं; और जब उनके वाक्य को पढ़ते हैं तो उनका विश्वास बढ़ता है और अपने पालनकर्त्ता पर विश्वास रखते हैं।

(४) उलाऽइका हुमुऽल् मुअ्मिनूना ,हक़्क़ऽन् ; लहुम् दरजातुन् इ,न्दा रब्बिहिम् व मग़्फ़िरतुव्व रिज़्क़ुन् करीम् ॥ ४ ॥

वही सच्चे विश्वासी (मुसल्मान) हैं, उनको अपने पालनकर्ता के पास पदवियां (और) क्षमा और अनुग्रहों का अन्न प्राप्त है।

(५) कमाऽ अख़्रजका रब्बुका मिन् ँ बय्-तिका बिऽल् ,हक़्क़ि व इन्ना फ़रीक़ऽम्मिनऽल् मुअ्मिनीना ल कारिहून् ॥ ५ ॥

जैसे तुझको तेरे पालनकर्त्ता ने सत्य कर्म के लिए अपने गृह से निष्कासित किया; और यद्यपि एक मौमिन मुसल्मानों की मण्डली इसके विरुद्ध थी।

(६) युजाऽदिलूनका फ़िऽल् हक़्क़ि बअ्दा माऽ तबय्यना कअन्नमाऽ युसाऽक़ूना इलऽल् मउ्ति वहुम् यन्ज़ुरून् ॥ ६ ॥

तुझसे सत्य बात प्रगट हुए पश्चात्, विवाद करते हैं, मानो उनको आंखों देखते हुये मृत्यु की ओर पठाते हैं।

(७) व इज़् यइदुकुमुऽल्लाहु इह्द-त्ताऽइफ़तय्नि अन्नहाऽ लकुम् व तवद्दूना अन्ना ग़य्रा ज़ाऽति-श्शउ्कति तकूनु लकुम् व युरीदुऽल्लाहु अय्युहिक़्क़ऽल् हक़्क़ा बिकलिमातिही व यक़्तअ़ा दाऽबिरऽल् काफ़िरीन् ॥ ७ ॥

और, जिस समय अल्लाह तुमसे दो दलों में से एक (पर आक्रमण करने) की प्रतिज्ञा करता था कि निस्सन्देह वह (लूट) तुम्हारे अधिकारमें आवेगी और तुम(वह)चाहते थे कि जिसमें

---

* मुहम्मद साहब ने ठहरा लिया था कि उस कुरेश के व्यौपारियों के दल पर—जो सूरियामे मक्काको जारहा था—धोखे से आक्रमण करें। अबूसफियान जो इस दल का दलपति था—इस बात को जान गया और मक्का को समाचार भेजा। वहां से एक सहस्र शस्त्रधारी मनुष्य चल पड़े इस कारण मुहम्मदसाहब के अनुयायियों में विवाद हुआ, कोई तो आक्रमण करने के पक्ष में थे और कोई विपक्ष में।

तुम्हारे कांटा न लगे और वह तुम्हें मिल जाय, और अल्लाह चाहता था कि सत्य को अपने वाक्यों से पुष्टि करे और काफ़िरों का पृष्ठ भाग (पीछा) काटे।

(८) लियुहि़क़्क़ऽल् ह़क़्क़ा व युब्ति़लऽल् बाऽति़ला व लउ् करिहऽल् मुज्रिमून् ॥ ८ ॥

जिससे सत्य को सत्य (सिद्ध) करे और मिथ्या को मिथ्या (सिद्ध) करे और यद्यपि पापी सहमत न होंगे।

(९) इज़् तस्तग़ीसूना रब्बकुम् फ़ऽस्तजाऽबा लकुम् अन्नी मुमिद्दुकुम् बि अल्फ़िम्मिनऽल् मलाऽइकति मुर्दिफ़ीन् ॥ ९ ॥

और, जब तुमने अपने पालनकर्त्ता से प्रार्थना की तो उस के निमित्त इस बात को ग्रहण किया कि मैं तुम्हारी सहायता एक सहस्र* फ़रिश्तों के साथ करूंगा, और उनके पीछे और भी होंगे।

(१०) वमाऽ जअ़लहुऽल्लाहु इल्लाऽ बुश्रा व लि त़त्मइन्ना बिही क़ुलूबुकुम्; व मऽ-न्नस्रु इल्लाऽ मिन् इ़न्दिऽल्लाहि; इन्नऽल्लाहा अ़ज़ीज़ुन् ह़कीम् ॥ १० ॥

और, यह तो अल्लाह ने केवल शुभ समाचार दिया है

* सू० आलि इम्रान आयत १२० में फ़रिश्तों की संख्या ३००० है इसको यह कह कर समझाया जाता है कि पहले १००० फ़रिश्ते थे, पीछे ३००० हो गये।

और यह इसलिये कि तुम्हारे मन सन्तुष्ट हों और सहायता तो केवल अल्लाह की ओर से है, अल्लाह शक्तिशाली और बुद्धिमान है।

(मंजिल, २ पारा ९, रु० २।६)

(१) इज़् युग़श्शीकुमु-न्नुआऽसा आमनतम्मिन्हु व युनज़्ज़िलु अलय्कुम्मिन-स्समाऽइ माऽअल्लि युतह् हिरकुम् बिही व युज़्हिबा अन्कुम् रिज्ज़-श्शय्तानि व लियर्बिता अला कुलूबिकुम् व युसब्बिता बिहिऽल् अक़्दाम् ॥ ११ ॥

जिस समय तुम पर अपनी ओर से रक्षा के लिए निद्रा भेज दी और तुम पर आस्मान से पानी उतारा (वर्षाया), जिससे उससे तुम को पवित्र करे और तुमसे शैतान की अपवित्रता दूर करदे और तुम्हारे हृदयोंको दृढ़ करदे और (साथही) तुम्हारे पग (भी) स्थिर करे।

(२) इज़् यूही रब्बुका इलऽल् मलाऽइकति इन्नी मअकुम् फ़ सब्बितुऽऽ ल्लज़ीना आमनूऽ; सउल्क़ी फ़ी कुलूबिऽल्लज़ीना कफ़रुऽ-र्रुअबा फ़ऽज़्रिबूऽ फ़उक़ऽल् अअ्नाऽक़ि वऽज़्रिबूऽ मिन् हुम् कुल्ला बनाऽन् ॥ १२ ।

और, जब तेरे पालन-कर्त्ता ने फ़रिश्तों को आज्ञा भेजी कि मैं तुम्हारे साथ हूँ अतः तुम मुसलमानों के मनों को शुद्ध कर दो, मैं

क़ाफ़िरों के मन में भय डाल दूंगा, अतः उनकी गरदनें मारो और उनकी अंगुलियों के अग्रभागों (पोरुओं) पर आघात पहुंचाओ (अर्थात् कुचलो)।

(३) ज़ालिका बि अन्नहुम् शाऽक्कुऽऽल्लाहा व रसूलहू, व मय्युशाऽक़िक़िऽल्लाहा व रसूलहू, फ़ इन्नऽ-ल्लाहा शदीदुऽल् इ,क़ाऽब् ॥ १३ ॥

यह इसलिये कि वह अल्ला और उसके पैग़म्बर के विरोधी हुये और जो कोई अल्ला और उस के पैगम्बर का विरोधी हुआ तो अल्लाह की भीषण मार है।

(४) ज़ालिकुम् फ़ज़ूक़ूहु व अन्ना लिल् काफ़िरीना अज़ाब–न्नाऽर् ॥ १४ ॥

इसे तो तुम चखलो और जाने रहो कि काफ़िरों के लिये दोज़ख का दुःख है।

(५) याऽ अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनूऽ इज़ाऽ लक़ी-तुमुऽल्लज़ीना कफ़रूऽ ज़हूफ़ऽन् फ़ लाऽ तुवल्लू हुमुऽल् अद्बार् ॥ १५ ॥

हे ईमान वालो! जब तुम काफिरों से युद्धक्षेत्र में भिड़ो तो उनको पीठ मत दो।

(६) व मय्युवल्लिहिम् यउ्मइज़िन् दुबुरहूऽ इल्लाऽ मुत,हर्रिफ़ऽल्लि क़िताऽलिन् अउ् मुत,हय्यिज़ऽन् इला फ़ि

अतिन् फ़क़द् बा३आ बिग़ज़बिम्मिनऽल्लाहि वमअ्वाहु जहन्नमु ; व बिअ्सऽल् मसीर् ॥ १६ ॥

जो मनुष्य उस दिन उन्हें और जो मनुष्य इसके अतिरिक्त कि युद्ध की निपुणता दिखाता हो अथवा सेना में आ मिला हो उन्हें पीठ दिखावेगा तो उस पर अल्लाह का प्रकोप होगा और उसका निवास नर्क है और वह कैसे बुरे स्थान पर ठहरेगा।

(७) फ़लम् तक़्तुलूहुम् वला 'किन्नऽल्लाहा क़तल-हुम्, व माऽ रमय्ता इज़् रमय्ता वला किन्नऽल्लाहा रमा; व लियुब्लियऽल् मुअ्मिनीना मिन्हु बला३अन् हसनऽन्, इन्नऽल्लाहा समीउ़न् अ़लीम् ॥ १७ ॥

अतः उनको तुमने नहीं मारा, परन्तु अल्लाह ने मारा और तूने उस समय (जो) मिट्टी फेंकी थी, (वह) तूने नहीं फेंकी परंतु अल्लाह ने फेंकी और क्या मुसल्मानों पर अपनी ओर से उत्तम उपकार चाहता था, निश्चय अल्लाह सुनता जानता है।

(८) ज़ालिकुम् व अन्नऽल्लाहा मूहिनु कय्दिऽल् काफ़िरीन् ॥ १८ ॥

यह तो हो चुका और बात रक्खो कि अल्लाह काफिरों के उपायों को शिथिल करेगा।

(९) इन्तस्तफ़्तिहूऽ फ़क़द्जा३अकुमुऽल् फ़त्हु, व इन्तन्तहूऽ फ़हुवा ख़य्रुल्लकुम्, व इन्तऊ़दूऽ नऊ़द्,

व लन्तुग़्निया अन्कुम् फ़िअतुकुम् शय्अऽव्वलउ्
कसुरत् व अन्नऽल्लाहा मअऽल् मुअ्मिनीन् ॥ १६ ॥

यदि तुम विजय चाहो तो तुमको अल्लाह की विजय पहुंच चुकी, और यदि रुक जाओ तो तुम्हारा भला है; और यदि पुनः करोगे तो हम भी पुनः करेंगे, और तुम्हारा समुदाय तुम्हारे काम न आवेगा; चाहे अधिक ही क्यों न हो; और स्मरण रक्खो कि अल्लाह मुसल्मानों के साथ है।

[मंजिल २ पारा ९, रु० ३।६]

(१) या३ अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनू३ अतीउऽऽ-
ल्लाहा व रसूलहू वला॒ तवल्लउऽ अन्हु व अन्तुम् तस्म-
ऊन् ॥ २० ॥

हे मुसल्मानो! अल्लाह और उसके पैग़म्बर की आज्ञा के आधीन रहो उसे सुने पीछे, उससे विमुख मत हो।

(२) वलाऽ तकूनूऽ कऽल्लज़ीना क़ाऽलू समिअ्नाऽ
वहुम् लाऽ यस्मऊ़न् ॥ २१ ॥

और, वैरी मत हो जिन्होंने कहा कि हमने सुना और वे सुनते नहीं।

(३) इन्ना शर्र-द्दवाऽब्बि इन्दऽल्लाहि-स्सुम्मुऽल्
बुक्मुऽल्लज़ीना लाऽ यअ्क़िलून् ॥ २२ ॥

अल्लाह के यहां निकृष्ट पशुओं में वही (काफिर) ठहरे, गूंगे हैं जिन्हें बोध नहीं।

(४) व लउ् अलिमऽल्लाहु फ़ीहिम् ख़य्रऽल्ल-अस्मअ़हुम्; वलउ् अस्मअ़हुम् लतवल्लउ्ऽ व्वहुम्मु-अ़्रिज़ून् ॥ २३ ॥

और यदि अल्लाह को इनमें कुछ सद्गुण दिखाई देना तो उनको सुनाता, और जो इन सबको सुनावे तो पराङ्मुख होकर उलटे लौटें।

(५) या३ अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनुऽऽस्तजीबूऽ लिल्लाहि व लि-र्रसूलि इज़ाऽ दअ़ाऽकुम् लिमाऽ युह्यीकुम्, वाऽअ़्लमू३ अन्नऽल्लाहा यहूलु बय्नऽल् मर्इ व क़ल्बिही व अन्नहू इलय्हि तुह्शरून् ॥ २४ ॥

हे मुसल्मानो! अल्लाह और उसके पैगम्बर की आज्ञा सुन कर उस पर विश्वास करो जब कि वह तुमको एक (ऐसे) कार्य के लिए-जिसमें तुम्हारा जीवन है-आह्वान करे; और यह स्मरण रक्खो कि अल्लाह मनुष्य से उसके मन को रोक लेता है और यह कि तुम को उसी के समीप एकत्रित होना है।

(६) वऽत्तक़ूऽ फ़ित्नतल्लाऽ तुसीबन्नऽल्लज़ीना ज़लमूऽ मिन्कुम् ख़ा३स्सतन् वाऽअ़्लमू३ अन्नऽल्लाहा शदीदुऽल् इ़क़ाऽब् ॥ २५ ॥

और, इस उत्पात से घृणा करो; तुम में से अन्यायियों पर विशिष्ट रूप से यह (प्रकोप) अवतीर्ण न होगा; और ज्ञात रहे कि अल्लाह का आतङ्क कठोर है।

(७) वऽज़्कुरू३ इज़् अन्तुम् क़लीलुम्मुस्तज़्-अफ़ूना फ़िल् अर्ज़ि तख़ाऽफ़ूना अय्यतख़त्तफ़कुमु-न्नाऽसु फ़ आवाकुम् व अय्यदकुम् बि नस्रिही व रज़क़कुम्मिन-त़्त़य्यिबाति लअ़ल्लकुम् तश्कुरून् ॥ २६ ॥

और, (उस समय का) स्मरण करो जब कि तुम (मक्का) देश में अल्पसंख्यक और पराधीनावस्था में पड़े हुये डरते थे कि कहीं तुमको लोग लूट (न लें, फिर उसने तुमको (मदीने में) स्थान दिया और अपनी सहायता से बल प्रदान किया और तुमको भोजनार्थ पवित्र पदार्थ प्रदान किये कि कदाचित् तुम कृतज्ञता स्वीकार करो।

(८) या३ अय्युहऽल्लज़ीना आमनूऽ लाऽ तख़ूनु-ऽऽल्लाहा व-र्रसूला व तख़ूनू३ व अमानातिकुम् व अन्तुम् तअ़्लमून् ॥ २७ ॥

हे मुसल्मानो ! अल्लाह और उसके पैग़म्बर से छल मत करो और न ज्ञान पूर्वक अपनी धरोहर में धोखा करो।

(९) वाऽअ़्लमू३ अन्नमा३ अम्वाऽलुकुम् व अउ्लाऽ-दुकुम् फ़ित्नतुव्व अन्नऽल्लाहा इ़न्दहू३ अज्रुन् अ़ज़ीम् ॥

और यह ज्ञान रहे कि तुम्हारी सम्पत्ति और सन्तति माया-मोह है; और यह कि अल्लाह के पास बड़ा प्रतिफल है ।

[मं० २ सिपारा ६ रुकूअ ४।६]

(१) या अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनू२ इन्तत्तकुल्ला-हा यज्अल्लकुम् फ़ुर्क़ाऽनऽ०व यकफ़्फ़िर्अन्कुम् सय्यि-आतिकुम् व यग़्फ़िर्लकुम्; वऽल्लाहु ज़ुऽल् फ़ज़्लिऽल् अज़ीम् ॥ २६ ॥

हे मुसलमानो ! यदि अल्लाह से भय करते रहोगे तो वह तुम में निर्णय कर देगा और तुम से तुम्हारे पाप उतारेगा और तुम्हें क्षमाप्रदान करेगा; और अल्लाह का अनुग्रह महान् है ।

(२) व इज़् यम्कुरु बिकऽल्लज़ीना कफ़रूऽ लियु-स्बितूका अउ् यक़्तुलूका अउ् युख़्रिजूका; व यम्कुरूना व यम्कुरुऽल्लाहु; वऽल्लाहु ख़यरुऽल् माऽकिरीन ॥३०॥

और जब काफ़िर कपट करने लगे कि तुमको बिठावें अथवा मार डालें अथवा निकाल दें और वह भी कपट करते थे और अल्लाह भी कपट करता था, और अल्लाह सर्वोपरि कपटी है ।

(३) व इज़ाऽ तुत्ला अलय्हिम् आयातुनाऽ क़ाऽ-

लऽ क़द् समिअ्नाऽ लउ् नशाउ ल कुल्नाऽ मिस्ला हाज़ा इन् हाज़ा इल्ला असाऽतीरुल् अव्वलीन् ।३१॥

और जब कोई उन्हें हमारी आयतें पढ़ कर सुनावे तो कहते हैं कि हम सुन चुके हैं, हम चाहें तो ऐसे सुना सकते हैं, यह कुछ नहीं हैं; केवल पूर्वजों की कहानियां हैं।

(४) व इज् क़ाऽलुऽ-ल्लाहुम्मा इन् काऽना हाज़ा हुवऽल् हक़्क़ा मिन् इन्दिका फ़ अम्तिर् अलयनाऽ हिजाऽरतम्मिन-स्समाइ अविऽअ्तिनाऽ वि अज़ाऽबिन् अलीम् ॥ ३२ ॥

और जब कहने लगे कि हे अल्लाह ! यदि तेरी ओर से यही मत सत्य है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा अथवा हम पर दुःख का दण्ड उतार।

(५) व माऽ काऽनऽल्लाहु लियअ्ज़िबहुम् व अन्ता फ़ी हिम्, वमाऽ काऽनऽल्लाहु मुअ्ज़िबहुम् व हुम् यस्तग़्फ़िरून् ॥ ३३ ॥

और जब तक तू उनमें था, अल्लाह उन पर आतङ्क (प्रगट) न करता था और जब तक वह (पापों को) क्षमा करता रहेगा, अल्लाह उन पर आतङ्क प्रगट न करेगा।

(६) व माऽ लहुम् अल्लाऽ युअ्ज़िबहुमुऽल्लाहु वऽल्लाहु वहुम् यसुद्दूना अनिऽल् मस्जिदिऽल् हराऽमि वमाऽ

काऽनू३ अउ्लियाऽ३अहू; इन् अउ्लियाऽ३उहू३ इल्लऽऽल् मुत्तकूना वला किन्ना अक्सरहुम् लाऽ यअ्लमून् ॥३४॥

और उनमें क्या (गुण) है कि अल्लाह उन पर प्रकोप न करे और वह मस्जिद हराम (काबे में जाने) से रोकते हैं, और (तथापि) उसके अधिकारी * नहीं, उसके अधिकारी तो वही हैं जो संयमी हैं; परन्तु वह प्रायः परिचित नहीं।

(७) व माऽकाऽना सलाऽतुहुम् इ्न्दऽल् बय्ति इल्लाऽ मुकाऽ३अऽव्व तस्दियतन्; फ़ज़ूकुऽल् अज़ाऽबा बिमाऽ कुन्तुम् तक्फ़ुरून् ॥ ३५ ॥

और उनकी नमाज़ (प्रार्थना) कुछ न थी; (किन्तु) केवल काबे के पास सीटियां और तालियां बजाना ‡ (Whisling

---

* वस्तुतः क़ुरैश ही काबा के अधिकारी थे, परन्तु वहां मूर्ति पूजा और अनुचित चेष्टा करते थे। इसीलिए क़ुरान उन्हें काबा का अधिकारी नहीं समझता; अन्यथा काबा तो उनको कौम के अधिकार मक्का में विजय के पश्चात् भी चला आता था।

‡ It is that they used to go round the Caaba naked, both men and women, whistling at the same time through their frog fingers and clapping their hands

स्त्री पुरुष काबा की नंगे होकर परिक्रमा करते थे और साथ ही ताली और चुटकियां बजाते थे। इसी आयत का आश्रय पाकर—इसी के असत्य आधार पर भारत के मुसल्मान मस्जिदों के सामने बाजा बजाने से हिन्दुओं को रोका करते हैं; परन्तु क़ुरान की आयत उन्हें यह अधिकार नहीं देती।

बेजावी में है कि कोई कहते हैं कि लोग इस प्रकार का कोलाहल मुहम्मद साहब की नमाज़ में विघ्न डालने को करते थे और स्वयं प्रार्थना करने का बहाना बनाते थे।

and ciapping) था, अतः अपने कुफ़् का फल आस्वादन करो !

(८) इन्नऽल्लज़ीना कफ़रूऽ युन्फ़िक़ूना अम्वाऽलहुम् लियसुद्दूऽअन् सबीलिऽल्लाहि; फ़सयुन्फ़िक़ूनहाऽ सुम्मा तकूनु अलयहिम् हस्रतन् सुम्मा युग़्लबून । वऽल्लज़ीना कफ़रू३ इला जहन्नमा युह़्शरून् ॥ ३७ ॥

जो लोग काफ़िर हैं, अपना द्रव्य (इसलिये) व्यय करते हैं कि (लोगों को) अल्लाह के मार्ग से रोकें, अतः अभी और व्यय करेंगे, पश्चात् (अन्त में) उनको पश्चात्ताप होगा; और अन्त में पराजित होंगे और जो काफिर रहेंगे वे नर्क (दोज़ख़) को भेजे जावेंगे।

(६) लियमीज़ऽल्लाहुऽल् ख़बीसा मिन-त्तय्यिबि व यज्अलऽल् ख़बीसा बअ्ज़हू अला बअ्ज़िन फ़ यर्कुमहू जमीअऽन् फ़ यज्अलहू फ़ी जहन्नमा; उलाऽइका हुमुऽल् ख़ासिरून् ॥ ३७ ॥

जिससे कि अल्लाह अपवित्र को पवित्र से पृथक् करे और एक अपवित्र को एक (दूसरे) अपवित्र पर रखे, फिर सब का ढेर करे, फिर उसको दोज़ख़ (नर्क) में डाले, यही लोग हानि उठाने वाले हैं ।

[मँजिल २ पारा ६ रु ५।७]

(१) कुल्लिल्लज़ीना कफ़रू३ इय्यन्तहूऽ युग़्फ़-र्लहुम्माऽ क़द् सलफ़ा, व इय्य ऊ,दूऽ फ़क़द् मज़त् सुन्न-तुऽल् अव्वलीन् ॥ ३८ ॥

(हे पैग़म्बर !) तू काफ़िरों से कह दे कि यदि (हमारे विरोध से) रुके रहोगे तो जो कुछ कर चुके हो क्षमा हो जायगा, और यदि वही करोगे तो पूर्वजों का आदर्श (दण्ड इनके सामने) पहले ही व्यतीत हो चुका है (अर्थात् पूर्वजों के भोगे दण्ड के अनुसार इन्हें दण्ड भोगना पड़ेगा ।)

(२) व क़ाऽतिलू हुम् ,हत्ता लाऽ तकूना फ़ित्नतुंव्व यकूनद्दीनु कुल्लुहू लिल्लाहि, फ़इनिऽन्तहउ्ऽ फ़ इन्नऽ-ल्लाहा बिमाऽ यअ्मलूना बसीर् ॥ ३९ ॥

और (ऐसी अवस्था में) उनसे युद्ध * करते रहो जब तक कि उपद्रव (मूर्ति पूजा) के सम्बन्ध में ⇔ किसी प्रकार

---

* 'क़ाऽतिलू' का स्पष्ट अर्थ क़त्ल करने का है, परन्तु शाहअब्दुला क़ादिर मौ० रफ़ीउद्दीन, मौ० वली उल्लाह, George sale, Cannon Sell, J. Passmore and J. M. Bodwell प्रायः सभी इसका अर्थ to fight अर्थात् युद्ध करना अथवा लड़ना करते हैं। अतः हमें भी यही मान्य है।

⇔ Mr G. Sell इसका अर्थ इस प्रकार करते हैं—gifht against them until there be no opposition in favour of idolatory, and the religion be wholly God's.

का विवाद) न रहे और सर्वत्र अल्लाह का मत अथवा इस्लाम (प्रचलित) हो जावे, पश्चात् यदि वह (कुफ़ अर्थात् मूर्ति पूजादि से) रुक जावें तो अल्लाह उनके कार्य देखता है।

(३) व इन् तवल्लउऽ फ़ाऽअ़्लमूऽ अन्नऽल्लाहा मउ्लाकुम्; निअ़्मऽल् मउ्ला व निअ़्म-न्न सीर् ॥ ४० ॥

और यदि वह न मानें तो समझलो कि अल्लाह तुम्हारा समर्थक है, वह कैसा अच्छा समर्थक और कैसा अच्छा सहायक है!



पारा वाऽअ़लमू

(४) वाऽ अ़लमूऽ अन्नमाऽ ग़निम्तुम्मिन् शयइन्
फ़ अन्ना लिल्लाहि ख़ुमुसहू व लिर्रसूलि व लिज़िऽल्
कुर्बा वऽल् यतामा वऽल् मसाकीनि वऽब्नि-स्सबीलि
इन्कुन्तुम् आमन्तुम् बिऽल्लाहि वमाऽ अन्ज़ल्नाऽ अ़ला
अ़ब्दिनाऽ यउमऽल् फ़ुर्क़ाऽनि यउमऽल् तक़ऽल् जम्-
आ़नि, वऽल्लाहु अ़ला कुल्लि शयइन क़दीर् ॥ ४१ ॥

और ज्ञात रहे कि कोई वस्तु लूट के माल में लाओ तो, तुमने उस वस्तु पर—जो हमने अपने भक्त (मुहम्मद) पर भेद * के दिन और उस दिन, जब दो सेनाएं भिड़ीं, उतारी है—विश्वास किया है, इसमें से पञ्चमांश अल्लाह के (और) पैग़म्बर के, सम्बन्धी के, और अनाथ और याचक के तथा पथिक के निमित्त है; और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर शक्तिमान् (शासक) है।

---

* बद्र का युद्ध आकस्मिक था, किसी को इच्छा युद्ध की न थी। इधर से मुसलमानों का गिरोह काफ़िरों पर चढ़ कर गया उधर से अबूजहल गिरोह की सहायता को चला तो गिरोह बच कर निकल गया। अकस्मात् दोनों सेनाओं का सामना हुआ और मुसलमान विजयी हुए। यदि यह युद्ध न होता तो प्रत्येक अपने बल की प्रशंसा करता, इससे मुसलमानों [illegible] विदित हो गया।

(५) इज़् अन्तुम् बिऽल् उद्वति-द्दुन्याऽ व हुम् बिऽल् उद्वतिऽल् .कुस्वा व-र्रक्बु अस्फ़ला मिन् कुम्; वलउ् तवाऽअत्तुम् लऽख़्तलफ़्तुम् फ़िऽल् मीआदि व ला किल्लियक़्ज़ियऽल्लाहु अम्रऽन् काऽना मफ़्ऊलऽ ल्लियह्लिका मन् हलका अन् ँबय्यिनति व्व यह्या मन् .हय्या अन् ँ.बय्यिनतिन्; व इन्नऽल्लाहा लसमीउ.न् अलीम् ॥४२॥

और जिस समय तुम घाटी के इस ओर थे और वे उधर, दूसरी ओर थे और अश्वारोही तुम से नीचे पहुँच गये थे; और यदि तुम परस्पर (लड़ने को) प्रतिज्ञा कर लेते तो निश्चित (काल) पर न लड़ते; परन्तु अल्लाह को एक कार्य—जो (उसके यहाँ स्वीकार हो चुका था—पूरा कर डालना था, जिससे जिसे मरना है वह (मुसल्मान होने की घोषणा की) स्पष्टता के साथ मरे और जिसे जीवित रहना है वह भी

* बद्र का युद्ध आकस्मिक था, किसी की इच्छा से न हुआ था, इधर से मुसल्मानों का गिरोह काफ़िरों पर चढ़ कर गया, उधर से अबूजहल गिरोह की सहायता को चला। गिरोह बच कर निकल गया। अकस्मात् दोनों सेनाओं का सामना हुआ और मुसल्मान विजयी हुए यदि यह युद्ध न होता तो प्रत्येक अपने बल की प्रशंसा करता, इस से मुसल्मानों का बल विदित हो गया।

(मुस्लिम होने की घोषणा की) स्पष्टता के साथ जीवित रहे; और अल्लाह सुनता है और जानता है।

(६) इज़् युरीकहुमुऽल्लाहु फ़ी मनाऽमिका क़ली-लऽन्; व लउ् अराकहुम् कसीरऽल्लफ़शिल्तुम् व ल तनाऽज़अ़्तुम् फ़िऽल् अम्रि वला किन्नऽल्लाहा सल्लमा; इन्नहू अ़लीमुन् ँ बिज़ाऽति-स्सुदूर् ॥४३॥

और जब अल्लाह ने उन्हें तेरे स्वप्न में अल्प संख्यक (करके) दिखलाया और यदि वह बहुसंख्यक (करके) दिखलाता तो तुम लोग कायरता करते और (युद्ध) कार्य (को विवादग्रस्त बना, उस) में विघ्न डालते; परन्तु अल्लाह ने रक्षा की; उसे—जो बात मनों में है—विदित है।

(६ व इज़् युरीकुमूहुम् इज़िऽल्तक़यतुम् फ़ी२ अअ़्युनिकुम् क़लीलऽव्व युक़ल्लिलुकुम् फ़ी२ अअ़्युनिहिम् लियक़्ज़ियऽल्लाहु अम्रऽन् काऽना मफ़्ऊ़लऽन्; व इलऽल्लाहि तुर्जिउ़ऽल् उमूर् ॥

और जब मुठभेड़ हुई, उस (अल्लाह) ने तुम्हारी दृष्टि में उस सेना के अल्प-संख्यक होने का अनुमान कराया और उनकी दृष्टि में तुम्हारे अल्प-संख्यक होने का अनुमान कराया, जिससे कि अल्लाह एक (वह) काम पूरा कर डाले जो (उसके यहां निश्चित) हो चुका था; और प्रत्येक कार्य की पहुँच अल्लाह तक ही है।

(मंजिल, २ परा १०, रु० ६।४)

(१) याऽ अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनूऽ इज़ाऽ लक़ीतुम् फ़िअतन् फ़ऽस्बुतूऽ वऽज़्कुरुऽऽल्लाहा कसीर-ऽल्लअल्लकुम् तुफ़्लिहू.न् ॥४५॥

हे मुसल्मानो! जब किसी सेना से भिड़ो तो (अपने विचार में) स्थिर रहो; और अल्लाह का अतिशय स्मरण करो, कदाचित् तुम विजय प्राप्त करो।

(२) व अतीउऽऽल्लाहा व रसूलहू वलाऽतनाऽज़ऊऽ त फ़फ़्शलूऽ व तज़्हबा रीहु कुम् वऽस्बिरूऽ; इन्नऽल्लाहा मअ-स्साबिरीन् ॥४६॥

और अल्लाह और पैग़म्बर (मुहम्मद) के आधीन रहो और परस्पर विवाद अथवा विग्रह न करो; अन्यथा पराजित हो जाओगे और तुम्हारी हवा (प्रतिष्ठा) बिगड़ जायगी, और सन्तोष करो; अल्लाह सन्तोषियों के साथ है।

(३) व लाऽतकूनूऽ कऽल्लज़ीना ख़रजूऽ मिन्दियाऽ-रिहिम् बतरऽव्व रिआऽअ-न्नाऽसि वय सुद्दूना अन् सबी-लिल्लाहि; वऽल्लाह बिमाऽ यअमलूना मुहीतु ॥४७॥

और ऐसे मत बनो जैसे वे लोग थे, जो गर्व करते और मनुष्यों को (अपना दर्प) दिखाते हुए अपने गृहों से निकले

और उन्हें) अल्लाह के मार्ग से रोकते थे; जो वह करते हैं अल्लाह के अधिकार में है।

(४) व इज़् ज़य्यना लहुमु-श्शय्तान अअ्मालहुम् व क़ाऽला लाऽ ग़ालिबा लकुमुऽल् यौमा मिन-न्नाऽसि व इन्नी जारुल्लकुम्, फ़लम्माऽ तराअतिऽल् फ़िअ्-तानि नकसा अला अक़िबय्हि व क़ाऽला इन्नी बरीउम्मिन्कुम् इन्नी अरा माऽ लाऽ तरौना इन्नी अख़ाऽफ़ुऽल्लाहा, वऽल्लाहु शदीदुऽल् इक़ाब् ॥४८॥

और जिस समय शैतान उनकी दृष्टि में उनके काम संभालने लगा और कहने लगा—"तुम पर आज के दिन कोई विजयी न होगा और मैं तुम्हारा साथी हूँ, फिर जब दो सेनायें सम्मुख हुई अपनी एड़ियों पर उलटा (लौटा) और बोला "मैं तुम्हारे साथ नहीं, मैं देखता हूँ जो तुम नहीं देखते, मैं अल्लाह से डरता हूँ, और अल्लाह का प्रकोप भीषण है।"

[मंजिल २ पारा १० रु० ७.१०]

(१) इज़् यक़ूलुऽल् मुनाफ़िक़ूना वऽल्लज़ीना फ़ी क़ुलूबिहिम्मरज़ुन् ग़र्रहाउलाइ दीनुहुम्, व मय्यत-वक्कल् अलऽल्लाहि फ़ इन्नऽल्लाहा अज़ीज़ुन् हकीम् ॥४८

जब मुनाफ़िक़ (कपटी जन) और जिनके मनों में रोग है,

कहने लगे—"इन (मुसलमान) लोगों को इनके मत ने मदोन्मत्त किया है; और जो कोई अल्लाह पर विश्वास करे तो अल्लाह बलवान् और बुद्धिमान् है।"

(२) व लउ् तरा३ इज़् यतवफ़्फ़ऽल्लज़ीना कफ़रुऽल् मलाइकतु यज़्रिबूना वुजूहहुम् व अद्बाऽरहुम्, वज़ूकूऽ अज़ाऽबऽल् ह्.रीक़् ॥५०।

और कभी तू (उस समय) देखे जिस समय फ़रिश्ते काफ़िरोंके प्राण हरण करते हैं उनकी पीठ और उनके मुख पर मारते हैं और (कहते हैं कि) अग्नि का दुःख चखलो ।

(३) ज़ालिका बिमाऽ कद्दमत् अयदीकुम् व अन्नऽल्लाहा लयसा बिज़ल्लाऽमिल्लिल् अबीद् ॥५१॥

यह उसीका* प्रतिफल है जो तुमने अपने हाथों से (शुभाशुभ कर्मों का विपाक) भेजा है; और यह इसलिए कि अल्लाह अपने भक्तों (मनुष्यों) पर अन्याय नहीं करता।

* यह आयत उन आयतों के सर्वथा विरुद्ध है जिन में कहा गया है कि अल्लाह जो चाहता है सो करता है, मनुष्यों से बुरे भले कर्म कराता है, उन्हें मार्ग भ्रष्ट करता है, जो बुरे कर्म हैं वह मनुष्य स्वयं करता है और भले अल्लाह करता है अथवा सन्मार्ग मुसलमानोंने ग्रहण किया है और काफ़िरों को अल्लाह ने कुफ़्र का जन्मरोग उत्पन्न किया है, और बहुत से मनुष्यों को दोज़ख़ भरने के लिए रचा है आदि २ यह आयत इन सब मिथ्या मन्तव्यों के मूल पर कुठाराघात करती है और वैदिक कर्मवाद की पुष्टि करती है।

(४) कदअ्बि आलि फ़िर्अ़ौना—वऽल्लज़ीना मिन् क़ब्लिहिम्, कफ़रूऽ बिआयातिऽल्लाहि फ़ अख़ज़-हुमुऽल्लाहु बिज़ुनूबिहिम्, इन्नऽल्लाहा क़विय्युन् शदीदुऽल् इ़क़ाऽब् ॥

फ़िर्औन के लोगों की भी—जो उनसे पूर्व थे और (जो) अल्लाह की आयतों को अस्वीकार करते थे—यही दशा हुई, अतः अल्लाह ने इनके पापों के कारण उन्हें पकड़ा; अल्लाह बलवान् और कठिन दण्ड देने वाला है।

(५) ज़ालिका बि अन्नऽल्लाहा लम् यकु मुग़य्यिरऽ न्निअ्मतऽन् अनअ्महाऽ अ़ला क़ौ मिन् ह़त्ता युग़य्यिरूऽ माऽ बि अन्फ़ुसिहिम्; व अन्नऽल्लाहा समीउ़न् अ़लीम् ॥

यह इसलिए कहा कि अल्लाह अपने वरदान को—जो एक जाति को दिया गया—उस समय तक बदलने वाला नहीं, जिस समय तक वह अपने अन्तःकरण की बात को न बदलें, और अल्लाह सुनता है, जानता (भी) है।

(६) कदअ्बि आलि फ़िर्अ़ौना—वऽल्लज़ीना मिन् क़ब्लिहिम्, कज़्ज़बूऽ बि आयाति रब्बिहिम् फ़ अह्लक्ना-हुम् बिज़ुनूबिहिम् व अग़्रक़्ना२ आल फ़िर्अ़ौना, व कुल्लुन् काऽनूऽ ज़ालिमीन् ५४।

यही दशा फ़िरौन के लोगों की—जो उन में पहले थे—हुई, उन्होंने अपने पालनकर्त्ता की आयतों को असत्य कहा, अतः उनके पापों के कारण उन्हें नष्ट कर दिया और फ़िरौन-वालों को डुबो दिया और (वे) सब के सब अत्याचारी थे।

(७) इन्ना शर्र-दवा३ब्बि इन्दऽल्लाहिऽल्लज़ीना कफ़रूऽ फ़ हुम् लाऽ युअ्मिनून् ॥५५॥

अल्लाह के यहां सब से पामर पशु वह हैं जो काफ़िर हैं, अतः वह विश्वास नहीं करते।

(८) अल्लज़ीना आऽहत्ता मिन्हुम् सुम्मा यन्कुज़ूना अह्दहुम् फ़ी कुल्लि मर्रतिव्व हुम् लाऽ यत्तकून् ॥

(जिनसे तूने वाचा भरी है उनमें फिर वह प्रत्येक बार अपना वचन भंग करते हैं और उन्हें भय नहीं।

(९) फ़ इम्माऽतस्क़फ़न्नहुम् फ़िऽल् हर्बि फ़ शर्रिद् बिहिम्मन् ख़ल्फहुम् लअ़ल्लहूम् तज़क्करून् ॥५७॥

अतः यदि ये कभी युद्ध मे तेरे हाथ लग जावें तो ऐसा दण्ड दे कि उनके अनुयाई देखकर (भय से हो) भाग, (और) कदाचित् शिक्षा ग्रहण करें।

(१०) व इम्माऽ तख़ाऽफन्ना मिन् क़ौमिन् ख़ियाऽनतन फ़ऽन्बिज़् इलयहिम् अ़ला सवा३इन्, इन्नऽल्लाहा लाऽ युहिब्बुल् ख़ाइनीन् ॥५८॥

और यदि तुझे किसी जाति के छल का भय हो तो उन्हें यथा का तथा उत्तर (छलका उत्तर* छल करके) दे; अल्लाह को छली प्रिय नहीं लगते ।

[मँजिल २ पारा १० रु ८।५]

(१) व लाऽ यह्सबन्नऽल्लज़ीना कफ़रूऽ सबकूऽ इन्नहुम् लाऽ युअ्जिज़ूऩ ॥५६॥

और काफ़िर लोग यह न समझें कि वह भाग निकले; वह थका न सकेंगे ।

(२) व अइद्दूऽ लहुम्मऽऽस्ततअ्तुम्मिन् कुव्वतिंव मिर्रिबाऽतिल् ख़य्लि तुर्हिबूना बिही अदुव्वऽल्लाहिवअ्व कुम् व आख़रीना मिन्दूनिहिम् व लाऽ तअ्लमूनहुम्, अल्लाहु यअ्लमुहुम् ; वमाऽ तुन्फ़िकूऽ मिन् शय्इन् फ़ी सबीलिऽ-ल्लाहि युवफ़्फ़ा इलयकुम् व अन्तुम् लाऽ तुज़्लमून् ॥६०॥

*इस पर पास्मोर साहब एक टिप्पणी देते हैं—If the Muslims suspected people with wh m a league had been made of treachery they might use counter treachery, although the use minds up the remark—"The God loveth not the treacherous, The r d to Comments w a king & treach ry is here made lury अर्थात आयत में यद्यपि यह आज्ञा है कि खुदा को छली लोग नहीं भाते परन्तु छल करने की आज्ञा दी गई है और यहां छल का मार्ग सरल कर दिया है।

और उनसे युद्ध की योजना करो—जो भी सैन्यशक्ति का संचार घोड़े बांधने से कर सको (करो), जिससे अल्लाह के शत्रुओं पर, तुम्हारे शत्रुओं पर और इनके अतिरिक्त उन अन्य लोगों पर—जिन्हें अल्लाह जानता है; तुम नहीं जानते-प्रभाव पड़े; और जो अल्लाह के मार्ग में व्यय करोगे; तुम पर अन्याय न होगा।

(३) व इन् जनहूऽ लि-स्सल्मि फ़ऽज्नह़्लहाऽ व तवक्कल् अ़लऽल्लाहि; इन्नहू हुव-स्समीउल् अ़लीम् ॥

और यदि वह सन्धि के लिए झुकें तो तू भी उसी ओर झुक और अल्लाह पर विश्वास कर; निस्सन्देह वही सुनता (और) जानता है।

(४) व इय्युरीदू३ अय्यख़्दऊका फ़ इन्ना ह़स्ब-कऽल्लाहु; हुवऽल्लज़ी३ अय्यदका बिनस्रिही व बिऽल् मुअ्मिनीन ॥६२॥

और यदि वे तुझे धोखा देना चाहें तो तेरे लिए अल्लाह पर्याप्त है; उसी ने तुझको अपनी सहायता दी और मुसलमानों को शक्ति प्रदान की।

(५) व अल्लफ़ा बय्ना क़ुलूबिहिम्; लउ् अन्फ़क़्ता माऽ फ़िऽल् अर्ज़ि जमीअ़ऽम्मा३ अल्लफ़्ता बय्ना क़ुलूबिहिम् वलाकिन्नऽल्लाहा अल्लफ़ा बय्नहुम्; इन्नहू अ़ज़ीज़ुन् ह़कीम् ॥६३॥

और मुसलमानों के मनों में पारस्परिक प्रेम उत्पन्न कर दिया; और यदि तुम भूमण्डल के समस्त कोश व्यय कर देते तो भी इनके मनों में प्रेम उत्पन्न न कर सकते थे। परन्तु अल्लाह ने इन लोगों में पारस्परिक प्रेम उत्पन्न कर दिया; निस्सन्देह वह प्रबल और प्रयत्नवान् है।

(६) याऽ अय्युहऽ–न्नबिय्यु ह.स्बुकऽल्लाहु व मनिऽत्तबअका मिनऽल् मुअ्मिनीन् ॥६४॥

हे पैग़म्बर! अल्लाह और मुसलमान—जो तुम्हारे साथ मुसलमान हुए हैं—तुम्हारे लिये पर्याप्त हैं।

[मं० २ पारा १० रुकूअ ६।५]

(१) याऽ अय्युहऽ–न्नबिय्यु ह.र्रिज़िऽल् मुअ्मिनीना अ़लऽल् क़िताऽलि; इय्यकुम्मिनकुम् इ.श्रूना साऽबिरूना यग़्लिबू ऽमिऽअतय् नि, व इय्यकुम्मिन्कुम्मिऽअतुय्यग़्लिबूऽ अल्फ़ऽम्मिनऽल्लज़ीना कफ़रूऽ बिअन्नहुम् क़ौमुऽल्लाऽ यफ़्क़हून् ॥६५॥

पैग़म्बर! मुसलमानों को (काफ़िरों के साथ) युद्ध के लिये उत्तेजित करो, कि यदि तुम (मुसलमानों) में से स्थिर रहने वाले बीस (२०) भी होंगे तो वह दो सौ (२००) पर विजयी होंगे और यदि तुम (मुसलमानों) में से (ऐसे) सौ

(१००) होंगे तो (वे) सहस्र काफ़िरों पर विजय प्राप्त करेंगे; क्योंकि यह (काफ़िर लोग) समझते ही नहीं।

(२) अल्आना ख़फ़्फ़फ़ऽल्लाहु अन्कुम् व अ़लिमा अन्ना फ़ीकुम् ज़अ़्फ़ऽन्; फ़ इय्यकुम्मिन्कुम्मिऽअतुन् साऽबिरतुय्यग़्लिबूऽ मिऽअतय्नि, व इय्यकुम्मिन्कुम् अल्फु-अ्य्यग़्लिबू अलफ़य्ना बि इज़्निऽल्लाहि; वऽल्लाहु मअ़-स्साबिरीन् ॥६६॥

मुसल्मानो! अब अल्लाह ने तुम पर से अपनी आज्ञा का भार* हलका किया और समझा कि तुममें निर्बलता है, अतः यदि तुममें से सौ सन्तोषी मनुष्य हों, तो वह दो सौ पर विजयी होंगे और यदि तुममें से सहस्र (१०००) हों तो (वे) अल्लाह की आज्ञा से, दो सहस्र (२०००) पर विजयी होंगे और अल्लाह सन्तोषियों के साथ है।

(३) माऽ काऽना लिनबिय्यिन् अय्यकूना लहू अस्रा हत्ता युसख़िना फ़िऽल् अर्ज़ि; तुरीदूना अ़र्ज़ दुन्याऽ वऽल्लाहु युरीदुऽल् आख़िरता; वऽल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् हकीम् ॥६७॥

* पहली इस प्रतिज्ञा के कि एक मुसलमान दस काफ़िरों के लिये काफी है, फलस्वरूप एक मुसलमान कत्ल होगया तब पहली आयत मन्सूख की गई और दूसरी आयत इस आशय युक्त आई कि सौ मुसलमान दो सौ मुसलमानों पर विजयी होंगे।

क्या पैग़म्बर को चाहिए कि उसके यहां बन्दी (कैदी) आवें जब तक कि वह पृथ्वी पर (काफ़िरों का) रक्तपात न करें; तुम संसार की भूमि चाहते हो और अल्लाह परलोक चाहता है; और अल्लाह प्रबल और बुद्धिमान् है।

(४) लउलाऽ किताबुम्मिनऽल्लाहि सबक़ा लमस्सकुम् फ़ीमाऽ अख़ज़्तुम् अज़ाबुन् अज़ीम् ॥६८॥

यदि अल्लाह की ओर से पहिले से न लिखा होता तो तुम पर जो कुछ तुमने किया है, उसके निमित्त कठिन कोप उतरता।

(५) फ़ कुलूऽ मिम्माऽ ग़निम्तुम् ह़लालऽन् तय्यिबऽ व्वऽत्तऽऽक़ुल्लाहा; इन्नऽल्लाहा ग़फ़ूरु-र्रह़ीम् ॥६९॥

अतः पवित्र और भक्ष्य गनमत (लूट के धन) को खाओ और अल्लाह से डरते रहो; अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है।"

मं० २ पारा १०, रू० १०,६

याऽ अय्युहऽन्नबिय्यु क़ुल्लमिन् फ़ीऽअयदीकुम्मिनऽल् अस्राऽ इंय्यअ्लमिऽल्लाहु फ़ी क़ुलूबिकुम् ख़य्रऽयुअ्तिकुम् ख़य्रम्मिम्माऽ उख़िज़ा मिन्कुम् व यग़्फ़िर्लकुम्, वऽल्लाहु ग़फ़ूरुर्रह़ीम् ॥७॥

हे पैग़म्बर ! जो बन्दीजन तुम्हारे हाथ (अधिकार) में हैं उन्हें कहदे—"यदि अल्लाह को तुम्हारे मनों में कुछ भलाई ज्ञात होगी तो तुमको जो तुमसे छिन गया उससे अधिक प्रदान करेगा; और अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है।

(२) व इय्युरीदूऽ ख़ियाऽनतका फ़क़द् ख़ानुऽऽ-ल्लाहा मिन्क़ब्लु फ़ अम्कना मिन्हुम्; वऽल्लाहू अलीमुन् ,हकीम् ।७१।

और यदि उन्होंने तुम्हें धोखा देने की इच्छा की तो (समझो कि) अल्लाह से पहले हो कपट* किया है अतः उसने तुम्हें उन पर शक्ति प्रदान की है; और अल्लाह ज्ञाता और बुद्धिमान् है।

(३) इन्नऽल्लज़ीना आमनूऽ व हाऽजरूऽ व जाऽहदू बि अम्वाऽलिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् फ़ी सबीलिऽ-ल्लाहि वऽल्लज़ीना आवउऽव्व नसरूऽ उलाऽइका बअ्ज़ुहुम् अउलियाऽउ बअ्ज़िन्; वऽल्लज़ीना आमनूऽ व लम् युहाऽजिरू माऽलकुम्मिव्व लाऽ यतिहिम्मिन् शय्-इन् ,हत्ता युहाजिरूऽ व इनिऽस्तन्सरू कुम् फ़ि-द्दीनि

---

* अर्थात् इन्होंने काफिर होने के कारण अल्लाह से छल किया है जैसा कि पहले भी आचुका है कि काफ़िर अल्लाह से कपट करते हैं और अल्लाह उनसे कपट करता है। देखो प्रथम खण्ड।

फ़ अलयकुमु-न्नस्रु इल्लाऽ अला क़ौमिन् ँ बयनकुम् व बयनहुम्मीसाऽकुन्, वऽल्लाहु बिमाऽ तअ्मलूना बसीर् ॥७२॥

जिन लोगों ने (इस्लाम पर) विश्वास किया और गृह त्यागा और अपने धन और प्राणों से अल्लाह के मार्ग में युद्ध किया और जिन लोगों ने स्थान और साहाय्य दिया वह परस्पर (एक दूसरे के) मित्र हैं; और जिन्होंने विश्वास किया और गृह नहीं त्यागा तुमको उनकी मित्रता से, जब तक वह गृह न त्याग आवें, कुछ प्रयोजन नहीं, और यदि तुमसे मत में सहायता चाहें तो तुमको ऐसे लोगों की अपेक्षा कि जिनमें और तुममें होड़ है उन्हें सहायता देना आवश्यक है; और अल्लाह, जो तुम करते हो, देखता है।

(४) वऽल्लज़ीना कफ़रूऽ बअ्ज़ुहुम् अउ्लियाउ बअ्ज़िन् इल्लाऽ तफ़्अलूहु तकुन् फ़ित्नतुन् फ़िऽल् अर्ज़ि व फ़साऽदुन् कबीर् ॥

और जो लोग काफ़िर हैं वे परस्पर एक दूसरे के मित्र हैं; यदि तुम यों न करोगे तो देश में धूम मचेगी (आन्दोलन उठेगा) और बड़ा उत्पात होगा।

(५) वऽल्लज़ीना आमनूऽ व हाऽजरूऽ व जाऽहदूऽ फ़ी सबीलिऽल्लाहि वऽल्लज़ीना आवउ्ऽ व्व नसरू३

उलाऽइका हुमुऽल् मुअ्मिनूना ,हक़्क़ऽन; लहुम्मग्फ़िरतु व्व रिज़्कुन् करीम् ॥७४॥

और जिन लोगों ने विश्वास किया, और गृह त्यागे और अल्लाह के मार्ग में युद्ध किये और जिन लोगों ने स्थान और साहाय्य दिया वही निश्चय मुसल्मान हैं; उनको क्षमा मिलेगी और अन्त म अनुग्रह।

(६) वऽल्लज़ीना आमनूऽ मिन् ँ बअ्दु व हाऽजरूऽ व जाऽहदूऽ मअ्कुम् फ़ उलाऽइका मिन्कुम्; वाऽवुलुऽऽल् अ,र्हाऽमि बअ्ज़ुहुम् अउ्ला वि बअ्ज़िन् फ़ी किताविऽल्लाहि; इन्नऽल्लाहा बि कुल्लि शय्इन् अलीम्॥७५

और जिन लोगों ने (इस्लाम पर) पीछे से विश्वास किया और गृहों का त्यागन किया और तुम्हारे साथ मिलकर युद्ध किया फिर वह तुम्हीं में से हैं; और अल्लाह की पुस्तक में सम्बन्धी एक दूसरे के अधिक निकट हैं; निश्चय अल्लाह प्रत्येक पदार्थ से परिचित है।

सूरये-तौबा ⊛

मं० २ पारा १०, रू० १।६

(१) बरा३अतुम्मिनऽल्लाहि व रसूलिही३ इलऽ-
ल्लज़ीना आऽहत्तुम्मिनऽल् मुश्रिकीन् ॥१॥

उन मुशरिकों (द्वैत वादियों) को—जिन से तुमने प्रतिज्ञा की थी—अल्लाह की ओर से और उसके प्रेरित (पैगम्बर) की ओर से उत्तर है।

(२) फ़सीहू ऽ फ़िऽल् अर्ज़ि अर्बअता अश्हुरि
न्वाऽअ्लमू३ इन्नकुम् ग़य्रु मुअ्जिज़िऽल्लाहि व अन्नऽल्लाहा
मुख्ज़िऽल् काफ़िरीन् ।२॥

अतः इस देश में चार महीने घूमलो और ज्ञात रहे कि तुम अल्लाह को विवश न कर सकोगे और यह भी (ज्ञात रहे) अल्लाह अविश्वासियों का अनादर करता है।

(३) व अज़ाऽनुम्मिनऽल्लाहि व रसूलिही३
इलन्नाऽसि यउमऽल् हज्जिऽल् अक्बरि अन्नऽल्लाहा
बरी३उम्मिनऽल्; मुश्रिकीना व रसूलुहू; फ़ इन्तुब्तुम् फ़
हुवा खय्रुल्लकुम् व इन्तवल्लय्तुम् फ़ाऽअ्लमू३ अन्नकुम्
ग़य्रु मुअ्जिज़िऽल्लाहि; व बश्शिरिऽल्लज़ीना कफ़रूऽ
बि अज़ाऽबिन् अलीम् ।३।

⊛ सूरये तौबा मदीने में उतरी, उसमें १२९ आयतें और १६ रुकूअ हैं।

और अल्लाह और उस के पैग़म्बर को ओर से बड़े हज के दिन सुना देता है कि अल्लाह और उस का पैग़म्बर मुशरिकों से पृथक है, अतः यदि तुम क्षमा प्रार्थना करो तो तुम्हारा हित है, और यदि न करो तो तुम अल्लाह को थका न सकोगे, और अस्वीकारियों को दुःख के दण्ड का सुसमाचार दे।

(४) इल्लऽल्लज़ीना आहत्तुम्मिनऽल् मुश्रिकीना सुम्मा लम् यनकुसूकुम् शयअऽव लम् युज़ाऽहिरूऽ अलय्कुम् अ.हदऽन फ़ अतिम्मूऽ इलय्हिम् अह्दहुम्; इला मुद्दतिहिम्; इन्नऽल्लाहा युह़िब्बुऽल् मुत्तक़ीन् ॥

परंतु जिन मुशरिकों से तुम्हें होड़ थी, उन्होंने फिर तुम्हारे साथ कुछ अपराध न किया और तुम्हारे मुकाबिले में किसी की सहायता न की, अतः उनसे उनकी नियत अवधि तक प्रतिज्ञा पूर्ण करो; निश्चय अल्लाह को संयमी प्रिय हैं।

(५) फ़ इज़ऽऽन्सलख़ऽल् अश्हुरुऽल् हुरुमु फ़ऽक़्तुलुऽऽल् मुश्रिकीना ह़यसु वजत्तुमूहुम् व ख़ुज़ूहुम् वऽह्सुरूहुम् वऽक़्उदूऽ लहुम् कुल्ला मर्सदिन् फ़ इन्ताऽबूऽ व अक़ाऽमुऽस्सलाता व आतवुऽज़्ज़काता फ़ख़ल्लूऽ सबीलहुम् इन्नऽल्लाहा ग़फ़ूरुर्रह़ीम् ॥

फिर जब पवित्र मास व्यतीत होजावें तो मुशरिकों को

जहां पाओ - मारो, और पकड़ो घेरो, और उनकी घात में प्रत्येक स्थल पर बैठो, पुनः यदि वे पापक्षमा-प्रार्थना करें और नमाज निश्चित रक्खें और ज़कात देवें तो उनका मार्ग छोड़ो; क्योंकि उनको अल्लाह की ओर से पापक्षमा और दया है।

(६) व इन् अह.दुम्मिनऽल् मुश्रिकीनऽस्तजाऽरका फ़ अजिह् .हत्ता यस्मअ़ा कलामऽल्लाहि .सुम्मा अब्लिग्हु मअ़्मनहु ज़ालिका बि अन्नहुम् क़ौमुल्लाऽ यअ़्लमून् ॥

और यदि कोई मुशरिक तुझ से त्राण चाहे तो उसे त्राण दो यहां तक कि वह अल्ला का वचन अर्थात् कुरान सुन ले फिर उसको वहां पहुंचा दो जहां वह निर्भय रहे; यह इसलिए कि उन लोगों में ज्ञान नहीं।

[मंजिल २ पा० १० रु० २।१०]

(१) कय्.फ़ा यकूनु लिल् मुश्रिकीना अह्दुन् .इन्दऽल्लाहि व .इन्दा रसूलिही३ इल्लऽऽल्लज़ीना अ़ाऽहत्तुम् .इन्दऽल् मस्जिदिल् .हराऽमि, फ़ मऽऽस्तक़ाऽमूऽ लकुम् फ़ऽस्तक़ीमूऽल हुम् ; इन्नऽल्लाहा युहि.ब्बुऽल् मुत्तक़ीन् ॥

सिवाय उन लोगोंके और उसके जिन्होंने तुमको मसजिदुल हराम (काबा की पवित्र मस्जिद) के पास का वचन दिया

है अन्य मशरिकों की अल्लाह और उसके पैग़म्बर के साथ क्योंकर प्रतिज्ञा होसकती है ? अतः जब तक वह तुमसे सीधे रहें, तुम उन से सीधे रहो; अल्लाह का संयमी प्रिय लगते हैं।

(२) कयूफ़ा व इय्यज़्हरू-अलयकुम् लाऽ यर्क़ुबूऽ फ़ीकुम् इल्लऽव्वलाऽ ज़िम्मतन् , युर्ज़ूनकुम् बिअफ़्वाऽहि-हिम् व तअ्बा कुलूबुहुम् व अक्सरुहुम् फ़ासिकून ॥

सन्धि कैसे रहे ? और यदि वह तुम पर हाथ (अधिकार पायें तो न तुम्हारे मत का और न प्रतिज्ञा का कुछ लिहाज़ करें अपने मुंह की बात से प्रसन्न कर देते हैं और उनके मन स्वीकार नहीं करते, और उनमें अनेकों अनाज्ञाकारी हैं।

(३) इश्तरउ्ऽ बिआयातिऽल्लाहि समनऽन् क़लीलऽन् फ़सद्दुऽ अन् सबीलिही; इन्न हुम् साऽअमाऽ काऽनूऽ यअ्मलून ॥

और उन्होंने अल्लाह की आज्ञाओं को अल्प मूल्य पर विक्रय किया फिर उसके मार्ग से भटके रहे; यह लोग जो कर रहे हैं वह बुरे कार्य हैं।

(४) लाऽ यर्क़ुबूना फ़ी मुअ्मिनिन इल्लऽव्वला ज़िम्मतन व उलाऽइका हुमुऽल् मुअ्तदून ॥

न किसी मुसल्मान के सम्बन्ध में न दृढ़ता का और न वचन का विचार करें और यह अत्याचारी हैं।

(५) फ़ इन्ताऽबूऽ व अक़ाऽमुऽ-स्सलाता व आतवु-ज़्ज़काता फ़ इख़्वा नुकुम् फ़ि-द्दीनि; व नुफ़स्सि-लुऽल् आयाति लि क़उमि य्यअ्लमून्।

अतः यदि तोबा (पापक्षमा-प्रार्थना) करें और नमाज़ स्थिर रक्खें, और ज़कात देते रहें तो मुहम्मदी मतानुसार तुम्हारे भाई हैं; और हम जानने वाले पुरुषों के लिए विस्तार पूर्वक भेद प्रगट करते हैं।

(६) व इन्नकसूऽ अय्माऽनहुम्मिन् ँ बअ्दि अह्दिहिम् व तअ्नूऽ फ़ी दीनिकुम् फ़ क़ाऽतिलूऽ अइम्मतऽल् कुफ़्रि इन्नहुम् लाऽ अय्माऽना लहुम् लअ्ल्लहुम् यन्तहून् ॥

और यदि प्रतिज्ञा के पश्चात् अपनी शपथों का भंग करें और तुम्हारे दीन को दोष दें तो काफ़िरों के प्रमुख पुरुषों से युद्ध करो; उनकी शपथ कुछ नहीं, कदाचित् वह सन्मार्ग पर आवें।

(७) अलाऽ तुक़ाऽतिलूना क़उमऽन्नकसूऽ अय्-माऽनहुम् व हम्मूऽ बिइख़्राऽजि-र्रसूलि व हुम् बदऊकुम् अउवला मर्रतिन्; अतख़्शउऽनहुम्, फ़ऽल्लाहु अह़क़्क़ु अन्तख़्शउहु इन्कुन्तुम्मुअ्मिनीन ॥

ऐसे लोगों से क्यों न लड़ो कि जिन्होंने अपनी शपथों

को भंग किया और जो इस चिन्ता में रहे कि पैग़म्बरों को पृथक् करदें और उन्होंने तुमसे पहले छेड़ की; क्या उनसे डरते हो? अतः यदि विश्वासी हो तो तुम्हें अल्लाह से डरना चाहिए।

(८) क़ाऽतिलूहुम् युअ़ज़्ज़िबहुमुऽल्लाहु बि अय्दीकुम् व युख़्ज़िहिम् व यन्सुर्कुम् अ़लय्हिम् व यश्फ़ि सुदूरा क़उ्मिम्मुअ्मिनीन् ॥

उनसे लड़ो, जिससे अल्लाह उन्हें तुम्हारे हाथों दण्ड दे और लज्जित करे और तुमको उन पर विजयी बनावे और कितने ही मुसलमानों के मनों को शान्त करे।

(९) व युज़्हिब् ग़य्ज़ा क़ुलूबिहिम् ; व यतूबुऽल्लाहु अ़ला मय्यशाउ; वऽल्लाहु अ़लीमुन् ह़कीम् ॥

और उनके मनों का द्वेष दूर करे, और जिसको चाहे अल्लाह क्षमा करेगा; और अल्लाह ज्ञानवान् और बुद्धिमान् है।

(१०) अम् ह़सिब्तुम् अन्तुत्रकूऽ व लम्माऽ यअ़्लमिऽल्लाहुऽल्लज़ीना जाऽहदूऽ मिन्कुम् व लम यत्तख़िज़ूऽ मिन्दूनिऽल्लाहि वलाऽ रसूलिही वलऽऽल मुअ्मिनीना वलीजतऽन् ; वऽल्लाहु ख़बीरुन् ˘ बिमाऽ तअ़्मलून् ॥

क्या जानते हो कि तुम छोड़ दिये जाओगे और अभी अल्लाह को तुम लोगों में से उन लोगों का ज्ञान नहीं जो लड़े हैं और जिन्होंने अल्लाह और उनके रसूल और मुसलमानों के अतिरिक्त अन्य किसी को भेदी नहीं माना; और अल्लाह को तुम्हारे कार्य्यों का सब ज्ञान है।

[मंजिल २, पारा १०, रु० ३।८]

(१) माऽ काऽना लिल् मुश्रिकीना अय्यअ्मुरूऽ मसाजिदऽल्लाहि शाहिदीना अ़लाऽ अन्फ़ुसिहिम् बिऽल् कुफ़्रि, उलाऽइका ह़बित़त् अअ़्माऽलुहुम्, व फ़िन्नाऽरि हुम् खा़लिदून् ॥

मुशरिकों (मूर्त्ति-पूजकों) का काम नहीं कि अल्लाह की मसजिदों को बसावें और अपने ऊपर कुफ़् को स्वीकार करते जावें; वह लोग अपने कामों के कारण नष्ट हुए और वह सर्वदा नर्काग्नि में निवास करेंगे।

(२) इन्नमाऽ यअ़्मुरु मसाजिदऽल्लाहि मन् आमना बिऽल्लाहि वऽल् यउ्मिऽल् आखि़रि व अक़ाऽ-म-स्सलाता व आत-ज़्ज़काता व लम् यख़्शा इल्लऽ-ल्लाहा फ़ अ़साऽ उलाऽइका अय्यकूनूऽ मिनऽल् मुहतदीन् ॥

अल्लाह की मसजिदें वही बसावे जिसने अल्लाह और अन्तिम दिवस पर विश्वास किया और नमाज़ स्थिर रक्खी और दान दिया और (जो) अल्लाह के अतिरिक्त (अन्य किसी से न डरा अत: वह लोग प्रतीक्षित हैं कि शिक्षितों में सम्मिलित हों।

(३) अजअल्तुम् सिक़ाऽयतऽल् हाऽज्जि व इ़माऽरतऽल् मस्जिदिऽल् ह़राऽमि कमन् आमना बिऽल्लाहि वऽल् यउ्मिऽल् आखि़रि व जाऽहदा फ़ी सबीलिऽल्लाहि; लाऽ यस्तवूना इ़न्दऽल्लाहि; वऽल्लाहु लाऽ यह्दिऽल् क़उ्म-ज़्ज़ालिमीन् ॥

क्या तुमने हाजियों का पानी पिलाना और मस्जिदुलहराम (काबा) का बसाना उसके समान निश्चित किया जिसने अल्लाह पर और अन्तिम दिन पर विश्वास किया और अल्लाह के मार्ग में युद्ध किया? अल्लाह के निकट (दृष्टि में तो, समान नहीं; और अल्लाह अत्याचारी लोगों को मार्ग नहीं देता।

(४) अल्लज़ीना आमनूऽ व हाऽजरूऽ व जाऽहदूऽ फ़ी सबीलिऽल्लाहि बि अम्वाऽलिहिम् व अन्फुसिहिम् अअ्ज़मु दरजतन् इ़न्दऽल्लाहि; व उलाऽइका हुमुऽल् फ़ाऽइज़ून् ॥

जिन्होंने (इस्लाम पर) विश्वास किया और गृह त्यागन किया और अल्लाह के मार्ग में अपने तन और धन से युद्ध किया उनको अल्लाह के समीप बड़ा पद है और वही सफलता को प्राप्त हुए।

(५) युवश्शिरु हुम् रब्बुहुम् बिर् ह्मतिम्मिन्हु व रिज़्वाऽनि व्व जन्नाति ल्लहुम् फ़ीहा न, ईमुम्मुक़ीम् ॥

उनका पालनकर्त्ता उनको अपनी ओर से अनुग्रह, अनुमोदन और बाग़ों का-जिनमें उनको नित्य का आनन्द है-हर्ष समाचार देता है।

(६) ख़ालिदीना फ़ीहा३ अबद्ऽन् ; इन्नऽल्लाहा, इन्दहू३ अजुन् अज़ीम् ॥

उन (जन्नत के बाग़ों) में अनन्तकाल पर्य्यन्त निवास करें; निश्चय अल्लाह के यहां महान् प्रतिपाल है।

(७) या३ अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनूऽ लाऽ तत्तख़िज़ूऽ आबा३अकुम् व इख़्वाऽन कुम् अउ्लिया३आ इनिऽस्त, हब्बुऽऽल् कुफ़्रा अ़लऽल् ईमाऽनि, व मय्यतवल्लहुम्मिन्कुम् फ़ उला३इका हुमु-ज़्ज़ालिमून् ॥

हे विश्वासियो (मुसलमानो !) अपने पिता और भ्राताओं को अपना मित्र (वा सहायक) स्वीकार न करो यदि वह कुफ़्र, को इस्लाम (दीन) से प्रिय समझें, और तुममें से

जिसने उनसे मित्रता की (या सम्बन्ध रक्खा) फिर वही लोग अत्याचारी (और) पापी हैं।

(८) कुल् इन्काऽना आबाउ कुम् व अब्नाउ कुम् व इख़्वाऽनु कुम् व अज़्वाऽजु कुम् व अशीरतु कुम व अम्वाऽलु (नि) ऽक़्तरऽफ़्तुमूहाऽ व तिजाऽरतुन् तख़्शउना कसादहाऽ व मसाकिनु तर्ज़उनहा अहब्बा इलय् कुम्मिनऽल्लाहि व रसूलिही व जिहाऽदिन् फ़ी सबीलिही फ़ तरब्बसूऽ हत्ता यअ्तियऽल्लाहु बि अम्रिही; वऽल्लाहु लाऽ यह्दिऽल् क़ौमऽल् फ़ासिक़ीन् ॥

(हे पैग़म्बर !) तू कह, यदि तुम्हारे पिता और पुत्र और भ्राता और तुम्हारी स्त्रियां और तुम्हारे वंशज और तुम्हारी सम्पत्ति जो तुमने उपार्जित की है और व्योपार जिसके बन्द होने का भय है और अनाथ दासियां जिनकी तुम्हें इच्छा है, तुमको अल्लाह और उसके पैग़म्बर और उसके मार्ग में युद्ध करने से अधिक प्रिय हैं तो जब तक अल्लाह अपनी आज्ञा (न) भेजे तब तक प्रतीक्षा करो, और अल्लाह अनाज्ञाकारियों को मार्ग नहीं दिखाता।

[मंजिल २ पारा १० रु ४।५]

(१) लक़द् नसरकुमुऽल्लाहु फ़ी मवाऽतिना

कसीरतिंव् यउ़्मा हुनय्निन् इज़् अअ्जबत्कुम् कस्र्तु
कुम् फ़ लम् तुग्नि अन्कुम् शय्अऽंव् व ज़ाऽक़त् अलय्-
कुमुऽल् अर्ज़ु बिमाऽ रहुबत् सुम्मा वल्लय्तुम्मुद्बिरीन् ॥

(मुसलमानो !) अल्लाह अनेक अवसरों पर तुम्हारी सहायता कर चुका है और (विशेषतः) हुनैन के (युद्ध के) दिन, जब कि तुम्हारी बहु-संख्या ने तुम्हें गर्वित कर दिया था, फिर वह तुम्हारे लिए कुछ भी उपयोगी न हुई और पृथ्वी, विस्तृत होने के उपरान्त भी, तुम्हारे लिए संकुचित होगई, फिर तुम पीठ फेर कर भाग निकले।

(२) सुम्मा अन्ज़लऽल्लाहु सकीनतहू अला
रसूलिही व अलऽल् मुअ्मिनीना व अन्ज़ला जुनूदऽल्लम्
तरउ़्हाऽ व अज़्ज़बऽल्लज़ीना कफ़रूऽ; व ज़ालिका जज़ाऽ-
उऽल् काफ़िरीन् ।

फिर अल्लाह ने अपने पैगम्बर पर और मुसलमानों पर अपना सन्तोष उतारा और (तुम्हारी सहायतार्थ फ़रिश्तों की) ऐसी सेनायें भेजीं, जो तुमको दिखाई नहीं देती थीं और काफ़िरों को अत्यन्त दारुण दुःख दिया; और काफ़िरों के लिए यही दण्ड है।

(३) सुम्मा यतूबुऽल्लाहु मिन् बअ्दि ज़ालिका
अला मय्यशाऽउ, व ऽल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम् ॥

फिर (इसके पश्चात्) अल्लाह जिसको चाहे क्षमा प्रदान करे और अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है।

(४) याऽ अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनूऽ इन्नमऽऽल् मुश्रिकूना नजसुन् फ़लाऽ यक़्रबुऽऽल् मस्जिदऽल् ,हराऽमा बअ्दा आऽमिहिम् हाज़ाऽ, व इन् ख़िफ़्तुम् अय्लतन् फ़ सउ् फ़ा युग़्नीकुमुऽल्लाहु मिन् फ़ज़्लिहीऽ इन्शाऽअ; इन्नऽल्लाहा अलीमुन ,हकीम् ॥

हे मुसल्मानो ! मूर्तिपूजक जो हैं वह मलीन हैं, अतः इस वर्ष के पश्चात् पवित्र मस्जिद (काबा) के निकट न आवें, और यदि तुम भिखारीपने से भय खाते हो तो आगे अल्लाह यदि चाहे तो तुम्हें अपने अनुग्रह से धनाढ्य बनावेगा; अल्लाह ज्ञाता और बुद्धिमान् है।

(५) क़ाऽतिलुऽऽल्लज़ीना लाऽ युअ्मिनूना बिऽल्लाहि वलाऽ बिऽल् यउ् मिऽल् आख़िरि व लाऽ युह,-र्रिमूना माऽ,हर्रमऽल्लाहु व रसूलुहू व लाऽ यदीनूना दीनिऽल् ,हक़्क़ि मिनऽल्लज़ीना ऊतुऽऽल् किताबा ,हत्ता युअ्तुऽऽल् जिज़्यता अय्यदिन्व हुम् साग़िरून ॥

युद्ध करो उन लोगों से—जिनका अल्लाह पर विश्वास नहीं और न अन्तिम दिवस (क़यामत) पर (भी जिनका विश्वास है); जो न उसे निषिद्ध समझें जिसे अल्लाह और

उसके पैग़म्बर ने निषिद्ध किया है और सत्य मत (इस्लाम) को स्वीकार करते हैं—वह जो कि पुस्तक वाले हैं; यहां तक कि सब एक हाथ से जज़िया कुफ़्र का (कर) और अपमानित होकर देवें।

[मं० २, पारा १०, रु ५।८]

(१) व क़ाऽलतिऽल् यहूदु उ,ज़यरु (नि) ऽब्नुऽ-ल्लाहि व क़ाऽलति-न्नसारऽल् मसीहुऽब्नुऽल्लाहि; ज़ालिका क़ऊलुहुम् बि अफ़्वाऽहि हिम् , युज़ाऽहिऊना क़ऊलऽल्लज़ीना कफ़रूऽ मिन् क़ब्लु; क़ाऽतलहुमुऽल्लाहु अन्ना युअ्फ़कून् ॥

और यहूदी कहते हैं कि उज़ैर अल्लाह के पुत्र हैं और नसारा कहते हैं कि मसीह अल्लाह के पुत्र हैं; यह उनके मुंह की बातें हैं, यह उन्हीं काफ़िरों की सी बातें बनाने लगे हैं जो इनसे पूर्व हो चुके हैं; अल्लाह इन्हें नष्ट करे; यह शैतान के भटकाये हुए किधर को जा रहे हैं।

(२) इत्तख़ज़ूऽ अह्बाऽरहुम् व रुह्बाऽन हुम् अर्बाबऽम्मिन्दूनिऽल्लाहि वऽल्मसीह,ऽब्ना मर्यमा व माऽ उमिरूऽ इल्लाऽ लियअ्बुदूऽ इलाहव्वाऽहि,दऽन् ; लाऽ इलाहा इल्लाऽहुवा; सुब्हानहू अम्माऽ युश्रिकून् ॥

अल्लाह के स्थान पर इन्होंने अपने विद्वान् और ईश्वर-साधु और मर्यम का पुत्र मसीह पृथक् निश्चित किये हैं; और इन्हें यही आज्ञा हुई थी कि एक मात्र स्वामी की आराधना करें, उसके अतिरिक्त अन्य किसी की आराधना (उचित) नहीं, वह समांश समझने से रहित है।

(३) युरीदूना अय्युत् फ़िऊऽनूरऽल्लाहि बि अफ़्वाऽहि हिम् व यअ्बऽल्लाहु इल्लाऽ अय्युतिम्मा नूरहू व लउ् करिहऽल् काफ़िरून् ॥

चाहते हैं कि अल्लाह के नूर (अर्थात् इस्लाम) को मुंह से (फूंक मार कर) बुझादें और अल्लाह को अभीष्ट है कि प्रत्येक प्रकार अपने प्रकाश को पूर्ण करके रहे यद्यपि काफ़िरों को बुरा लगे।

(४) हुवऽल्लज़ीऽ अर्सला रसूलहू बिऽल् हुदा व दीनिऽल् .हक़्क़ि लि युज़्हिरहू अ़ल-दीनि कुल्लिही व लउ् करिहऽल् मुश्रिकून् ॥

वही है जिसने अपने पैगम्बर को शिक्षा और सत्य मत देकर भेजा है जिससे उसे समस्त संसार पर विजयी बनावे चाहे मुशरिकों को बुरा ही क्यों न लगे?

(४-५) याऽ अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनूऽ इन्ना क़सीरम्मिनऽल् अह्बाऽरि व-रुह्बाऽनि लयअ्कुलूना

अम्वाऽल-न्नाऽसि बिऽल् बाऽतिलि व यसुद्दूना अन् सबीलिऽल्लाहि; वऽल्लज़ीना यक्निज़ून-ज़्ज़हबा वऽल् फ़िज़्ज़ता वलाऽ युन्फ़िक़ूनहाऽ फ़ी सबीलिऽल्लाहि फ़ बश्शिर्हुम् बि अज़ाऽबिन् अलीमिय्यउ्मा युह्मा अल-य्हाऽ फ़ी नाऽरि जहन्नमा फ़ तुक्वा बिहाऽजिबा हुम् व जुनूबुहुम् व ज़ुहूरुहुम् ; हाज़ाऽमाऽकनज़्तुम् लि अन्फ़ुसि कुम् फ़ ज़ूक़ूऽमाऽ कुन्तुम् तक्निज़ून् ॥

हे मुसलमानो ! पुस्तकवालों अर्थात् यहूदियों के अनेकों विद्वान् और साधु मनुष्यों का धन व्यर्थ खाते हैं और अल्लाह के मार्ग से भटके हुए हैं: और जो लोग सोना और रूपा (पृथ्वी में) गाढ़ रखते हैं और (उसे) अल्लाह के मार्ग में व्यय नहीं करते, फिर उनका (उस) दारुण दुःख के दण्ड का शुभ समाचार सुना (कि) जिस दिन उन पर दोज़ख़ (नर्क) की अग्नि दिखावेंगे फिर उससे उनके माथे और करवटें और पृष्ठ भाग सब दग्ध किये जायँगे; यह है जो तुम अपने निमित्त गाड़ते थे अब अपने गाड़ने का स्वाद चखो।

(६) इन्ना अ़द्दत-श्शुहूरि इ़न्दऽल्लाहिऽस्नाऽ अ़शरा शह्ऽन् फ़ी किताबिऽल्लाहि यउ्मा ख़लक़-स्स-माऽवाति वऽल् अर्ज़ा मिन्हाऽ अर्बअ़तुन् हुरुमुन् ; ज़ाऽलिक-द्दीनुऽल् क़य्यिमु फलाऽ तज़्लिमूऽ फ़ी हिन्ना अन्फ़ुसकुम् व

क़ाऽतिलुऽऽल् मुश्रिकीना काऽफ़्फ़तन् कमाऽ युक़ाऽति-लूनकुम् काऽफ़्फ़तन् ; वाऽअ्लमूऽ अन्नऽल्लाहा मअ्ऽल् मुत्तक़ीन् ॥

जब से अल्ला ने पृथ्वी और आकाश उत्पन्न किये तभी से महीनों की गिनती अल्लाह के पास अल्लाह की आज्ञा से बारह महीने हैं, उनमें चार मान्य (अदब के) महीने हैं, यही सीधा मत है, अतः उन (मान्य मासों) में अपने ऊपर अत्याचार न करो और मूर्तिपूजकों से प्रत्येक प्रकार से ऐसे लड़ो जैसे वह तुमसे प्रत्येक प्रकार से लड़ते हैं; और ज्ञात रहे कि अल्लाह संयमियों के साथ है।

(७) इन्नमऽन्नसीऽउ ज़ियाऽदतुन् फ़िऽल् कुफ़्रि युज़ल्लु बिहिऽल्लज़ीना कफ़रूऽ युहिल्लूनहू आऽमऽन्व युहर्रिमूनहू आऽमऽल्लियुवाऽतिऊऽ इद्दत माऽ हर्रमऽ-ल्लाहु; फ़युहिल्लूऽ माऽ हर्रमऽल्लाहु; ज़ुय्यिना लहुम् सूऽउ अअ्माऽलिहिम् ; वऽल्लाहु लाऽ यह्दिऽल् क़ौमऽल् काफ़िरीन् ॥

यह जो महीना हटा देना है वह कुफ़्र के काल में एक अधिकता की बात है, इससे काफ़िर मार्गभ्रष्ट होते हैं, वह उसे एक वर्ष छुटा गिनते हैं और एक वर्ष हराम (पवित्रता) का गिनते हैं जिससे कि वह गिनती जो अल्लाह ने आदर के

मास की रक्खी उसे पूरा करलें, फिर जो अल्लाह ने निषिद्ध किया है उसे पवित्र मानते हैं; उनको उनके कुकर्म अच्छे करके दिखाये गये; और अल्लाह अविश्वासी जाति का मार्ग नहीं दिखाता ।

[मं० २, पारा० १०, रु० ६।५]

(१) याऽ अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनूऽ माऽ लकुम् इज़ाऽ क़ीला लकुमुऽन् फ़िरूऽ फ़ी सबीलिऽल्लाहिऽस्साऽ-क़ल्तुम् इलऽल् अर्ज़ि; अरज़ीतुम् बिऽल् हयाति-दुन्याऽ मिनऽल् आख़िरति फ़ माऽ मताऽउऽल् हयाति-द्दुन्याऽ फ़िऽल् आख़िरति इल्लाऽ क़लील् ॥

हे मुसल्मानो ! तुमको क्या होगया है कि जब तुम्हें कहा गया कि अल्लाह के मार्ग में प्रस्थान करो (तो) तुम धरती में धसे जाते हो; क्या तुम अन्तिम जीवन को तजकर सांसारिक जीवन पर मुग्ध हुए ? अतः सांसारिक जीवन परलोक के जीवन की अपेक्षा कुछ नहीं प्रत्युत तुच्छ है।

(२) इल्लाऽ तुन्फ़िरूऽ युअज़्ज़िब्कुम् अज़ाबऽन् अलीमऽव्व यस्तब्दिल् क़ौमऽन् ग़ैर्कुम् वलाऽ तज़ुर्रूहु शैअऽन्; वऽल्लाहु अला कुल्लि शैइन् क़दीर् ॥

यदि (तुम युद्ध के लिए) न निकलोगे तो तुमको दुःख का दण्ड देगा और तुम्हारे अतिरिक्त अन्य मनुष्य बदल लावेगा और तुम उसकी कुछ हानि न कर सकोगे; और अल्लाह प्रत्येक पदार्थ पर शक्तिमान् है।

(३) इल्लाऽ तन्सुरूहु फ़क़द् नसरहुऽल्लाहु इज़् अख़्रजहुऽल्लज़ीना कफ़रूऽ सानियऽस्नय्नि इज़् हुमाऽ फ़िऽल् ग़ाऽरि इज़् यक़ूलु लि साहिबिही लाऽ तहज़न् इन्नऽल्लाहा मअ़नाऽ. फ़ अन्ज़लऽल्लाहु सकीनतहू अ़लय्हि व-अय्यदहू बिजुनूदिऽलम् तरउहाऽ व जअ़ला कलिमतऽल्लज़ीना कफ़रूऽ-स्सुफ़्ला, व कलिमतुऽल्लाहि हियऽल् उ़ल्याऽ, वऽल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् हकीम् ॥

यदि तुम पैग़म्बर की सहायता न करोगे तो उसकी सहा-

& मुसल्मान तबूक की चढ़ाई के लिए अनिच्छा से गये, गर्मी की ऋतु थी, सिपाहियों को इतना महान् कष्ट हुआ कि यह सतायी हुई सेना कह-लाने लगी। इसके अतिरिक्त मुसल्मानों की खेती पकी हुई थी और वह उसे संग्रह करने के लिए ठहरे, इसलिए यह दण्ड का डर दिखलाया गया कि यदि वे सहाय न करेंगे तो अल्लाह उसी प्रकार सहाय करेगा जैसे कि उसने उस समय की जब मुहम्मद और अबूबकर मक्का के पास एक गुफ़ा में छिपे थे। उस समय, जब अबूबकर दुखी होता, मुहम्मद सा० यह कहकर उसे धैर्य बधाते—"अल्लाह हमारे साथ है" मुहम्मद सा० को फ़रिश्तों की सहायता मिली हुई थी जो कि मुसल्मानों को नहीं दीखते थे।

यता अल्लाह ने की है जिस समय काफ़िरों ने उसको जोड़े से निकाला जाय कि दोनों गुफ़ा में थे, जब अपने मित्र को कहने लगा कि तू रंज न कर—अल्लाह हमारे साथ है, फिर अल्लाह ने उस पर अपनी ओर से सन्तोष उतारा और उसकी सहायता के लिए वह सेनाएँ पहुंची जो कि तुमने नहीं देखीं; और काफ़िरों की बात नीचे डाली; और अल्लाह का कथन सदैव ऊपर है; अल्लाह शक्तिमान् है और बुद्धिमान् है।

(४) इन्फ़िरूऽ ख़िफ़ाऽफ़ऽव्व सिक़ाऽलऽव्व जाऽहिदूऽ बि अम्वाऽलिकुम् व अन्फ़ुसिकुम् फ़ी सबीलिऽल्लाहि; ज़ालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्लमून् ॥

हलके और भारी सभी निकलो और अपने धन और तन से (अल्लाह के मार्ग में) युद्ध करो; यह तुम्हारे लिए, यदि तुममें बुद्धि है तो, सबसे श्रेष्ठ है।

(५) लउ् काऽना अरज़ऽन् क़रीबऽव्व सफ़रऽन् क़ाऽसिदऽल्लऽ त्तबऊका वलाकिन्ँ बउ़दत् अ़लय्हिमु-श्शुक़्क़तु; व सयह्लिफ़ूना बिऽल्लाहि लविऽस्ततअ़्नाऽ ल ख़रज्नाऽ मअ़कुम्, युह्लिकूना अन्फ़ुसहुम्, वऽल्लाहु यअ़्लमु इन्नहुम् ल काज़िबून् ॥

यदि कुछ धन पास होता और यात्रा हलकी होती तो तेरे साथ चलते; परन्तु मार्ग उनको दूर दिखाई दिया; और अब अल्लाह की सौगन्धें खावेंगे कि यदि हमसे हो सकता तो अवश्य तुम्हारे साथ जाते, (इस प्रकार) अपनी आत्मा और अन्तःकरण का विनाश करते हैं; और अल्लाह जानता है-वह झूठे है।

[मंजिल २ पारा १० रु० ७।१७]

(१) अफ़ऽऽल्लाहु अन्का, लिमा अज़िन्ता लहुम् ,हत्ता यतबय्यना लकऽल्लज़ीना सदक़ूऽ व तअ्लमऽल् काज़िबीन् ॥

अल्लाह तुझे क्षमा करे, पूर्व इसके कि जो सत्य कहते हैं वह तुझ पर प्रगट हो जायँ, और तू झूठों को जान लेता, तू ने उन्हें क्यों छुट्टी दी ?

(२) लाऽ यस्तअ्ज़िनुकऽल्लज़ीना युअ्मिनूना बिऽल्लाहि वऽल् यउमिऽल् आख़िरि अय्युजाऽहिदूऽ बि अम्वाऽलि हिम् व अन्फ़ुसिहिम् वऽल्लाह अलीमुन्ँ बिऽल् मुत्तक़ीन् ॥

---

* यह आयत तबूक के—जो मदीना और दमश्क के बीच में है—संग्राम के विषय में है जो सन् ९ हिजरी में हुआ। उस समय हज़रत ३०००० मनुष्यों के सेनापति थे। ४२से४८ तक की आयतें इसी युद्ध की यात्रा में उतरीं

(हे पैग़म्बर!) जो लोग अल्लाह और अन्तिम दिवस पर विश्वास रखते हैं, वह तो तुमसे इस बात की छुट्टी मांगते नहीं कि अपने तन और धन से जिहाद में सम्मिलित न हों और अल्लाह संयमियों को भली भाँति जानता है।

(३) इन्नमाऽ यस्तअ्ज़िनुकऽल्लज़ीना लाऽ युअ्मिनूना बिल्लाहि वऽल् यउमिऽल् आख़िरि वऽर्ताऽबत् क़ुलूबु हुम् फ़ हुम् फ़ी रय्बिहिम् यतरद्दून्॥

तुझसे छुट्टी वही मांगते हैं जिनका अल्लाह और अन्तिम दिवस पर विश्वास नहीं है और उनके अन्तःकरण सन्देह में पड़े हैं, अतः वह अपने सन्देह में ही भटकते हैं।

(४) व लउ् अरादुऽऽल् ख़ुरूजा ल अअद्दूऽ लहू उद्दत व्वलाकिन् करिहऽ ल्लाहुऽन् ... बिआऽसहुम् फ़ सब्बत् हुम् व क़ीलऽक़् उ़दूऽ मअऽल् क़ाइदीन्॥

यदि (वे युद्धार्थ) प्रस्थ न करना चाहते तो उसका कुछ सामान तैयार करते; परन्तु अल्लाह को उनका उठना अच्छा न लगा, अतः उन्हें उहद्दी (पूरा आलसी) बना दिया और उन्हें आज्ञा मिली कि बैठने वालों के साथ बैठो।

(५) लउ् ख़रजूऽ फ़ी कुम्माऽ ज़ाऽदू कुम् इल्लाऽ ख़बाऽलऽव्व लाऽ अउ्ज़अ़ूऽ ख़िलालकुम् यब्ग़ूनकुमुऽल्

फ़ित्नता, व फ़ी कुम् सम्माऊना लहुम्; वऽल्लाहु अलीमुन् बि-ज़्ज़ालिमीन् ॥

यदि वह तुम्हारे साथ प्रस्थान करते तो वह तुममें दोष के अतिरिक्त अन्य कुछ न बढ़ाते और उपद्रव करने की खोज में तुम्हारे अन्दर घोड़े दौड़ाते, और तुममें से कुछ लोग उनके गुप्तचर हैं; अल्लाह अत्याचारियों को भले प्रकार जानता है।

(६) लक़दिऽब्तग़वुऽऽल् फ़ित्नता मिन् क़ब्लु व क़ल्लबूऽ लकऽल् उमूरा हत्ता जाअऽल् हक़्क़ु व ज़हरा अम्रुऽल्लाहि व हुम् कारिहून् ॥

और पूर्व से विनाश की खोज करते रहे हैं और तेरे कार्यों को विपरीत (उलटे) करते रहे हैं; यहां तक कि सत्य प्रतिज्ञा आ पहुंची और अल्लाह की आज्ञा प्रगट हुई और वह अप्रसन्न ही रहे।

(७) व मिन्हुम्मय्यक़ूलुऽअ्ज़न्ली वलाऽ तफ़्तिन्नी; अलाऽ फ़िऽल् फ़ित्नति सक़तूऽ; व इन्ना जहन्नमा ल मुहीतुन् बिऽल् काफ़िरीन् ॥

और कुछ उनमें कहते हैं कि मुझको छुट्टी दे और आपत्ति में मत डाल; सुनता है वह तो आपत्ति में पड़े हैं; और अस्वीकारकर्ताओं (काफ़िरों) को नर्क घेरे हुए है।

(८) इन् तुसिब्का हसनतुन् तसुअ् हुम्, व इन् तुसिब्का मुसीबतु य्यकूलूऽ क़द् अख़ज़्नाऽ अम्रनाऽ मिन् क़ब्लु व यतवल्लउऽव्व हुम फ़रिहून् ॥

यदि तुझको कुछ लाभ हो तो वह उन्हें बुरा लगे और यदि आपत्ति आवे तो कहते हैं कि हमने पूर्व ही अपना कार्य्य सँभाल लिया था और प्रसन्न होते हुए लौट जावें।

(९) कुल्लय्यु सीबना२ इल्लाऽ माऽ कतबऽल्लाहु लना, हुवा मउ लानाऽ, व अलऽल्लाहि फ़ल् यतवक्कलिऽल् मूअ् मिनून् ॥

(हे पैग़म्बर! इनसे) तू कह कि जो अल्लाह ने (हमारे लिलाट में) लिख दिया है उसके अतिरिक्त हमें अन्य कुछ न प्राप्त होगा, वही हमारा स्वामी है, और मुसल्मानों को उचित है कि अल्लाह पर विश्वास करें।

(१०) क़ुल् हल् तरब्बसूना बिना२ इल्ला२ इह्दऽल् हुस्नयय्निः व नह्नु न तरब्बसु बिकुम् अय्युसीबकुमुऽल्लाहु बि अज़ाऽबिम्मिन् इन्दिहीा२ अउ बि अय्दीनाऽ, फ़त रब्बसू२ इन्नाऽ मअकुम्मुतरब्बिसून् ॥

कह—दो भलाइयों में से एक के अतिरिक्त और क्या मार्ग तुम हमारे निमित्त खोजोगे? हम भी तुम्हारे निमित्त यही आशा

लगाये हुए हैं कि अल्लाह तुम्हारे ऊपर अपने पास से अथवा हमारे द्वारा कुछ भेजे, अतः प्रतीक्षा करो, हमभी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा में हैं।

(११) क़ुल् अन्फ़िक़ूऽ तुउ़्अऽन् अउ़्कर्हंऽल्लय्युतक़ब्बला मिन्कुम् ; इन्नकुम् कुन्तुम् क़ुउ़्मऽन् फ़ासिक़ीन् ॥

हे पैग़म्बर ! तू कह—धन को चाहे तुम प्रसन्नता से अथवा अप्रसन्नता से व्यय करो, यह तुम्हारी ओर से स्वीकार न किया जायगा; निश्चय तुम अनाज्ञाकारी हो।

(१२) व माऽ मनअ़हुम् अन्तुक़्बला मिन्हुम् नफ़्क़ातुहुम् इल्ला३ अन्नहुम् कफ़रूऽ बिऽल्लाहि व बिरसूलिही व लाऽ यअ़्तून्-स्सलाता इल्लाऽ वहुम् कुसाऽला वलाऽ युन्फ़िक़ूना इल्लाऽ व हुम् कारिहून् ॥

इसके अतिरिक्त कि उन्होंने अल्लाह और उसके पैग़म्बर पर अविश्वास किया, और नमाज़ नहीं पढ़ी, परन्तु (यदि पढ़ी भी तो) आलस्य के साथ और (दान-ख़ैरात में) व्यय नहीं किया परन्तु (यदि किया भी तो) दुर्भाव से-और किसी प्रकार उनके व्यय का स्वीकार होना बाधक नहीं होगा।

(१३) फ़लाऽ तुअ़्जिब्का अम्वाऽलुहुम् वला३ अउ़्लाऽदु हुम् ; इन्नमाऽ युरीदुऽल्लाहु लि युअ़ज़्ज़िबहुम्

बिहाऽ फ़िऽल् ह़याति-द्दुन्याऽ व तज़्हक़ा अन्फ़ुसुहुम् व हुम् काफ़िरून् ॥

अतः तू उनकी सम्पत्ति और सन्तति से साश्चर्य न हो; अल्लाह यही चाहता है कि सांसारिक जीवन में उनको इन वस्तुओं से प्रग्रस्त करे और जब तक उनके प्राण निकलें वह काफ़िर ही रहें।

(१४) व यह़्लिफ़ूना बिऽल्लाहि इन्नहुम् ल मिन्कुम्; व माऽ हुम्मिन्कुम् वला किन्नहुम् क़उमुय्यफ़्-क़ून् ॥

और अल्लाह की सौगन्ध खाते हैं कि वह निश्चय तुममें से है; और वह तुममें नहीं किन्तु वह लोग डरते हैं।

(१५) लउ यजिदूना मल्जऽन् अउ मग़ारातिन् अउ मुद्दख़लऽल्ल बल्लउऽ इलयहि वहुम् यज्मह़ून् ॥

यदि कहीं रक्षा स्थान पावें अथवा कोई गड्ढा वा शिर झुकाने को स्थान पावें तो उसी ओर रस्सियां तुड़ाते उलटे भागें।

(१६) व मिन्हुम्मय्यल्मिज़ुका फ़ि-स्सदक़ाति; फ़ इन उअ्तूऽ मिन्हाऽरज़ूऽ व इल्लम् युअ्तउऽ मिन्हा२ इज़ाऽ हुम् यस्ख़तून् ॥

और उनमें कुछ ऐसे हैं जो तुझे ज़कात बांटने में ताना देते हैं, अतः यदि उसमें से उनको मिले तो प्रसन्न हों और यदि न मिले तभी वह क्रुद्ध हो जावें।

(१७) व लउ् अन्नहुम् रज़ूमा२ आताहुमुऽल्लाहु व रसूलुहू व क़ाऽलूः ,हस्बुनऽऽल्लाहु स युअ्तीनऽऽल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही व रसूलुहू२ इन्ना२ इलऽल्लाहि राऽग़िबून् ॥

और क्या अच्छा था यदि वे जो अल्लाह और उसके पैग़म्बर ने उन्हें दिया है उससे प्रसन्न होते और कहते कि हमको पर्य्याप्त है; अल्लाह और उसका पैग़म्बर हमको अपने अनुग्रह से देता रहेगा, हमको अल्लाह ही चाहिए।

[मँजिल २ पारा १० रु ८।७]

(१) इन्नमऽ—स्सदक़ातु लिल्फ़ुक़राःइ वऽल् मसाकीनि वऽल् आमिलीना अलयहाऽ वऽल् मुअल्लफ़ति कुलूबुहुम् व फ़ि-र्रि क़ाऽबि वऽल् ग़ाऽरिमीना व फ़ी सबीलिऽल्लाहि वऽब्नि—स्सबीलि; फ़रीज़तम्मिनऽल्लाहि; वऽल्लाहु अलीमुन् ,हकीम् ॥

ज़कात (दान) भिखमंगों और अनाथों और उस काम पर निर्वाह करने वालों का और (उनका) जिनके मनों का

लुभाना है और जो दासता में हैं और जो तावान भरते हैं और अल्लाह के मार्ग में और मार्ग के पथिक के लिए अल्लाह का निश्चित किया हुआ है; और बुद्धिमान् अल्लाह सब जानता है।

(२) व मिन्हुमुऽल्लज़ीना युअ्ज़ून-न्नबिय्या व यक़ूलूना हुवा उज़ुनुन् ; क़ुल् उज़ुनु ख़यरिल्लकुम् युअ्मिनु बिऽल्लाहि व युअ्मिनु लिल् मुअ्मिनीना व रह्मतु ल्लिल्लज़ीना आमनूऽ मिन्कुम् ; वऽल्लज़ीना युअ्ज़ूना रसूलऽल्लाहि लहुम् अज़ाऽबुन् अलीम् ॥

और उनमें से कुछ लोग पैग़म्बर की निन्दा करते हैं और कहते हैं यह मनुष्य कान है; तू कह—तुम्हारे हित के लिए कान है, अल्लाह का विश्वास करता है और तुममें से जो मुसलमान हैं उनके साथ अनुग्रह है; और तुममें से जो लोग अल्लाह के पैग़म्बर की निन्दा करते हैं उनको दुःख का दण्ड है।

(३) यह्लिफ़ूना बिऽल्लाहि लकुम् लियुर्ज़ूकुम्, वऽल्लाहु व रसूलुहू३ अह़क़्क़ु अय्युर्ज़ूहु इन्काऽनूऽ मुअ्मिनीन् ॥

तुम्हारे सन्मुख अल्लाह की सौगन्धें खाते हैं कि तुम्हें प्रसन्न करें; और यदि वह मुसलमान हों तो अल्लाह और उसके पैग़म्बर को प्रसन्न करना परमावश्यक है।

(४) अलम् यअ्लमूऽ अन्नहू मय्युहाऽदिदिऽल्लाहा व रसूलहू फ़ अन्ना लहू नाऽरा जहन्नमा खाऽलिदऽन् फ़ीहाऽ; ज़ालिकऽल् खिज़्युऽल् अज़ीम् ॥

वह जान नहीं चुके कि जो कोई अल्लाह और उसके पैगम्बर से समना (मुक़ाबला) करे तो उसको नर्काग्नि (दोजख की आग) है जिसमें वह सदैव रहेगा; यही बड़ी लज्जा है।

(५) यह्ज़रुऽल् मुनाफ़िक़ूना अन्तुनज़्ज़ला अलय्हिम् सूरतुन् तुनब्बिउहुम् बि माऽ फ़ी क़ुलूबिहिम्; क़ुलिऽस्तह्ज़िऊऽ, इन्नऽल्लाहा मुख्रिजुम्माऽ तह्ज़रून् ॥

मुनाफ़िक़ डरा करते हैं कि उन पर कोई सूरत न उतरे कि जो उनको—जो कुछ उनके हृदय में है—बतला दे; (हे पैग़म्बर ! इन्हें) तू कह - हँसी करते रहो जिस वस्तु का तुम्हें भय है उसे अल्लाह प्रगट करने वाला है।

(६) व लइन् स अल्तहुम् ल यक़ूलुन्ना इन्नमाऽ कुन्नाऽ नख़ूज़ु व नल्अबु; क़ुल् अबिऽल्लाहि व आयातिही व रसूलिही कुन्तुम् तस्तह्ज़िऊन् ॥

और जो तू इनसे पूछे तो कहें—हम तो बोल चाल और खेल करते थे; तू कह—अल्लाह से और उसके वाक्य से और उसके पैग़म्बर से ठट्ठा करते थे।

(७) लाऽ तअ्तज़िरूऽ क़द् कफ़र्तुम् बअ्दा ईमाऽनिकुम् ; इन्नअ्फु अन्ताइफ़तिम्मिन्कुम् नुअ़ज्ज़िब् ताइफ़तन् ँ बि अन्नहुम् काऽनूऽ मुज्रिमीन् ॥

बहाने मत बनाओ, तुम विश्वास करके (मुसलमान होकर) काफिर होगए; यद्यपि हम तुममें से किन्हीं को क्षमा करेंगे तथापि किन्हीं को दण्ड भी देंगे क्योंकि वह अपराधी थे ।

मं० २ पारा १०, रु० ६।६

(१) अल् मुनाफ़िक़ूना वऽल् मुनाफ़िक़ातु बअ्ज़ुहुम्मिन् ँ बअ्ज़िन् यअ्मुरूना बिऽल् मुन्करि व यन्हौना अनिऽल् मअ्रूफ़ि व यक़्बिज़ूना अय्दियहुम् ; नसुऽऽल्लाहा फ़ नसियहुम् ; इन्नऽल् मुनाफ़िक़ीना हुमुऽल् फ़ासिक़ून् ॥

मुनाफ़िक़ (धर्म कपटी) स्त्री पुरुष अपने में से एक दूसरे के पीछे चलते हैं, बुरी सीख सिखाते हैं और भली बात छुड़ाते हैं और अपनी मुट्ठी बन्द रखते हैं; यह अल्लाह को भूल गये तो अल्लाह इनको भूल गया; निश्चय वही मुनाफ़िक़ अनाज्ञाकारी हैं ।

(२) वअ़दऽल्लाहुऽल् मुनाफ़िक़ीना वऽल् मुना-

फ़िक़ाति वऽल् कुफ़्फ़ारा नाऽरा जहन्नमा ख़ालिदीना फ़ीहाऽ; हिया ,हस्बुहुम् , व लअ़नहुमुऽल्लाहु, व लहुम् अ़ज़ाऽबुम्मुक़ीम् ॥

अल्लाह ने मुनाफ़िक़ मनुष्यों और स्त्रियों और मुनकिरों को नर्काग्नि का वचन दिया—उसमें पड़े रहें, उनको वही पर्याप्त है, और अल्लाह ने उनको फटकारा, और उनको स्थायी दुःख है।

(३) कऽल्लज़ीना मिन् क़ब्लिकुम् काऽनू२ अशद्दा मिन्कुम् कुव्वतव्व अक्सरा अम्वाऽलऽव्व अउ़लाऽदऽन्, फ़ऽस्तम्तऊ़ऽ बि ख़लाऽक़िहिम् फ़ऽस्तम्तअ़्तुम् बि ख़लाऽक़िकुम् कमऽऽस्तम्तअ़ऽल्लज़ीना मिन् क़ब्लिकुम् बिख़लाऽक़िहिम् व ख़ुज़्तुम् कऽल्लज़ी ख़ाऽज़ूऽ; उलाऽइका ,हबितत् अअ़्माऽलुहुम् फ़िद्दुन्याऽ वऽल् आख़िरति, व उलाऽइका हुमुऽल् ख़ासिरून् ॥

जिस प्रकार तुमसे पूर्व (पुरुष) बल में विशेष थे और वे सम्पत्ति और सन्तति अधिक रखते थे; फिर उन्होंने अपने भाग से उस समय लाभ उठाया तो तुम भी अपने भाग से लाभ उठाते हो जैसा उन्होंने-जो तुमसे पहले थे—अपने भाग से लाभ उठाया, तुम भी हँसी करने लगे जैसी उन्होंने

हँसी की, उनके कर्म इस संसार में और अन्तिम दिवस में असफल होंगे; और वही लोग हानि उठाने वालों में हैं।

(४) अलम् यअ्तिहिम् नबउऽल्लज़ीना मिन् क़ब्लिहिम् क़उमि नूहिंव्व आऽदिंव्व समूदा व क़उमि इब्राहीमा व अस्हाबि मद्यना वऽल् मुअ्तफ़िकाति; अतत्हुम् रुसुलुहुम् बिऽल् बय्यिनाति, फ़ माऽ काऽनऽल्लाहु लि यज़्लिमहुम् व ला किन् काऽनू३ अन्फुसहुम् यज़्लिमून् ॥

क्या इनको उनका—नूह की जाति और आद और समूद और इब्राहीम की जातियों और मदीना—निवासियों और उलटी नगरियों के जो उनसे पहले थीं, निवासियों का, सन्देश नहीं पहुँचा ? उन (जातियों) के पैग़म्बर उनके पास प्रत्यक्ष चिह्न लेकर आये; क्योंकि अल्लाह उन पर अन्याय नहीं करना चाहता था, किन्तु उन्होंने अपने आप अपने ऊपर अन्याय किया।

(५) वऽल् मुअ्मिनूना वऽल् मुअ्मिनातु बअ्ज़ुहुम् अउलियाउ बअ्ज़िन् यअ्मुरूना बिऽल् मअ्रूफ़ि व यन्हउना व अनिऽल् मुन्करि व युक़ीमून-स्सलाता व युअ्तून-ज़्ज़काता व युतीऊनऽल्लाहा व रसूलहू उलाऽइका सयर्हमुहुमुऽल्लाहु; इन्नऽल्लाहा अज़ीज़ुन् हकीम् ॥

और मुसल्मान मनुष्य और महिलाएं परस्पर मित्र हैं, वह सुकर्म की आज्ञा देते और कुकर्म से रोकते हैं और नमाज़ को स्थिर रखते हैं और दान देते हैं और अल्लाह तथा उसके पैग़म्बर की आधीनता करते हैं; यही लोग हैं जिन पर अनुग्रह करेगा; निश्चय अल्लाह बलवान् और बुद्धिमान् है।

(६) वअ़दऽल्लाहुऽल् मुअ्मिनीना वऽल् मुअ्मिनाति जन्नातिन् तज्री मिन्तह्तिहऽऽल् अन्हारु ख़ालिदीना फ़ीहाऽ व मसाकिना तृय्यिबतन् फ़ी जन्नाति अ़द्निन् ; व रिज़्वाऽ नुम्मिनऽल्लाहि अक्बरु; ज़ालिका हुवऽल् फ़उ़ज़ुऽल् अ़ज़ीम् ॥

अल्लाह ने मुसल्मान मनुष्यों और महिलाओं को बहिश्त (के बागों) का वचन दिया है कि जिनके निकट नहरें बहती हैं, उसमें वे सर्वदा निवास करें और बाग़ों में बसने को पवित्र गृह; और सबसे अधिक अल्लाह की प्रसन्नता, यही सबसे महान् (मनोनीत) मनोकामना है (जो उन्हें) मिलनी है।

(मंजिल, २ पारा १०, रु० १०।८)

(१) याऽ अय्युह–न्नबिय्यु जाऽहिदिऽल् कुफ़्फ़ाऽरा वऽल् मुनाफ़िक़ीना वऽग़्लुज़् अ़लय्हिम् व मअ्वाहुम् जहन्नमु; व बिअ्सऽल् मसीर् ॥

हे पैग़म्बर ! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से लड़ाई कर और उन पर तन्दखोई (सख़्ती) कर; और उनका निवास स्थान नर्क है; और वह बहुत बुरा स्थान है।

(२)यह् लिफ़ूना बिऽल्लाहि माऽ क़ाऽलूऽ; व लक़द् क़ाऽलूऽ कलिमतऽल् कुफ़्रि व कफ़रूऽ बअ्दा इस्लाऽमिहिम् व हम्मूऽ बिमाऽलम् यनाऽलूऽ, व माऽ नक़मूऽ इल्लाऽ अन् अग़्नाहुमुऽल्लाहु व रसूलुहू मिन् फ़ज़्लिही; फ़ इय्यतूबूऽ यकु ख़य्रऽल्लहुम् ; फ़ इय्यतवल्लउऽ युअ्ज़िब् हुमुऽल्लाहु अज़ाऽबऽन् अलीमऽन् फ़ि-दुन्याऽ वऽल् आख़िरति, व माऽलहुम् फ़िऽल् अर्ज़ि मिऽव्वलिय्यिव्वलाऽ नसीर् ॥

यह अल्लाह की सौगन्ध खाते हैं कि हमने नहीं कहा; और निस्सन्देह इन्होंने कुफ़्र का कलमा (शब्द) कहा है और मुसलमान होकर काफ़िर हो गये हैं और जो सोचा था वह प्राप्त न हुआ*, और यह सब इसका बदला करते हैं कि अ-

*कहा जाता है कि अलजल्लास इब्नसवीद ने इस सूरत की कोई ऐसी आयत—जो उक्त तबूक युद्ध में न जाने वालों को धतकारती है—सुन कर घोषणा करदी कि जो मुहम्मद साहब अपनी जाति वालों के सम्बन्ध में कहते हैं यदि वह सत्य है तो वे गधों से भी गये-बीते हैं। यह बात मुहम्मद साहब के कान तक पहुँची, उन्होंने उसे बुलवाया जिस पर उसने शपथ खाकर

ल्लाह और उसके पैग़म्बर ने अपने अनुग्रह से इन्हें धनाढ्य‡ कर दिया, अतः यदि पश्चात्ताप करें तो इनके निमित्त हित-कर है, और यदि न मानें तो अल्लाह उन्हें इस लोक और परलोक में दुःख का दण्ड देगा, और उनका भूतल पर न कोई समर्थक है और न सहायक।

(३) व मिन्हुम्मन् अ़हद्ऽल्लाहा ल इन् आतानाऽ मिन् फ़ज़्लिही ल नस्सद्दक़न्ना व लनकूनन्ना मिन–स्सा-लि.हीन्।

और कुछ उनमें वह हैं कि जिन्होंने अल्लाह से प्रतिज्ञा की थी कि यदि (अल्लाह) हमें अपने अनुग्रह से दे तो हम ख़ैरात करें और हम उपकारियों में सम्मिलित हो जावें।

(४) फ़ लम्माऽ आताहुम्मिन् फ़ज़्लिही बख़िलूऽ बिही व तवल्लउ्ऽ व्वहुम्म् अ़्रिज़ून्॥

फिर जब उसने उनको अपने अनुग्रह से दिया तो उसमें कृपणता करने लगे और पीठ फेर कर पृथक् हो गए।

इस कथन से इन्कार किया परन्तु तत्काल, ज्योंही यह आयत उतरी, उसने अपना दोष स्वीकार किया और उसका तौबा स्वीकार हुआ। —बेज़ावी

‡मुहम्मद साहब के बध करने का गुप्त प्रयत्न किया गया था; परन्तु मदीना वालों ने यह कह कर इस काम को न होने दिया कि मुहम्मद सा० और उसके लोगों के हमारे बीच में होने से हमारे व्योपार को बहुत लाभ पहुंचा।

(५) फ़ अअ्क़बहुम् निफ़ाऽक़ऽन् फ़ी कुलूबिहिम् इला यउ्मि यल्क़ूनहू बिमा२ अख़्लफ़ुऽऽल्लाहा माऽ वअ़दूहु व बिमाऽ काऽनूऽ यक्ज़िबून् ।।

फिर इस बात पर कि अल्लाह को जो वचन दिया था उन्होंने उसके विरुद्ध किया और इस बात पर कि वे झूठ बोलते थे, उनके मनों पर उसका प्रभाव वैर भाव रक्खा, जब तक कि वे उससे आकर मिलें।

(६) अलम् यअ्लमू२ अन्नऽल्लाहा यअ्लमु सिर्रहुम् व नज्वाहुम् व अन्नऽल्लाहा अ़ल्लाऽमुल्ग़ुयूब् ।।

क्या यह ज्ञात नहीं कर चुके कि अल्लाह उनका भेद और मन्त्र जानता है और यह कि अल्लाह प्रत्येक परोक्ष बात से परिचित है।

(७) अल्लज़ीना यल्मिज़ूनऽल्मुत्तविई ना मिनऽल्मुअ्मिनीना फ़ि-स्सदक़ाति वऽल्लज़ीना लाऽ यजिदूना इल्लाऽ जुह्दहुम् फ़ यस्ख़रूना मिन्हुम् सख़िरऽल्लाहु मिन्हुम् व लहुम् अ़ज़ाऽबुन अलीम् ।।

वह जो दान देने वाले मुसलमानों को पेट भर कर दोष देते हैं और उन्हें भी जो अपने परिश्रम की कमाई के अतिरिक्त और कोई ढंग नहीं रखते, फिर उन पर हँसते हैं; अल्लाह ने उनसे हंसी की है और उन्हें दुःख का दण्ड है।

(८) इस्तग़्फ़िर् लहुम् अउ् लाऽतस्तग़्फ़िर् लहुम् ; इन्तस्तग़्फ़िर् लहुम् सब्ईना मर्रतन् फ़लय्यग़्फ़िरऽल्लाहु लहुम् ; ज़ालिका बि अन्नहुम् कफ़रूऽ बिऽल्लाहि व रसूलिही; वऽल्लाह लाऽ यह्दिऽल् क़ौमऽल् फ़ासिक़ीन् ॥

तू उनके निमित्त क्षमा याचना कर अथवा न कर; यदि उनके निमित्त सत्तर बार क्षमा मांगे तो भी उनको अल्लाह कदापि क्षमा न करे; यह इस कारण कि उन्होंने अल्लाह और उसके पैग़म्बर को अस्वीकार किया; और अल्लाह अनाज्ञाकारी लोगों को मार्ग नहीं दिखाता।

[मं० २ पारा १० रुकूअ ११।६]

(१) फ़रिहऽल् मुख़ल्लफ़ूना बिमक़्अदिहिम् ख़िलाऽफ़ा रसूलिऽल्लाहि व करिहूऽ अय्युजाऽहिदूऽ बि अम्वाऽलिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् फ़ी सबीलिऽल्लाहि व क़ाऽलूऽ लाऽ तन्फ़िरूऽ फ़िऽल् हर्रि; क़ुल् नाऽरु जहन्नमा अशद्दु हर्रऽन् ; लउ् काऽनूऽ यफ़्क़हून् ॥

जो लोग (तबूक संग्राम में) पीछे छोड़ दिये गये थे वे अल्लाह और पैग़म्बर से पृथक् बैठकर प्रसन्न हुए और अल्लाह के मार्ग में अपने तन और धन से लड़ना उन्हें अप्रिय लगा और कहने लगे कि ग्रीष्म में मत चलो; (हे पैग़म्बर

इन्हें) तू कह—दोज़ख़ (नर्काऽग्नि) और अधिक तप्त है; यदि तुममें विवेक हो।

(२) फ़ल्यज़्.हकूऽ क़लीलऽव्वल्यब्कूऽ कसीरऽन् , जज़ाऽअन् बिमाऽ काऽनूऽ यक्सिबून् ॥

अतः हँस लेवें थोड़ा और रोवें बहुत सा, जो कमाते थे उसका यह फल है।

(३) फ़ इर्रजअकऽल्लाहु इला ता३इफ़तिम्मिन्हुम् फ़ऽस्तअ्ज़नूका लिल् ख़ुरूजि फ़ कुल्लन् तख़्रुजूऽ मइ.या अबदऽव्व लन् तुक़ाऽतिलूऽ मइ.या अ़दुव्वऽन्; इन्नकुम् रज़ीतुम् बिऽल् कुऊदि अव्वला मर्रतिन् फ़ऽक़्उदूऽ मअ़ऽल् ख़ाऽलिफ़ीन् ।

अतः यदि अल्लाह तुझको पुनः उनमें से किसी समुदाय की ओर ले जावे तो यह तुझसे निकलने के निमित्त निर्देश चाहें तो तू कह—तुम मेरे साथ कदापि न निकलोगे और न मेरे साथ किसी शत्रु से युद्ध करोगे; तुमको प्रथम वार बैठ रहना प्रिय लगा तो (अब भी) पीछे बैठे रहने वालों के साथ बैठे रहो।

(४) वलाऽ तुसल्लि अ़ला२ अ.हदिम्मिन्हुम्माऽता अबदऽव्वलाऽ तक़ुम् अ़ला क़ब्रिही; इन्नहुम् कफ़रूऽ बिऽल्लाहि व रसूलिही व माऽतूऽ वहुम् फ़ासिक़ून् ॥

और यदि कभी मर जाय तो उनमें किसी पर नमाज़ न पढ़ और न उसकी क़ब्र पर खड़ा हो; उन्होंने अल्लाह और उसके पैग़म्बर को अस्वीकार किया और अनाज्ञाकारी (काफ़िर रहते हुए) ही मरे हैं।

(५) वलाऽ तुअ्जिब्का अम्वाऽलुहुम् व अउ्लाऽदुहुम्; इन्नमाऽ युरीदुऽल्लाहु अय्युअ़ज़िबहुम् बिहाऽ फ़िदुन्याऽ व तज़्हक़ा अन्फ़ुसुहुम् व हुम् काफ़िरून्॥

और उनकी सम्पत्ति और सन्तति से साश्चर्य न हो; अल्लाह को यही अभीष्ट है कि उनको उन वस्तुओं से संसार में दण्डित करे और जब तक उनके प्राण निकलें (तब तक) वे काफ़िर ही रहें।

(६) व इज़ाऽ उन्ज़िलत् सूरतुन् अन् आमिनूऽ बिऽल्लाहि व जाऽहिदूऽ मअ़ा रसूलिहिऽस्तअ्ज़नका उलुऽत्त़ौलि मिन्हुम् व क़ाऽलूऽ ज़र्नाऽ नकुम्मअ़ऽल् क़ाऽइ़दीन्॥

और जब कोई सूरत उन पर उतारी जाती है कि तुम अल्लाह पर विश्वास लाओ और उसके पैग़म्बर के साथ मिल कर युद्ध करो तो उनमें से जो सामर्थ्यवान् हैं वह छुट्टी मांगते हैं और कहते हैं हमको छोड़ दे, हम (घर) बैठनेवालों के साथ (घर) रह जावें।

(७) रज़ूऽ बि अय्यकूनूऽ मअ़ऽल् ख़वाऽलिफ़ि व तुबिअ़ा अ़ला क़ुलूबिहिम् फ़ हुम् लाऽ यफ़्क़हून्॥

उनको यह अच्छा लगा कि पिछली स्त्रियों के साथ (घरों में) रह जावें और उनके मन पर (मौन) मुद्रा लग गई तो उनको बोध नहीं।

(८) ला किनि-र्रसूलु वऽल्लज़ीना आमनूऽ मअ़हू जाहदूऽ बि अम्वाऽलिहिम् व अन्फुसिहिम् व उलाऽइका लहुमुऽल् ख़य्रातु व उलाइऽइका हुमुऽल् मुफ़्लहून ॥

परन्तु पैग़म्बर और जिन्होंने (इस्लाम अथवा उस पर) विश्वास किया है और जिन्होंने उसके साथ साथ अपने तन और धन से युद्ध किया है उन्हीं को यश (प्राप्त) है और वही सफलता प्राप्त करेंगे।

(९) अअ़दऽल्लाहु लहुम् जन्नातिन तज्री मिन्तहतिहऽऽल् अन्हाऽरु ख़ालिदीना फ़ीहाऽ; ज़ालिकऽल् फ़उ़जुऽल् अ़ज़ीम् ॥

अल्लाह ने उनके निमित्त उद्यान उपस्थित कर रक्खे हैं उनके नीचे नहरें बहती हैं—उनमें निवास किया करें; यही महान् मनोकामना पूर्ण होती है।

[मंजिल २ पा० १० रु० १२।१०]

(१) व जाऽअऽल् मुअ़ज़्ज़िरूना मिनऽल् अअ़राऽबि लि युअ्ज़ना लहुम् व क़अ़दऽल्लज़ीना कज़बुऽऽल्लाहा व

रसूलहू; स युसीबुऽल्लज़ीना कफ़रूऽ मिन्हुम् अज़ाऽबुन् अलीम् ॥

और ऐराबी अर्थात् गंवार लोग बहाने बनाते आये जिससे उन्हें छुट्टी मिले और जो अल्लाह और पैग़म्बर से झूठे हुए वह (घर) बैठ रहे; उनमें जो मुनकिर (अस्वीकारकर्त्ता) हैं उनको अब दुःख का दण्ड मिलेगा।

(२-३) लयसा अल-ज़्ज़ुअफ़ाइ व लाऽ अलऽल् मर्ज़ा वलाऽ अलऽल्लज़ीना लाऽ यजिदूना माऽ युन्फ़िकूना ,हरजुन् इज़ाऽ नस,हूऽ लिल्लाहि व रसूलिही; माऽ अलऽल् मुह्सिनीना मिन् सबीलिन् ; वऽल्लाहु ग़फूरुर्रहीमुन्वलाऽ अलऽल्लज़ीना इज़ाऽ माऽ अतउका लितह्मिलहुम् कुल्ता लाऽ अजिदु माऽ अह्मिलुकुम् अलयहि तवल्लउऽव्व अअ्युनुहुम् तफ़ीज़ु मिन-द्दमइ, ह,ज़नऽन् अल्लाऽ यजिदूऽ माऽ युन्फ़िकून् ॥

वृद्धों और रोगियों के लिए कुछ दोष नहीं और न उनके लिए जिनको इतनी प्राप्ति नहीं कि जो व्यय कर सकें (और ऐसी दशा में) जब कि वे अल्लाह और पैग़म्बर के साथ शुद्ध हृदय (हो कर रहते) हों; उपकारी लोगों पर आक्षेप का मार्ग और अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है। और न उन पर कि जब तेरे पास आयें जिससे कि तू उनको सवारी दे; तूने कहा कि मेरे पास

कुछ नहीं कि जिसकी तुझको सवारी दूं तब वह उलटे लौटें और उनकी आंखों से इस दुःख में आंसू बहते हैं कि इनकी (इतनी) आय नहीं जो व्यय करें ।

(४) इन्नमऽ–स्सबीलु अलऽल्लज़ीना यस्तअ्ज़िनूनका वहुम् अग़्नियाउ रज़ूऽ बि अय्यकूनूऽ मअ्ऽल् ख़वाऽलिफ़ि व तवअ्ऽल्लाहु अला कुलूबिहिम् फ़ हुम् लाऽ यअ्लमून् ॥

दोष तो उनही लोगों पर है जो तुझसे छुट्टी मांगते हैं और धनाढय हैं; उन्हें यह प्रिय लगा कि पिछली स्त्रियों के साथ रह जावें और अल्लाह ने उनके मनों पर मुहर की है, अतः वह नहीं जानते ।

❀ ❀ ❀ ❀

पारा यअ्तज़िरूना ११

(५) यअ्‌तज़िरूना इलयकुम् इज़ाऽ रजअ्तुम् इलय्‌हिम्; कुल्लाऽ तअ्तज़िरूऽ लन्नुअ्‌मिना लकुम् क़द् नब्बअनऽऽल्लाहु मिन् अख्‌बाऽरिकुम्; व सयरऽल्लाहु अमलकुम् व रसूलुहू सुम्मा तुरद्दूना इला आलिमिऽल् ग़य्‌बि व-श्शहाऽदति फ़ युनब्बिउकुम् बिमाऽ कुन्तुम् तअ्‌मलून् ॥

मुसलमानो! जब तुम जहाद से) लौट कर उनकी ओर जाओगे तो वे लोग भांति भांति के बहाने बनावेंगे; (हे पैग़म्बर!) तू कह कि बहाने मत बनाओ हम तुम्हारी बात न मानेंगे, हमको अल्लाह तुम्हारे समाचार बता चुका है और अल्लाह और उसका रसूल तुम्हारे काम अभी देखेंगे। फिर तुम उसकी ओर लौटाये जाओगे जो गुप्त व प्रगट (कामों को) जानता है, अतः वह तुमको जो तुम कर रहे हो, (सभी को) बता देगा।

(६) स यह्‌लिफ़ूना बिऽल्लाहि लकुम् इज़ऽऽन्क़लब्तुम् इलय्‌हिम् लितुअ्‌रिज़ू अन्हुम्; फ़ अअ्‌रिज़ूऽ अन्हुम्; इन्नहुम् रिज्सुन् व मअ्‌वाहुम् जहन्नमु, जज़ाअन् बिमाऽ काऽनूऽ यक्सिबून् ॥

अब (वे) तुम्हारे पास अल्लाह की शपथ खावेंगे जब तुम उनके पास (जहाद से) लौटकर जाओगे जिससे तुम उनसे दरगुजर करो; अतः वह लोग अपवित्र हैं और उनका निवास-स्थान नर्क है, जो उनकी करनी का फल है।

(७) यह्लिफ़ूना लकुम् लि तर्ज़ौउऽ अन्हुम्, फ़ न् तर्ज़ौऽ अन्हुम् फ़ इन्नऽल्लाहा लाऽ यर्ज़ा अनिऽल् क़उ्मिऽल् फ़ासिक़ीन॥

तुम्हारे पास शपथ खावेंगे कि तुम उनसे प्रसन्न हो जाओ, अतः यदि तुम उनसे प्रसन्न होगे तो अल्लाह अनाज्ञाकारी झूठे) लोगों से प्रसन्न नहीं।

(८) अल् अअ्राऽबु अशद्दु कुफ़्ऽव्व निफ़ाऽक़ऽव्व अज्दरु अल्लाऽ यअ्लमूऽ हुदूदा माऽ अन्ज़लऽल्लाह अला रसूलिही; वऽल्लाहु अलीमुन् ,हकीम्॥

ऐराबी (गंवार लोग) कोरे काफ़िर और मुनाफ़िक़ हैं और इसी योग्य हैं कि जो नियम अल्लाह ने अपने पैग़म्बर पर उतारे हैं उन्हें न सीखें; और अल्लाह ज्ञानवान और बुद्धिमान् है।

(९) व मिनऽल् अअ्राऽबि मय्यत्तख़िज़ु माऽ युन्फ़िक़ु मग़्रमऽव्व यतरब्बसु बिकुमु-द्दवाऽइरा; अलय्हिम दाऽइरतु-स्सउ्इ; वऽल्लाहु समीउ्न अलीम्॥

और कुछ गंवार ऐसे हैं कि उनको जो व्यय करना पड़ता है उसका बदला विचार करते हैं और तुम्हारे विषय में दुर्भाग्यता की प्रतीक्षा करते हैं, उन्हीं पर दुर्भाग्यता आ पड़ेगी; अल्लाह सुनता और जानता है।

(१०) व मिनऽल् अअ्राऽबि मय्युअ्मिनु बिऽल्लाहि वऽल् यउ्मिऽल् आख़िरि व यत्तख़िज़ु माऽ युन्फ़िक़ु क़ुरुबातिन् इन्दऽल्लाहि व सलवाति र्रसूलि; अलाऽ इन्नहाऽ क़ुर्बतुल्लहुम्; सयुद्ख़िलु हुमुऽल्लाहु फी रह़्मतिही; इन्नऽल्लाहा ग़फूरुर्रह़ीम् ॥

और ग्रामाणों (गँवारों) में कुछ ऐसे (भी) हैं जो अल्लाह और अन्तिम दिन का विश्वास रखते हैं और जो कुछ (अल्लाह के मार्ग में) व्यय करते हैं उसको अल्लाह की समीपता और पैग़म्बर की आशीर्वादों का साधन समझते हैं, अतः सुन रक्खो कि वह (व्यय करना) उनके लिए समीपता का (कारण) है भी कि अवश्य मरे पीछे अल्लाह उन्हें अपने अनुग्रह में ले लेगा; निस्सन्देह, अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है।

[मंजिल २, पारा ११, रु० १३]

(१) व-स्साबिक़ूनऽल् अव्वलूना मिनऽल् मुहाजिरीना वऽल् अन्साऽरि वऽल्लज़ीनऽत्तबऊ हुम् बिइह्सानिर्रज़ियऽल्लाहु अन्हुम् व रज़ूऽ अन्हु व अअ्द्दा

लहुम् जन्नातिन् तज्री तह्तहऽऽल् अन्हारु ख़ालिदीना फ़ीहा३ अबदऽन् ज़ालिकऽल् फ़ज़्ज़ुऽल् अज़ीम् ॥

और हिजरत करने वालों और अन्सार में से जो लोग (इस्लाम के स्वीकार करने में) अग्रणी रहे और सब से पूर्व (विश्वासी हुए) और वह लोग जो इनके पश्चात् शुद्ध हृदय से इस्लाम में प्रविष्ट हुए, अल्लाह उनसे प्रसन्न और वे अल्लाह से प्रसन्न और अल्लाह ने उनके लिए ऐसे बहिश्त के बाग़ तय्यार कर रक्खे हैं जिनके निकट नहरें बह रही होंगी और यह उनमें सदा-सर्वदा निवास करेंगे; (और) यह बड़ी भारी सफलता है।

(२) व मिम्मन् हउलकुम्मिनऽल् अअ्राऽबि मुनाफ़िक़ूना; व मिन् अह्लिऽल मदीनति मरदूऽ अलन्निफ़ाऽक़ि लाऽ तअ्लमुहुम् ; नह्नु नअ्लमुहुम्; स नुअज़्ज़िबुहुम्मर्रतय्नि सुम्मा युरद्दूना इला अज़ाबिन् अज़ीम् ॥

और (मुसल्मानो !) तुम्हारे निकटवर्त्तीय ग्रामीणों में से (कुछ) मुनाफ़िक़ (कपटी हैं; और स्वयं मदीना निवासियों में से (भी) जो द्वेष पर दृढ़ (स्थिर) हैं उनको (हे पैग़म्बर !) तुम नहीं जानते; हम इनको (भली भांति) जानते हैं, अतः अभी तो हम (संसार में) इनको डबल

(दुगुना) दण्ड देंगे; फिर महान् दुःख की ओर लौटाए ज.यँगे।

(३) व आख़रूनऽअ़्तरफ़ूऽ बि .ज़ुनूबिहिम् ख़लत़ूऽ अ़मलऽन् सालि.हऽव्व आख़रा सय्यिअऽन्, अ़सऽल्लाहु अय्यतूबा अ़लय्हिम् ; इन्नऽल्लाहा ग़फ़ूरु-र्रह़ीम् ॥

और कुछ मनुष्य हैं जिन्होंने अपने अपराध को स्वीकार किया और मिले जुले कार्य किये—कुछ अच्छे और कुछ बुरे; अतः आश्चर्य नहीं कि अल्लाह उनकी क्षमा प्रार्थना स्वीकार कर ले; क्योंकि अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है।

(४) ख़ुज़् मिन् अम्वाऽलिहिम् सदक़तन् तुतह्हिरुहुम् व तुज़क्कीहिम् बिहा व सल्लि अ़लय्हिम् ; इन्ना सलातका सकनुल्लहुम् ; वऽल्लाहु समीउ.न् अ़लीम् ॥

(हे पैग़म्बर ! यह लोग अपने धन को ख़ैरात करें तो) इनके धन का दान ले लिया करो; क्योंकि दान स्वीकार करने से तुम इनको (इनके पापों से) पवित्र और पृथक् करते हो और इनको शुभ आशीष दो; क्योंकि तुम्हारा आशीर्वाद इनके लिए सन्तोष है; और अल्लाह सुनता और जानता है।

(५) अलम् यअ़्लमूऽ अन्नऽल्लाहा हुवा यक़्बलुत्तउ़्बता अ़न् .इबाऽदिही व यअ़्ख़ुज़ु.—स्सदक़ाति व अन्नऽल्लाहा हुव—त्तव्वाबु—र्रह़ीम् ॥

क्या इन लोगों को इसका बोध नहीं कि अल्लाह ही इन लोगों की क्षमा-प्रार्थना स्वीकार करता है और वही दान (का धन) लेता और अल्लाह बड़ा क्षमा-प्रार्थना स्वीकार करने वाला है।

(६) व कुलिऽअ्मलूऽ फ़ सयरऽल्लाहु अ्मलकुम् व रसूलुहू वऽल् मुअ्मिनूना व सतुरद्दूना इला आ़लिमिऽल् ग़य्बि व-श्शहाऽदति फ़ युनब्बिउकुम् बिमाऽ कुन्तुम् तअ्मलून् ॥

और (हे पैग़म्बर! तू) कह कि तुम आचरण करते रहो, अतः अभी तो अल्लाह तुम्हारे आचरणों को देखेगा और अल्लाह का पैग़म्बर और मुसल्मान (भी देखेंगे) और (मृत्यु के पश्चात्) तुम अवश्य उसकी ओर लौटाए जाओगे जो गुप्त और उपस्थित है, (वह सब) जानता है फिर जो कुछ तुम संसार में करते रहे हो वह उससे तुमको परिचित कर देगा।

(७) व आख़रूना मुर्जउना लि अम्रिऽल्लाहि इम्माऽ युअ़ज़्ज़िबु हुम् व इम्मा यतूबु ,अलय्हिम् ; वऽल्लाह ,अलीमुन् ,हकीम् ॥

और (कुछ लोग वह हैं कि अल्लाह की आज्ञा की प्रतीक्षा में उनका मामला मुल्तवी है कि वह या तो उनको दण्ड दे अथवा उनकी क्षमा प्रार्थना स्वीकार करे; और अल्लाह ज्ञाता और बुद्धिमान् है।

(८) वऽल्लज़ीनऽत्तख़ज़ू ऽ मस्जिदऽन् ज़िराऽरऽव्व कुफ़्ऽव्व तफ़्रीक़ऽन् ँ बय्नऽल् मुअ्मिनीना व इर्सा ऽदऽ-ल्लि मन् हाऽरबऽल्लाहा व रसूलहू मिन् क़ब्लु, व ल यह्लिफुन्ना इन् अरद्ना१ इल्लऽऽल् हुस्ना; वऽल्लाहु युश्हदु इन्नहुम् ल काज़िबून ॥

और (एक प्रकार के मुनाफ़िक वह भी हैं) जिन्होंने इस उद्देश्य से एक मसजिद बना खड़ी की कि (मुसलमानों को) हानि पहुंचायें और कुफ़्र करें और मुसलमानों में फूट डालें और उन लोगों को शरण दें जो अल्लाह और रसूल के साथ पहले युद्ध कर चुके हैं और पूछा जायगा तो शपथें खाने लगेंगे कि हमने तो भलाई के अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार की इच्छा की नहीं; और अल्लाह साक्षी देता है कि यह अवश्य झूठे हैं।

(९) लाऽ तक़ुम् फ़ीहि अबदऽन्; ल मस्जिदुन् उस्सिसा अल-त्तक़्वा मिन् अव्वलि यउ्मिन् अ हक़्क़ु अन्तक़ूमा फ़ीहि; फ़ीहि रिजाऽलुय्युहिब्बूना अय्यततहह्रूऽ; वऽल्लाहु युहिब्बुल् मुत्तहहिरीन् ॥

(हे पैग़म्बर !) तुम उस मसजिद में कभी जाकर खड़े भी न होना। हां, वह मसजिद जिसका आधार आरम्भ दिवस से संयम पर रक्खा गया है उसका यद्यपि अधिकार है कि तुम उसमें खड़े होकर इमामत करो क्योंकि उसमें ऐसे लोग हैं

जिन्हें भले प्रकार स्वच्छ पवित्र रहना प्रिय है; और अल्लाह को भली भाँति स्वच्छ पवित्र रहना प्रिय है।

(१०) अफ़मन् अस्ससा बुन्याऽनहू .अला तक़्वा मिनऽल्लाहि व रिज़्वाऽनिन् ख़यरुन् अम्मन् अस्ससा बुन्याऽनहू .अला शफ़ाऽ जुरुफ़िन् हाऽरिन् फ़ऽन्हाऽरा बिही फ़ी नाऽरि जहन्नमा, वऽल्लाहु लाऽ यह्दिऽल् क़उम-ज़्ज़ालिमीन् ॥

भला, जो मनुष्य अल्लाह के भय और उसकी प्रसन्नता पर अपने भवन की आधार-शिला रक्खे वह श्रेष्ठ है अथवा वह जो फुसफुसे खोखले कगारे के किनारे पर अपने भवन की आधारशिला स्थापित करे तो वह भवन उसको नर्क की अग्नि में ले गिरे; और अल्लाह अत्याचारी मनुष्यों को शिक्षा नहीं दिया करता।

(११) लाऽ यज़ाऽलु बुन्याऽनुहुमुऽल्लज़ी बनउऽरी बतन् फ़ी .क़ुलूबिहिम् इल्लाऽ अन्तक़त्त्आ .क़ुलूबुहुम्; वऽल्लाहु .अलीमुन् .हकीम् ॥

यह भवन जो इन लोगों ने बनाया है, इसके कारण इन लोगों के हृदयों में सर्वदा शङ्का और भय रहेगा यहां तक कि इनके हृदयों के टुकड़े टुकड़े हो जायँगे; और अल्लाह ज्ञाता और बुद्धिमान्* है।

---

*शाह अब्दुल क़ादिर ने 'वल्लज़ीनत्ताख़ज़ू' से लेकर यहां तक को

[मंजिल २ पारा ११ रु १४।८]

(१) इन्नऽल्लाहऽश्तरा मिनऽल् मुअ्मिनीना अन्फुसहुम् व अम्वाऽलहुम् बि अन्ना लहुमुऽल् जन्नता; युक़ाऽतिलूना फ़ी सबीलिऽल्लाहि फ़ यक़्तुलूना व युक़्तलूना वअ्दऽन् अलयहि हक़्क़ऽन् फ़ि-तउराति वऽल् इन्जीलि वऽल् क़ुर्आनि, व मन् अउफ़ा बि अह्दिही

आयतों के विषय में जो हाशिया लिखा है उसमें सभी आवश्यक ऐतिहासिक बातें सभी विद्यमान हैं उसीको हम ज्यों का त्यों उद्धृत किये देते हैं— "हज़रत मक्के से हिज़रत कर आये तो मदीने से बाहर—जहाँ एक मुहल्ला बनी उमर बिन औफ़ का था—उतरे। कुछ दिनों के पश्चात् नगर में स्थान प्राप्त किया और मस्जिद नबवी बनाई। उस मुहल्ले में जहाँ नमाज़ पढ़ते थे वहाँ लोगों ने मस्जिद बना रक्खी और समुदाय स्थिर रहा। वह मसजिद कबा के नाम से प्रसिद्ध है। हज़रत प्रायः सप्ताह के दिन वहाँ जाते और नमाज़ पढ़ते। उस मुहल्ले में कुछ मुनाफ़िक़ों ने चाहा कि अन्य मसजिद बनावें पहलों की हठ पर और अपना समुदाय पृथक् निश्चित करें और एक राहब अबू आमर कि इस्लाम के दायरे से निकल गया था उसको शाम से बुलाकर वहाँ सरदार और इमाम बनावें। हज़रत से चाहा कि पहले एक बार आप वहाँ नमाज़ पढ़ें तो हम समुदाय स्थापित करें। हज़रत को उनके कपट का पता न था अतः वचन दिया कि तबूक के युद्ध से लौटेंगे तो पहले वहाँ नमाज़ पढ़कर नगर में घुसेंगे। हक़ताला ने पहले सावधान कर दिया और पहले मसजिद कबा के लोगों की प्रशंसा की। मनुष्य सावधान रहे कि प्रगट में कोई आराधना है और उसमें दुष्कामना छिपी हुई है उसकी यह अवस्था है।"

मिनऽल्लाहि फ़ऽस्तब्शिरूऽ बि बयइ,कुमुऽल्लज़ी बाऽ यअ्तुम् बिही; व ज़ालिका हुवऽल् फ़उ्ज़ुऽल् अ्ज़ीम् ॥

अल्लाह ने मुसल्मानों से उनके प्राण और धन इस मूल्य पर क्रय कर लिये कि उनका बहिश्त हैं; (वे) अल्लाह के मार्ग में लड़ेंगे, मरेंगे और मारेंगे। तौरेत इंजील और कुरान में सत्य प्रतिज्ञा है, और अल्लाह से अधिक कौन अपने वचन को निबाहने वाला है; अतः अपने उस व्योपार पर, जो तुमने उससे किया है, प्रसन्न हो; और यही महान् मनोकामना पूरी होती है।

(२) अत्ताइबूनऽल आबिदूनऽल् हामिदून-स्साऽइहू,न—र्राऽकिऊ,न—स्साऽजिदूनऽल् आमिरून-ब्रिऽल् मअ्रूफ़ि व-न्नाऽहूना अनिऽल् मुन्किरा वऽल् हाफ़िज़ू,ना लि हुदूदिऽल्लाहि, व बश्शिरिऽल् मुअ्मि-नीन् ॥

तोबा (पश्चात्ताप) करने वाले, आराधना करने वाले, स्तुति करने वाले, यात्रा करने वाले, झुकने वाले, दण्डवत् करने वाले, सुकर्म की विधि बताने वाले और कुकर्म से रोकने वाले और अल्लाह की निश्चित मर्य्यादाओं पर स्थिर रखने वाले; और मुसल्मानों को हर्ष-समाचार सुना।

(३) माऽ काऽनाऽ लिन्नबिय्यि वऽल्लज़ीना आ-इ

मनू३ अय्यस्तग़्फ़िरूऽ लिल्मुश्रिकीना व लउ् काऽनू३ उली कुर्बा मिन् ् बअ्दि माऽ तबय्यना लहुम् अन्नहुम् अस्हाबुऽल् जहीम् ॥

पैग़म्बर और मुसल्मानों को उचित नहीं कि वे मुशरिकों (अर्थात् साझी ठहराने वालों) के लिए; चाहे वह समीपस्थ (सम्बन्धी) ही क्यों न हो, यह प्रगट हुए पश्चात् कि वह दोज़ख़ (नर्क) वाले हैं—क्षमा मांगें।

(४) व माऽ काऽनऽस्तिग़्फ़ाऽरु इब्राहीमा लि अबीहि इल्लाऽ अम्मउ् इ्दति व्व अ़दहा३ इय्याऽहु, फ़लम्माऽ तबय्यना लहू३ अन्नहू अ़तुव्वु ल्लिल्लाहि तबर्रा अमिन्हु; इन्ना इब्राहीमा ल अव्वाऽहुन् हलीम् ॥

और इब्राहीम का अपने पिता के निमित्त क्षमा मांगना एक प्रतिज्ञा के कारण, जो उसने उसके साथ की थी, अतिरिक्त (और) कुछ न था, फिर जब उस पर यह प्रगट हुआ कि वह अल्लाह का शत्रु है तो उससे रुष्ट हुआ; निश्चय इब्राहीम बड़ा कोमल हृदय और सहनशील है।

(५) व माऽ काऽनऽल्लाहु लि युज़िल्ला क़उ्मऽन बअ्दा इज़्हदाहुम् हत्ता युबय्यिना लहुम्माऽ यत्तकना, अल्लाहा बिकुल्लि शय्इन् अ़लीम् ॥

और अल्लाह ऐसा नहीं कि किसी जाति को जब कि उसे सत्पथ पर प्रवृत्त करा चुकोगे जब तक उन पर (वह बात) प्रगट न करदे कि जिससे उन्हें बचना है—पथ-भ्रष्ट करे; निश्चय अल्लाह प्रत्येक वस्तु से परिचित है।

(६) इन्नऽल्लाहा लहू मुल्कु-स्समावाति वऽल् अर्ज़ि; युह्यी व युमीतु; व माऽ लकुम्मिन्दूनिऽल्लाहि मिव्वलि य्यिऽव्वलाऽ नसीर् ॥

निश्चय अल्लाह ही है जिसका आसमान और पृथिवी में है, वह जिलाता है और मारता है; अल्लाह के अतिरिक्त अन्य कोई तुम्हारा समर्थक और सहायक नहीं।

(७-८) लक़द्ताऽबऽल्लाहु अल-न्नबिय्यि वऽल् मुहाजिरीना वऽल् अन्साऽरिऽल्लज़ीनऽत्त बऊहु फ़ी साऽअतिऽल् उस्रति मिन् ँ बअ्दि माऽ काऽदा यज़ीगु क़ुलूबु फ़रीक़िम्मिन्हुम् सुम्मा ताऽबा अलय्हिम् न्नहू बिहिम् रऊफुर्रहीमुव्व .अल-.स्सलासतिऽल्लज़ीना ख़ुल्लिफ़ूऽ; हत्ता२ इज़ाऽ ज़ाऽक़त् अलय्हिमुऽल् अर्ज़ु बिमाऽ रहुबत् व ज़ाऽक़त् अलय्हिम् अन्फ़ुसुहुम् व ज़न्नू२ अल्लाऽ मल्जअ मिनऽल्लाहि इल्ला२ इलय्हि, सुम्मा

ताऽबा अलय्‌हिम्‌ लि यतूबूऽ; इन्नऽल्लाहा हुव-त्तव्वाबु-र्रह़ीम्‌ ॥

यद्यपि अल्लाह ने पैग़म्बर पर बड़ा ही अनुग्रह किया मुहाजिरों और अन्सार पर (भी)-जिन्होंने तंगदस्ती के समय में पैग़म्बर का साथ दिया जब कि इनमें से किन्हीं कि हीं के मन विचलित होगये थे -उसी ने अपना अनुग्रह किया; (कि इनके मनों को संभाल लिया) निश्चय अल्लाह परम दयालु और बुद्धिमान्‌ है । उन तीनों (मनुष्यों) पर भी जो अल्लाह की आज्ञा की प्रतीक्षा में) पीछे छोड़े गये थे; यहां तक कि पृथ्वी विस्तृत होते हुए भी उनके लिए संकुचित होने लगी और वह अपने जीवन से हताश होगये कि अल्लाह के अतिरिक्त अन्यत्र कहीं भी रक्षा नहीं, फिर अल्लाह ने उनकी तोबा (पाप क्षमा प्रार्थना) स्वीकार करली जिससे कि (फिर भी) क्षमा प्रार्थना करते रहें; निस्सन्देह अल्लाह बड़ा प्रार्थना स्वीकार करने वाला और दयालु है ।

[मँजिल २ पारा ११ रु १५।४]

(१) याऽ अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनुऽऽत्तकुऽऽल्लाहा व कूनूऽ मअ़-स्सादिक़ीन्‌ ॥

हे मुसल्मानो ! अल्लाह से डरते रहो और सच्चों के साथ रहो ।

(२) माऽ काऽना लि अह्लिऽल् मदीनति व मन् हौलहुम्मिनऽल् अअ्राऽबि अय्यतख़ल्लफ़ूऽ अर्रसूलिऽल्लाहि वलाऽ यर्ग़बूऽ बि अन्फ़ुसिहिम् अन्नफ़्सिही; ज़ालिका बि अन्नहुम् लाऽ युसीबुहुम् ज़मउव्व लाऽ नसबुव्वलाऽ मख़्मसतुन् फ़ी सबीलिऽल्लाहि व लाऽ यतऊना मवृतिअऽ य्यग़ीज़ुऽल् कुफ़्फ़ारा वलाऽ यनाऽलूना मिन् अदुव्वि नय्लऽन् इल्लाऽ कुतिबा लहुम् बिही अमलुन सालिहुन्; इन्नऽल्लाहा लाऽ युज़ीउ अज्रऽल् मुह्सिनीन्॥

मदीना के निवासियों और उसके आसपास के रहने वाले ग्रामीणों को उचित न था कि अल्लाह के पैग़म्बर (के साथ) से पीछे रह जावें और न यह कि पैग़म्बर के प्राणों की अपेक्षा अपने प्राणों से अधिक प्रेम करें; यह इसलिए कि इन (जहाद करने वालों) को अल्लाह के मार्ग में प्यास, थकावट और क्षुधा का क्लेश पहुँचता है तो और जिन स्थानों पर काफ़िरों को इनका चलना असह्य प्रतीत होता है वहां चलते हैं तो और शत्रुओं से (कभी) कुछ मिल मिला रहता है तो (दुःख और सुख दोनों दशाओं में प्रत्येक कार्य के बदले इनका शुभ काम लिखा जाता है; निस्सन्देह अल्लाह सच्चे (हृदय से इस्लाम की सेवा करने वालों) के फल को नष्ट नहीं होने देता।

(३) वलाऽ युन्फ़िक़ूना नफ़क़तन् सग़ीरतव्वलाऽ कबीरतव्वलाऽ यक़्तऊ़ना वाऽदियऽन् इल्लाऽ कुतिबा लहुम् लि यज्ज़ियहुमुऽऽल्लाहु अह्सना माऽ काऽनूऽ यअ्मलून् ॥

और (इसी प्रकार) थोड़ा अथवा बहुत जो कुछ (अल्लाह के मार्ग में) व्यय करते हैं और जो घाटियां उन्हें तै करनी पड़ती हैं वह सब (इनके कर्म-पत्र में) इनके नाम लिखा जाता है, जिससे कि अल्लाह इनके कर्मों का इन्हें उत्तम से उत्तम फल प्रदान करें।

(४) व माऽ काऽनल्मुअ्मिनूना लि यन्फ़िरूऽ काऽफ़्फ़तन्; फ़ लउलाऽ नफ़रा मिन् कुल्लि फ़िर्क़तिम्मिन्हुम् ताऽइफ़तु ल्लि यतफ़क़्क़हूऽ फ़ि दीनि व लि युन्ज़िरूऽ क़ौमहुम् इज़ाऽ रजऊ इलयहिम् लअ़ल्लहुम् यह्ज़रून् ॥

और यह उचित नहीं कि मुसलमान सबके सब (अपने अपने घरों में से) निकल खड़े हों और मदीने में आ घुसें। ऐसा क्यों न किया कि उनके प्रत्येक समुदाय में से कुछ लोग (अपने घरों से) निकले होते कि दीन की समझ पैदा करते

और जब (सीख समझ कर) अपनी जाति में फिर पहुंचते तो उनको (अल्लाह की अवज्ञा से) डराते जिससे वह लोग (बुरे कर्मों से) बचते।

मं० २ पारा ११, रु० १६।७

(१) याऽ अय्युहऽऽल्लज़ीना आमनूऽ क़ाऽतिलुऽऽल्लज़ीना यलूनकुम्मिनऽल् कुफ़्फ़ाऽरि वल् यजिदूऽ फ़ीकुम् गि़लज़तन्; वाऽअ्लमूऽ अन्नऽल्लाहा मअ़ऽल् मुत्तक़ीन् ॥

मुसल्मानो! अपने आस पास के काफ़िरों से लड़ो और चाहिये कि तुममें कराराापन मालूम करें (और किसी पर व्यर्थ अत्याचार न करो) और ज्ञात रक्खो कि अल्लाह उन लोगों का साथी है जो संयमी हैं।

(२) व इज़ाऽ माऽ उन्ज़िलत् सूरतुन् फ़ मिन्हुम्म य्यकूलु अय्युकुम् ज़ाऽदत्हु हाज़िहीऽ ईमाऽनऽन्, फ़ अम्मऽऽल्लज़ीना आमनूऽ फ़ ज़ाऽदत् हुम् ईमाऽन व्व हुम् यस्तब्शिरून् ॥

और जिस समय कोई सूरत उतारी जाती है तो मुनाफ़िक़ों में से कुछ लोग (एक दूसरे से) पूछने लगते हैं कि भला इस (सूरत) ने तुममें से किसका ईमान (विश्वास) बढ़ा दिया

अतः जो विश्वासी हैं इसने उनका तो विश्वास बढ़ाया और वह अपना हर्ष मनाते हैं।

(३) व अम्मऽऽल्लज़ीना फ़ी क़ुलूबिहिम्मरज़ुन फ़ज़ाऽदत्हुम् रिज्सऽन् इला रिज्सिहिम् व माऽतूऽ व हुम् काफ़िरून् ॥

और जिनके मन में रोग है अतः उनको मलीनता पर मलीनता बढ़ाई और जब तक वह मरे काफ़िर (ही) रहे।

(४) अ वलाऽ यरउना अन्नहुम् युफ्तनूना फ़ी कुल्लि आऽमिम्मर्रतन् अउ् मर्रतयनि सुम्मा लाऽयतूबूना वलाऽ हुम् यज़्ज़क्करून् ॥

यह नहीं देखते कि वह प्रत्येक वर्ष एक वा दो बार परीक्षण में आते हैं, फिर पश्चात्ताप नहीं देखते और न शिक्षा ग्रहण करते हैं।

(५) व इज़ाऽ माउ उन्ज़िलत् सूरतुन्नज़रा बअ्ज़ुहुम् इला बअ्ज़िन्, हल् यराकुम्मिन् अहदिन सुम्मऽसरफ़ऽ; सरफ़ऽल्लाहु क़ुलूबुहुम् बि अन्नहुम् क़उमुल्लाऽ यफ़्क़हून् ॥

जब एक सूरत उतरी तो एक दूसरे की ओर देखने लगे कि कोई तुमको देखता है फिर चले गये; अल्लाह ने उनके हृदय इसलिए परिवर्तित कर दिये हैं कि वह लोग ऐसे हैं कि उनमें बुद्धि नहीं।

(६) लक़द् जा३अकुम् रसूलुम्मिन् अन्फ़ुसिकुम् अज़ीज़ुन् अलयहि माऽ अ़नित्तुम् ह़रीसुन् अलयकुम् बिऽल् मुअ्मिनीना रऊ़फ़ुर्रह़ीम् ॥

तुम्हारे पास तुम्हीं में से पैग़म्बर आया है यदि तुमको कष्ट मिले तो उसे भार मालूम होता है, वह तुममें जो मुसल्मान हैं उनको खोज रखता है, वह अनुग्रह रखता है और दयालु है।

(७) फ़ इन्तवल्लउ फ़क़ुल् ह़स्बियऽल्लाहु ला३ इलाहा इल्लाऽ हुवा, अलयहि तवक्कल्तु व हुा रब्बुऽल् अ़र्शिऽल् अ़ज़ीम् ॥

फिर यदि वह जावें तो तू कह तुझको अल्लाह पर्याप्त है उसके अतिरिक्त अन्य किसी की आराधना (योग्य) नहीं, मैंने उसी पर विश्वास किया और वही बड़े तख़्त का स्वामी है।



सूरये यूनस* [१०]

[मं० ३, पारा ११, रु० १।१०]

(१) अलिफ़् लाम् रा तिल्का आयातुऽल् किता-बिऽल् ,हकीम् ॥

अलिफ ल म् रा यह आयतें पक्की पुस्तक की हैं।

(२) अकाऽना लिन्नाऽसि अजबऽन् अन् अउ्-,हय्ना इला रजुलिम्मिन्हुम् अन् अन्ज़िरि-न्नाऽसा व बश्शिरिऽल्लज़ीना आमनूऽ अन्ना लहुम् क़दमा सिद्,क़िन् इन्दा रब्बिहिम्; क़ाऽलऽल् काऽफ़िरूना इन्ना हाज़ा ल सा,हिरुम्मुबीन् ॥

*सूरये यूनस मक्के में उतरी इसमें १०९ आयतें और ११ रुकूअ हैं। इस सूरत में यूनस (Jonah) पैग़म्बर का वर्णन है, इसमें साथ ही कुरैश काफ़िरों को सम्बोधित किया गया है। यह सूरत हिजरी से पूर्व की है। यहूदियों की रिवायतों और इतिहास की जानकारी से जाना जाता है कि यहूदियों में मुहम्मद साहब के मित्र और परिचित थे।

क्या लोगों को आश्चर्य हुआ कि हमने उनमें से एक मनुष्य को आज्ञा भेजी कि लोगों को भय सुना और (यह हर्ष समाचार दे कि जो कोई विश्वास करें उनको अपने पालनकर्त्ता के यहां सत्य पद है; अविश्वासी कहने लगे—"निस्सन्देह, यह साक्षात् जादूगर है।"

(३) इन्ना रब्बकुमुऽल्लाह ऽल्लज़ी ख़लक़-स्समावाति वऽल् अर्ज़ा फ़ी सित्तति अय्याऽमिन् ,सुम्मऽस्तवा अ़लऽल् अ़र्शि युदब्बिरुऽल् अम्रा; माऽ मिन शफ़ीइ़न् इल्लाऽ मिन् ,बअ़्दि इज़्निही; ज़ालिकुमुऽल्लाहु रब्बुकुम् फ़ाऽअ़्बुदूहु अफ़लाऽ तज़क्करून् ॥

(लोगो!) तुम्हारा पालनकर्त्ता वही अल्लाह है जिसने छः दिन में आकाश और पृथिवी को उत्पन्न किया फिर अर्श पर जा विराजा (फिर वहीं से) प्रत्येक कार्य का प्रबन्ध कर रहा है; उसकी जो पहले आज्ञा हो उसके अतिरिक्त कोई सिफ़ारिश नहीं कर सकता; यही अल्लाह तो तुम्हारा पालनकर्त्ता है फिर इसी की उपासना करो; क्या तुम विचार का प्रयोग नहीं करते?

(४) इलैहि मर्जिउ़कुम् जमीअ़न्; वअ़्दऽल्लाहि ,हक़्क़ऽन्, इन्नहू यब्दउऽऽल् ख़ल्क़ा ,सुम्मा युई़दुहू लियज्ज़ियऽल्लज़ीना आमनू व अ़मिलुऽ-स्सालिहाति बि [illegible]; वऽल्लज़ीना कफ़रूऽ लहुम् शराऽबुम्मिन

हुमीमि व्व अज़ा ऽबुन् अलीमुन् ँ बिमा काऽनूऽ यक्फ़ुरून् ॥

तुम सबको उसीकी ओर लौट जाना है; अल्लाह की प्रतिज्ञा सच्ची है; वही उसको बना देगा फिर दुहरा देगा जिससे उन्हें फल दे कि जिन्होंने विश्वास किया था और भले कर्मों को न्याय से किया था; और जिन्होंने अस्वीकार किया—उन्हें खौलता पानी और दुःख का दण्ड पीना है क्योंकि वे अविश्वासी हुये थे।

(५) हु वऽल्लज़ी जअ़ल–श्शम्सा ज़ियाऽ अव्वऽल् क़मरा नूरऽव्व क़द्दरहू मनाऽज़िला लि तअ़्लमूऽ अ़दद–स्सिनीना वऽल् हिसाऽबा माऽ ख़लक़ऽल्लाहु ज़ालिका इल्लाऽ बिऽल् हक़्क़ि; युफ़स्सिलुऽल् आयाति लि क़उ्मिंय्यअ़्लमून् ॥

वही है जिसने सूर्य को चमक और चन्द्रमा को प्रकाश बनाया और उसकी यात्रायें निश्चित कीं तो वर्षों की गणना और गणित को ज्ञात रक्खो; अल्लाह ने इन्हें सत्य के अतिरिक्त और किसी प्रकार नहीं बनाया वह उन लोगों पर, जिन्हें बुद्धि है, भेद प्रगट करता है।

(६) इन्ना फ़िऽख़्तिलाऽफ़ि–ल्लयलि व–न्नहाऽरि वमाऽ ख़लक़ऽल्लाहु फ़ि–स्समावाति वऽल् अर्ज़ि ल आयाति ल्लि क़उ्मिंय्यत्तक़ून् ॥

जो लोग (अल्लाह का) भय मानते हैं उनके लिए रात दिन के उलट फेर में और जो कुछ अल्लाह ने आकाश और पृथिवी में उत्पन्न किया है उसमें (अल्लाह की सामर्थ्य या सत्ता के अनेकों) चिन्ह हैं।

(७) इन्नऽल्लज़ीना लाऽ यर्जूना लिक़ाऽअना व रज़ूऽ बिऽल् हयाति-द्दुन्याऽ व,त्मअन्नूऽ बिहाऽ वऽ-ल्लज़ीना हुम् अन आयातिना ग़ाफ़िलून् ॥

जिन लोगों को (मृत्यु के पश्चात्) हमसे मिलने का खटका ही नहीं और जो इस संसार के जीवन से प्रसन्न है और निश्चिन्त होकर जीवन व्यतीत करते हैं और जो लोग हमारे चिन्हों से अपरिचित हैं।

(८) उलाऽइका मअ्वाहुमु-न्नाऽरु बिमा काऽनूऽ यक्सिबून् ॥

वही लोग हैं जिनको करतूत का परिणाम यह होगा कि उनका ठिकाना दोज़ख़ (होगा।

(९) इन्नऽल्लज़ीना आमनूऽ व अमिलु-स्सालि-हाति यह्दीहिम् रब्बुहुम् बि ईमा-निहिम्; तज्री मिन्तह्-तिहिमुऽल् अन्हारु फ़ी जन्नाति-न्नई,म् ॥

जिन लोगों ने विश्वास किया और शुभ कर्म भी किये उनके विश्वास की बरकत से उनको उनका पालनकर्त्ता

(मोक्ष का) मार्ग दिखा देगा, कि (मृत्यु के पश्चात्) आराम के उपवनों में (रहेंगे कि) जिनके निकट नहरें बह रही होंगी।

(१०) दअ्‌वाहुम् फ़ीहा सुब्हानक-ल्लाहुम्मा व तहिय्यतुहुम् फ़ीहा सलाऽमुन्, व आख़िरु दअ्‌वाहुम् अनिऽल् हम्दु लिल्लाहि रब्बिऽल् आलमीन ॥

उनमें (घुसते ही) चिल्ला उठेंगे कि हे अल्लाह! तू पवित्र है और उनमें उनकी शुभ आशिष—सलाम (अलेक) होगी और अन्त में इस प्रकार पुकारेंगे—सब प्रकार की प्रशंसा अल्लाह ही की है जो संसारों का पालनकर्त्ता है।

[मं० ३, पारा ११, रु० २।१०]

(१) व लउ युअ़्ज्जिलुऽल्लाहु लिन्नाऽसि- श्शर्रऽ-स्तिअ्‌जाऽ लहुम् बिऽल् ख़य्‌रि ल क़ुज़िया इलय्‌हिम् अजलुहुम्; फ़ नज़रुऽल्लजीना लाऽ यर्जूना लिक़ाऽ अनाऽ फ़ी तुग़्याऽनिहिम् यअ्‌महून ॥

और जिस प्रकार लोग लाभ के लिए शीघ्रता किया करते हैं यदि उसी प्रकार उनको कुकर्मों के दण्ड में हानि पहुँचा दिया करता तो उनकी मृत्यु (कभी की) हो चुकी होती और हम उन लोगों को—जिन्हें (मरे पीछे) हमारे समीप आने का (किञ्चिन्मात्र) सन्देह नहीं है—छोड़े रखते हैं कि (वे) अपनी उद्दण्डता में पड़े भटका करें।

(२) व इज़ाऽ मस्सऽल् इन्साऽन-ज़्ज़ुर्रु दआऽनाऽ लि जन् बिही३ अउ् क़ाऽइ दऽन् अउ् क़ा३इमऽन् , फ़ लम्माऽ कशफ़नाऽ अन्हु ज़ुर्रहू मर्रका अल्लम् यद्उ़ना३ इला ज़ुर्रिम्मस्सहू, कज़ालिका ज़ुय्यिना लिल् मुस्रिफ़ीना माऽ काऽनूऽ यअ्मलून् ॥

और जब मनुष्य को (किसी प्रकार का) कष्ट पहुंच जाता है तो पड़ा या बैठा वा खड़ा हमको पुकारे चला जाता है फिर जब हम उसके कष्ट को उससे दूर कर देते हैं तो ऐसा (निश्चिन्त होकर) चल देता है कि मानो उस कष्ट के—जो उसको पहुंच रहा था—(दूर करने के) लिए उसने हमको (कभी) पुकारा ही न था; जो लोग सीमा से बाहर पग रखते हैं उनको उनके कर्म उसी प्रकार भले करके दिखाये गये हैं।

(३) व लक़द् अह्लक्नऽऽल् क़ुरूना मिन् क़ब्लि-कुम् लम्माऽ ज़लमूऽ व जा३अत्हुम् रुसुलुहुम् बिऽल् बय्यिनाति व माऽ काऽनूऽ लि युअ्मिनूऽ कज़ालिका नज्ज़िऽल् क़उ्मऽल् मुज्रिमीन् ॥

और तुमसे पूर्व कितनी उम्मतें (जातियां) हो चुकी हैं कि जब उन्होंने कुचाल पर कमर कसी, हमने उनको नष्ट कर दिया और उनके पैग़म्बर उनके पास प्रत्यक्ष चमत्कार (मुअ-जिज़े) लेकर आये और उनको (इस्लाम पर) विश्वास

करना सुलभ न हुआ; पापी पुरुषों को हम इसी भांति दण्ड दिया करते हैं।

(४) सुम्मा जअ़ल्नाकुम् ख़लाइफ़ा फ़िऽल् अर्ज़ि मिन् ँ बअ़्दि हिम् लि नन्ज़ुरा कयफ़ा तअ़्मलून् ॥

फिर उन (की मृत्यु) के पश्चात् हमने तुम लोगों को उनका पृथ्वी में प्रतिनिधि बनाया जिससे देखें कि तुम लोग कैसे आचरण करते हो।

(५) व इज़ाऽ तुत्ला अ़लयहिम् आयातुनाऽ बय्यिनातिन् क़ाऽलऽल्लज़ीना लाऽ यर्जू ना लिक़ाऽ-अनऽऽअ़्ति बि क़ुर्आनिन् ग़य्रि हाज़ा अउ़्बद्दिल्हु क़ुल् माऽ यकूनु ली अन् उबद्दि लहू मिन् तिल्क़ाइ नफ़्सी; इन् अत्तबिउ़ इल्लाऽ माऽ यूहा इलय्या, इन्नी अख़ाऽफ़ु इन् अ़सय्तु रब्बी अ़ज़ाऽबा यउ़्मिन् अ़ज़ीम् ॥

जब हमारी प्रगट आज्ञाएँ इन लोगों को पढ़कर सुनाई जाती हैं तो जिन लोगों को हमारे पास आने का (तनिक भी) खटका नहीं वह (तुमसे) कहते हैं कि इनके सिवाय कोई और क़ुरान लाओ अथवा इसीमें हेर-फेर कर दो, (तुम उनसे) कहो कि मेरी तो ऐसी सामर्थ्य नहीं कि अपनी ओरसे इसमें हेर-फेर करूं; मेरी ओर जो वही आती है मैं तो उसी-का अनुसरण करता हूँ; यदि मैं अपने पालनकर्त्ता की आज्ञा

का उल्लंघन करूं तो मुझे (क़यामत के) बड़े दिन के दण्ड का भय लगता है।

(६) .क़ुल्लउ्शा३अल्लाहु माऽ तलउतुहू अ़लय्-कुम् वला३ अद्राकुम् बिही फ़ क़द् लबि.स्तु फ़ीकुम् उ़मुरऽम्मिन् क़ब्लिही; अफ़लाऽ तअ़्क़िलून् ॥

(हे पैग़म्बर! इन लोगों से) कह-यदि अल्लाह चाहता तो मैं यह (.क़ुर्आन्) पढ़कर तुमको सुनाता ही नहीं और न अल्लाह तुमको इससे परिचित करता, इससे पूर्व मैं चिरकाल पर्य्यन्त तुम लोगों में रह चुका हूँ; क्या तुम नहीं जानते?

(७) .फ़ मन् अज़्लमु मिम्मनिऽफ़्तरा अ़लऽल्लाहि कज़िबऽन् अउ् कज़्ज़बा बि आयातिही; इन्नहू लाऽ युफ़्लिहुल् मुऽज्रिमून् ॥

तो इससे अधिक अत्याचारी कौन है जो अल्लाह पर असत्य आक्षेप आरोपित वा उसकी आयतों को असत्य ठहरावे; इसमें तनिक संशय नहीं कि पापी सफलता न करेंगे।

(८) व यअ़्बुदूना मिन्दूनिऽल्लाहि माऽ लाऽ यज़ुर्रुहुम् .वलाऽ यन्फ़उ.हुम् व यक़ूलूना हा३ उला३इ शुफ़आ३उनाऽ .इन्दऽल्लाहि; क़ुल् अतुनब्बिऊनऽल्लाहा बिमाऽ लाऽ यअ़्लमु फ़ि-स्समावाति वलाऽ फ़िऽल् अर्ज़ि, सुब्हानहू व तआ़ला अ़म्माऽ युश्रिकून् ॥

और (यह) अल्लाह के अतिरिक्त ऐसी वस्तुओं की पूजा करते हैं जो न तो उनको हानि ही पहुंचा सकती हैं और न उनको लाभ ही पहुंचा सकती हैं और कहते हैं कि हमारे यह (उपास्य देव) अल्लाह के यहां हमारे सिफ़ारिशी हैं; (हे पैग़म्बर! इन लोगों से) कह—क्या तुम अल्लाह को ऐसी वस्तु का पता देते हो जिसको न (तू कहीं) आकाश में पाता है और न पृथिवी में; वह इन लोगों के समांश से उच्चतर है।

(६) व माऽ काऽन-न्नाऽसु इल्लाऽ उम्मतव्वाऽ हिदतन् फ़ऽख़्तलफ़ूऽ; व लउ् लाऽ कलिमतुन् सबक़त् मिर्रब्बिका ल.क़ुज़िया बय्नहुम् फ़ी माऽ फ़ीहि यख़्तलिफ़ून् ॥

और (आरम्भ में) लोग (धर्म के) एक ही ढंग पर थे मत भेद तो पीछे हुआ; और (हे पैग़म्बर!) यदि तुम्हारे पालनकर्त्ता की ओर से (प्रलय का) प्रतिज्ञा पूर्व से ही न की हुई होती तो जिन बातों में यह मत भेद दिखा रहे हैं (उन बातों में कभी का) उनके मध्य निर्णय कर दिया गया होता।

(१०) व यक़ूलूना लउ् लाऽ उन्ज़िला अ़लय्हि आयतुम्मिर्रब्बिही, फ़क़ुल् इन्नमऽल् ग़य्बु लिल्लाहि फ़ऽन्तज़िरूऽ, इन्नी मअ़कुम्मिनऽल् मुन्तज़िरीन् ॥

और कहते हैं कि इस (पैग़म्बर मुहम्मद) को इसके पालनकर्त्ता की ओर से कोई चमत्कार क्यों नहीं दिया गया?

अतः (हे पैग़म्बर ! इनसे) कह दे कि परोक्ष (भविष्य का ज्ञान) केवल अल्लाह ही को है तो तुम (भी अल्लाह की आज्ञा की) प्रतीक्षा करो, मैं (भी) तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में हूँ।

[मं० ३ पारा ११ रुकूअ ३]

(१) व इज़ा३ अज़क़्नऽ-न्नाऽसा र,ह्मतम्मिन् बअ्दि ज़र्रा३आ मस्सत्हुम् इज़ाऽ लहुम्मक्रुन् फ़ी३ आयाऽतिनाऽ, .कुलिऽल्लाहु अस्रउ् मक्रऽन्; इन्ना रुसुलनाऽ यक्तुबूना माऽ तम्कुरून् ॥

और जब लोगों को कष्ट पहुँचने के पश्चात् हम (कष्ट दूर करके अपने) अनुग्रह का स्वाद चखा देते हैं तो फिर वे हमारी आयतों (के विरोध) में प्रपंच रचते हैं; (हे पैग़म्बर ! तू इनसे) कह दे कि अल्लाह का प्रपञ्च (तुम्हारे प्रपञ्चों से) अधिक चलता हुआ है; और हमारे फ़रिश्ते तुम्हारे प्रपञ्चों को लिखते (जाते) हैं।

(२) हुवऽल्लज़ी युसय्यिरुकुम् फ़िऽल्बर्रि वऽल्बह्रि हत्ता३ इज़ाऽ .कुन्तुम् फ़िऽल्फ़ुल्कि, व जरय्ना बिहिम् बिरीहिन् तय्यिबति व्व फ़रिहू बिहाऽ जा३अत्हाऽ रीहुन् आऽसि.फ़ुव्व जा३अहुमुऽल्मउ्जु मिन् कुल्लि मकानऽनिव्व ज़न्नू अन्नहुम् उह़ीता बिहिम् दअ्वुऽऽ-

न्लाहा मुख़्लिसीना लहु-दीना, ल इन् अन् जयतनाऽ मिन् हाज़िही ल नकूनन्ना मिन-श्शाकिरीन् ॥

वही (ख़ुदा) है जो तुम लोगों को थल और जल में लिये लिये फिरता है यहां तक कि किसी समय तुम नौकाओं में होते हो, और वह लोगों को अनुकूल वायु की सहायता से लेकर चलती है और लोग उनकी चाल से प्रसन्न होते हैं (अकस्मात्) नौका को एक हवा का झोंका आ लगता है और लहरें प्रत्येक ओर से उन पर आरही हैं और वह समझते हैं कि (बुरी तरह) आ घिरे तो फिर केवल अल्लाह ही को स्वीकार कर उससे प्रार्थना करते हैं कि यदि तू हमारी इससे रक्षा करे तो हम अवश्य तेरे कृतज्ञ होंगे।

(३) फ़ लम्मा३ अन्जाहुम् इज़ाऽ हुम् यब्ग़ूना फ़िऽल् अर्ज़ि बिग़यरिऽल् .हक़्क़ि; या३ अय्युहन्नाऽसु इन्नमाऽ बग़्युकुम् अला३ अन्फ़ुसिकुम्मताऽ अऽल् .हयाति-दुन्याऽ सुम्मा इलयनाऽ मर्जिउकुम् फ़ नुनब्बिउकुम् बिमाऽ कुन्तुम् तअ़्मलून् ॥

फिर जब वह उनको (इस विपत्ति से) मुक्ति दे देता है तो वह थल पर पहुंचते ही व्यर्थ की उद्दण्डता करने लगते हैं; हे लोगो ! तुम्हारी उद्दण्डता (का प्रभाव) तुम्हारी ही आ-त्माओं पर (पड़ेगा, यह भी इस) संसार के (क्षणिक) जी-वन के लाभ (हैं अतः इनका आनन्द लूट लो) अन्त में तुमको

हमारी ओर लौटकर आना है तो जो कुछ भी तुम (उस समय) करते रहे हो, तुमको (उसका शुभाशुभ) बता देंगे।

(४) इन्नमाऽ मसलुऽल् .हयाति-द्दुन्याऽ कमाऽइन् अन्ज़ल्नाहु मिन-स्समाऽइ फ़ऽख़्तलता बिही नबाऽतुऽल् अर्ज़ि मिम्माऽ यअ्कुलु-न्नाऽसु वऽल् अन्आऽमु; .हत्ताऽ इज़ाऽ अख़ज़तिऽल् अर्ज़ु, ज़ुख़्रुफ़हाऽ वऽज़्ज़य्यनत् व ज़न्ना अह्लुहाऽ अन्नहुम् क़ादिरूना अलय्हाऽ अताहाऽ अम्रुनाऽ लय्लऽन् अउ नहाऽरऽन् फ़ जअ़ल्नाहाऽ .हसीदऽन् क अल्लम् तग़्ना बिऽल् अम्सि; कज़ालिका नुफ़स्सिलुऽल् आयाति लि क़ऽउमिय्यतफ़क्करून् ॥

सांसारिक जीवन का दृष्टान्त तो केवल जलवत् है कि हमने उसको आसमान से बरसाया फिर पृथ्वी की बनस्पति—जिसको मनुष्य और पशु खाते हैं—पानी के साथ मिश्रित हो गई, यहाँ तक कि जब पृथ्वी ने अपना शृङ्गार कर लिया और शोभायमान् हुई और खेतवालों ने समझा कि (अब) वह इस पर शक्तिवान् होगये, रात के समय वा दिन के समय हमारी आज्ञा उस पर उतरी, फिर हमने उसे काटकर ढेर कर दिया मानो कल यहां खेती थी ही नहीं; जो लोग सोचते समझते हैं उनके लिए हम अपनी आयतें इसी प्रकार विस्तार पूर्वक वर्णन करते हैं।

(५) वऽल्लाहु यद्ऊ३ इला दाऽरि-स्सलामि; व यह्दी मय्यशा३उ इला सिराऽतिम्मुस्तक़ीम् ॥

और अल्लाह लोगों को शान्ति के सदन (अर्थात् बहिश्त) की ओर बुलाता है और जिसको चाहता है सीधे मार्ग की ओर दिखा देता है।

(६) लिऽल्लज़ीना अह्सनुऽऽल् .हुस्ना व ज़ियाऽदतुन्; वलाऽ यर्हकु वुजूहहुम् क़तरुव्व लाऽ ज़िल्लतुन्; उला३इका अस्हाबुऽल् जन्नति, हुम् फ़ीहा ख़ालिदून ॥

जिन लोगों ने (संसार में) भलाई की उनके लिए (परलोक में भी वैसी ही) भलाई है और कुछ अधिक भी और पापियों की भांति उनके मुखों पर न कालिख पुती होगी और न मलीनता; यही लोग बहिश्ती हैं, वहां सदा रहेंगे।

(७) वऽल्लज़ीना कसबुऽ-स्सयिआति जज़ा३उ सय्यिअतिन् बि मिस्लिहाऽ व तर्हकुहुम् ज़िल्लतुन्; माऽ लहुम्मिनऽल्लाहि मिन् आऽसिमिन्, क अन्नमा३ उग्शियत् वुजूहु हुम् क़ितअऽम्मिनल्लय्लि मुज़्लिमऽन्; उला३इका अस्हाबु-न्नाऽरि, हुम्फ़ीहा ख़ालिदून् ॥

और जिन लोगों ने बुरे कर्म किये तो बुरे कर्मों का परिणाम वैसा ही (बुरा) और इनके मुखों पर मलीनता छा रही होगी; अल्लाह से कोई उनकी रक्षा करने वाला नहीं, मानो

अन्धेरी रात की चादर को फाड़कर उनके टुकड़े उनके मुख पर उढ़ा दिये गये हैं; यही नारकीय (दोज़खी) हैं, वहां सर्वदा रहेंगे।

(८) व यउमा नह्शुरुहुम् जमीअ़न् ,सुम्मा नकूलु लिल्लज़ीना अश्रकूऽ मकाऽनकुम् अन्तुम् व शुरकाउकुम् , फ़ ज़य्यल्नाऽ बयनहुम् व क़ाऽला शुरकाउहुम्माऽ कुन्तुम् इय्याऽनाऽ तअ्बुदून् ॥

और जिस दिन हम इन सबको (अपने यहां) इकट्ठे करेंगे, फिर मुशरिकों को आज्ञा देंगे कि तुम और जिनको तुमने (अल्लाह का) साझीदार बनाया, वह तनिक अपने स्थान पर ठहरें, फिर हम इनमें परस्पर फूट डाल देंगे और इनके शरीर (इनसे) कहेंगे कि तुम हमारी पूजा तो कुछ करते नहीं थे।

(९) फ़ कफ़ा बिऽल्लाहि शहीदऽन् ँ बयननाऽ व बयनकुम् इन्कुन्नाऽ अ़न् ,इबाऽदतिकुम् ल ग़ाफ़िलीन् ॥

अतः हमारे और तुम्हारे मध्य केवल अल्लाह ही साक्षी है, हमको तो तुम्हारी पूजा की सर्वथा सुध न थी।

(१०) हुना लिका तब्लूऽ कुल्लु नफ़्सिम्माउ अस्लफ़त् व रुद्दू इलऽल्लाहि मउलाहुमुऽल् ,हक़्क़ि व ज़ल्ला अ़न्हुम्माऽ काऽनूऽ यफ़्तरून् ॥

वहां प्रत्येक पुरुष अपने कर्मों की—जो उसने पहिले ही से भेजे हैं—परीक्षा कर लेगा और सब लोग अल्लाह की—जो उनका वास्तविक स्वामी है-ओर लौटा कर लाये जावेंगे और जो वे पर का ये उड़ाते रहे हैं वह सब उनसे नष्ट हो जावेंगी।

[मंजिल ३ पा० ११ रु० ४।१०]

(१) क़ुल् मय्यर्ज़ुक़ु कुम्मिन-स्समाऽइ वऽल् अर्ज़ि अम्मय्यम्लिकु-स्समूअ़ा वऽल् अब्साऽरा व मय्युख़्रिजुऽल् ह़य्यामिनऽल् मय्यिति व युख़्रिजुऽल् मय्यिता मिनऽल् ह़य्यि; व मय्युदब्बिरुऽल् अम्रा, फ़ स यक़ूलूनऽल्लाहु, फ़ क़ुल् अफ़लाऽ तत्तक़ून् ॥

(हे पैग़म्बर ! इनसे) पूछो कि तुमको आकाश और पृथ्वी से कौन भोजन देता है अथवा (तुम्हारे) कान और नेत्र किसके आधीन हैं और कौन है जो मृतक को जीवित से उत्पन्न करता है; और कौन (सृष्टि का) प्रबन्ध चला रहा है; तो तत्क्षण बोल उठेंगे कि अल्लाह; फिर (तुम इनसे) कहो कि तुम इस पर भी (इससे नहीं डरते।

(२) फ़ ज़ाऽलिकुमुऽल्लाहु रब्बुकुमुऽल् ह़क़्क़ु, फ़ माऽज़ाऽ बअ़्दऽल् ह़क़्क़ि इल्लऽ-ज़्ज़लालु फ़ अन्ना तुस्रफ़ून् ॥

फिर यही अल्लाह तो तुम्हारा सत्य पालनकर्त्ता है, फिर

सत्य के विदित हुए पीछे मार्गच्युत होना नहीं तो और क्या है, फिर तुम लोग किधर को फिरे चले जा रहे हो ?

(३) कज़ालिका ह़क़्क़त् कलिमतु रब्बिका अलऽ-ल्लज़ीना फ़ सक़ूउ अन्नहुम् लाऽ युअ्मिनून् ॥

(हे पैग़म्बर !) इसी प्रकार तुम्हारे पालनकर्त्ता की आज्ञा अनाज्ञाकारी लोगों पर सत्य होकर रही कि यह किसी प्रकार विश्वास नहीं करेंगे।

(४) क़ुल हल् मिन् शुरकाइकुम्मय्यब्दउऽऽल् ख़ल्क़ा सुम्मा युई़दुहू फ़ अन्ना तुअ्फ़कून् ॥

पूछो—तुम्हारे ठहराये हुए शरीकों में से कोई ऐसा भी है जो सृष्टि को प्रथम बार उत्पन्न करे फिर उनको (मारकर) पुनः उत्पन्न करे; कहो कि अल्लाह ही सृष्टि को प्रथम बार उत्पन्न करता है और वही उन्हें मारकर पुनः उत्पन्न करेगा तो अब तुम किधर को उलटे जा रहे हो ?

(५) क़ुल् हल् मिन् शुरकाइकुम्मय्यह्दीउ इलऽल् ह़क़्क़ि, क़ुलऽल्लाहु यह्दी लिल् ह़क़्क़ि, अफ़म्मय्यह्दीउ इलऽल् ह़क़्क़ि अ़ह़क़्क़ु अय्युत्तबआ अमल्लाऽ यहिद्दीउ इल्लाउ अय्युह्दा; फ़माऽ लकुम् कयफ़ा तह़्कुमून् ॥

(हे पैग़म्बर ! इनसे) पूछो कि तुम्हारे कोई भी ऐसा है

जो सत्य (मत) का मार्ग दिखा सके; कहो – अल्लाह ही सत्य का मार्ग दिखाता है; तो क्या जो सत्य का मार्ग दिखाये वह इसका अधिक अधिकारी है कि उसकी आज्ञा का अनुसरण किया जाय अथवा जो ऐसा (विवश) है कि जब तक दूसरा उसको मार्ग न दिखावे वह स्वयं भी मार्ग नहीं पा सकता, फिर तुम लोगों को क्या हो गया है, कैसे निर्णय करते हो ?

(६) वमाऽ यत्तबिउ अक्सरुहुम् इल्लाऽ ज़न्नऽन ; इन्न-ज़्ज़न्ना लाऽ युग़्नी मिनऽल् .हक़्क़ि शय्अऽन् ; इन्नऽ-ल्लाहा अलीमुन् ँ बिमाऽ यफ़्अलून् ॥

और इन लोगों में से प्रायः कल्पना पर चलते हैं, अतः कल्पना के तुक्के सत्य के सम्मुख कुछ उपयोगी नहीं होते: जैसी जैसी मूर्खता यह लोग कर रहे हैं अल्लाह उनसे पूर्णतः परिचित है ।

(७) वमाऽ काऽना हाज़ऽल् क़ुर्आनु अय्युफ़्तरा मिन्दूनिऽल्लाहि वला किन् तस्दीक़ऽ ल्लज़ी बय्ना यद-यहि व त.फ्सीलऽल् किताबि लाऽ रय्बा फ़ीहि मिर्रब्बि-ऽल् आलमीन् ॥

और यह .क़ुरान इस प्रकार की पुस्तक नहीं कि अल्लाह के अतिरिक्त अन्य कोई इसको अपनी ओर से बना लावे किन्तु जो पुस्तकें इसके उतरने से पूर्व की हैं (यह) संसार के पा-

लनकर्त्ता की ओरसे उनकी पुष्टि है और पुस्तकों (की आज्ञाओं) का विस्तार पूर्वक वर्णन है।

(८) अम् यकूलूनऽफ्तराहु; कुल् फ़अ्तूऽ बिसूरति म्मिस्लिही वऽद्ऊऽ मनिऽस्ततअ्तुम्मिन्दूनिऽल्लाहि इन् कुन्तुम् सादिक़ीन् ॥

क्या यह लोग (कुरान के विषय में) यह कहते हैं कि इसको पैग़म्बर ने स्वयं बना लिया है तो (हे पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि यदि तुम (अपने दावे में) सच्चे हो और जैसा तुम कहते हो कि मैं इसके बना लेने की शक्ति रखता हूँ तो तुम भी (भाषा भिज्ञ होते हुए) ऐसी एक सूरत ही बनालाओ और यदि तुम सच्चे हो तो अल्लाह के अतिरिक्त जिसको चाहो (अपनी सहायतार्थ) बुलालो।

(९) बल् कज़्ज़बूऽ बिमाऽ लम् युहीतूऽ बिइल्मिही वलम्माऽ यअ्तिहिम् तअ्वीलुहू, कज़ालिका कज़्ज़बऽल्लज़ीना मिन् क़ब्लिहिम् फ़ऽन्ज़ुर् कयफ़ा काऽना आक़िबतु-ज़्ज़ालिमीन् ॥

परन्तु उन्होंने उस वस्तु को असत्य ठहराया, जिसके समझने की उनको सामर्थ्य न थी, अब तक उन पर उनका अर्थ प्रगट न हुआ, ऐसे ही पूर्वजों ने झुठलाया सो देखो दुष्टों का क्या अन्त हुआ।

(१०) व मिन्हुम्मय्युअ्मिनु बिही व मिन्हुम्मल्लाऽ युअ्मिनु बिही; व रब्बुका अअ्लमु बिऽल् मुफ़्सदीन् ॥

और उनमें से कुछ लोग ऐसे हैं जो .कुरान पर (भविष्य में) विश्वास कर लेंगे और कुछ ऐसे हैं जो उस पर विश्वास करने वाले नहीं; और (हे पैग़म्बर !) तुम्हारा पालनकर्त्ता उपद्रवियों को भली भांति जानता है।

[मंजिल ३ पारा ११, रु० ५ १३]

(१) व इन् कज़्ज़बूका फ़ कुल्ली अ़मली व लकुम् अ़मलुकुम् , अन्तुम् बरीऊना मिम्मा अअ्मलु व अनाऽ बरीउम्मिम्माऽ तअ्मलून् ॥

और (हे पैग़म्बर !) यदि (इतने समझाने पर भी यह लोग) झुटलाते ही चले जाय तो कहदो कि मेरा कृत्य मुझको और तुम्हारा कृत्य तुमको, तुम मेरे कामों के जिम्मेवार नहीं और मैं तुम्हारे काम का जिम्मेवार नहीं।

(२) व मिन्हुम्मय्यस्तमिऊना इलय्का; अफ़अन्ता तुस्मिउ़स्सुम्मा व लउ् काऽनूऽ लाऽ यअ्क़िलून् ॥

और (हे पैगम्बर !) इनमें कुछ लोग हैं कि तुम्हारी ओर कान लगाते हैं तो क्या तुम इन बहरों को सुना सकोगे जिनमें यद्यपि बुद्धि भी नहीं है।

(३) व मिन्हुम्मय्यन्ज़ुरु इलय्का अफ़ अन्ता तह्-
दिऽल् उम्या व लउ् काऽनूऽ ला युब्सिरून् ॥

और इनमें से कुछ लोग हैं जो तुम्हारी ओर तकते हैं तो क्या तुम अन्धों को मार्ग दिखा दोगे चाहे इन्हें कुछ न दिखाई देता हो ?

(४) इन्नऽल्लाहा लाऽ यज़्लिमु-न्नाऽसा शय्अऽव्वला
किन्न-न्नाऽसा अन्फ़ुसहुम् यज़्लिमून् ॥

अल्लाह तो मनुष्यों पर रत्ती भर भी अन्याय नहीं करता परन्तु मनुष्य स्वयं अपने (आत्मा के) ऊपर अत्याचार करते हैं ।

(५) व यउ्मा यह्शुरुहुम् क अल्लम् यल्बसू२
इल्लाऽ साऽ अतऽम्मिन-न्नहारि यत आऽरफ़ूना बय्न-
हुम् ; क़द् ख़सिरऽल्लज़ीना कज़्ज़बूऽ बिलिक़ा२इऽल्लाहि
व माऽ काऽनूऽ मुह्तदीन् ॥

और जिस दिन (अल्लाह अपने पास) उन्हें एकत्रित करेगा जैसे कि वह न रहे थे परन्तु घड़ी भर दिन, वे परस्पर पहचानेंगे; निस्सन्देह जिन्होंने अल्लाह का मिलना असत्य ठहराया और न आये (सच्चे) मार्ग पर ।

(६) व इम्माऽ निरुयन्नका बअ्ज़ऽल्लज़ी नइ्दु-

हुम् अव् नतवफ़्फ़यन्नका फ़ इलय्नाऽ मर्जिउ हुम् सुम्मऽ-ल्लाहु शहीदुन् अला माऽ यफ़्अलून् ॥

और (हे पैग़म्बर !) यदि हम तुमको उन प्रतिज्ञाओं में से, जो हम उनसे करते हैं, कोई प्रतिज्ञा दिखलावें अथवा हम तेरा प्राण ले लें, अन्त में उनको हमारे पास फिर आना है, फिर अल्लाह उसका साक्षी है जो वह करते हैं।

(७) व लिकुल्लि उम्मतिर्रसूलुन् ; फ़ इज़ाऽ जाऽआ रसूलुहुम् क़ुज़िया बय्नहुम् बिऽल् क़िस्ति व हुम् लाऽ युज़्लमून ॥

और प्रत्येक जाति का एक पैग़म्बर (अपनी जाति के साथ हमारे यहां) उपस्थित होगा तो जाति में और पैग़म्बर में न्यायपूर्वक निर्णय कर दिया जायगा; और लोगों पर अत्याचार न होगा।

(८) व यक़ूलूना मता हाज़ऽल् वअ्दु इन्कुन्तुम् सादिक़ीन् ॥

और (हे मुसलमानो ! यह लोग तुम्हें) पूछते हैं कि यदि तुम सच्चे हो तो (दण्ड की) प्रतिज्ञा कब पूर्ण होगी ?

(९) क़ुल्लाऽ अम्लिकु लि नफ़्सी ज़र्रऽव्व लाऽ नफ़्अऽन् इल्लाऽ माऽ शाऽअऽल्लाहु; लि कुल्लि उम्मतिन्

अजलुन्; इज़ाऽ जाआ अजलुहुम् फ़ लाऽ यस्तअ्ख़िरूना साऽअतऽन्वलाऽ यस्तक़्दिमून् ॥

(हे पैग़म्बर ! तुम इनसे) कहो कि मेरा अपना हानि लाभ भी मेरे अपने वश का नहीं परन्तु जो अल्लाह चाहता है (वही होता है उसके ज्ञान में) प्रत्येक जाति का एक दिवस नियत है अब उनका समय आ पहुंचता है तो एक घड़ी भी न पीछे हट सकते हैं और न आगे बढ़ सकते हैं ।

(१०) क़ुल् अरअय्तुम् इन् आताकुम् अ़ज़ाऽबुहू बयाऽतऽन् अउ् नहाऽरऽम्माऽज़ाऽ यस्तअ्जिलु मिन्हुऽल् मुज्रिमीन ॥

(हे पैग़म्बर ! इन लोगों से) पूछो कि भला देखो तो सही, यदि अल्लाह का प्रकोप तुम पर रातों रात प्रगट हो वा दिन दहाड़े, पापी लोग उसके लिये क्योंकर शीघ्रता कररहे हैं ।

(११) असुम्मा इज़ाऽ माऽ वक़आ आमन्तुम् बिही आल्आना व क़द् कुन्तुम् बिही यस्तअ्जिलून् ॥

तो क्या फिर जब आ प्रगट होगा तबही उसका विश्वास करोगे या अब ? और तुम तो इसके लिए जल्दी मचाया करते थे ।

(१२) सुम्मा क़ीला लिल्लज़ीना ज़लमूऽ ज़ूक़ूऽ अ़ज़ाऽबऽल् ख़ुल्दि; हल् तुज्ज़उ्ना इल्लाऽ बिमाऽ

फिर (अन्तिम दिन) अनाज्ञाकारी लोगों को आज्ञा दी जायगी कि अब चिरकालीन प्रकोप चखो, यह जो तुमको दण्ड दिया जारहा है तुम्हारे अपने ही कृत्यों का परिणाम है।

(१३) व यस्तन्बिऊनका अ-हक्कुन् हुवा; कुल् ई व रब्बीऽ इन्नहू ल-हक्कुन् माऽ अन्तुम् बि मुअ्‌जिज़ीन ॥

और (हे पैगम्बर ! यह लोग) तुमसे पूछते हैं कि जो कुछ तुम इनसे कहते हो क्या वास्तव में होकर रहेगा, (तुम इनसे) कहो—हां, मुझे अपने पालनकर्त्ता की शपथ; हां, वह निश्चय-पूर्वक अवश्य होकर रहेगा और तुम अल्लाह को पराजित न कर सकोगे।

मं० ३ पारा ११, रु० ६।७

(१) व लउ अन्ना लि कुल्लि नफ़्सिन् ज़लमत् माऽ फ़िऽल् अर्ज़ि लऽफ़्तदत् बिही; व असर्रुऽन्नदाऽमता लम्माऽरा अवुऽल् अज़ाऽबा; व कुज़िया बय्-नहुम् बिऽल् क़िस्ति व हुम् लाऽ युज़्लमून् ॥

और यदि प्रत्येक प्राणी के पास जिसने पाप किया जितना पृथ्वी में है और वह उसे अपनी मुक्ति के निमित्त डाले; और अपनी लज्जा को छिपाये जब कि दण्ड को देखे; और उनमें न्याय से निर्णय कर दिया जायगा कि उन पर अत्याचार न हो।

(२) अला३ इन्ना लिल्लाहि माऽ फ़ि-स्समावाति वऽल्‌ अर्ज़ि; अला३ इन्ना वअ्‌दऽल्लाहि ,हक़्क़ुव्‌ला किन्ना अक्स़रहुम्‌ लाऽ यअ्‌लमून्‌ ॥

स्मरण रक्खो कि जो कुछ पृथ्वी और आकाश में है सब अल्लाह ही का है; और स्मरण रक्खो कि अल्लाह की (क़यामत की) प्रतिज्ञा सत्य पर (स्थिर) है परन्तु प्रायः मनुष्य विश्वास नहीं करते।

(३) हुवा युह्यी व युमीतु व इलय्‌हि तुर्जऊ़न्‌ ॥

वही जिलाता और मारता है और उसीकी ओर तुम (सब) को लौट कर जाना है।

(४) या३ अय्युहऽ-न्नाऽसु क़द्‌ जा३अत्‌कुम्मउ्‌ इज़तुम्मिर्रब्बिकुम्‌ व शिफ़ा३ उल्लिमाऽ फ़ि-स्सुदूरि व हुदऽव्व र.ह्मतुल्लिल्‌ मुअ्‌मिनीन्‌ ॥

हे लोगो! तुम्हारे पालनकर्त्ता की ओरसे तुम्हारे पास शिक्षा आचुकी और हार्दिक रोगों (शिर्क आदि) की औषधि और विश्वासियों के लिये शिक्षा और अनुग्रह भी आचुका)।

(५) कुल्‌ बिफ़ज़्लिऽल्लाहि व बिर.ह्मतिही फ़बि ज़ालिका ,फ़ल्‌ यफ़्र.हू.ऽ; हुवा ख़य्‌रुम्मिम्माऽ यजमऊ़न्‌ ॥

(हे पैग़म्बर!) कहो कि लोगों को चाहिए कि अल्लाह

का अनुग्रह और उसकी कृपा (अर्थात् .कुरान) को पाकर प्रसन्न हों कि जिनके एकत्र करने के पीछे पड़े हैं यह उनसे कहीं श्रेष्ठ है।

(६) कुल् अरअयतुम्मा२ अन्ज़लऽल्लाहु लकुम्मिन्‌-रिज़्क़िन् फ़ जअल्तुम्मिन्हु .हराऽमऽव .हलाऽलऽन्; कुल् आऽल्लाहु अज़िना लकुम् अम् अलऽल्लाहि तफ़्तरून् ॥

(हे पैग़म्बर! इन लोगों से) कहो कि भला देखो तो अल्लाह ने जो तुम्हारे लिए भोजन उतारा, और फिर तुमने उसमें से कोई वस्तु हराम (निषिद्ध) और कोई हलाल (भक्ष्य) ठहरालो; (हे पैग़म्बर!)कहो कि तुमको अल्लाह ने आज्ञा दी क्या अल्लाह पर असत्य आक्षेप आरोपित करते हो?

(७) वमाऽ ज़न्नुऽल्लज़ीना यफ़्तरूना अलऽल्ला-हिऽल् कज़िबा यउमऽल् क़ियामति; इन्नऽल्लाहा लज़ू फ़िज़्लन् अल-न्नाऽसि वला किन्ना अक्सरहुम् लाऽ यश्कुरून् ॥

और क्या वह लोग, जो अल्लाह पर लाञ्छन लगाते हैं, प्रलय के दिन का विचार करते हैं; निस्सन्देह अल्लाह लोगों पर अनुग्रह करता है परन्तु बहुधा कृतज्ञता प्रगट नहीं करते।

[मँज़िल ३ पारा ११ रु ७।१०]

(१) वमाऽ तकूनु फ़ी शअ्निन्व माऽ तत्लूऽ मिन्हु मिन् कुर्आनि व्व लाऽ तअ्मलूना मिन् अ़मालिन इल्लाऽ कुन्नाऽ अ़लय्कुम् शुहूदऽन् इज़् तुफ़ीज़ूना फ़ीहि; वमाऽ यअ्ज़ुबु अ़र्रब्बिका मिम्मिस्क़ाऽलि ज़र्रतिन् फ़िऽल् अर्ज़ि व लाऽ फ़ि-स्समा३इ वला३ असग़रा मिन् ज़ालिका वला३ अक्बरा इल्लाऽ फ़ी किताबिम्मुबीन् ॥

और तू किसी दशा में क्यों न हो और .कुरान में से कुछ (हो) काम क्यों न करता हो, (ऐसा) नहीं (होता) कि जब तुम कार्य्य को आरम्भ करते हो, हम तुम्हारे पर उपस्थित न हों; और तेरे पालनकर्त्ता से एक पृथ्वी और आकाश में ज़र्रे भर भी गुप्त नहीं रहता, और न उससे छोटी वस्तु और न बड़ी वस्तु परन्तु वह प्रगट पुस्तक में है।

(२) अला३ इन्ना अउ्लिया३अऽल्लाहि लाऽ ख़उ्फ़ुन् अ़लय्हिम् व लाऽ हुम् यह्ज़नून् ॥

सुन रक्खा, जो लोग अल्लाह की ओर हैं उन्हें न भय है और न शोक।

(३) अल्लज़ीना आमनूऽ व काऽनूऽ यत्तक़ून् ॥

जो विश्वासी हैं और संयम करते हैं,

(४) लहुमुऽल् बुश्रा फ़िऽल् .हयाति-द्दुन्याऽ व

फ़िऽल् आख़िरति; लाऽ तब्दीला लिकलिमातिऽल्लाहि;
ज़ालिका हुवऽल् फ़ऊ्ज़ुऽल् अज़ीम् ॥

उनको संसार के जीवन का और अन्तिम (परलोक के) जीवन का हर्ष-समाचार (दिया जाता) है; अल्लाह की आज्ञाओं का परिवर्तन नहीं होता; यही महान् मनोकामना (है जो) प्राप्त होनी है।

(५) वलाऽ यह़्ज़ुन्का क़ऊ्लुहुम्, इन्नऽल् इज़्ज़ता
लिल्लाहि जमीअऽन; हुव-स्समीउऽल् अलीम् ॥

और न उनकी बात से शोकातुर हो—वस्तुतः सब शक्ति अल्लाह ही में है; वह (सब) सुनता और जानता है।

(६) अलाऽ इन्ना लिल्लाहि मिन् फ़ि-स्समावाति
व मन फ़िऽल अर्ज़ि; वमाऽ यत्तबिउऽल्लज़ीना यद्ऊना
मिन्दूनिऽल्लाहि शुरकाऽअ; इय्यत्तबिऊना इल्लऽ-ज़्ज़न्ना
व इन् हुम् इल्लाऽ यख़्रुसून ॥

सुनते हो, जो कुछ आकाश में है और जो कुछ पृथ्वी में है, (सब) अल्लाह का है; और यह (अल्लाह के) समांश पुकारने वाले किसके अनुयायी हैं, (जब कि) अल्लाह के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं; परन्तु (यह तो) अटकल के अनुयायी हैं और अटकलें दौड़ाने के अतिरिक्त और कुछ नहीं (करते)।

(७) हुवऽल्लज़ी जअ़ला लकुमु-ल्लय्ला लि

तस्कुनूऽ फ़ीहि व-न्नहाऽरा मुब्सिरऽन्; इन्ना फ़ी ज़ालिका ल आयातिल्लि क़ौमिय्यस्मऊन् ॥

वही है जिसने तुम्हारे निमित्त रात को रचा (जिससे) कि तुम उसमें विश्राम करो और दिखलाने वाला दिन दिया; इसमें उन लोगों के लिए—जो सुनते हैं—चिह्न हैं।

(८) क़ाऽलुऽऽत्तख़ज़ऽल्लाहु वलदऽन् सुब्हानहू; हुवऽल् ग़निय्यु लहू माऽ फ़ि-स्समावाति वमाऽ फ़िऽल् अर्ज़ि, इन् इन्दकुम्मिन् सुल्तानिन् बि हाज़ा; अतक़ूलूना अलऽल्लाहि माऽ लाऽ तअ्लमून् ॥

यह कहते हैं अल्लाह ने कोई पुत्र (उत्पन्न) किया, वह पवित्र है; वही धनी है और जो कुछ आकाशों और पृथ्वी में है (सब कुछ) उसीका है, उसका तुम्हारे पास कुछ प्रमाण नहीं; क्यों तुम अल्लाह के सम्बन्ध में वह बात कहते हो जो जानते नहीं।

(९) क़ुल् इन्नऽल्लज़ीना यफ़्तरूना अलऽल्लाहिऽल् कज़िबा लाऽ युफ़्लिहून् ॥

[हे पैग़म्बर! इनसे] कह कि जो लोग अल्लाह पर असत्य [आक्षेप] आरोपित करते हैं उन्हें सफलता प्राप्त नहीं होती।

(१०) मताऽउन् फ़ि द्दुन्याऽ सुम्मा इलय्नाऽ

मजिउहुम् सुम्मा नुज़ीकुहुमुऽल् अज़ाऽब–श्शदीदा बिमाऽ काऽनूऽ यक्फुरून् ॥

[वह लोग चाहें] संसार में लाभ उठालें फिर उनको हमारी ओर लौट आना है फिर हम उनको उस अधर्म के बदले, जो वह करते हैं, भीषण प्रकोप का फल चखायेंगे।

[मं० ३, पारा ११, रु० ८।१२]

(१) वऽत्लु अलय्हिम् नबआ नूहिन इज़्क़ाऽला लि क़उमिहीं या क़उमि इन्काऽना कबुरा अलय्कुम्म क़ाऽमी व तज़्कीरी बि आयातिऽल्लाहि फ़ अलऽल्लाहि तवक्कल्तु फ़ अज्मिऊ अम्रकुम् व शुरकाऽअकुम् सुम्मा लाऽ यकुन् अम्रुकुम् अलय्कुम् गुम्मतन सुम्मऽक़्ज़ूऽ इलय्या वलाऽ तुन्ज़िरून् ॥

और उनको नूह का समाचार सुना कि जब उसने अपनी जाति वालों से कहा कि हे जाति! यदि मेरा रहना और अल्लाह की आयतों के विषय में मेरा समझाना तुम्हें भार विदित हुआ है तो मैंने अल्लाह पर विश्वास किया अब तुम सब एकत्र हो कर अपना कार्य्य नियत करो और अपने साथियों को एकत्र करो फिर तुम्हें अपने काम में सन्देह न रहे फिर मुझ पर कर चलो और मुझे अवसर न दो।

(२) फ़ इन्तवल्लय्तुम् फ़ माऽसअल्तुकुम्मिन् अज्रिन;

इन् अजि़या इल्लाऽ अ़लऽल्लाहि व उमिर्तु अन् अकू़ना मिनऽल् मुस्लिमीन् ॥

फिर यदि हट जाओगे तो मैं तुमसे [कोई] मूल्य नहीं चाहता: मेरा मूल्य अल्लाह पर है और मुझको आज्ञा हुई है कि आज्ञाकारी [होकर] रहूँ ।

(३) फ़ कज़्ज़बूहु फ़ नज्जयनाहु वमम्मअ़हू फ़िऽल् फ़ुल्कि व जअ़ल्नाहुम् खलाइफ़ा व अग़्रक़्नऽल्लज़ीना कज़्ज़बूऽ बि आयातिनाऽ फ़ऽन्जुर् कय् फ़ा काऽना आ़ऽक़िबतुऽल् मुन्ज़रीन्

फिर उसको झुठलाया फिर हमने उसकी और जो उसके साथ नौका में थे [उनकी] रक्षा की और उन्हें स्थल पर ठहराया और जो हमारी आयतों को असत्य ठहराते थे उन्हें डुबा दिया अतः जिनको भय दिलाया था उनका अन्त कैसा हुआ ?

(४) सुम्मा बअ़स्नाऽ मिन् बअ़्दिही रुसुलऽन् इला क़ौमिहिम् फ़ जाऽऊहुम् बिऽल् बय्यिनाति फ़माऽ काऽनूऽ लि युअ़्मिनूऽ बिमाऽ कज़्ज़बूऽ बिही मिन् क़ब्लु, कज़ालिका नत्बउ़ अ़ला क़ुलूबिऽल मुअ़्तदीन् ॥

फिर हमने उनके पश्चात् अपना जाति में कितने पैग़म्बर प्रेषित किये फिर उनके पास प्रत्यक्ष चिह्न लाये अतः जो बात पूर्व से असत्य ठहरा चुके उस पर कदापि विश्वास करने वाले

न हुए: हम अत्याचारियों के मनों पर इसी प्रकार मुद्रा करते हैं।

(५) सुम्मा बअ़स्नाऽ मिन् बअ़्दिहिम्मूसा व हारूना इला फ़िर्औ़ना व मलाऽइही बि आयातिनाऽ फ़स्तक्बरूऽ व कानूऽ क़ौमम्मुज्रिमीन् ॥

फिर हमने उनके पीछे मूसा और हारून को फ़िर्औन और उसके मुखियाओं के पास चिह्न देकर भेजा, फिर [वे] गर्व करने लगे और वह लोग पापी थे।

(६) फ़लम्माऽ जाऽअहुमुल् हक़्क़ु मिन् इन्दिनाऽ क़ालूऽ इन्ना हाज़ाऽ लसिह्रुम्मुबीन् ॥

फिर जब उनको हमारे पास से सत्य बार्ता आई, वह कहने लगे—यह तो स्पष्ट जादू है।

(७) क़ाऽला मूसाऽ अतक़ूलूना लिल् हक़्क़ि लम्माऽ जाऽअकुम्, असिह्रुन् हाज़ा, वलाऽ युफ़्लिहुस्-साहिरून् ॥

मूसा ने कहा—"जब तुम्हारे पास सत्य बात पहुँची तो [उसे] तुम ऐसा कहते हो: यह क्या जादू है और जादू करने वाले विजय नहीं पाते।"

(८) क़ालूऽ अजिअ्तनाऽ लितल्फ़ितनाऽ अ़म्मा वजद्नाऽ अ़लैहि आबाऽअना व तकूनाऽ लकुमल्

किब्रियाउ फ़िऽल् अर्ज़ि; व माऽ नह्नु लकुमाऽ बि मुअ्मिनीन् ॥

वह कहने लगे—क्या तुम [इस वास्ते] आये हो कि हमको उस मार्ग से—जिसपर हमने अपने पिता-प्रपितामहों को पाया—भटकादे और इस देश में तुम दोनों मुखिया बनो, और हम तुम पर विश्वास करने वाले नहीं।

(९) व क़ाऽला फ़िर्अउनुऽ अ्तूनी बिकुल्लि साहिरिन् अलीम् ॥

और फ़िरौन ने कहा—जो जादूगर पढ़ा हो, [उसे] मेरे पास लाओ।"

(१०) फ़लम्माऽ जाअ-स्सहरतु क़ाऽला लहुम्मूसाअ अल्कूऽ माअ अन्तुम्मुल्कून् ॥

फिर जब जादूगर आये तो उन्हें मूसा ने कहा—' डालो जो तुममें डालते हो।"

(११) फ़ लम्माअ अल्क़उऽ क़ाऽला मूसा माऽ जिअ्तुम् बिहि-स्सिह्रु; इन्नऽल्लाहा सयुब्तिलुहू, इन्नऽल्लाहा लाऽ युस्लिहु, अमलऽल्मुफ़्सिदीन् ॥

फिर जब उन्होंने डाला, मूसा बोला—जो तुम लाते हो सो जादू है; अब अल्लाह उसको बिगाड़ता है; अल्लाह दुष्टों के कार्य नहीं सुधारता।

(१२) व युहिक़्क़ुऽल्लाहुऽल् हक़्क़ा बिकलिमा-
तिही लउ् करिहिऽल् व मुजि्मून् ॥

और अल्लाह सत्य को अपनी आज्ञा से सत्य [सिद्ध] करता है चाहें अपराधी उसको बुरा ही मानें।

[मं० ३, पारा ११, रु ६।१०]

(१) फ़माऽ आमना लि मूसाऽ इल्लाऽ ज़ुर्रिय्य-
तुम्मिन् क़उ्मिही अला ख़उ्फ़िम्मिन् फ़िर्अउ्ना व मलाऽ-
इहिम् अय्यफ़्तिनहुम्; व इन्ना फ़िर्अउ्ना लआऽलिन
फ़िऽल् अर्ज़ि, व इन्नहू ल मिनऽल् मुस्रिफ़ीन् ॥

फिर मूसा पर उसकी जाति के कुछ मनुष्यों के अतिरिक्त अन्य किसी ने विश्वास न किया [सो भी] फ़िऔन और उनके मुखियाओं से डरते हुए कि वह उन्हें विचलित न करदे; और फ़िऔन देश में बलशाली होरहा है, और उसने हाथ छोड़ रक्खा [अर्थात् अत्याचार जारी कर रक्खा] है।

(२) व क़ाऽला मूसा या क़उ्मि इन्कुन्तुम् आम-
न्तुम् बिऽल्लाहि फ़ अलयहि तवक्कलूऽ इन्कुन्तुम्मुस्लि-
मीन् ॥

और मूसा ने कहा—"हे जातिवालो! यदि तुमने अल्लाह पर विश्वास किया है तो यदि आज्ञाकारी हो तो उसी पर [दृढ़] विश्वास करो।"

(३) फ़ क़ाऽलूऽ अलऽल्लाहि तवक्कल्नाऽ, रब्बनाऽ लाऽ तज्अल्नाऽ फ़ित्नतल्लिल् क़उमि-ज़्ज़ालिमीन् ॥

तब कहने लगे—'हमने अल्लाह पर विश्वास किया, हे पालनकर्त्ता! इस अत्याचारी जाति की शक्ति को परीक्षा हमारे ऊपर न कर।"

(४) व नज्जिनाऽ बि रह्मतिका मिनऽल् क़उ-मिऽल् काफ़िरीन् ॥

और हमें अपनी दया करके इस काफ़िर क़ौम से मुक्त कर।

(५) व अउ्हय्नाऽ इला मूसा व अख़ीहि अन् तबव्वा आलि क़उमि कुमाऽ बि मिस्रा बुयूतऽव्वऽज् अलूऽ बुयूतकुम् क़िब्लतव्व अक़ीमु-स्सलाता; व बश्शिरिऽल् मुअ्मिनीन् ॥

और हमने मूसा और उसके भाई [हारून] को आज्ञा भेजी कि अपनी जाति के लिए मिस्र देश में निवास नियत करो और अपने गृह क़िब्ले की ओर निर्माण करो और नमाज़ स्थिर करो; और मुसलमानों [अर्थात् विश्वासियों] को हर्ष सम्वाद सुनाओ।

(६) व क़ाऽला मूसा रब्बनाऽ इन्नका आतय्ता फ़िर्अउना व मलअहू ज़ीनतव्व अम्वाऽलऽन् फ़िऽल्

हयाति-द्दुन्याऽ रब्बनाऽ लि युज़िल्लूऽ अन् सबीलिका, रब्बनऽऽत्मिस् अला३ अम्वाऽलिहिम् वऽश्दुद् अला कुलूबिहिम् फ़लाऽ युअ्मिनूऽ हत्ता यरवुऽऽल् अज़ाऽबऽल् अलीम् ॥

और मूसा ने कहा—"हे हमारे पालनकर्त्ता ! तू ने फ़िरऔन और उसके मुखियाओं को सांसारिक जीवन में ऐश्वर्य और धन दिया है, हे पालनकर्त्ता ! उनके धन नष्ट करदे और उनके हृदयों को कठोर करदे कि [उस समय तक] विश्वास न करें जब तक कि दुःख का दण्ड [न] देखें।

(७) क़ाऽला क़द् उजीबत्अ्वतुकुमा फ़ऽस्तक़ीमाऽ वलाऽ तत्तबिआ३न्नि सबीलऽल्लज़ीना लाऽ यअ्लमून ॥

कहा—तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार हो चुकी, अतः तुम दोनों दृढ़ रहो और उनके मार्ग पर मत चलो जो अज्ञानी हैं।

(८) व जाऽ वज़्नाऽ बिनदीऽ इस्राईलऽल् बह्रा फ़ अत्बअहुम् फ़िरऔनु व जुनूदुहू बग़्यऽव्व अद्वऽन्; हत्ता३ इज़ा३ अद्रकहुऽल् ग़रकु क़ाऽला आमन्तु अन्नहू ला३ इलाहा इल्लऽल्लज़ी३ आमनत् बिही बनू३ इस्राईला व अनाऽ मिनऽल् मुस्लिमीन् ॥

और इस्राईल के वंशजों को हमने समुद्र से पार किया उद्दण्डता और अत्याचारिता के साथ फ़िरऔन और उसके

सैन्य दल ने उसका [उसके भय तक] पीछा किया यहां तक कि वह (सैन्यदल फ़िऔंन सहित] डूब गया। तब कहा— उसके अतिरिक्त कोई आराधनीय नहीं कि जिस पर इस्राईल के वंशजों ने विश्वास किया और मैं आज्ञाकारियों में हूं।

(९) आऽल् आना व क़द् असय्ता क़ब्लु व कुन्ता मिनऽल् मुफ़्सिदीन् ॥

अब यह कहने लगा—"और तू पहले अनाज्ञाकारी रहा और उपद्रवियों में (सम्मिलित) रहा।"

(१०) फ़ऽल् यउ्मा नुनज्जीका बि बदनिका लि तकूना लि मन् ख़ल्फ़का आयतन् ; व इन्ना कसीरम्मिन-नाऽसि अन् आयातिनाऽ ल ग़ाफ़िलून् ॥

अतः आज तुझको तेरे शरीर से बचावेंगे जिससे तू अपने पीछे आने वालों के लिए चिह्न [एक प्रकार का प्रमाण] हो; और निस्सन्देह, अनेक पुरुष हमारी आयतों से अचेत हैं।

[म० ३ पारा ११, रु० १०।११]

(१) व लक़द् बव्वअ्नाऽ बनीऽ इस्राऽईला मुब-

*कहावत है कि इस्राईल सन्तान को सन्देह हुआ कि फ़िऔंन भी डूबा कि नहीं। इस पर जिब्राईल ने नगी लोथ को पानी के ऊपर तैरा दिया। कहते हैं कि केवल फ़िऔंन की ही लोथ तैरती देख पड़ी और सब नीचे बैठ गईं और कोई कहता है कि लोथ को निकालकर एक टीले पर डाल दिया, जिससे इस्राईल सन्तान देख के धन्यवाद करे और शिक्षित हो।

व्वश्रा सिद्किं व्व रज़क़्नाहुम्मिन-त्तय्यिबाति, फ़मऽऽख़्त-लफ़ूऽ हत्ता जा३अहुमुऽल्‌ इल्मु; इन्ना रब्बका यक़्ज़ी बय्‌नहुम्‌ यउ्मऽल्‌ क़ियामति फ़ी माऽ काऽनूऽ फ़ीहि यख़्तलिफ़ून्‌ ॥

और हमने इस्राईल-वंशजों को सत्यता के साथ स्थान दिया और शुद्ध वस्तुएं भोजनार्थ प्रदान कीं, अतः उनमें [उस समय तक] फूट नहीं फैली जब तक उनको ज्ञान नहीं आया; अब जिस बात में उनका मतभेद था, उसमें तेरा पालनकर्त्ता प्रलय के दिन उनका निर्णय करेगा।

(२)फ़ इन्‌ कुन्ता फ़ी शक्किम्मिम्मा३ अन्ज़ल्ना३ इलय्‌का फ़स्‌अलिऽल्लज़ीना तक़्ऊनऽल्‌ किताबा मिन्‌ क़ब्लिका, लक़द्‌ जाअकऽल्‌ हक़्क़ु मिर्रब्बिका फ़लाऽ तकूनन्ना मिनऽल्‌ मुम्तरीन्‌ ॥

अतः यदि तू उस वस्तु से, जो हमने तेरी ओर उतारी, सन्देह में है तो उनसे पूछले जो तुझसे पूर्व पुस्तक पढ़ रहे हैं, निस्सन्देह, तेरे पालनकर्त्ता की ओर से तुझको सत्य बात आई है अतः तू सन्देह करने वालों में मत हो।

(३) वलाऽ तकूनन्ना मिनऽल्लज़ीना कज़्ज़बूऽ बि आयातिऽल्लाहि फ़ तकूना मिनऽल्‌ ख़ासिरीन्‌ ॥

और उनमें [सम्मिलित] मत हो जिन्होंने अल्लाह की

आयतों को असत्य ठहराया फिर तू भी घाटा उठाने वालों में होवे ।

(४) इन्नऽल्लज़ीना ह़क़्क़त् अ़लैहिम् कलिमतु रब्बिका लाऽ युअ्मिनून् ॥

जिन पर तेरे पालनकर्त्ता की आज्ञा सत्य (सिद्ध हुई) है वह विश्वास न करेंगे ।

(५) व लउ् जाऽअत्हुम् कुल्लु आयतिन् ह़त्ता यरवुल् अ़ज़ाऽबऽल् अलीम् ॥

यद्यपि उन पर समस्त चिह्न पहुंच जावें (पर मानेंगे नहीं) जब तक कि दुःख का दण्ड न देख लेंगे ।

(६) फ़ लउ् लाऽ काऽनत् क़र्यतुन् आमनत् फ़ नफ़अ़हाऽ ईमाऽनुहाऽ इल्लाऽ क़उ्मा यूनुसा, लम्माऽ आमनूऽ कशफ़्नाऽ अ़न्हुम् अ़ज़ाऽबऽल् ख़िज़्यि फ़िऽल् ह़याति-द्दुन्याऽ व मत्तअ्नाहुम् इलाह़ीन् ॥

अतः कोई नगरी क्यों न हुई जो विश्वास करती फिर उनको विश्वास लाना उनके काम आता, परन्तु यूनस की जाति ने जब विश्वास किया तो हमने संसार के जीवन में उन पर से दुःख का दण्ड ढीला कर दिया और एक (नियत) समय तक उनका काम चलाया ।

(७) व लउ् शाऽअ रब्बुका लआमना मन् फ़िऽल्

अर्ज़ि कुल्लुहुम् जमीअऽन् ; अफ़अन्ता तुक्रिहु-न्नाऽसा हत्ता यकूनूऽ मुअ्मिनीन् ॥

और यदि तेरा पालनकर्त्ता चाहता तो जितने मनुष्य पृथ्वी पर हैं—सबके सब विश्वास करते; अब क्या तू लोगों पर बलात्कार करेगा जिससे वे विश्वास युक्त अर्थात् मुसलमान हो जावें ?

(८) व माऽ काऽना लि नफ़्सिन् अन्तुअ्मिना इल्लाऽ बि इज़्निऽल्लाहि; व यज्अलु-र्रिज्सा अलऽल्लज़ीना लाऽ यअ्क़िलून् ॥

और यह किसी प्राणी के वश की बात नहीं कि वह अल्लाह की आज्ञा के बिना विश्वासी (मुसलमान) बन जावे; और वह उन पर, जो बुद्धि नहीं रखते, मलीनता डालता है।

(९) कुलिऽन्जुरूऽ माऽ ज़ाऽ फ़ि-स्समावाति वऽल् अर्ज़ि; व माऽ तुग्निऽल् आयातु व-न्नुज़ुरु अन् क़ौमिऽल्लाऽ युअ्मिनून् ॥

तू कह—देखो तो आकाशों में और भूमि में क्या कुछ है और चिह्न और मास उन लोगों के कुछ काम नहीं आते जो विश्वासी नहीं हैं।

(१०) फ़ हल् यन्तज़िरूना इल्लाऽ मिस्ला अय्याऽमिऽल्लज़ीना ख़लउ मिन् क़ब्लिहिम् ; क़ुल् फ़ऽन्तज़िरूउ इन्नी मअकुम्मिनऽल् मुन्तज़िरीन् ॥

फिर अब उन लोगों की भांति प्रतीक्षा कर रहे हैं जो उनसे पूर्व हो चुके हैं; (हे पैग़म्बर! तुम) कहो—अब प्रतीक्षा करो मैं भी तुम्हारी प्रतीक्षा करता हूं।

(११) सुम्मा नुनज्जी रुसुलना वऽल्लज़ीना आमनूऽ कज़ालिका, ह़क़्क़ऽन् अलय्ना नुन्जिऽल् मुअ्मिनीन् ॥

फिर हम अपने पैग़म्बरों को और उन लोगों को, जो विश्वासी है, बचा लेते हैं, इस प्रकार यह हमारे अधिकार में है कि विश्वासियों को बचालें।

[मँज़िल ३ पारा ११ रु ११।६]

(१) क़ुल् यारे अय्युहऽ—न्नाऽसु इन्कुन्तुम् फ़ी शक्किम्मिन् दीनी फ़लाऽ अअ्बुदुऽल्लज़ीना तअ्बुदूना मिन्दूनिऽल्लाहि वला किन् अअ्बुदुऽल्लाहऽल्लज़ी यतवफ़्फ़ाकुम्, व उम्रितु अन् अकूना मिनऽल् मुअ्मिनीन् ॥

(हे पैग़म्बर! तुम) कहो—हे लोगो! यदि तुम मेरे मत से सन्देह में हो तो अल्लाह के अतिरिक्त जिनको तुम पूजते हो मैं नहीं पूजता; परन्तु मैं अल्लाह को पूजता हूँ जो तुमको खींच लेता है, और मुझको आज्ञा है कि मुसल्मान रहूँ।

(२) व अन् अक़िम् वज्हका लि—दीनि ह़नीफ़ऽन्, व लाऽ तकूनन्ना मिनऽल् मुश्रिकीन् ॥

और यह कि हनीफ होकर अपना मुंह मत पर सीधा कर और शिर्क (समांश समझने) वालों में मत हो।

(३) वलाऽ तद्उ मिन्दूनिऽल्लाहि माऽ लाऽ यन्फ़उ-का वलाऽ यजुरुका फ़ इन् फ़ अ़ल्ता फ़ इन्नका इज़ऽम्मिन-ज़्ज़ालिमीन् ॥

और अल्लाह के अतिरिक्त (अन्य किसी) ऐसे को न आमन्त्रित करो, (जो) न तुम्हारा हित कर सके और न अहित, फिर यदि यह तुमने किया तो तू भी इस समय पापियों में है।

(४) व इय्यम्सस्कऽल्लाहु बि ज़ुर्रिन् फ़लाऽ काऽशिफ़ा लहू३ इल्ला हुवा, व इय्युरिद्का बिख़ैरिन् फ़लाऽ राऽद्दा लि फ़ज़्लिही; युसीबु बिही मय्यशाउ मिन् इबाऽदिही; व हुवऽल् ग़फ़ूरु-रहीम् ॥

और यदि अल्लाह तुझे हानि (वा दुःख) पहुंचावे तो उसको उसके अतिरिक्त (अन्य) कोई खोलने (वा दूर करने) वाला नहीं, और यदि तुझे कुछ लाभ पहुंचाना चाहे तो उसके अनुग्रह का कोई करने वाला नहीं; वह अपने सेवकों में से जिसे चाहता है पहुंचाता है; और वही क्षमा करने वाला दयालु है।

(५) क़ुल् याऽ अय्युह-न्नाऽसु क़द् जाऽअकुमुऽल् हक़्क़ु मिर्रब्बिकुम्, फ़ मनिऽह् तदा फ़ इन्नमाऽ

यह्तदी लि नफ़्सिही, व मन् ज़ल्ला फ़ इन्नमाऽ यज़िल्लु अ़लय्हाऽ; व माऽ अनाऽ अ़लय्कुम् बिवकील् ॥

(हे पैग़म्बर ! तू) कह—हे लोगो ! तुमको तुम्हारे पालनकर्त्ता की ओर से सत्य आचुका, अब जो कोई मार्ग पर आता है उसे अपने भले को मार्ग मिलता है, और जो कोई भूला फिरे सो भूला फिरेगा अपने बुरे को; और मैं तुम्हारा (कोई) वकील (प्रतिनिधाक) नहीं बना हूँ।

(९) वऽत्तबिअ् माऽ यूहाऽ इलय्का वऽस्बिर् हत्ता यह्कुमऽल्लाहु, व हुवा ख़य्रुऽल् हाकिमीन् ॥

और तू उसी आज्ञा का अनुसरण कर जो तेरी ओर पहुंचे और जब तक अल्लाह निर्णय करे (तब तक) हृद (स्थिर) रहे, और वह सबसे श्रेष्ठ अनुग्रह करने वाला है।

सूरये हूद

(१) अलिफ़् ला३मृरा—किताबुन् उह्किमत् आयातुह् सुम्मा फ़ुस्सिलत् मिल्लदुन् हकीमिन् ख़बीर् ॥

यह पुस्तक है कि जिसकी आयतों (आज्ञाओं) की पड़ताल की जा चुकी है फिर एक बुद्धिमान् और ज्ञाता की ओर से इन्हें क्रमबद्ध किया गया है ।

(२-३ अल्लाऽ तअ्बुदू३ इल्लऽऽल्लाहा; इन्ननी लकुम्मिन्हु नज़ीरुव्व बशीरु व्व अनिऽस्तग़्फ़िरूऽ रब्बकुम् सुम्मा तूबू३ इलय्हि युमत्तिअ्कुम्मताऽअ्ऽन् हसनऽन् इला३ अजलिम्मुसम्मव्व युअ्ति कुल्लज़ी फ़ज़्लिन् फ़ज़्लहू; व इन्तवल्लउऽ फ़ इन्नी३ अख़ाऽफ़ु अ़लय्कुम् अ़ज़ाऽबा यउमिन कबीर् ॥

कि अल्लाह के अतिरिक्त (किसी को) न पूजो; मैं तुमको उसकी ओर से भय सुनाता और सुसमाचार पहुंचाता हूँ और यह कि अपने पालनकर्त्ता से पाप क्षमा कराओ और फिर उसकी ओर लौटो (जिससे) कि वह तुमको एक निश्चित अवधि तक पहुंचावे और प्रत्येक अधिकता वाले को अपना अनुग्रह प्रदान करे और यदि तुम फिर जाओगे तो तुम पर एक महान् दिवस (प्रलय) के प्रकोप (के प्रगट) होने से डरता हूँ ।

(४) इलऽल्लाहि मर्जिउकुम्, व हुवा अला कुल्लि शयइन् क़दीर् ॥

अल्लाह की ओर से तुमको फिर जाना है, और वह प्रत्येक पदार्थ पर शक्ति रखता है।

(५) अला२ इन्नहुम् यस्नूना सुदूरहुम् लियस्तख़्फ़ूऽ मिन्हु; अलाऽहीना यस्तग़्शूना सियाऽबहुम् यअ्लमु माऽ युसिर्रूना व माऽ युअ्लिनूना, इन्नहू अलीमुन् बिज़ातिस्सुदूर् ॥

वह अपने हृदयों को दुहरा नहीं करते जिससे कि वह उससे छिप जायँ, सुनो जिस समय वह अपने वस्त्र ओढ़ते हैं वह जानता है जो कुछ वह छिपाते हैं और जो कुछ वह खोलते हैं।

(१२) पारा वमाऽमिन् दाऽब्बतिन्

(६) वमाऽऽमिन् दाऽब्बतिन् फिऽल् अर्ज़ि इल्लाऽ अलऽल्लाहि रिज़्कुहाऽ व यअ्लमु मुस्तक़र्रहाऽ व मुस्तउ-दअ्हाऽ, कुल्लुन् फ़ी किताबिम्मुबीन् ॥

और पृथ्वी भर में कोई ऐसा चर (प्राणी) नहीं पाया जाता कि जिसे अल्लाह भोजन न देता हो और जहां ठहरता है और जहां सौंपा जाता है, (उसे) अल्लाह जानता है, सब खुली पुस्तक में विद्यमान हैं।

(७) व हुवऽल्लज़ी ख़लक़-स्समावाति वऽल् अर्ज़ा फ़ी सित्तति अय्यामिव्व काऽना अर्शुहू अलऽल्माऽइ लियब्लुवकुम् अय्युकुम् अह्सनु अमलऽन्; व लइन् कुल्ता इन्नकुम्मबऊ.सू.ना मिन् ँ बअ्दिऽल् मउ्ति लि यक़ू-लन्नऽल्लज़ीना कफ़रूऽ इन् हाज़ाऽ इल्लाऽ सिह्रुम्मु-बीन् ॥

और वही है जिसने आकाश और पृथिवी छः दिन में निर्माण किये और उसका तख़्त पानी पर था कि तुम्हारी जांच करे कि तुममें से कौन सुकर्म करता है; और यदि तू कहे कि तुम मृत्यु के पश्चात (पुनः जी) उठोगे तो निश्चय काफ़िर कहने लगेंगे कि यह कुछ नहीं प्रत्युत साक्षात् जादू है।

(८) व लइन् अख्ख़र्नाऽ अन्हुमुऽल् अज़ाऽबा इला३ उम्मतिम्मअ्दूदतिल्ल यक़ूलुन्ना माऽ यह्बिसुहू; अलाऽ यउ्मा यअ्तीहिम् लय्सा मस्रूफ़ऽन् अन्हुम् व हाऽक़ा बिहिम्माऽ काऽनूऽ बिही यस्तह्ज़िऊन् ॥

और यदि हम नियत समय तक दण्ड को रोके रहें तो कहेंगे कि किस वस्तु ने उसको रोक रक्खा है; सुनो जिस दिन यह उन पर आ पड़ेगा तो उन पर से न टरेगा और उनको वहीं फेर लेगा कि जिसका वह उपहास करते हैं।

[मंजिल ३ पारा १२ रु० २।१६]

(१) व लइन् इज़क्नऽऽल् इन्साऽना मिन्नाऽ रह्अ-तन् सुम्मा नज़अ्नाहाऽ मिन्हु, इन्नहू ल यऊसुन् कफ़ूर् ॥

और यदि हम मनुष्य को अपनी ओर से (एक बार) अनुग्रह का आस्वादन करादें फिर वह उससे छीन लें, तो वह निराश और कृतघ्न हो।

(२) व लइन् अज़क़्नाहु नअ्माऽआ बअ्दा ज़र्राऽआ मस्सतहु ल यक़ूलन्ना ज़हब-स्सय्यिआतु अ़न्नी; इन्नहू ल फ़रिहुन् फ़ख़ूर् ॥

और यदि हम उसको कष्ट के जो उसे पहुंचा—पश्चात् के आनन्द का आस्वादन करावें तो कहने लगा कि मुझसे दोष दूर हुये; निश्चय वह बुराई करते हुये प्रसन्न होवे।

(३) इल्लऽल्लज़ीना सबरूऽ व अ.मिलुऽ–स्सालि·
.हाति, उलाइका लहुम्मग़्फ़िरतु व्व अज्रुन कबीर् ॥

परन्तु जो लोग सन्तोषी हैं और शुभ कर्म करते हैं, उनको अनुग्रह है और महान् पुण्य है ।

(४) फ़लअ.ल्लका ताऽरिकुन् बअ.ज़ा माऽ यूह़ाइ इलय्का व ज़ाइकुन् बिही सद्रुका अय्यक़ूलूऽ लउलाइ उन्ज़िला अ.लय्हि कन्ज़ुन् अउ जाइआ मअ.हू मुल्कुन् ; इ़न्नमाइ अन्ता नज़ीरुन्, वऽल्लाह अ.ला कुल्लि शय्·इ़्वकील् ॥

फिर कदाचित् तू कुछ छोड़ देने वाला है उसमें से जो हमने तुझ पर प्रेरणा की है तेरा हृदय इससे सन्देह में होगा कहीं ऐसा न हो कि वह कहें—क्यों न उस पर कोई भण्डार उतरा, क्यों न उसके साथ कोई दूत आया तू केवल डर सुनाने वाला है, अल्लाह प्रत्येक वस्तु का रखने वाला है ।

(५) अम् यक़ूलूनऽफ़्तराहु क़ुल् फ़अ.तूऽ बि अ़श्रि सुवरिम्मिस्लिही मुफ़्तरयाति व्वऽद्ऊ.ऽ मनिऽस्ततअ.-तुम्मिन्दूनिऽल्लाहि इन् कुन्तुम् सादिक़ीन् ॥

क्या कहते हैं (कि तू) उसको बांध लाया है ? तू कह—तुम ऐसी एक दस सूरतें बांध कर ले आओ और यदि तुम सच्चे हो तो अल्लाह के अतिरिक्त जिसको बुला सको बुलालो ।

(६) फ़ इल्लम् यस्तजीबूऽ लकुम् फ़ऽअ़लमूऽ अन्नमाऽ उन्ज़िला बि इ़ल्मिऽल्लाहिं व अल्लाऽ इलाहा इल्लाऽ हु वा, फ़ हल् अन्तुम्मुस्लिमू न् ॥

फिर यदि तुम्हारा कहना न करें तो जान लो कि यह अल्लाह के ज्ञान से उतरा है और उसके अतिरिक्त अन्य (कोई) शासक नहीं, सो तुम अब आज्ञा मानते हो ?

(७) मन् काऽना युरीदुऽल् ह़यात द्दुन्याऽ वज़ीनत-हाऽ नुवफ़्फ़ि इलयहिम् अअ़्माऽलहुम् फ़ीहाऽ व हुम् फ़ीहाऽ ला युब्ख़सून् ॥

और जो कोई सांसारिक जीवन और उसके सौन्दर्य का इच्छुक हो तो हम उनको इसीमें उनके कर्मों के अनुसार दें और उनको इसमें हानि नहीं ।

(८) उलाऽइकऽल्लज़ीना लय्सा लहुम् फ़िऽल् आख़िरति इल्लऽन्नाऽरु व ह़बिता माऽ सनऊ़ऽ फ़ीहा व बातिलुम्माऽ काऽनूऽ यअ़्मलून् ॥

वही हैं जिनको पिछले घर में सिवाय आग के और कुछ नहीं है और जो किया था सो उस जगह मिट गया और जो कमाते थे वह नष्ट हो गया ।

(९) अफ़ मन् काऽना अ़ला बय्यिनतिम्मिर्रब्बिही व यत्लूहु शाऽहिदुम्मिन्हु व मिन् क़ब्लिही किताबु मूसाऽ

इमाऽमऽव्व रह्मतन्; उलाइका युअ्मिनूना बिही; व मय्यक्फ़ुर् बिही मितऽल् अह्ज़ाऽबि फ़न्नाऽरु मउइ-दुहू, फ़लाऽ तकु फ़ी मिर्यतिम्मिन्हु इन्नहुऽल् हक़्क़ु मिर्रब्बिका वला किन्ना अक्सर न्नाऽ सिलाऽ युअ्मिनून् ॥

क्या वह मनुष्य जो अपने पालनकर्त्ता के प्रगट पथ पर हो और उससे उसको साक्षी मिलती है और उससे पूर्व मूसा की पुस्तक पथ प्रदर्शक और अनुग्रह के समान है; और वही लोग उसको मानते हैं और जो कोई सब समुदायों में उससे विमुख हो तो उसकी प्रतिज्ञा (दोज़ख की) अग्नि है, अतः इससे सन्देह में मत रह; यह मेरे पालनकर्त्ता की ओर से निश्चय है, परन्तु अनेक लोग विश्वास नहीं करते।

(१०) व मन् अज़्लमु मिम्मनिऽफ़्तरा अलऽल्लाहि कज़िबऽन्; उलाइका युअ्रज़ूना अला रब्बिहिम्, यक़ूलुऽल् अश्हाऽदु हाउलाइऽ ल्लज़ीना कज़बूऽ अला रब्बिहिम्, अलाऽ लअ्नतुऽल्लाहि अल-ज़ा-लिमीनऽल्लज़ीना यसुद्दूना अन् सबीलिऽल्लाहि व यब्ग़ूनहाऽ इवजऽन्; वहुम् बिऽल् आखिरतिहुम् काफ़िरून् ॥

और उससे (अधिक) अत्याचारी कौन है जो अल्लाह पर असत्य (आक्षेप) आरोपित करे; वह अपने पालनकर्त्ता

के सम्मुख आवेंगे और साक्षी कहेंगे—यही हैं जिन्होंने अपने पालनकर्त्ता (अल्लाह) पर असत्य आरोपित किया; सुनलो अत्याचारी लोगों पर अल्लाह की फटकार है जो अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं और उसमें खोट खोजते हैं और वही पर-लोक के अविश्वासी हैं।

(११-१२) उला३इका लम् यकूनूऽ मुअ्जिज़ीना फिऽल् अर्ज़ि व माऽ का`ना लहुम्मिनदूनिऽल्लाहि मिन् अउ्-लिया३आ युज़ाअफु लहुमुऽल् अज़ा`बु; माऽ काऽनूऽ यस्ततीऊ`न—स्समअ़ा व माऽ काऽनूऽ युब्सरून् ॥

वह लोग पृथ्वी में भागकर विवश करने वाले नहीं और इनको अल्लाह के अतिरिक्त (कोई) समर्थक नहीं उनको दूना दण्ड है, (यह) सुन नहीं सकते थे और न देखते (ही) थे।

(१३) उला३इकऽल्लज़ीना ख़सिरू३ अन्फुसहुम् व ज़ल्ला अन्हुम्माऽ काऽनूऽ यफ़्तरून् ॥

वही हैं जो अपने जीवन को नष्ट कर बैठे और उनके (वह) नष्ट हो गया जो असत्य आरोपित करते थे।

(१४) लाऽजरम अन्नहुम् फ़िऽल् आख़िरति हुमुऽल् अख़्सरून् ॥

निस्सन्देह, वही अन्त के दिन हानि उठाने वालों में से है।

(१५) इन्नऽल्लज़ीना आमनूऽ व अमिलुऽ—स्सा-

लि.हाति व अख़्बतू३ इला रब्बिहिम् उलाऽइका अस्हा-बुऽल् जन्नति, हुम् फ़ीहाऽ ख़ालिदून् ॥

निस्सन्देह, जिन्होंने विश्वास किया और भलाइयां कीं और अपने पालनकर्त्ता की ओर अधीनता की वह जिन्नत के लोग हैं, वह उसमें रहा करें।

(१६) मसलुऽल् फ़रीक़यनि काऽल् अअ्मा वऽल् असम्मि वऽल् बसीरि व-स्समीइ; हल् यस्तवियानि मसलऽन्, अफ़लाऽ तज़क्करून् ॥

उदाहरण दोनों समुदायों का जैसे एक अन्धा और एक बहरा और एक देखता और सुनता; क्या दोनों का दृष्टान्त समान है: फिर क्या तुम ध्यान नहीं करते ?

[मंजिल ३ पा० १२ रु० ३।११]

(१) व लक़द् अर्सल्नाऽ नूह.ऽन् इला क़ौमिही३ इन्नी लकुम् नज़ीरुम्मुबीन् ॥

और हमने नूह को उसकी जाति की ओर भेजा कि मैं तुमको डर सुनाता हूँ।

(२) अल्लाऽ तअ्बुदू३ इल्लऽल्लाहा; इन्नी३ अख़ाऽफ़ु अलयकुम् अ़ज़ाऽबा यउमिन् अलीम् ॥

कि अल्लाह के अतिरिक्त (किसी को) न पूजो; मैं तुम पर एक दुःख वाले दिन के दण्ड से डरता हूँ।

(३) फ़ क़ाऽलऽल् मलउऽल्लज़ीना कफ़रूऽ मिन क़ौमिही माऽ नराका इल्लाऽ बशरऽम्मिस्लनाऽ व माऽ नराकऽ त्तबअका इल्लऽऽल्लज़ीना हुम् अराऽज़िलुनाऽ बाऽदियऽर्रअयि, व माऽ नरा लकुम् अलय्नाऽ मिन फ़ज़्लिन् ँ् बल् नज़ुन्नुकुम् काज़िबीन् ॥

फिर उसकी जाति के जो मुखिया अविश्वासी थे कहने लगे—हम तुझको अपने समान मनुष्य के अतिरिक्त (अन्य) कुछ नहीं देखते और हम लोगों में जो नीच जाति और बुद्धि के हैं उनके अतिरिक्त अन्य किसी को हम तुम्हारा अनुयाई नहीं देखते, और तुम में अपने से अधिक कुछ महत्व नहीं देखते किन्तु हमारा विचार है कि तुम झूठे हो।

(४) क़ाऽला या क़ौमि अरअय्तुम् इन् कुन्तु अला बय्यिनतिम्मिर्रब्बी व आतानी रह्मतम्मिन् इन्दिही फ़ उम्मियत् अलय्कुम्; अनुल्ज़िमुकुमूहाऽ व अन्तुम् लहाऽ कारिहून ॥

कहने लगा—हे जाति! देखो तो यदि मैं अपने पालन-कर्त्ता के दिखाई देने वाले मार्ग पर हुआ और उसने अपने पास से मुझे अनुग्रह प्रदान की, फिर वह तुम्हारे नेत्रों से गुप्त रखे तो क्या हम तुमको उस पर विवश कर सकते हैं जब कि तुम उससे रुष्ट हो।

(५) व या क़ौमि लाऽ अस्अलुकुम् अलय्हि

माऽ लऽन् ; इन् अजि्रया इ्ल्लाऽ अ़लऽल्लाहि व माऽ अनाऽ बिता़ऽरि दि्ऽल्लज़ीना आमनूऽ; इन्नहुम्मुलाकू़ऽ रब्बिहिम् वला किन्नीऽ अराकुम् क़ौ्मऽन् तज्हलून् ॥

और हे जाति ! मैं तुमसे इस पर कुछ मूल्य नहीं मांगता; मेरी मजदूरी अल्लाह के अतिरिक्त अन्य किसी पर नहीं और मैं मुसल्मानों को हांकने वाला नहीं; उनको अपने पालनकर्त्ता से मिलना है किन्तु मैं देखता हूं तुम लोग मूर्ख हो ।

(६) व या क़ौ्मि मय्यन्सुरुनी मिनऽल्लाहि इन् तरत्तुहुम् ; अफ़ला तज़क्करून् ॥

और हे जाति वालो ! मुझे अल्लाह से कौन छुड़ावे यदि उनको हांक दूं; क्या तुम ध्यान नहीं करते हो ?

(७) व लाऽ अकूलु लकुम् इ़न्दी ख़ज़ाऽइनुऽल्लाहि व लाऽ अअ़्लमुऽल् ग़य्बा वलाऽ अकूलु इन्नी मल्कुन्वलाऽ अकूलु लिल्लज़ीना तज्दरीऽ अअ़्युनुकुम् लय्युअ़्तियहुमुऽल्लाहु ख़य्रऽन् ; अल्लाहु अअ़्लमु बिमाऽ फ़ीऽ अन्फ़ुसिहिम् , इन्नीऽ इज़ऽल्लमिन–ज़्ज़ालिमीन् ॥

और तुमको मैं नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के कोष हैं और मुझे परोक्ष का पता है और न मैं कहूंगा कि मैं फ़रिश्ता (स्वर्गदूत) हूँ और न मैं (यह) कहता हूं कि जो तुम्हारी दृष्टि में तुच्छ हैं उन्हें अल्लाह भलाई देगा; जो उनके मतों में

है उसे अल्लाह भली भांति जानता है, यह कहूँ तो मैं अन्यायं हूँ

(८) क़ाऽलूऽ या नूहु, क़द् जाऽदल्तनाऽ फ़ अ-क्सर्ता जिदाऽलनाऽ फ़अ्तिनाऽ बिमाऽ तइदुनाऽ इन् कुन्ता मिन-स्सादिक़ीन् ॥

कहने लगे—हे नूह ! तू हमसे झगड़ा और बहुत झगड़ चुका, अब यदि तू सच्चा है तो जो हमको प्रतिज्ञा देता है वह लेआ।

(९) क़ाऽला इन्नमाऽ यअ्तीकुम् बिहिऽल्लाहु इन्शाऽअ व माऽ अन्तुम् बि मुअ्जिज़ीन् ॥

कहा—यदि चाहेगा तो उसको अल्लाह ही लावेगा और तुम न थकाओगे भाग कर।

(१०) व लाऽ यन्फ़उकुम् नुस्ह़ीऽ इन् अरत्तु अन् अन्स़हा लकुम् इन् काऽनऽल्लाहु युरीदु अय्युग़्वियकुम्; हुवा रब्बुकुम् व इलयहि तुर्जऊन् ॥

और जो मैं तुमको उपदेश करूं तो तुमको मेरा उपदेश उपयोगी न होगा यदि अल्लाह चाहता होगा कि तुमको बेराह चलावे; वही तुम्हारा पालनकर्ता है और उसी की ओर लौट कर जाओगे।

(११) अम् यक़ूलूनऽफ़्तराहु, क़ुल् इनिऽफ़्तरयतुहू फ़ अलय्या इज्रामी व अनाऽ बरीऽउम्मिम्माऽ तुज्रिमून् ॥

क्या (यह लोग) कहते हैं कि तू .कुरान को बना लाया: (हे पैग़म्बर ! इन्हें) तू कह—यदि बना लाया हूँ तो मुझ पर मेरा पाप है और जो तुम पाप करते हो उसका मेरा जिम्मा नहीं ।

[मंजिल ३ पारा १२, रु० ४।१४]

(१) व ऊ.हिया इला नू.हिन् अन्नहू लन् युअ्-मिना मिन् क़उ मिका इल्लाऽ मन् क़द् आमना फ़लाऽ तब्तइस् बिमाऽ काऽनूऽ यफ़्अ़लून् ॥

और नूह के प्रति आज्ञा हुई कि जो ईमान ला चुका उनके अतिरिक्त अब ईमान न लावेगा अतः इन कर्मों के कारण जो करते हैं, शोकातुर न हो ।

(२) वऽस्न.इऽल् फुल्का बि अअ्युनिनाऽ व व.हीनाऽ वलाऽ तुख़ाऽतिब्नी फ़िऽल्लज़ीना ज़लमूऽ, इन्न-हुम्मुग़्रकून् ॥

और हमारे सन्मुख और हमारी आज्ञा से नौका निर्माण कर और मुझसे अत्याचारियों के विषय में न बोल, यह निश्चय डुबाये जायंगे ।

(३) व यस्नउऽल् .फुल्का व कुल्लमाऽ मर्रा अलयहि मलउम्मिन् क़उमिही सख़िरूऽ मिन्हु; क़ाऽला

इन्तस्ख़रूऽ मिन्नाऽ फ़ इन्नाऽ नस्ख़रु मिन्कुम् कमाऽ तस्ख़रून् ॥

और वह नौका का निर्माण करता था और जब उसके पास से उसकी जाति के मुखिया निकलते तो उससे हँसी करते; (उसने) कहा—यदि तुम हम पर हसते हो तो हम तुम पर हँसते हैं जैसे तुम हँसते हो।

(४) फ़ सउफ़ा तअ़्लमूना मय्यअ़्तीहि अ़ज़ाऽबु य्युख़्ज़ीहि व य़िहल्लु अ़लय्हि अ़ज़ाऽबुम्मुक़ीम् ॥

अब आगे जान लोगे कि दण्ड किस पर आता है कि जिससे उसे लज्जित करे और उस पर सदैव का दण्ड प्रगट होता है।

(५) हत्ता२ इज़ाऽ जा२आ अम्रुनाऽ व फ़ाऽरत्तन्नूरु कुल्नऽऽ ह़्मिल् फ़ीहाऽ मिन् कुल्लि ज़उ्जय्निऽ स्नय्नि व अह़्लका इल्लाऽ मन् सबक़ा अ़लय्हिऽल् क़ब्लु व मन् आमना; व मा२ आमना मअ़हू२ इल्लाऽ क़लील् ॥

यहाँ तक कि जब हमारी आज्ञा हुई और तन्नूर उबलने लगा, हमने कहा—इसमें प्रत्येक प्रकार में से एक जोड़ा दुहरा रखले और अपने घर के लोगों को (भी चढ़ाले) परन्तु जिस पर पहले आज्ञा हो चुकी और जो ईमान लाया हो (उन्हें चढ़ाले); और कुछ लोगों के अतिरिक्त (अन्यों) ने विश्वास न किया था।

(६) व क़ाऽलऽर्कबूऽ फ़ीहाऽ बिस्मिऽल्लाहि मज्रीहाऽ व मुर्साहाऽ; इन्ना रब्बी ल ग़फ़ूरुर्रह़ीम् ॥

और कहने लगा—नौका पर चढ़ उसका बहना और थमना अल्लाह के नाम से है; निश्चय मेरा पालनकर्त्ता क्षमा शील और दयालु है।

(७) व हिया तज्री बिहिम् फ़ी मउ्जिन् कऽल् जिबाऽलि व नाऽदा नूहु (नि) ऽ ब्नहू व काऽना फ़ी मअ्ज़िलिय्या बुनय्यऽर्कम्मअ़नाऽ वलाऽ तकुम्मअ़ऽल् काफ़िरीन् ॥

और वह उनको लहरों के पहाड़ के मानिन्द ले बहती है और नूह ने अपने पुत्रों को और जो तट पर रहा करता था (उसको) पुकारा कि—"हे पुत्र! हमारे साथ चढ़ और अविश्वासियों के साथ मत रह।"

(८) क़ाऽला स आवी२ इला जबलिय्यअ़्सिमुनी मिनऽल् माऽइ; क़ाऽला लाऽ आ़ऽसिमऽल् यउ्मा मिन् अम्रिऽल्लाहि इल्लाऽ मर्रहिमा, व ह़ाऽला बय्नहुमऽऽल् मउ्जु फ़ काऽना मिनऽल् मुग़्रक़ीन् ॥

कहा—मैं किसी पर्वत से लग रहूँगा कि जो मुझको पानी से बचावेगा; (वह) कहने लगा—आज अल्लाह की आज्ञा से कोई बचाने वाला नहीं परन्तु जिस पर वही कृपा करें,

और दोनों के बीच लहर आ पड़ी अतः डूबने वालों में रह गया।

(९) व क़ीला याऽ अर्.जु़ऽब्लई़ माऽअकि व यासमाऽउ अक़्लिई़, व ग़ीज़ऽल् माऽउ व क़ुज़ियऽल् अम्रु वऽस्तवत् अ़लऽल् जूदिय्यि व क़ीला बुअ़्दऽल्लिल् क़ौमि-ज़्ज़ालिमीन् ॥

और आज्ञा आई—हे पृथ्वी ! अपना पानी निगल जा और हे आसमान ! थमजा और जल को सुखा दिया और काम हो चुका और जूदी पर्वत पर नौका ठहरी और आज्ञा हुई कि अत्याचारी जातियां दूर हों।

(१०) व नाऽदा नू.हुर्रब्बहू फ़ क़ाऽला रब्बि इन्नऽब्नी मिन् अह्.ली, व इन्ना वअ़्दकऽल् .हक़्क़ु व अन्ता अह्.कमुऽल् .हाकिमीन् ॥

और नूह ने अपने पालनकर्त्ता को बुलाया फिर बोला—हे पालनकर्त्ता ! मेरा पुत्र मेरे घर वालों है, और तेरी प्रतिज्ञा सच्ची है और तेरी आज्ञा सबसे श्रेष्ठ है।

(११) क़ाऽला या नू.हु, इन्नहू लय्.सा मिन् अह्लिका, इन्नहू अ़मलुन् ग़य्.रु साऽलि.हिन् फ़लाऽ तस्-अल्नि माऽ लय्.सा लका बिही .इल्मुन्; इन्नीऽ अइ.-ज़ु.का अन्तकूना मिनऽल् जाहिलीन् ॥

कहने लगा—हे नूह ! वह तेरे घर वालों में नहीं, उसके काम व्यर्थ हैं अतः जो तुझको विदित नहीं मुझको ज्ञात नहीं; मैं तुझे उपदेश करता हूँ कि तू मूर्खों में हो जा।

(१२) क़ाऽला रब्बि इन्नीइ अऊ़ज़ुबिका अन् अस्अलका माऽ लय् सा ली बिही इल्मुन्;व इल्लाऽ तग़्फ़िर्ली व तर्ह़म्नीइ अकुम्मिनऽल् ख़ासिरीन् ॥

कहने लगा—हे पालनकर्त्ता ! मैं तेरी शरण ग्रहण करता हूँ जिससे कि जो मुझको विदित न हो तुझसे पूछूँ; और यदि तू मुझको क्षमा न करे और न (तू मुझ पर) दया करे तो मैं नाश वालों में हूँ।

(१३) क़ीला या नू.हुऽह् बित् बि सलामिम्मिन्नाऽ व बरकातिन् अ़लय् का व अ़लाइ उममिम्मिम्मम्मअ़का; व उममुन् सनुमत्तिउ़हुम् सुम्मा यमस्सुहुम्मिन्नाऽ अ़ज़ाऽ-बुन् अलीम् ॥

और आज्ञा हुई—हे नूह ! कुशल के साथ हमारी ओर से उतर और हमारी आशिषों सहित जो तुझ पर और तेरे साथ वाले समुदायों पर हैं; और कितने (ही) समुदायों को हम लाभ पहुंचायंगे फिर उनको हमारी ओर से दुःख का दण्ड पहुंचेगा।

(१४) तिल्का मिन् अनबाइइऽल् ग़य् बि नूहीहाइ इलय् का, माऽ कुन्ता तअ़्लमुहाइ अन्ता व लाऽ क़ उमुका

मिन् क़ब्लि हाज़ाऽ; फ़ऽस्बिर्; इन्नऽल् आक़िबता लिल् मुत्तक़ीन् ॥

यह कुछ समाचार परोक्ष के हैं कि जिनको हम तेरी ओर भेजते हैं इनको इससे पूर्व न तू (ही) जानता था और न तेरी जात; [जानती थी] अतः तू सन्तोष रख; निश्चय ही अन्त में डर वालों का है।

[मं० ३, पारा १२, रु० ५।११]

(१) व इला आऽदिन् अख़ाऽहुम् हूदऽन्; क़ाऽला या क़उ्मिऽअ्बुदुऽऽल्लाहा माऽ लकुम्मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू, इन् अन्तुम् इल्लाऽ मुफ़्तरून् ॥

और हमने आद की ओर हूद को भेजा; (वह) बोला—हे जाति! अल्लाह की आराधना करो उसके अतिरिक्त अन्य कोई शासक नहीं, तुम सब असत्य कहते हो।

(२) या क़उ्मि लाऽ अस्अलुकुम् अ़लय्हि अज्ऽन्; इन् अज्रिया इल्लाऽ अ़लऽल्लज़ी फ़ तरनी; अ फ़लाऽ तअ्क़िलून् ॥

हे जाति! मैं तुमसे इस पर मूल्य नहीं मांगता; मेरा मूल्य उसी पर है जिसने मुझे उत्पन्न किया; फिर क्या तुम नहीं समझते।

(३) व या क़ौमिस्तग़्फ़िरू रब्बकुम् सुम्मा तूबू इलय् हि युर्सिलि-स्समाअ अलय् कुम्मिद्रारव्व यज़िद्कुम् कुव्वतन् इला कुव्वतिकुम् वला ततवल्लौ मुज्रिमीन् ॥

और हे जाति वालो! अपने पालनकर्त्ता से पाप क्षमा कराओ फिर उसकी ओर लौटो तुम पर आकाश की धारायें छोड़ दे और तुमको बल पर बल अधिक प्रदान करे और पापी हो कर फिर न जाओ।

(४) क़ालू या हूदु मा जिअ्तना बिबय्यिनतिन्व मा नह् नु बि तारिकी आलिहतिना अन् क़ौलिका वमा नह् नु लका बि मुअ्मिनीन् ॥

वह कहने लगे—"हे हूद! तू हमारे पास कुछ प्रमाण के साथ नहीं आया और हम तेरे कहने से अपने ठाकुरों को छोड़ने वाले नहीं और हम तुझे (पैग़म्बर) स्वीकार करने वाले नहीं।

(५) इन्नक़ूलु इल्लअ् तराका बअ्ज़ु आलिहतिना बिसूइन्; क़ाल इन्नी उशिहदुल्लाहा वश्हदू अन्नी बरीउम्मिम्मा तुश्रिकून ॥

हम तो यही कहते हैं कि तुझको हमारे ठाकुरों में से किसी ने बुरी तरह झपट लिया है (वह) कहने लगा—"मैं अल्लाह

को साक्षी करता हूँ और तुम साक्षी रहो कि मैं उनसे दुःखित हूँ जिन्हें तुम सम्मिलित करते हो।

(६) मिन्दूनिही फ़ कीदूनी जमीअ़ऽन् ,सुम्मा लाऽ तुन्ज़िरून् ॥

इसके अतिरिक्त मेरे निमित्त मिलकर सौ बुराई करो फिर मुझको छुट्टी न दो।

(७) इन्नी तवक्कल्तु अ़लऽल्लाहि रब्बी व रब्बि-कुम् , माऽ मिन् दाऽब्बतिन् इल्लाऽ हुवा आख़िज़ुन् ँ बिनाऽ सियतिहाऽ; इन्ना रब्बी अ़ला सिराऽति म्मुस्तक़ीम् ॥

मैंने अल्लाह पर, जो मेरा और तुम्हारा पालनकर्त्ता है, विश्वास किया; कोई पांव धरने (चलने) वाला नहीं परन्तु उसके हाथ में उसकी शिखा है; निस्सन्देह मेरा पालनकर्त्ता सीधे मार्ग पर है।

(८) फ़ इन्त वल्लउऽ फ़क़द् अब्लग़्तुकुम्माऽ उर्सिल्तु बिहीऽ इलय्कुम्; व यस्तख़्लिफ़ु रब्बी क़ौमऽन ग़य्रकुम् , व लाऽ तज़ुर्रूनहू शय्अऽन्; इन्ना रब्बी अ़ला कुल्लि शय्इन् ,हफ़ीज़् ॥

फिर यदि तुम फिर जाओगे तो मैं पहुंचा चुका जो तुमको मेरे हाथ भेजा था; और मेरा पालनकर्त्ता तुम्हारे प्रतिनिधि

किन्हीं और लोगों को (नियत) करेगा, और उसका कुछ न बिगाड़ सकोगे; निःसन्देह मेरा पालनकर्त्ता प्रत्येक वस्तु का रक्षक है।

(९) व लम्माऽ जाऽ॒आ अम्रुनाऽ नज्जय्नाऽ हूदऽव्वऽल्लज़ीना आमनूऽ मअहू बि रह्मतिम्मिन्नाऽ, व नज्जय्नाहुम्मिन् अज़ाऽबिन् ग़लीज् ॥

और जब हमारी आज्ञा पहुंची हमने हूद को और जिन्होंने उसके साथ विश्वास किया था [उनको] अपने अनुग्रह से (अपने) बचा दिया, और उनको उनके भारी दण्ड से रक्षा की।

(१०) व तिल्का आऽदुन् जहदू बि आयाति रब्बिहिम् व असउऽ रुसुलहू वऽत्तबऊ॒ अम्रा कुल्लि जब्बाऽरिन् अनीद् ॥

और यह आद (जाति के) थे कि अपने पालनकर्त्ता की बातों को अस्वीकार किया; और न उसके पैग़म्बरों को स्वीकार किया और उनकी आज्ञा स्वीकार की कि जो उद्दण्ड थे।

(११) व उत्बिऊऽ फ़ी हाज़िहि-दुन्याऽ लअ्नतव्व यउ्मऽल् क़ियामति; अलाऽ इन्ना आऽदऽन् कफ़रूऽ रब्बहुम्; अलाऽ बुअ्दऽ ल्लि आऽदिन् क़उ्मि हूद् ॥

और पीछे क़यामत के दिन इस संसार में फटकार पाई;

सुनलो आद अपने पालनकर्त्ता के अविश्वासी हुए; सुनलो आद को—जो हूद की जाति थी—फटकार है।

मं० ३ पारा १२, रु० ६।८

(१) व इला समूदा अख़ाऽहुम् सालिहऽन् क़ाऽला या क़ौमिऽअ्बुदुऽऽल्लोहा माऽ लकुम्मिन् इलाहिन् ग़य्रुहू; हुवा अन्शअकुम्मिनऽल् अर्ज़ि वऽस्तअ्मरकुम् फ़ीहाऽ फ़ऽस्तग़्फ़िरूहु सुम्मा तूबू३ इलय्हि; इन्ना रब्बी क़रीबुम्मुजीब् ॥

और समूद की ओर उनके भाई सालह को भेजा, (वह) कहने लगा -"हे जाति वालो ! अल्लाह की आराधना करो उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई शासक नहीं; उसीने तुमको पृथ्वी से रचा और उसमें तुमको बसाया अतः उससे क्षमा कराओ और उसकी ओर आओ निस्सन्देह मेरा पालनकर्त्ता निकट है स्वीकार करने वाला है।

(२) क़ाऽलूऽ या सालिहु, क़द् कुन्ता फ़ीनाऽ मर्जुव्वऽन् क़ब्ला हाज़ा३ अतन्हाना३ अन्नअ्बुदा माऽ यअ्बुदु आबा३उनाऽ व इन्नन्नाऽ ल फ़ी शक्किम्मिम्माऽ तद्ऊना३ इलय्हि मुरीब् ॥

कहने लगे—हे सालह ! तुम पर हमको आशा थी इससे

पूर्व तू हमको रोकता है कि जिनको हमारे पिता प्रपितामहादि पूजते रहे हैं (उन्हें) पूजें और हमको उसमें सन्देह है जिस ओर तू बुलाता है।

(३) क़ाऽला या क़ौमि अरअय्तुम् इन् कुन्तु अला बय्यिनतिम्मिर्रब्बी व आतानी मिन्हु रह् मतन् फ़ मय्यन्सुरु नी मिनऽल्लाहि इन् असय्तुहू फ़ माऽ तज़ीदूननी ग़य्रा तख़्सीर् ॥

वह कहने लगा—हे जाति ! भला देखो तो यदि मुझको अपने पालनकर्त्ता से ज्ञान प्राप्त हो गया और उसने मुझको अपनी ओर से अनुग्रह प्रदान की फिर अल्लाह के आगे मेरी कौन सहायता करे यदि मैं उसकी अवज्ञा करूं अतः तुम हानि के अतिरिक्त मेरी कुछ वृद्धि नहीं करते।

(४) व या क़ौमि हाज़िही नाऽक़तुऽल्लाहि लकुम् आयतन् फ़ ज़रूहाऽ तअ्कुल् फ़ी अर्ज़िऽल्लाहि वलाऽ तमस्सूहाऽ बि सूइन् फ़ यअ्ख़ुज़कुम् अज़ाऽबुन् क़रीब् ॥

और हे जाति ! यह ऊंटनी तुमको अल्लाह का चिह्न है अतः उसे छोड़ दो (ताकि) अल्लाह की भूमि में चरती फिरे और उसको बुरी तरह न छेड़ो, (अन्यथा) फिर तुझको निकटवर्ती दण्ड ग्रसित करेगा।

(५) फ़ अक़रूहाऽ फ़ क़ाऽला तमत्तऊऽ फ़ी दाऽरि

कुम् सलासता अय्यामिन् ; ज़ालिका वअ़्दुन् ग़य्रु मक्ज़ूब् ॥

फिर उसके (उन्होंने) पैर काटे तब (उनसे) कहा कि अपने गृहों में तीन दिन बरत लो; यह अल्लाह की प्रतिज्ञा है।

(६) फ़ लम्माऽ जाउआ अम्रुनाऽ नज्जय्नाऽ सालिहन् वऽल्लज़ीना आमनूऽ मअ़हू बिरह्मतिम्मिन्नाऽ व मिन् ख़िज़्यि यउ्मिइज़िन् ; इन्ना रब्बका हुवऽल् क़विय्युऽल् अ़ज़ीज़् ॥

फिर जब हमारी आज्ञा पहुंची, हमने सालह को और जो उसके साथ थे (उनको) अपनी अनुग्रह करके (प्रलय के) दिन की रुसवाई से रक्षा की निश्चय तेरा पालनकर्त्ता वही बलवान् और प्रबल है।

(७) व अख़ज़ऽल्लज़ीना ज़लमुऽ-स्सय्हतु फ़ अस्बहूऽ फ़ी दियाऽ रिहिम् जासिमीन् ॥

और उन अत्याचारियों को चिंघाड़ से पकड़ा फिर (वे) अपने गृहों में प्रातःकाल को औंधे पड़े रह गये।

(८) क अल्लम् यग़नउ्ऽ फ़ीहाऽ, अलाइ इन्ना समूदाऽ कफ़रूऽ रब्बहुम् ; अला बुअ़्दऽल्लि समूद् ॥

मानो कि कभी उसमें रहे न थे; सुन लो समूद ने अपने

पालनकर्त्ता का अविश्वास किया; सुन लो समूद को फटकार है।

[मं० ३, पारा १२, रु० ७।१५]

(१) व लक़द् जा२अत् रुसुलुना२ इब्राहीमा बिऽल् बुश्रा क़ाऽलूऽ सलामऽन् ; क़ाऽला सलामुन् फ़ माऽ लबिस़ा अन् जा२आ बि इ़ज्लिन हनीज़् ॥

और हमारे भेजे इब्राहीम शुभ समाचार लेकर पास आचुके हैं (वे) कहने लगे सलाम; वह बोला—सलाम है फिर देर न की कि एक बछड़ा जला हुआ ले आया।

(२) फ़ लम्माऽ र२आ२ अय्दिय हुम् लाऽ तुसिल्लु इलय्हि नकिरहुम् व अउ़जसा मिन्हुम् ख़ीफ़तन् ; क़ाऽलूऽ लाऽ तख़फ़् इन्ना२ उर्सिल्ना२ इला क़उ़मि लूत् ॥

फिर जब देखा कि उनके हाथ खाने पर नहीं आते ऊपरा समझा और हृदय में उनसे भयभीत हुआ; वह बोले-डर मत हम लूत की जाति की ओर भेजे हुये आये हैं।

(३) व अम्रा अतुहू क़ा२इमतुन् फ़ ज़ह़िकत् फ़ बश्शर्नाहाऽ बि इस्हाक़ा; व मिव्वरा२इ इस्हाक़ा यअ्क़ूब् ॥

और उसकी स्त्री खड़ी थी तब वह हस पड़ी फिर हमने उसको इस्हाक़ का; और इस्हाक़ के पश्चात् याक़ूब का शुभ-समाचार दिया।

(४) क़ाऽलत् या वय् लता३श्रा अलिदु व अनाऽ अजूज़ुन्व हाज़ाऽ बअ्ली शय् ख़ऽन् ; इन्ना हाज़ाऽ ल शय् उन् अजीब् ॥

(वह) कहने लगी—हे ख़राबी ! क्या मैं जनूंगी और (ऐसी अवस्था में जब कि) मैं बुढ़िया हूँ और यह मेरा पति बूढ़ा है. यह तो एक विचित्र वस्तु है।

(५) क़ाऽलू३ अतअ्जबीना मिन् अम्रिऽल्लाहि रह् मतुऽल्लाहि व बरकातुहू अलय् कुम् अह्ऽल् बय् तिः इन्नहू हमीदुम्मजीद् ॥

वह बोले—हे घर वाली ! अल्लाह की आज्ञा पर क्या आश्चर्य करता है तुम पर अल्लाह की आज्ञा और अनुग्रह है: वह सर्वथा प्रशंसा वाला है।

(६) फ़ लम्माऽ ज़हबा अन् इब्राहीम-रंउ्उ व जा३अन्हुऽल् बुश्रा युजाऽदिलुनाऽ फ़ी क़उ् मि लूत् ॥

फिर जब इब्राहीम से डर गया और उसे शुभ समाचार आया (तो) हमसे लूत की जाति के विषय में झगड़ने लगा।

(७) इन्ना इब्राहीमा ल हलीमुन् अव्वाऽहुम्मुनीब् ॥

निःसन्देह, इब्राहीम सहनशील और कोमल हृदय है और (अल्लाह की ओर) लौटाने वाला है।

(८) या३ इब्राहीमु अअ्रिज़् अन् हाज़ाऽ, इन्नहू

क़द् जाऽअ अम्रु रब्बिका व इन्नहुम् आतीहिम् अज़ाऽ-बुन् ग़य्रु मर्दूद् ॥

हे इब्राहीम ! यह विचार त्याग; वह तो तेरे पालनकर्त्ता की आज्ञा आ चुकी और उन पर दण्ड आता है लौटाया नहीं जाता ।

(९) व लम्माऽ जाऽअत् रुसुलुनाऽ लूतऽन् सीऽआ बिहिम् व ज़ाऽक़ा बिहिम् ज़र्अऽव्व क़ाऽला हाज़ाऽ यउ-मुन् असीब् ॥

और जब हमारे प्रेषित लूत के पास पहुँचे तो उनके आने से अप्रसन्न हुआ और हृदय में रुक गया और बोला आज बड़ा कठिन दिन है ।

(१०) व जाऽअहू क़उमुहू युह्रऊना इलय्हि; व मिन् क़ब्लु काऽनूऽ यअ्मलून-स्सय्यिआति; क़ाऽला या क़उमि हाऽउलाऽइ बनाऽतीहुन्ना अत्हरु लकुम् फ़ऽत्तक़ुऽऽल्लाहा वलाऽ तुख़्ज़ूनि फ़ी ज़य्फ़ी, अलय्सा मिन्कुम् रजुलुर्रशीद् ॥

और उसके निकट उसकी जाति दौड़ती हुई आई और (वे) पूर्व से ही बुरे कर्म कर रहे थे, (वह) कहने लगा—हे जाति ! यह मेरी पुत्रियां उपस्थित हैं यह तुम्हारे लिए उनसे पवित्र हैं अतः तुम अल्लाह से भय करो और मुझको मेरे

आगन्तुकों में लज्जित न करो; क्या तुममें एक भी भला मनुष्य नहीं है ?

(११) क़ाऽलूऽ लक़द् अ़लिम्ता माऽ लनाऽ फ़ी बनातिका मिन् .हक़्क़िन् , व इन्नका ल तअ़्लमु माऽ नुरीद् ॥

(वह लोग) कहने लगे—तू जानता है कि हमको तेरी पुत्रियों से कुछ प्रयोजन नहीं और निश्चय तू जानता है कि हम क्या चाहते हैं ?

(१२) क़ाऽला लउ् अन्ना ली बिकुम् क़ुव्वतन् अउ् आवीर इला रुक्निन् शदीद् ॥

(वह) कहने लगा—कहीं मुझे तुम्हारा सामना करने की शक्ति होती अथवा किसी बली आश्रय की शरण लेता।

(१३) क़ाऽलूऽ या लूतु इन्ना रुसुलु रब्बिका लय्‌-सिलूर इलय्का फ़ अस्रि बि अह्लिका बि क़ित्इम्मिन-ल्लय्लि वलाऽ यल्तफ़ित् मिन्कुम् अह.दुन् इल्लाऽ अम्रा अतका; इन्नहू मुसीबुहाऽ मार असाऽबहुम् ; इन्ना मउ्-इदहुमु-स्सुब्हु; अलय्स-स्सुब्हु. बि क़रीब् ॥

आगन्तुक बोले—हे लूत ! हम तेरे पालनकर्त्ता के भेजे हुये हैं तेरे पास तक कदापि न पहुंच सकेंगे अतः अपने घर वालों को लेकर कुछ रात रहे निकल जा और तुममें से कोई मुड़कर

न देखे परन्तु तेरी पत्नी कि निस्सन्देह उसको वह पहुंचने हारा है वह जो उन पर पहुंचेगा, निस्सन्देह उनकी प्रतिज्ञा का समय प्रातःकाल है क्या प्रातः निकट नहीं ?

(१४-१५) फ़ लम्माऽ जा३आ अम्रुनाऽ जअ़ल्नाऽ आ़ऽलियहाऽ साऽ फ़िलहा व अम्तर्नाऽ अ़लय्हाऽ हिजाऽरतम्मिन् सिज्जीलिम्मन्सूदिम्मसव्वमतन् अ़िन्दा रब्बिका; वमाऽ हिया मिन-ज़्ज़ालिमीना बि बईद् ॥

फिर जब हमारी आज्ञा पहुंची, हमने वह नगरी ऊंचे नीचे कर डाली और हमने उस पर बराबर खंगर और पत्थर बरसाये जो तेरे पालनकर्त्ता की ओर से चिह्न किये हुये थे; और वह नगरी अत्याचारियों से कुछ परे नहीं थी।

[मंजिल ३ पारा १२ रु० ८।१२]

(१) व इला मद्यना अख़ाऽहुम् शुअ़य्बऽन: क़ाऽला या क़उ मिऽअ़्बुदुऽऽल्लाहा माऽ लकुम्मिन् इलाहिन् ग़य्रुहू; व लाऽ तन्कुसुऽऽल् मिक्याऽला वऽल् मीज़ाऽना इन्नी३ अराकुम् बि ख़य्रि व्व इन्नी३ अख़ाऽफ़ु अ़लय्कुम् अ़ज़ाऽबा यउमिम्मुहीत् ॥

और मद्यन (जाति) की ओर उनका सगा शुऐब भेजा: (उसने) कहा—हे जाति ! अल्लाह की आराधना करो उसके अतिरिक्त अन्य कोई तुम्हारा स्वामी नहीं; और नाप और तोल

में कमती न करो: मैं तुमको सन्तुष्ट देखता हूँ और तुम पर घेर लेने वाले दिन की आपत्ति (के आने) का मुझे भय है।

(२) व या क़ौमि अउ़फ़ुऽऽल् मिक्याऽला वऽल् मीज़ाऽना बिऽल् क़िस्ति वलाऽ तब्ख़सुऽ-न्नाऽसा अश्याऽ अहुम् वलाऽ तअ़्सउ़ऽ फ़िऽल् अर्ज़ि मुफ़्सिदीन् ॥

और हे जाति वालो! नाप और तौल न्यायपूर्वक पूरे करो और लोगों को उनकी वस्तुएँ न घटाओ और पृथ्वी पर उपद्रव न मचाओ।

(३) बक़िय्यतुऽल्लाहि ख़ैरुल्लकुम् इन्कुन्तुम्मुअ्-मिनीना, वमाऽ अनाऽ अ़लैकुम् बि ह़फ़ीज़् ॥

जो अल्लाह का दिया बच रहे वह तुमको शुभकारी है यदि तुम मुसल्मान (विश्वासी) हो, मैं तुम्हारा संरक्षक नहीं।

(४) क़ाऽलूऽ या शुअ़ैबु असलातुका तअ्मुरुका अन्न तत्रुका माऽ यअ़्बुदु आबाऽउनाऽ अउ अन्नफ़्-अ़ला फ़ीऽ अम्वाऽलिनाऽ माऽ नशाऽउऽ; इन्नका ल अन्तऽल् ह़लीमु-र्रशीद् ॥

कहने लगे—हे शुऐब! क्या तेरी नमाज़ (प्रार्थना) तुझको सिखाती है कि हम उनको तज दें कि जिनको हमारे पितृगण पूजते थे अथवा हम अपनी सम्पति के साथ वह न करें जो हम चाहें: तू ही तो बड़ा कोमल स्वभाव और समझदार है।

(५) क़ाऽला या क़ौ़ मि अरअय्तुम् इन्कुन्तु अला बय्यिनति म्मिर्रब्बी व रज़क़नी मिन्हु रिज़्क़ऽन् हसनऽन ; व माऽ उरीदु अन् उख़ाऽलिफ़ कुम् इला माऽ अन्हाकुम् अन्हु; इन् उरीदु इल्लऽऽल् इस्लाऽहा मऽऽस्तातअ्तु; वमाऽ तऊ फ़ीक़ीऽ इल्लाऽ बिऽल्लाहि; अलय्हि तवक्कल्तु व इलय्हि उनीब् ॥

कहने लगा—हे जाति ! देखो तो यदि मुझको अपने पालनकर्ता को ओर से ज्ञान हुआ और उसने मुझको भोजन—शुभ भोजन दिया; और मैं नहीं चाहता कि जो काम तुमसे छुड़ाऊं (उसे) पोछे स्वयं करूं; मैं तो जहाँ तक हो सके यही सुधारना चाहता हूँ; और जो अल्लाह की ओर से बन आता है; मैंने उसी पर विश्वास किया; और उसी की ओर लौटकर जाता हूं।

(६) व या क़ौ़ मि लाऽ यजि़्रमन्नकुम् शिक़ाऽक़ीऽ अय्युसीबकुम् मिस्लु माऽ असाऽबा क़ौमा नूहिन् अउ क़ौ़ मा हूदिन् अउ क़ौ़ मा साऽलिहिन् ; व माऽ क़ौमु लूतिम्मिन्कुम् बिबईद् ॥

और हे जाति ! मुझसे हठ करके वह (अपराध) न कमाना कि तुम पर वह आपत्ति आ पड़े जैसी कुछ कि नूह की जाति पर या हूद की जाति पर अथवा सालह की जाति पर पड़ी, और लूत की जाति तो तुमसे दूर नहीं।

(७) वऽस्तग़्फ़िरूऽ रब्बकुम् सुम्मा तूबूऽ इलय्हि; इन्ना रब्बी रहीमुव्वदूद् ॥

और अपने पालनकर्त्ता से अपने पाप क्षमा कराओ और उसकी ओर फिरो: निश्चय पालनकर्त्ता दयालु और प्यार करने वाला है।

(८) क़ाऽलूऽ या शुअय्बु माऽ नफ़्क़हु कसीरऽम्मिम्माऽ तक़ूलु व इन्नाऽ ल नराका फ़ीना ज़ईफ़ऽन, व लउलाऽ रह्तुका लरजम्नाका वमाऽ अन्ता अलय्नाऽ बि अज़ीज़ ॥

बोले—हे शुऐब ! हम बहुत बातें—जो तू कहता है—नहीं समझते और हम देखते हैं तू हममें निर्बल है, और यदि तेरे भाई बन्धु न होते तो तुझको हम पथराते और तू हम पर कुछ प्रभावशाली नहीं।

(९) क़ाऽला या क़ौमि अरहतीऽ अअज़्ज़ु अलय्कुम्मिनऽल्लाहि; वऽत्तख़ज़्तुमूहु व राऽअकुम् ज़िह्रियऽन्; इन्ना रब्बी बिमाऽ तअ्मलूना मुहीत ॥

(शुऐब) बोला—हे जाति ! क्या मेरे भाई बन्धों का तुम पर अल्लाह से अधिक प्रभाव है; और उस (अल्लाह) को तुमने भुलाकर पीठ पीछे डाल रक्खा है; निश्चय जो तुम करते हो मेरे पालनकर्ता के वश में हैं।

(१०) व या क़ौ मिऽअ्मलू ऽ अला मकाऽनतिकुम् इन्नी आऽमिलुन् ; सौ फ़ा तअ्लमूना मय्यअ्तीहि अ़ज़ाऽबु य्युख़्ज़ीहि व मन् हुवा काऽज़िबुन् ; व अर्तक़िबू ऽ इन्नी मअकुम् रक़ीब् ॥

और हे जाति ! काम किये जा, अपने स्थान पर मैं भी काम करता हूं; भविष्य में विदित होगा कि किस पर प्रकोप प्रगट होता है जिससे कि उसे लज्जित करे और कौन झूठा है; और प्रतीक्षा करो मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करता हूं।

(११) व लम्माऽ जाऽअ अम्रुनाऽ नज्जय् नाऽ शुअ़य् बऽव्वऽल्लज़ीना आमनूऽ मअ़हू बिरह् मतिम्मिन्नाऽ, व अख़ज़तिऽल्लज़ीना ज़लमुऽ—स्सय् ह तु फ़ अस्ब हूऽ फ़ी दियाऽरिहिम् जासिमीन् ॥

और जब हमारी आज्ञा पहुंची (तो) हमने शुऐब को और जिन्होंने उसके साथ विश्वास किया था, (उनको) अपनी अनुग्रह से बचा दिया; और उन अत्याचारियों को (प्रकोप में) ग्रसित किया फिर (वे) अपने घरों में प्रातःकाल औंधे पड़े चिंघाड़ते रह गये।

(१२) क अल्लम् यग़नउ ऽ फ़ीहाऽ; अलाऽ बुअ़्दऽ ल्लि मद्यना कमाऽ ब इदत् समूद् ॥

जैसे कि उनमें कभी न बसे थे; सुन लो मद्यन पर फटकार है जैसे समूद ने फटकार पाई।

(१) व लक़द अर्सल्नाऽ मूसा बि आयातिनाऽ व सुल्तानिम्मुबीन् ॥

और मूसा को अपने चिह्नों और स्पष्ट प्रमाण के साथ भेज चुके हैं।

(२) इला फ़िर्अ़ौना व मलाइही फ़त्तबऊ अम्रा फ़िर्अ़ौना, व माऽ अम्रु फ़िर्अ़ौना बिरशीद् ॥

फ़िर्औन और उसके मुखियाओं के पास फिर (वे) फ़िर्औन की आज्ञा के अनुकूल चले, और फ़िर्औन की आज्ञा कुछ अच्छी नहीं है।

(३) यक़्दुमु क़ौमहू यौमल् क़ियामति फ़ औरदहुमु-न्नाऽरा, व बिअ्सल् विर्दुल् मौरूद् ॥

फिर प्रलय के दिन फ़िर्औन अपनी जाति के आगे आगे होगा फिर उनको (दोज़ख़ की) अग्नि पर पहुँचावेगा: और जिस (अग्नि) पर पहुँचे वह बुरा घाट है।

(४) व उत् बिऊ फ़ी हाज़िही लअ्नतन् व यौमल् क़ियामति, बिअ्स-रिफ़्दुल् मर्फ़ूद् ॥

और इस संसार में पीछे से प्रलय के दिन फटकार मिली: वह बुरा पारितोषिक है जो प्राप्त हुआ है।

(५) ज़ालिका मिन् अम्बाऽइऽल् .कुरा नकुस्सुहू अलय्का मिन्हाऽ क़ाऽइ मुव्व .हसीद् ॥

यह नगरियों के थोड़े से समाचार हैं जो हम तुझको सुनाते हैं उनमें कोई अब तक स्थिर हैं और कोई उजड़ गयीं।

(६) व माऽ ज़लम्ना हुम् वला किन् ज़लमूऽ अन्फुसहुम् फ़ माऽ अग़नत् अन्हुम् आलिहतु हुमुल्लती यद्ऊना मिन्दूनिऽल्लाहि मिन् शय्इ ल्लम्माऽ जाऽआ अम्रु रब्बिका; व माऽ ज़ाऽदू हुम् ग़य्रा तत्बीब् ॥

हमने उन पर अत्याचार नहीं किया किन्तु उन्होंने अपने ऊपर स्वतः अत्याचार किया और उनके (पत्थर के) देवता उनके काम कुछ न आये कि जिनको वह अल्लाह के अतिरिक्त बुलाया करते थे जब मेरे पालनकर्ता की आज्ञा आ पहुंची तो उन्होंने नाश के अतिरिक्त और कुछ न बढ़ाया।

(७) व कज़ालिका अख़्जु रब्बिका इज़ाऽ अख़ज़ल् .कुरा व हिया ज़ाऽलिमतुन्; इन्ना अख़्ज़हूऽ अलीमुन् शदीद् ॥

और तेरे पालनकर्त्ता की पकड़ (के प्रकोप) ऐसी ही है जब वह अत्याचारी हैं; निस्सन्देह उसके प्रकोप की पकड़ भयङ्कर दुःख देती है।

(८) इन्ना फ़ी ज़ालिका ल आयतल्लिमन् ख़ाऽफ़ा

अज़ाऽबऽल् आख़िरति; ज़ालिका यउ्मुम्मज्मू उ्ल्लहु-न्नाऽसु व ज़ालिका यउ्मुम्मशहूद् ॥

निस्सन्देह इसमें उनके निमित्त चिह्न हैं जो अन्तिम दिवस से डरते हैं; यह एक दिन है जिसमें मनुष्य एकत्र किये जायँगे और इस दिन की साक्षी मिली हुई है।

(९) व माऽ नुअख़्ख़िरुहू२ इल्लाऽ लि अजलिम्मअ्दूद् ॥

हम उसको नियत समय के उपरान्त रोक न रक्खेंगे।

(१०) यउ्मा यअ्ति लाऽ तकल्लमु नफ़्सुन् इल्लाऽ बि इज़्निही, फ़ मिन्हुम् शक़िय्युंव्व स ईद् ॥

जिस दिन वह आ पहुंचेगा तो कोई प्राणी बिना उसकी आज्ञा के न बोल सकेगा; अतः उनमें कोई भाग्यहीन है और कोई सौभाग्यशाली।

(११) फ़ अम्माऽऽल्लज़ीना शक़ूऽ फ़ फ़ि-न्नाऽरि लहुम् फ़ीहाऽ ज़फ़ीरुंव्व शहीक़् ॥

अतः जो लोग भाग्यहीन हैं वह (दोज़ख़ की) अग्नि में हैं उनको वहां चिल्लाना और दौड़ना है।

(१२) ख़ालिदीना फ़ीहाऽ माऽ दाऽ मति-स्समावातु वऽल् अर्जु इल्लाऽ माऽ शाऽ अ रब्बुका; इन्ना रब्बका फ़ अ्आऽलु ल्लिमाऽ युरीद् ॥

उसमें जब तक आकाश और पृथ्वी रहे रहा करें परन्तु जो तेरा पालनाकर्त्ता चाहें; निःसन्देह तेरा पालनकर्त्ता जो चाहता है कर डालता है।

(१३) व अम्मऽऽल्लज़ीना सुइदूऽ फ़ फ़िऽल् जन्नति ख़ालिदीना फ़ीहाऽ माऽ दाऽमति-स्समावातु वऽल् अर्जु, इल्लाऽ माऽ शाऽअा रब्बुका; अताऽअन् ग़यूरा मजज़ूज़् ॥

और वह जो सौभाग्यशाली है वह जन्नत में है जब तक आकाश और पृथ्वी रहे उसमें रहा करें परन्तु जो तेरा पालन-कर्त्ता चाहे: अनन्त देन है।

(१४) फ़ लाऽ तकु फ़ी मिर्यतिम्मिम्माऽ यअ्बुदु हाऽउलाऽइ; माऽ यअ्बुदूना इल्लाऽ कमाऽ यअ्बुदु आबाऽउहुम्मिन् क़ब्लु, व इन्नाऽ लमुवफ़्फ़ूहुम् नसीबहुम् ग़यूरा मन्क़ूस् ॥

अतः तू इन वस्तुओं से धोखे में मत रह कि जिनको यह लोग पूजते हैं; पूजते कुछ नहीं परन्तु उसी प्रकार जिस प्रकार उनसे पहले उनके पिता आदि महादि पूजते थे; और हम उनको उनका भाग बिना घटाया हुआ देने वाले हैं।

[मंज़िल ३ पा: १२ रु० १०।१४]

(१) व लक़द् आतय्नाऽ मूसऽल् किताबा फ़ऽख़्त-

लिफ़ा फ़ीहि व लउ्लाऽ कलिमतुन् सबक़त् मिर्रब्बिका ल कुज़िया बय्नहुम् ; व इन्नहुम् लफ़ी शक्किम्मिन्हु मुरीब् ॥

हमने मूसा को पुस्तक दी फिर उसमें विभेद किया; और यदि एक बात पहले से तुम्हारे पालनकर्त्ता को ओर से न आ चुकी होती तो उनमें निर्णय कर दिया गया होता; और निश्चय उनको इसमें सन्देह है कि मन स्थिर नहीं होता।

(२) व इन्ना कुल्लऽल्लम्माऽ लयुवफ़्फ़ियन्नहुम् रब्बुका अअ्मालहुम् ; इन्नहू बिमाऽ यअ्मलून ख़बीर् ॥

और जितने मनुष्य हैं तेरा पालनकर्त्ता उनको उनके लिए पूर्ण देगा; उसको सब पता है जो कि वह कर रहे हैं।

(३) फ़ऽस्तक़िम् कमाऽ उमिर्ता व मन्ताऽबा मअ़का वलाऽ तत्ग़उ्ऽ; इन्नहू बिमाऽ तअ्मलूना बसीर् ॥

अतः जैसी तुझको आज्ञा हुई, तू सीधा चला जा और जिसने तेरे साथ पाप क्षमा प्रार्थना की और मर्यादा का अतिक्रमण नहीं किया; वह जो तुम कर रहे हो (उसे वह) देखता है।

(४) वलाऽ तर्कनूऽ इलऽल्लज़ीना ज़लमूऽ फ़तमस्सकुमु-न्नाऽरु व माऽ लकुम्मिन्दूनिऽल्लाहि मिन् अउ्लियाऽआ सुम्मा लाऽ तुन्सरून ॥

और उनकी ओर मत झुके जो अत्याचारी है फिर तुमको आग लगेगी और तुमको अल्लाह के अतिरिक्त (अन्य) कोई सहायक नहीं फिर कहीं सहायता न पाओगे।

(५) व अक़िमि-स्सलाता तरफ़यि-न्नहाऽरि व ज़ुल्फ़म्मिन-ल्लयलि; इन्नऽल् ,हसनाति युज़्हिब्न स्सय्यिआति; ज़ालिका ज़िक्रा लि-ज़्ज़ाऽकिरीन ॥

नमाज़ (प्रार्थना) के दोनों सिरे स्थिर रक्खो और कुछ रात गये; निःसन्देह भलाइयां पापों को हटा देती हैं; और यह स्मरण कराने वालों के निमित्त स्मरण कर रहा है।

(६) वऽस्बिर् फ़ इन्नऽल्लाहा लाऽ युज़ीउ, अज़्रऽल् मुह्सिनीन् ॥

और धीरज कर फिर निस्सन्देह ईश्वर भलाई करने वालों का प्रतिफल नष्ट नहीं करता।

(७) फ़ लउ्लाऽ काऽना मिनऽल् क़ुरूनि मिन क़ब्लि कुम् उलूऽ बक़िय्यतिय्यन्हउ्ना अनिऽल् फ़साऽदि फ़िऽल् अर्ज़ि इल्लाऽ क़लीलऽम्मिम्मन अन्जय्नाऽ मिन्हुम्, वऽत्तबअऽल्लज़ीना ज़लमूऽ माऽ उत्रिफ़ूऽ फ़ीहि व काऽनूऽ मुज्रिमीन् ॥

अतः उन संगतों में तुमसे पहले ऐसे समझने वाले कोई क्यों न हुये कि जो पृथ्वी में उपद्रव मचाने को रोकते थे पर तु

कुछ लोग ऐसे थे जिनको हमने बचा लिया, और वह लोग जो अत्याचारी थे उसी मार्ग पर चले जिसमें उन्हें आनन्द प्राप्त हुआ और वे पापी थे।

(८) व माऽ काऽना रब्बुका लि युह्लिकऽल् कुरा बि ज़ुल्मिंव्व अह्लुहाऽ मुस्लिहू.न् ॥

और तेरा पालनकर्त्ता ऐसा नहीं कि नगरियों को बलपूर्वक नष्ट करे और (ऐसी अवस्था में जब कि) लोग वहां के नेक हों।

(९) व लउ शाऽअ रब्बुका लजअ़ल-न्नाऽसा उम्मतंव्वाऽ हिदतंव्वलाऽ यज़ाऽलूना मुख़्तलिफ़ीन् ॥

और यदि तेरा पालनकर्त्ता चाहता तो लोगों को एक मार्ग पर ले आता परन्तु लोग सदा विरोध में रहते हैं।

(१०) इल्ला मर्रहिमा रब्बुका; व लिज़ालिका ख़लक़हुम् ; व तम्मत् कलिमतु रब्बिका ल अम्लअन्ना जहन्नमा मिनऽल् जन्नति व-न्नाऽसि अज्मई.न् ॥

परन्तु जिन पर तेरे पालनकर्त्ता ने दया की; और इसी लिये उनको उत्पन्न किया; और तेरे पालनकर्त्ता का शब्द पूरा हुआ कि निश्चय इकट्ठे जिनों और मनुष्यों से दोज़ख़ को भरूंगा।

(११) व कुल्लऽन्नक़ुस्सु अ़लय्का मिन् अन्ॅ-बाऽइर्-रुसुलि माऽ नुसब्बितु बिही फ़ुआऽदका, व जाऽ-

अका फ़ी हाज़िहिऽल् हक़्क़ु व मउ् इज़तुव्व ज़िक्रा लिल् मुअ्मिनीन् ॥

और प्रत्येक बात हम तुझ से वर्णन करते हैं पैगम्बरों की बातों में तेरे निकट मुसल्मानों के लिए सत्य बात और शिक्षा और समझाने वाली बात आई।

(१२) व कुल्लि ल्लज़ीना लाऽ युअ्मिनूनऽअ्मलूऽ अला मकाऽनतिकुम् इन्नाऽ आमिलून् ॥

और जो विश्वास नहीं करते उनको कहदे कि काम किये जाओ हम भी अपनी जगह काम करते हैं।

(१३) वऽन्तज़िरूऽ, इन्नाऽ मुन्तज़िरून् ॥

और प्रतीक्षा करो, हम भी प्रतीक्षा करते हैं।

(१४) व लिल्लाहि ग़य्बु-स्समावाति वऽल् अर्ज़ि व इलय्हि युर्जउऽल् अम्रु कुल्लुहू फ़ऽअ्बुद्हु व तवक्कल् अलय्हि; वमाऽ रब्बुका बिग़ाऽफ़िलिन्अम्माऽ तअ्मलून्

और अल्लाह के पास पृथ्वी और आकाश की गुप्त बात है और उसी की ओर सब काम का रुख है अतः उसकी आराधना कर और उस पर विश्वास कर; और तेरा पालनकर्त्ता उससे अचेत नहीं (कि) जो काम करते हो।

सूरये-यूसुफ़*

[मं० ३ पारा १२, रु० १।११]

(१) अलिफ़ ला३म्रा तिल्का आयातुऽल् किता बिऽल् मुबीन् ॥

अलिफ़ ल.म् रा; यह आयतें स्पष्ट पुस्तक की हैं ।

(२) इन्ना३ अन्ज़ल्नाहु कुर्आनऽन् अरबिय्यऽ-ल्लअल्लकुम् तअ्क़िलून् ॥

हमने उसको उतारा है .कुरान अर्बी भाषा का कि कदाचित् तुम समझो ।

(३) नह्नु नक़ुस्सु अलय्का अह्सनऽल् क़ससि बिमा३ अव्हय्ना३ इलय्का हाज़ऽल् कुर्आना व इन कुन्ता मिन् क़ब्लिही ल मिनऽल् ग़ाफ़िलीन् ॥

हम तुझे उत्तमोत्तम वार्ता सुनाते हैं, इसलिए कि हमने तेरी ओर यह .कुरान भेजा और इससे पूर्व तू निश्चय अचेतों में था ।

(४) इज़्क़ाऽला यूसुफ़ु लि अबीहि या अबति इन्नी

* सूरये यूसुफ़ मक्के में उतरी उसकी १११ आयतें और १२ रुकूअ़ हैं ।

रअयतु अह.दा अशरा कउकबऽव्व-श्शम्सा वऽल् क़मरा रअयतुहुम् ली साजिदीन् ॥

जिस समय यूसफ़ ने अपने पिता को कहा—"हे पिता! मैंने ११ तारे देखे और सूर्य और चन्द्रमा मेरे लिए सिजदा करते (मस्तक झुकाते) हुये देखे।

(५) क़ाऽला या बुनय्या लाऽ तक़्सुस् रुअ्याऽका अला३ इख़्वतिका फ़यकीदूऽलका कयदऽन्; इन्न-श्शयताना लिल् इन्साऽनि अदुव्वुम्मुबीन् ॥

कहा—"हे पुत्र! अपना स्वप्न अपने भाइयों से वर्णन करना जिससे तेरे साथ कुछ प्रपञ्च रचें; निश्चय शैतान मनुष्य का साक्षात् शत्रु है।

(६) व कज़ालिका यज्तबीका रब्बुका व युअल्लिमुका मिन्तअ्वीलिऽल् अहाऽदीसि व युतिम्मि निअ्मतह अलयका व अला३ आलि यअ्कूबा कमा३ अतम्महाऽ अला३ अबवयका मिन् क़ब्लु इब्राहीमा व इस्हाक़ा; इन्ना रब्बका अलीमुन् हकीम् ॥

और इसी भांति तुझे हदीसों (घटनाओं) को व्याख्या करना सिखा देगा और अपना पारितोषिक तुझ पर और याक़ूब के घर पर उसी प्रकार पूरा करेगा जिस प्रकार तेरे दो बाप दादों—इब्राहीम और इस्हाक़ पर पूर्व से ही पूर्ण किया है; निस्सन्देह तेरा पालनकर्ता ज्ञाता और बुद्धिमान् है।

[मं० ३ पारा १२ रुकूअ २।१४]

(१) लक़द् का॰ना फ़ी यूसुफ़ा व इख़्वतिही आयातुल्लि स्सा॰इबीन् ॥

निस्सन्देह यूसुफ़ और उसके भाइयों के विषय में प्रश्न करने वालों के लिए इसमें चिह्न हैं।

(२) इज़्क़ा॰लू॰ ल यूसुफ़ु व अख़ूहु अ़हब्बु इला अबीना॰ मिन्ना॰ व नह़्नु उ़स्बतुन् ; इन्ना अबा॰ना॰ लफ़ी ज़लालिम्मुबीन् ॥

अब कहने लगे—"निस्सन्देह यूसुफ़ और उसका भाई हमारे पिता को हमसे अधिक प्रिय है और यद्यपि हम बलवान् हैं; निस्सन्देह हमारा पिता साक्षात् भ्रम में है।

(३) (नि) ॰क़्तुलू॰ यूसुफ़ा अविऽतूरहू अर्ज़-य्यख़्लु लकुम् वज्हु अबीकुम् व तकूनू॰ मिन् ँ बअ़्दिही क़ुउ़मऽन् सालिह़ीन् ॥

यूसुफ़ का बध करदो अथवा उसे किसी दूर देश में फेंक दो कि तुम पर-तुम्हारे पिता का एकमात्र ध्यान-तुम्हीं पर हो और उसके पश्चात् भले लोगों में हो जाना।

(४) क़ा॰ला क़ाइलुम्मिन्हुम् ला॰ तक़्तुलू यूसुफ़ा व अल्क़ूहु फी ग़यावतिल्-जुब्बि यल्तक़ितुहु बअ़्जुस्सय्यारति इन्कुन्तुम् फ़ाइलीन् ॥

उनमें से एक बोलने वाला कहने लगा—यूसुफ़ को मार न डालो और उसको कोई बटोही उठा ले जायगा यदि तुम्हें कुछ करना हो है।

(५) क़ाऽलूऽ या अबाऽनाऽ माऽ लका लाऽ तअ्-मन्नाऽ अ़ला यूसुफ़ा व इन्नाऽ लहू लनाऽ सिहून् ॥

वह कहने लगे—"हे पिता ! क्या कारण है कि तू यूसुफ़ के विषय में हमारा विश्वास नहीं करता और निस्सन्देह हम तो उसके हितैषी हैं।

(६) अर्सिल्हु मअ़नाऽ ग़दऽय्यर्तअ् व यल्अ़ब् व इन्नाऽ लहू ल हाफ़िज़ून् ॥

कल उसको हमारे साथ भेज दें कि वह भली भांति खाय और खेले और हम तो उसके रक्षक हैं।

(७) क़ाऽला इन्नीऽ लयह्ज़ुनुनीऽ अन् तज़्हबूऽ बिही व अख़ाऽफ़ु अय्यअ्कुलहु-ज़्ज़िअ्बु व अन्तुम् अन्हु ग़ाफ़िलून् ॥

उसने कहा—निस्सन्देह यह तो हमारे शोक का कारण है कि तुम उसको लेजाओ और मैं डरता हूँ कि (कहीं) उसको भेड़िया खा जायँ और तुम उससे अचेत रहो।

(८) क़ाऽलूऽ लइन् अकलहु-ज़्ज़िअ्बु व नह्नु उस्बतुन् इन्नाऽ इज़ऽल्लख़ासिरून् ॥

और (जब कि) हम एक बलशाली समुदाय (बन.ये हुये) है तो हमने सब कुछ नष्ट किया।

(६) फ़ लम्माऽ ज़हबूऽ बिही व अज्मऊ़ अय्यज्-अलूहु फ़ी ग़याबतिऽल् जुब्बि, व अउ् ,हय् नाऽ इल-य् हि ल तु नब्बि अन्नहुम् बि अम्रिहिम् हाज़ाऽ व हुम् लाऽ यश्उ़रून् ॥

फिर जब उसको लेकर चले और सहमत हुये कि उसको अन्ध कूप में पटकें; और हमने उनकी ओर प्रेरणा की कि तू उनको उनका यह कार्य बतला देगा और वह न जावेंगे।

[१०] व जाऽऊ़ अबाऽहुम् ,इशाऽअय्यब्कून् ॥

और सायंकाल को वह अपने पिता के पास रुदन करते हुये आये।

[११] क़ाऽलूऽ याऽ अबाऽनाऽ इन्नाऽ ज़हब्नाऽ नस्तबिकु व तरक्ना यूसुफ़ा ,इन्दा मताऽ,इनाऽ फ़ अक-लहु-ज़्ज़िअ्बु, वमाऽ अन्ता बि मुअ्मिनिल्लनाऽ व लउ् कुन्नाऽ सादिक़ीन् ॥

वे कहने लगे—हे हमारे पिता! निस्सन्देह हम परस्पर दौड़ करने लगे और यूसुफ़ को अपने सामान के पास छोड़ दिया और उसको भेड़िया खागया, और तू कभी हमारे कथन का विश्वास न करेगा यद्यपि हम सच्चे हैं।

[१२] व जा२ऊ अ़ला क़मीसिही बिदमिन् कज़िबिन् ; क़ाऽला बल् सव्वलत् लकुम् अन्फ़ुसुकुम् अम्रऽन् ; फ़ सब्रुन् जमीलुन् , वऽल्ला हुऽल् मुस्तआ़ऽनु अ़ला माऽ तसिफ़ून् ॥

और उसके कुर्ते पर झूठा लोहू लगा लाये; (उनके) उस (पिता) ने कहा—कुछ नहीं किन्तु तुम्हारे आत्मा ने तुम्हारे निमित्त एक बात बना दी है; अब सन्तोष ही सत्य है; और मैं अल्लाह से उस बात पर सहायता चाहता हूँ जो तुम बनाते हो।

[१३] व जा२अत् सय्याऽरतुन् फ़ अर्सलूऽ वाऽरिदहुम् फ़ अद्ला दल्वहू , क़ाऽला या बुश्रा हाज़ा गुलामुन् ; व असर्रूहु बि ज़ाऽअ़तन् ; वऽल्लाहु अ़लीमुन् बिमाऽ यअ़्मलून् ॥

और व्योपारियों का एक दल आ पहुंचा फिर अपना पनिहारा भेजा उसने अपना डोल लटकाया; वह कहने लगा— "क्या प्रसन्नता की बात है कि यह एक लड़का है" और उसको धन समझकर छिपा लिया; और अल्लाह भली भांति जानता है कि जो कुछ वह करते हैं।

[१४] व शरउहु बिसमनिन् ँ बख़्सिन् दराऽहिमा मअ़्दूदतिन् , व काऽनूऽ फ़ीहि मिन—ज़्ज़ाहिदीन् ॥

और उसको तुच्छ मूल्य गिनती के कुछ रुपयों के बदले बेच दिया, और उससे दुःखित हो रहे थे

(१) व क़ाऽलऽल्लज़िऽश्तराहु मिम्मिस्रा लिऽम्र अतिहीऽ अक्रिमी म.स्वाहु असाऽ अय्यन्फ़अनाऽ अउ नत्तख़िज़हू वलदऽन्; व कज़ालिका मक्कन्नाऽ लि यूसुफ़ा फ़िऽल् अर्ज़ि व लि नुअल्लिमहू मिन् तअ्वी- लिऽल् अ.हाऽदीसि; वऽल्लाहु ग़ाऽलिबुन् अलाऽ अम्रिही वला किन्ना अक्सर-न्नाऽसि लाऽ तअ्लमून् ॥

और उस मनुष्य ने, जिसने मिस्रवालों से उसे मोल लिया था, अपनी स्त्री से कहा—"इसे प्रतिष्ठा से रखना, कदाचित् यह हमारे काम आवे अथवा हम इस को बेटा बनालें", और इस प्रकार हमने यूसुफ़ को उस देश में इसलिए स्थान दिया कि उसको कुछ घटनाओं की व्याख्या बतादें; अल्लाह अपने कार्य पर विजयी है परन्तु अनेकों मनुष्य नहीं जानते।

(२) व लम्माऽ बलग़ा अशुद्दहूऽ आतय्नाहु हुक्मऽ व्व इल्मऽन्; व कज़ालिका नज् ज़िऽल् मुह्सि- नीन् ॥

और जब वह बल पूर्ण (युवा) अवस्था को पहुंचा तो हमने उसको आज्ञा और ज्ञान दिया और सुकर्मियों को हम ऐसा ही प्रतिफल देते हैं।

(३) व राऽ वदत्हुऽल्लती हुवा फ़ी बय्तिहाऽ

अन्नफ़्सिही व ग़ल्लक़तिऽल् अब्वाऽबा व क़ाऽलत् हीता लका; क़ाऽला मआ़ाऽज़ऽल्लाहि इन्नहू रब्बीऽ अह्सना म,स्वाऽया इन्नहू लाऽ युफ़्लिहु-ज़्ज़ालिमून ॥

और उस स्त्री ने जिसके घर में वह रहता था उससे अपना मन लगाया और द्वार बन्द किये और कहने लगी—शीघ्रता कर; (यूसुफ़ ने) कहा—अल्लाह की शरण वह मेरा प्रिय स्वामी है (उसने) मुझको भली भांति रक्खा है; निश्चय जो लोग अन्यायी हों वह भला नहीं पाते।

(४) व लक़द् हम्मत् बिही व हम्मा बिहाऽ लउ्लाऽ अर्रआ बुर्हाऽना रब्बिही; कज़ालिका लि नस्रिफ़ा अन्हु-स्सूआ वऽल् फ़ह्शाऽआ; इन्नहू मिन् इबाऽऽदिनऽल् मरव्लसीन् ॥

और निश्चय स्त्री ने उसकी चिन्ता की और मन लगा हो चुका था यदि उसने अपने पालनकर्त्ता की युक्ति न देखी होती; ऐसा ही हुआ कि हमने उससे दोष और कुकर्म को पृथक् रक्खा; निस्सन्देह वह हमारे पवित्र भक्तों में से है।

(५) वऽस्तबक़ऽऽल् बाऽबा; व क़द्दत् क़मीसहू दुबुरिं व्व अल्फ़याऽ सय्यिदहाऽ लदऽऽल् बाऽबि; क़ाऽलत् माऽ जज़ाऽउ मन् अराऽदा बि अह्लिका सूऽअन् इल्लाऽ अय्युस्जना अउ् अज़ाऽबुन् अलीम् ॥

और दोनों द्वार को दौड़े और स्त्री ने उसके कुर्ते का पीछे से फाड़ डाला और दोनों स्त्री के पति से द्वार के पास मिल गये; (स्त्री) कहने लगी—ऐसे मनुष्य को जो तेरे घर में कुकर्म (करना) चाहे और कुछ दण्ड नहीं परन्तु यही कि कारागार में पड़े अथवा दुःख का दण्ड झेले।

(६) क़ाऽला हियराऽ वदन्नी अ़न्नफ़्सी व शहिदा शाऽहिदुम्मिन् अह्लिहाऽ, इन् काऽना क़मीसुहू क़ुद्दमिन् क़ुबुलिन् फ़ सदक़त् व हुवा मिनऽल् काज़िबीन् ॥

यूसुफ़ ने कहा—'इसीने मुझसे इच्छा (प्रगट) की कि अपना मन न थामूं और स्त्री की ओर से* एक साक्षी ने साक्षी दी, यदि उसका कुर्ता आगे से फटा है तो स्त्री सच्ची है और वह झूठा है।

(७) व इन् काऽना क़मीसुहू क़ुद्दा मिन्दुबुरिन् फ़ कज़बत् व हुवा मिन—स्सादिक़ीन् ॥

और यदि उसका कुर्ता पीछे से फटा है तो यह झूठी और वह सच्चा है।

(८) फ़ लम्माऽ रआ क़मीसहू क़ुद्दा मिन्दुबुरिन क़ाऽला इन्नहू मिन कय्दिकुन्ना; इन्ना कय्दा कुन्ना अ़ज़ीम् ॥

* एक हदीस में [illegible] यह साक्षी [illegible] स्त्री का ममेरा भाई था,

फिर जब उस (स्त्री के पति) ने उसका कुर्ता पीछे से फटा देखा तो उसने (अपनी पत्नी से) कहा कि यह (तुम स्त्रियों का) एक त्रिया चरित्र है; निस्सन्देह स्त्रियों के चरित्र बड़े (विचित्र) होते हैं।

(९) यूसुफ़ु, अअ्‌रिज़् अन् हाज़ाऽ वऽस्तग़्फ़िरी लि ज़न् ँ् बिकि, इन्नकि कुन्ति मिनऽल् ख़ातिईन् ॥

हे यूसुफ़ ! यह बात जाने दो और स्त्री तू अपना पाप क्षमा कर निश्चय है कि तू ही अपराधिनी थी।

[मं० ३ पारा १२, रु० ४।६]

(१) व क़ाऽला निस्वतुन् फ़िऽल् मदीनतिम्रअतुऽल् अज़ीज़ि तुराऽवि दु फ़ताहाऽ अन्नफ़्सिही, क़द् शग़फ़हाऽ हुब्बऽन ; इन्नाऽ ल नराहाऽ फ़ी ज़लालिम्मुबीन् ॥

और उस नगर में कई स्त्रियां कहने लगीं--अज़ीज़ की स्त्री अपने दास के साथ इच्छा करती है, उसके प्रेम में अपने मन से मोहित होगई, हमतो देखते हैं वह साक्षात् भूल में है।

(२) फ़ लम्माऽ समिअ्त् बिमक्रिहिन्ना अर्सलत् इलय्हिन्ना व अअ्‌तदत् लहुन्ना मुत्तकअव्व आतत् कुल्ला वाऽहिदतिम्मिन्हुन्ना सिक्कीनऽन्व क़ाऽलतिऽख़्रुज् अलय्हिन्ना फ़ लम्माऽ रअय्नहू२ अक्बर्नहू व क़त्तअ्‌ना

अय्‌दियहुन्ना व कुल्ना हाऽशा लिल्लाहि माऽ हाज़ाऽ बशरऽन्, इन् हाज़ा२ इल्लाऽ मुल्कुन् करीम् ॥

जब (अज़ीज़ की) स्त्री ने उनके ताने सुने उनको बुलवा भेजा और उनके निमित्त (विशेष) भोज तय्यार कराया और उनमें से प्रत्येक के हाथ में एक छुरी दी और यूसुफ़ को इनके सम्मुख निकल आने को कहा, फिर जब (उन्होंने) उसको देखा वे आश्चर्य में आ गईं और अपने हाथ काट डाले और कहने लगीं--अल्लाह रक्षा करे यह व्यक्ति मनुष्य नहीं; यह तो कोई महान् फ़रिश्ता (स्वर्गीय दूत) है।

(३) क़ाऽलत् फ़ ज़ालिकुन्नऽल्लज़ी लुम्तुन्ननी फ़ीहि; व लक़द् राऽवत्तुहू अन्नफ़्सिही फ़ऽस्तअ्‌समा; व लइल्लम् यफ़्अल् मा२ आमुरुहू ल युस्जनन्ना व लय-कूनऽ म्मिन-स्सागिरीन् ॥

(अज़ीज़ की) स्त्री बोली—"सो यह वही है कि जिसके वास्ते तुमने मुझको ताना दिया; और मैंने उससे उसको इच्छा की फिर उसने अपने को बचा रक्खा यदि जो मैं कहती हूँ (वह) यह न करेगा तो यह निश्चय बन्दी और अपमानित होगा।

(४) क़ाऽला रब्बि-स्सिज्नु अ़हब्बु इलय्या मिम्माऽ यद्ऊ़ननी२ इलय्हि, व इल्लाऽ तस्रिफ़् अन्नी कय्दहुन्ना अस्बु इलय्हिन्ना व अकुम्मिनऽल् जाहिलीन् ॥

यूसुफ़ कहने लगा—हे पालनकर्त्ता ! मुझको उस बात से जिस ओर यह बुलाती हैं—कैद भली लगती है, और यदि तू मुझसे उनके छल को दूर न कर देगा तो मैं उनकी ओर जाऊंगा और मूर्खों में हो जाऊंगा।

(५) फ़ऽस्तजाऽबा लहू रब्बुहू फ़ सरफ़ा अन्हु कय्दहुन्ना; इन्नहू हुव-स्समीउ़ऽल् अ़लीम् ॥

अतः उसके पालनकर्त्ता ने उसकी प्रार्थना स्वीकार करली फिर उससे उनका छल हटाया; निश्चय वह सुनने वाला और ज्ञानवान है।

(६) .सुम्मा बदाऽलहुम्मिन् ँ बअ़्दि माऽर अवुऽऽल् आयाति लयस्जुनन्नहू .हत्ताह.ीन् ॥

फिर इन चिह्नों के देखने पर उन्हें यह उचित ज्ञात हुआ कि उसे एक समय तक बन्दी रक्खें।

[मँजिल ३ पारा १२ रु० ५।७]

(१) व दख़ला मअ़हु-स्सिज्ना फ़ तयानि; क़ाऽला अ.हदुहुमाऽ इन्नीऽ अरानीऽ अअ़्सिरु ख़म्रऽन्, व क़ाऽलऽल् आख़रु इन्नीऽ अरानी अह़्मिलु फ़उक़ा रअ़्सी ख़ुब्ज़ऽन् तअ़्कुलु तय्रु मिन्हु ; नब्बिअ़्नाऽ बि तअ़्वीलिही, इन्ना नराका मिनऽल् मुह़्सिनीन् ॥

और कारागार में उसके पास दो तरुण प्रवेश किये गये: उनमें से एक ने कहा कि मैं देखता हूं कि मैं मद्य निचोड़ता हूँ, और दूसरे ने कहा कि मैं देखता हूँ कि मैं अपने सिर पर रोटी उठाये हुये हूँ कि पक्षी उसमें चुगते हैं हमको उसका अभिप्राय बतला, हम तुझे भला मानुस पाते हैं।

(२) क़ाऽला लाऽ यअ्तीकुमाऽ तआऽमुन् तुर्ज़क़ानिहीऽ इल्लाऽ नब्बअ्तुकुमाऽ बितअ्वीलिही क़ब्ला अय्यअ्तियकुमाऽ, ज़ालिकुमाऽ मिम्माऽ अल्लमनी रब्बी: इन्नी तरक्तु मिल्लता क़उमिल्लाऽ युअ्मिनूना बिऽल्लाहि व हुम् बिऽल् आख़िरति हुम् काफ़िरून्॥

(यूसुफ़) कहने लगा—जो भोजन तुमको प्रति दिन प्राप्त होता है वह तुम्हारे पास न आने पावेगा और मैं तुमको उसका अर्थ, इससे पूर्व कि वह तुम्हारे पास आवे, बतलाऊंगा; यह ज्ञान है जो कि मुझको मेरे पालनकर्त्ता ने सिखाया है; मैंने उस जाति के मत का परित्याग किया कि जो अल्लाह पर विश्वास नहीं रखती और वह अन्तिम दिवस को करती है।

(३) वऽत्तबअ्तु मिल्लता आबाऽईऽ इब्राहीमा व इस्हाक़ा व यअ्क़ूबा; माऽ काऽना लनाऽ अन्नुश्रिका बिऽल्लाहि मिन् शयइन्, ज़ालिका मिन् फ़ज़्लिऽल्लाहि अलयना व अलन्नाऽसि वलाकिन्ना अक्सरन्नाऽसि लाऽ यश्कुरून्॥

और मैंने अपने पिता-प्रपितामहादि इब्राहीम और इस्हाक़ और याकूब का मत ग्रहण किया; हमारा यह कर्य नहीं कि किसी वस्तु को अल्लाह का साझी (शरीक) करें; यह अल्लाह का हम पर और सब मनुष्यों पर अनुग्रह है परन्तु अनेकों पुरुष कृतज्ञ नहीं।

(४) या साऽहिबयि-स्सिज्नि अअर्बाऽबुम्मुतफ़रिक़ूना ख़यरुन अमिऽल्लाहुऽल् वाऽहिदुऽल् क़ह्हाऽर् ॥

हे बन्दीगृह के मित्रो ! भला, कई पृथक् पृथक् उपास्यदेव उत्तम हैं अथवा अकेला बली अल्लाह ?

(५) माऽ तअ़बुदूना मिन्दूनिही३ इल्ला३ अस्मा३अन् सम्मयतुमूहा३ अन्तुम् व आबा३उकुम्मा३ अन्ज़लऽल्लाहु बिहाऽ मिन् सुल्ज़ानिन; इनिऽल् हुक्मु इल्लाऽ लिल्लाहि; अमरा अल्लाऽ तअ़बुदू३ इल्ला३ इय्याऽहु; ज़ालिक-द्दीनुऽल् क़य्यिमु वला किन्ना अक्सर-न्नाऽसि लाऽ यअ़लमून् ॥

उसके सिवाय तुम कुछ नहीं पूजते परन्तु नाम हैं जो कि तुमने और तुम्हारे पिता प्रपितामहों ने रख लिये हैं उनके लिए अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा; अल्लाह के अतिरिक्त (अन्य) किसी का शासन नहीं है; उसने आज्ञा दी है कि उसके अतिरिक्त अन्य किसी को न पूजो; यही सन्मार्ग है परन्तु अनेकों लोग नहीं जानते हैं।

(६) या साहिबयि-स्सिज्नि अम्मा२ अ.हदुकुमा फ़ यस्क़ी रब्बहू ख़म्र्ऽन्, व अम्मऽऽल् आख़रु फ़ युस्लबु फ़ तअ्कुलु-त्तय्रु मिर्रअ्सिही; क़ुज़ियऽल् अम्रुऽल्लज़ी फ़ीहि तस्तफ़्तियान् ॥

हे मेरे बन्दीगृह के दोनों साथियो! तुममें से एक तो अपने स्वामी को मदिरा पिलायगा और दूसरा कूश पर चढ़ाया जायगा फिर उसके सिर में से पक्षी खालेंगे; जिस काम का तुम चाहते थे निर्णय हो चुका।

(७) व क़ाऽला लिल्लज़ी ज़न्ना अन्नहू नाऽजिम्मिन्हुमऽऽज़्कुर्नी .इन्दा रब्बिका, फ़ अन्साहु-श्शय्तानु ज़िक्रा रब्बिही फ़ लबिसा फ़ि-स्सिज्नि बज़्आ सिनीन् ॥

और जिस मनुष्य के विषय में यूसुफ़ ने समझाया था कि इन दोनों में से इसकी मुक्ति हो जायगी उससे कहा कि अपने स्वामी के पास मेरा भी वर्णन करना, फिर शैतान ने उसको अपने स्वामी से इसका वर्णन करना भुला दिया तो (यूसुफ़) कई वर्ष कारागार में रहे।

[मंजिल ३ पारा १२, रू० ६।७]

(१) व क़ाऽलऽल् मलिकु इन्नी२ अरा सब्.आ ब क़रातिन् सिमाऽनिंय्यअ्कुलुहुन्ना सब्.उन् .इजाऽफ़ुन्व

सब्ग्रा सुन्ँ ुलातिन् खुज़्रिं व्व उख़रा या बिसातिन्, या३ अय्युहऽऽल् मलउ अफ़्तूनी फ़ी रुअ्. याऽया इन्कुन्तुम् लिर्रुअ्याऽ तअ्बुरून् ॥

और बादशाह ने कहा—मैं स्वप्न (में) सात मोटी गायें देखता हूं जो कि सात दुर्बलों को खाती हैं और सात बालें हरी हैं और दूसरी सूखी हैं; हे दरबारियो! मुझे मेरे स्वप्न का आशय बताओ यदि तुम स्वप्न का आशय बताने वाले हो।

(२) क़ाऽलू३ अज़्ग़ाऽसु अह्लाऽमिन्, वमाऽ नह्नु बि तअ्वीलिऽल् अह्लाऽमि बि आलिमीन् ॥

(वह) बोले—यह विचित्र स्वप्न है और हमको ऐसे स्वप्नों का आशय ज्ञात नहीं।

(३) व क़ाऽलऽल्लज़ी नजाऽमिन्हुमाऽ वऽद्दकरा बअ्दा उम्मतिन् अना उनब्बिउकुम् बि तअ्वीलिही फ़ अर्सिलून् ॥

और जो उन दो में से बचा हुआ था कहने लगा—और चिरकाल के पश्चात् स्मरण किया मैं तुमको आशय बताऊं फिर तुम मुझको भेजो।

(४) यूसुफ़ु, अय्युह-स्सिद्दीक़ु अफ़्तिनाऽ फ़ी सब्इ. बक़रातिन् सिमाऽनिय्यअ्कुलुहुन्ना सब्उन् ,इज़ाऽ,फ़ुव्व

सब्इ. सुन्ँ ् बुलातिन् खुज़्रिंव्व उख़रा या बिसाति ल्ल
अल्ली२ अजिउ इल–न्नाऽसि लअल्लहुम् यअ्लमून् ॥

हे सत्यवादी यूसुफ! हमें सात मोटी गायों के सात दुबली गायों के खा लेने के विषय में और सात हरी बालों और सात सूखी बालों के विषय में, जिससे मैं लोगों के निकट लाऊं जिससे कि वह जान लें।

(५) क़ाऽला तज़्रऊना सब्अ़ासिनीना दअबऽन् फ़माऽ हसत्तुम् फ़ ज़रूहु फ़ी सुन्ँ ् बुलिही२ इल्लाऽ क़लीलऽ म्मिम्माऽ तअ्कुलून् ॥

कहा—तुम सात वर्ष लगातार खेती करो फिर थोड़े से के अतिरिक्त जो तुम खाओ (शेष) जो काटो उसको उसकी बालों में मोड़ दो।

(६) सुम्मा यअ्ती मिन्ँ ् बअ्दि ज़ालिका सब्उन् शिदाऽदुय्यअ्कुल्ना माऽ क़द्दम्तुम् लहुन्ना इल्लाऽ क़लीलऽम्मिम्मा तुह्सिनून् ॥

फिर सात वर्ष कठिन (काल के) आवेंगे कि जो तुमने पहले से इनके लिए एकत्रित किया होगा उसमें से थोड़े से छोड़कर–जो तुम बचा रक्खोगे वह सबको खा जायंगे।

(७) सुम्मा यअ्ती मिन्ँ ् बअ्दि ज़ालिका आऽमुन् फ़ीहि युग़ाऽसु–न्नाऽसु व फ़ीहि यअ्सिरून् ॥

फिर उसके पीछे एक वर्ष आवेगा कि उसमें इन लोगों के लिए मेह बरसेगा और उसमें रस निचोड़ेंगे।

[मं० ३, पारा १२, रु० ७।१५]

(१) व क़ाऽलऽल् मलिकुऽअ्तूनी बिही, फ़लम्माऽ जा३अहु-र्रसूलु क़ाऽलऽजिअ् इला रब्बिका फ़स्अल्हु माऽ बाऽलु-न्निस्वति-ल्लाती क़त्तअ्ना अय्दिया हुन्ना; इन्ना रब्बी बि कय्दिहिन्ना अ़लीम् ॥

और बादशाह ने कहा—उसे मेरे पास ले आओ, फिर जब उसके पास भेजा हुआ मनुष्य पहुँचा तो उसने कहा कि अपने स्वामी के निकट फिर जा और उनसे पूछ कि उन स्त्रियों की क्या वास्तविकता है जिन्होंने अपने हाथ काटे; मेरा पालनकर्त्ता तो उनका सब कपट जानता है।

(२) क़ाऽला माऽ ख़त्बुकुन्ना इज़् राऽवत्तुन्ना यूसुफ़ा अ़न्नफ़्सिही; क़ुल्ना ह़ाऽशा लिल्लाहि माऽ अ़लिम्नाऽ अ़लय्हि मिन् सू३इन्; क़ाऽलतिऽम्राअतुऽल् अ़ज़ीज़िऽल् आना ह़स्ह़सऽल् ह़क़्क़ु अनाऽ राऽवत्तुहू अ़न्नफ़्सिही व इन्नहू ल मिन-स्साऽदिक़ीन् ॥

बादशाह ने स्त्रियों से कहा—तुम्हारा क्या प्रयोजन था कि तुमने यूसुफ़ के साथ की इच्छा की; वह कहने लगीं—

अल्लाह साक्षी है हमने उसमें कोई बुराई नहीं जानी और अज़ीज़ की स्त्री बोली—अब सत्य बात खुल गई मैंने उसके काम की इच्छा की निस्सन्देह वह सत्य बोलने वालों में है।

(३) ज़ालिका लि यअ्लमा अन्नी लम् अख़ुन्हु बिऽल् ग़य् बि व अन्नऽल्लाहा लाऽ यह्दी कय्दऽल् ख़ाऽइनीन् ॥

यह इस निमित्त था कि वह जानले कि मैंने उसकी अनुपस्थिति में उसकी चोरी नहीं की और यह कि अल्लाह चोरी करने वालों के छल को नहीं चलने देता।

पारा (१३) वमाऽ उबर्रिउ नफ़्सी

(४) वमाऽ उबर्रिउ नफ़्सी, इन्न-न्नफ़्सा ल अ-म्माऽरतुन् बि-स्सूइ इल्लाऽ माऽ रहिमा रब्बी; इन्ना रब्बी ग़फ़ूरुर्रहीम् ॥

और मैं अपने आपको उससे मुक्त निश्चित नहीं करता. मन तो बुराई ही सिखाता है परन्तु यदि मेरे पालनकर्त्ता ने दया की; निस्सन्देह मेरा पालनकर्ता क्षमा करने वाला दयालु है।

(५) व क़ाऽलऽल् मलिकुऽ अ्तूनी बिहीऽ अस्त-ख़्लिसहु लिनफ़्सी, फ़ लम्माऽ कल्लमहू क़ाऽला इन्नकऽल् यउमा ल दय्नाऽ मकीनुन् अमीन् ॥

और बादशाह ने कहा—उसको मेरे पास ले आओ मैं उसे विशेषकर अपने काम में रक्खूं, 'फिर जब उससे वार्तालाप किया तो कहा—वास्तव में तूने विश्वस्त होकर आज हमारे पास स्थान प्राप्त किया है।

(६) क़ाऽलऽज् अ्अलनी अ़ला ख़ज़ाऽइनिऽल् अर्ज़ि, इन्नी हफ़ीज़ुन् अ़लीम् ॥

यूसुफ़ ने कहा—मुझे देश के कोषों पर नियत कर, मैं चतुर चौकीदार हूँ।

(७) व कज़ालिका मक्कन्नाऽ लि यूसुफ़ा फ़िऽल् अर्ज़ि, यतबव्वउ मिन्हाऽ ,हय् सु यशाऽउ, नुसीबु बि,ह्मतिना मन्नशाऽउ वलाऽ तुज़ीउ अज्ऽल् मुह् सिनीन् ॥

और इस प्रकार हमने यूसुफ़ को उस देश में सामर्थ्य प्रदान की, उसमें जहां चाहे स्थान ग्रहण करें; हम अपना अनुग्रह जिस पर चाहते हैं, पहुंचाते हैं और हम उपकार करने वालों का परिणाम नष्ट नहीं करते।

(८) व ल अजुऽल् आख़िरति ख़य् रुल्लिल्लज़ीना आमनूऽ व काऽनूऽ यत्तकून् ॥

और अन्तिम दिवस का परिणाम उन लोगों के लिये उत्तम है जिन्होंने विश्वास किया और जो संयम में रहे।

[मं० ३, पारा १३, रु० ८।१३]

(१) व जाऽआ इख़्वतु यूसुफ़ा फ़ दख़लूऽ अलय् हि फ़ अरफ़हुम् वहुम् लहू मुन्किरून् ॥

और यूसुफ़ के भाई आये फिर उसके पास प्रविष्ठ हुये तो उसने उनको पहिचाना और वह नहीं पहिचानते थे।

(२) व लम्माऽ जह्हज़ह् हुम् बिजहाऽज़िहिम् क़ाऽलऽअ्तूनी बिअख़िल्लकुम्मिन् अबीकुम्, अलाऽ

तरउना अन्नीऽ ऊफ़िऽल्‌ कय्‌ला व अनाऽ ख़य्‌रुऽल्‌ मुन्ज़िलीन्‌ ॥

और जब उनके निमित्त उनकी सामग्री तय्यार करदी गई तो कहा—मेरे पास एक भाई, जो तुम्हारे पिता की ओर से है, आओ, तुम नहीं देखते कि पूरी तौल देता हूँ और सबसे अच्छा अतिथि सत्कार करने वाला हूं।

(३) फ़ इल्लम्‌ तअ्‌तूनी बिही फ़लाऽ कय्‌ला लकुम्‌ ,इन्दी वलाऽ तक़्‌रबून्‌ ॥

फिर यदि उसको मेरे पास न लाये तो तुमको मेरे पास नाप नहीं और न मेरे पास आओ।

(४) क़ाऽलूऽ सनुराऽविदु अन्हु अबाऽहु व इन्नाऽ ल फ़ाऽइ,लून्‌ ॥

उन्होंने कहा कि हम उनके निमित्त अपने पिता को फुसलायँगे और हमें यह अवश्य करना है।

(५) व क़ाऽला लिफ़ित्यानिहिऽज्‌ अलूऽ बिज़ाऽ अतहुम्‌ फ़ी रि,हाऽलि हिम्‌ लअ़ल्लहुम्‌ यअ्‌रिफ़ूनहाऽ इज़ऽऽन्क़लबूऽ इलाऽ अह्लिहिम्‌ लअ़ल्लहुम्‌ यर्जिऊन्‌ ॥

और अपने सेवकों को कह-दिया उनकी सामग्री उनके बोरों में रखदो कदाचित्‌ जब अपने घरको पुनः लौटें तो इसको पहिचान लें कदाचित्‌ वह पुनः आवें।

(६) फ़ लम्माऽ रजऊ़२ इला२ अबीहिम् क़ाऽलूऽ या२ अबाऽनाऽ मुनिआ़ मिन्नऽऽल् कय्लु फ़ अर्सिल् मअ़ना२ अख़ाऽना नक्तल् व इन्नाऽ लहू ल .हाफ़िज़ून् ॥

फिर जब वह अपने पिता के निकट आये वह बोले—' हे पिता ! हमसे माप बन्द हुई अतः हमारे भाई को हमारे साथ भेज कि माप ले आवें निस्सन्देह उसके रक्षक हैं ।

(७) क़ाऽला हल् आमनुकुम् .अलय्हि इल्लाऽ कमा२ आमिन्तुकुम् अ़ला२ अख़ीहि मिन् क़ब्लु; फ़ऽल्लाहु ख़य्रु .हाऽफ़िज़ऽन् व हुवा अ.र्हमु-र्रा.हिमीन् ॥

इस पर उसने कहा कि मैं तुम्हारा उस पर विश्वास करूं परन्तु पहले इसके भाई के विषय में विश्वास किया था, अतः अल्लाह श्रेष्ठ रक्षक है और सब दयालुओं में श्रेष्ठ दयालु है ।

(८) व लम्माऽ फ़तहू. मताऽअ़हुम् वजदूऽ बिज़ाऽअ़तहुम् रुद्दत् इलय्हिम् ; क़ाऽलूऽ या२ अबाऽनाऽ माऽ नब्ग़ी; हाज़िही बिज़ाऽअ़तुनाऽ रुद्दत् इलय्नाऽ, व नमीरु अह्लनाऽ व नह्फ़ज़ु अख़ाऽनाऽ व नज़्दाऽदु कय्ला बई.रिन् ; ज़ालिका कय्लुय्यसीर् ॥

और जब अपनी वस्तु खोली तो देखा कि अपनी सामग्री उनको फेर दी गई, वह बोले—हे पिता ! और हमें क्या चाहिये

हमारी पूंजी तो हमें फेर दी गई अपने निमित्त अन्न लावेंगे और अपने भाई की रक्षा करेंगे और एक ऊंट की नाप अधिक लेवें, वह नाप आसान है।

(६) क़ाऽला लन् उर्सिलहू मअकुम् .हत्ता तुअ्तूनि मउ्सिक़ऽम्मिनऽल्लाहि लतअ्तुन्ननी बिही३ इल्ला३ अय्यु-.हाऽता बिकुम् , फ़ लम्मा३ आतउ्हू मउ्सिक़हुम् क़ाऽलऽ-ल्लाहु अ़ला माऽ नक़ूलु वकील् ॥

कहने लगा—मैं उसको कदापि तुम्हारे साथ न भेजूंगा जब तक कि मुझे अल्लाह की शपथ लेकर यह प्रतिज्ञा न करोगे कि तुम इसको मेरे पास फिर लाकर उपस्थित करोगे परन्तु यह कि तुम आपही घर जाओ (तो विवशता है), फिर जब उन्होंने पिता को अपनी प्रतिज्ञा दे दी तो पिता ने कहा कि यह प्रतिज्ञा जो हम परस्पर कर रहे हैं, अल्लाह उसका वकील है।

(१०) व क़ाऽला या बनिय्या लाऽ तद्ख़ुलूऽ मिन् बाऽबि व्वाऽ.हिदि व्वऽद्ख़ुलूऽ मिन् अब् वाऽबिम्मुत फ़र्रिक़तिन्; व मा३ उग़्नी अ़न्कुम्मिनऽल्लाहि मिन शय्इन्; इनिऽल् .हुक्मु इल्लाऽ लिल्लाहि; अ़लय्हि तव-क्कल्तु, व अ़लय्हि फ़ल् यतवक्कलिऽल् मुतवक्किलून् ॥

और कहा—हे पुत्रो ! एक द्वार से प्रविष्ठ न होना किन्तु

पृथक् पृथक् द्वारों से प्रविष्ठ होना; और मैं अल्लाह की आज्ञा को तुम पर से तनिक भी नहीं हटा सकता; आज्ञा तो केवल अल्लाह ही की है: मैंने उसी पर विश्वास कर लिया है, और विश्वास करने वालों को उचित है कि उसी पर विश्वास करें।

(११) व लम्माऽ दख़लूऽ मिन् ,हयसु अमर हुम् अबूहुम्; माऽ काऽना युग़्नी अन्हुम्मिनऽल्लाहि मिन् शय्इन् इल्लाऽ हाऽजतन् फ़ी नफ़्सि 'यअ़्कूबा क़ज़ाहाऽ; व इन्नहू लज़ू ,इल्मिल्लिमाऽ अ़ल्लम्नाहु वला किन्ना अक्सर-न्नाऽसि लाऽ यअ़्लमून् ॥

और जब यह लोग (उसी प्रकार) जैसे इनके पिता ने इनसे कह दिया था (मिस्र में) प्रविष्ठ हुये तो उनको कुछ अल्लाह की किसी वस्तु से न बचा सकता था परन्तु याकूब के हृदय में एक इच्छा थी सो (पूरी) कर चुका; और वह तो हमारे सिखाने से ज्ञानवान् हुआ परन्तु अनेकों मनुष्यों को ज्ञान नहीं होता।

[मंजिल ३ पा० १३ रु० ६।१४]

(१) व लम्माऽ दख़लूऽ अ़ला यूसुफ़ा आवा इल-यहि अख़ाऽहु क़ाऽला इन्नी अनाऽ अख़ूका फ़लाऽ तब्तइस् बिमाऽ काऽनूऽ यअ़्मलून् ॥

और जब (यह लोग दुबारा) यूसुफ़ के पास गये तो

यूसुफ़ ने अपने भाई को अपने पास बिठा लिया (और धीरे से उससे) कहा कि मैं तुम्हारा भाई हूँ सो उन कामों से जो वे करते रहे हों – तू दुःखित मत हो।

(२) फ़ लम्मा जह् हज़हुम् बि जिहाऽज़िहिम् ज-अ़ल–स्सिक़ाऽयता फ़ी रह् लि अख़ीहि सुम्मा अज़्ज़ना मुअज़्ज़िनुन् अय्यतुहऽऽल् ईरु इन्नकुम् ल साऽरिक़ून् ॥

फिर जब उनको उनकी सामग्री तय्यार करदी, अपने भाई के बोझ में पीने का बासन रख दिया फिर पुकारने वाले ने पुकारा—"हे व्योपारियो ! तुम निश्चय चोर हो।"

(३) क़ाऽलूऽ वअऽक़बलूऽ अ़लय्हिम्माऽज़ाऽ तफ़्क़ि-दून् ॥

यह पुकारने वालों की ओर मुंह करके पूछने लगे "तुम्हारी क्या वस्तु खो गई ?"

(४) क़ाऽलूऽ नफ़्क़िदु सुवाऽअऽल् मलिकि व लि मन् जाऽअ बिही हिम्लु बई रिव्व अनाऽबिहीज़ ईम् ॥

उन्होंने कहा—शाही माप (पैमाना*) हमको नहीं मिलता और जो कोई उसे लावे उसे एक बोझ ऊंट का मिले और मैं उसका प्रतिभू हूँ।

* ह० यूसुफ जिस कटोरे में पानी पीते थे उसको अनाज नापने का पैमाना बना लिया था कि अकाल पीड़ितों को सन्मान के साथ अन्न दिया जाय और यूसुफ़ अन्न के बांटने का काम राज की ओर से करते थे इस लिए। उस पैमाने का नाम "सवाऽअऽल् मलिक" शाही पैमाना—कहलाता था

(५) क़ाऽलूऽ तऽल्लाहि लक़द् अ़लिम्तुम्माऽ जिअ्नाऽ लि नुफ़्सिदा फ़िऽल् अर्ज़ि वमाऽ कुन्ना साऽरिक़ीन् ॥

कहने लगे—अल्लाह की शपथ, तुमको ज्ञात है कि हम देश में उपद्रव करने नहीं आये और न हम कभी चोर थे।

(६) क़ाऽलूऽ फ़माऽ जज़ाउहू इन्कुन्तुम् काज़िबीन् ॥

कहने लगे-यदि तुम झूठे हो तो फिर उसका दण्ड क्या है।

(७) क़ाऽलूऽ जज़ाउहू मन्वुजिदा फ़ी रह्लिही फ़ हुवा जज़ाउहू; कज़ालिका नज्ज़ि-ज़्ज़ालिमीन् ॥

कहने लगे—जिसके बोझ में वह मिले वही उसके बदले में जावे; हम अपराधियों को यही दण्ड देते हैं।

(८) फ़ बदअबि अउ्इयतिहिम् क़ब्ला वि आइ अख़ीहि सुम्मऽस्तख़्रजहाऽ मि न्विआइ अख़ीहि; कज़ालिका किद्नाऽ लि यूसुफ़ा, माऽ काऽना लि यअ्ख़ुज़ा अख़ाऽहु फ़ी दीनिऽल् मलिकि इल्ला अय्यशाअऽल्लाहु; नफ़्उ दरजातिम्मन्नशाउ; व फ़ौक़ा कुल्लि ज़ी इ़ल्मिन् अ़लीम् ॥

फिर यूसुफ़ ने पहले अपने भाई की खुर्जी से उनकी खुर्जियां खोजना आरम्भ किया फिर वह पात्र अपने भाई को

खुर्जी से निकाला; हमने इस प्रकार यूसुफ़ को षड्यन्त्र बता दिया; अन्यथा अपने भाई को उस राजा के न्याय में कदापि नहीं पकड़ सकता था परन्तु जो अल्लाह चाहे (सो होता है); हम जिसको चाहें पद ऊंचा करते हैं, और प्रत्येक ज्ञानवान् से ऊपर एक ज्ञानवान् है।

(९) क़ाऽलूऽ इंय्यस्रिक़् फ़क़द् सरक़ा अखुल्लहू मिन् क़ब्लु, फ़ असर्रहाऽ यूसुफ़ु फ़ी नफ़्सिही वलम् युब्दिहाऽ लहुम् , क़ाऽला अन्तुम् शर्रुम्मकाऽनऽन् , वऽल्लाहु अअ्लमु बिमाऽ तसिफ़ून् ॥

कहने लगे—यदि उसने चुराया तो उसके एक भाई ने भी पहले चोरी की है, तब यूसुफ ने अपने मन में धीरे से कहा और उन्हें न बताया, कहा—तुम पदवी में और निकृष्ट हो, और जो तुम बनाते हो (उसे) अल्लाह भली भांति जानता है।

(१०) क़ाऽलूऽ याऽ अय्युहऽऽल् अज़ीज़ु इन्ना लहूऽ अबऽन् शय्खऽन् कबीरऽन् फ़ ख़ुज़् अ हदनाऽ मकाऽ-नहू, इन्नाऽ नराका मिनऽल् मुह्सिनीन् ॥

वह बोले—हे अज़ीज़ ! इसका वृद्ध और दीर्घायु एक पिता है अतः उसके स्थान पर एक हममें से रखले; हम देखते हैं कि तू उपकार करने वाला है।

(११) क़ाऽला मआ़ऽज़ऽल्लाहि अन्न अखुज़ा इल्लाऽ मव्वजद्नाऽ मताऽअना इन्दहूऽ इन्नाऽ इज़ऽल्ल ज़ालिमून्।

कहने लगा—अल्लाह शरण में रक्खे यदि हम (उसके) अतिरिक्त कि जिसके पास अपनी वस्तु पाई अन्य किसी को पकड़ें फिर तो हम अन्यायी हुये।

[मंजिल ३ पारा १३ रु० ६।१४]

(१) फ़लम्मऽस्तऽ यअसूऽ मिन्हु ख़लसूऽ नजियऽन् क़ाऽला कबीरु हुम् अलम् तअ्लमूऽ अन्ना अबाऽकुम् क़द् अख़ज़ा अलय् कुम्मउ्सिक़ऽम्मिनऽल्लाहि व मिन् क़ब्लु माऽ फ़र्रत्तुम् फ़ी यूसुफ़ा फ़ लन् अब्र.हऽल् अर्ज़ा .हत्ता यअज़ना ली३ अबी३ अउ् यह्.कुमऽल्लाहु ली, व हुवा ख़य्रुऽल् .हाकिमीन् ॥

फिर जब उससे निराश हो गये तो एकान्त में परामर्श के लिये बैठे; इनमें से बड़ा बोला—तुम नहीं जानते कि तुम्हारे पिता ने तुमसे अल्लाह की प्रतिज्ञा ली है और यूसुफ़ के सम्बन्ध में पहले जो अपराध कर चुके हो; अतः जब तक मेरा पिता मुझे आज्ञा न दें अथवा अल्लाह मेरा विवाद चुकादे मैं इस देश से न हटूंगा और वह अल्लाह सबसे महान् शासक है।

(२) इर्जिऊ३ इला३ अबीकुम् फ़क़ूलू या३ अबाऽना३ इन्नऽब्नका सरक़ा, वमाऽ शहिद्ना३ इल्लाऽ बिमाऽ अलिम्नाऽ व माऽ कुन्नाऽ लिल् ग़य्बि .हाफ़िज़ीन् ॥

फिर अपने पिता के पास जाओ और कहो—"हे मेरे पिता ! पुत्र ने चोरी की, और हमने वही कहा था जो हमें ज्ञान था और हमको परोक्ष की बात का स्मरण नहीं था।"

(३) वस् अलिऽल् क़र्यतऽल्लती कुन्नाऽ फ़ीहाऽ वऽल् ईरऽल्लती२ अक़्बल्नाऽ फ़ीहाऽ, व इन्नाऽ ल सादिकून्

और उस नगर में जिसमें हम थे और उस व्योपारियों के समुदाय में, जिसमें हम आये हैं पूछले; और हम निस्सन्देह सत्य कहते हैं।

(४) क़ाऽला बल् सव्वलत् लकुम् अन्फ़ुसुकुम् अम्रऽन्; फ़ सब्रुन् जमीलुन्, असऽल्लाहु अय्यअ्तियनी बिहिम् जमीअऽन्; इन्नहू हुवऽल् अलीमुऽल् हकीम् ॥

कहने लगा—"कुछ नहीं किन्तु तुम्हारे हृदय ने एक बात बनाली है; अब सन्तोष ही ठीक है; कदाचित् अल्लाह मेरे पास उन सबको ले आवे; वही ज्ञाता और बुद्धिमान् है।

(५) व तवल्ला अन्हुम् व क़ाऽला या२ असफ़ा अ़ला यूसुफ़ा वऽब्यज़्ज़त् अय्नाहु मिनऽल् हुज़्नि फ़हुवा कज़ीम् ॥

और उनसे मुंह मोड़ लिया और बोला—शोक यूसुफ़ पर!

और उसकी आंखें शोक से श्वेत होगईं अतः वह आपको घोंट रहा था।

(६) क़ाऽलूऽ तऽल्लाहि तफ़्तउऽ तज़्कुरु यूसुफ़ा .हत्ता तकूना .हरज़ऽन् अउ् तकूना मिनऽल् हाऽ लिकीन् ॥

कहने लगे—अल्लाह की शपथ, तू यूसुफ़ का स्मरण उस समय तक न छोड़ेगा जब तक कि गल जावे अथवा मर जावे।

(७) क़ाऽला इन्नमा३ अश्कूऽ ब.स्सी व .हुज़्नी३ इलऽल्लाहि व अअ्लमु मिनऽल्लाहि माऽलाऽ तअ्ल-मून् ॥

कहने लगा—मैं तो अपना समाचार और शोक अल्लाह की ओर से (वह) जानता हूं जो तुम नहीं जानते।

(८) या बनिय्यऽज़्हबूऽ फ़तह.स्सवूऽ मि य्यूसुफ़ा व अख़ीहि वलाऽताऽ यअसूऽ मिर्रू.हिऽल्लाहि; इन्नहू लाऽ याऽयअसु मिर्रू.हिऽल्लाहि इल्लऽल् क़उ्मुऽल् काफ़िरून् ॥

हे पुत्रो! जाओ और यूसुफ़ और उसके भाई की खोज करो और अल्लाह के अनुग्रह से सिवाय उसके—जो अवि-श्वासी है—कोई निराश नहीं।

(६) फ़ लम्माऽ दख़लूऽ अ़लय्हि क़ाऽलूऽ या३ अय्युहऽऽल् अज़ीज़ु.मस्सनाऽ व अह्लनऽ—ज़्ज़ुर्रु व जिअ्नाऽ बि बिज़ाऽअतिम्मुज़्जातिन् फ़ अउ्फ़ि लनऽऽल् कय्ला

व तसद्दक़् अ़लय्ना; इन्नऽल्लाहा यज़्ज़िऽल् मुतसद्दि-क़ीन् ॥

फिर जब उसके समीप प्रविष्ट हुये तो कहने लगे—"हे अ़ज़ीज़ ! हम पर और तुम्हारे घर पर कठोरता पड़ी है और हम थोथी पूंजी लाये अतः हमको पूरी तौल दे और हम पर दान कर; निस्सन्देह अल्लाह दान देने वालों को शुभ परिणाम देता है।

(१०) क़ाऽला हल् अ़लिम्तुम्माऽ फ़अ़ल्तुम् बि यूसुफ़ा व अख़ीहि इज़् अन्तुम् जाऽहिलून् ॥

पूछा—"कुछ पता रखते हो कि जब तुमको समझ न थी (तब) तुमने यूसुफ़ और उसके भाई से क्या किया ?"

(११) क़ाऽलूऽअ इन्नका ल अन्ता यूसुफ़ु; क़ाऽला अनाऽ यूसुफ़ु व हाज़ाऽ अख़ी क़द् मन्नऽल्लाहु अ़लय्नाऽ; इन्नहू मय्यत्तक़ि व यस्बिर् फ़ इन्नऽल्लाहा लाऽ युज़ीउ, अज्रऽल् मुह्सिनीन् ॥

कहने लगे—क्या तू ही वास्तव में यूसुफ़ है; कहा—मैं यूसुफ़ हूँ और यह मेरा भाई है; अल्लाह ने हम पर अनुग्रह की: निश्चय जो भाई संयमी हो और स्थिर रहे तो अल्लाह शुभ कर्म करने वालों का अधिकार नष्ट नहीं होने देता।

(१२) क़ाऽलूऽ तऽल्लाहि लक़द् आसरकल्लाहुऽ अ़लय्ना व इन् कुन्नाऽ ल ख़ातिईन् ॥

कहने लगे—अल्लाह की शपथ, निश्चय तुमको अल्लाह ने इससे अधिक प्रिय रक्खा; और हम चूकने वाले थे।

(१३) क़ाऽला लाऽ तस्त्रीबा अलयकुमुऽल् यउ मा: यग़्फ़िरुऽल्लाहु लकुम् ; व हुवा अर्ह. मु-र्राहिमीन् ॥

कहने लगा—तुम पर आज कुछ आक्षेप नहीं; और अल्लाह तुम्हें क्षमा करे और वह सब दयालुओं में (अधिक) दयालु है।

(१४) इज़् हबूऽ बि क़मीसी हाज़ा फ़ अल्क़ूहु अला बज्हि अबी यअ्ति बसीरऽन् ; वअ्तूनी बि अह्लि-कुम् अज्मईन् ॥

मेरा यह कुर्ता ले जाओ और इसे मेरे पिता के मुंह पर डालो ताकि आंखों से देखता हुआ चला आवे; और मेरे पास अपना समस्त घर ले आओ।

[मं० ३ पारा १३ रुकूअ ११।११]

(१) व लम्माऽ फ़सलतिऽल् ईरु क़ाऽला अबूहुम् इन्नी ल अजिदु री.हा यूसुफ़ा लउला अन्तुफ़न्निदून् ॥

और जब व्यौपारियों का दल पृथक् हुआ उनके पिता ने कहा—मुझे यूसुफ़ की गन्ध आती है यदि यह न कहो कि बूढ़ा बहक गया।

(२) क़ाऽलूऽ तऽल्लाहि इन्नकालफ़ी ज़लालिकऽल् क़दीम् ॥

लोग कहने लगे—अल्लाह की शपथ, तू अपनी उसी सदा की भूल में है।

(३) फ़ लम्मा३ अन्जा३अऽल् बशीरु अल्क़ाहु अ़ला वज्हिही फ़ऽर्तद्दा बसीरन् क़ाऽला; अलम् अकुल्ल-कुम्; इन्नी अअ्लमु मिनऽल्लाहि माऽ लाऽ तअ्लमून् ॥

फिर जब सुसमाचार देने वाला पहुंचा तो उसके मुख पर वह कुर्ता डाला तो वह आंखों से देखता हुआ लौटा, कहने लगा —(क्या) मैंने तुम्हें न कहा था; मैं अल्लाह की ओर से (वह) जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।

(४) क़ाऽलू३ या३ अबाऽनऽऽस्तग़्फ़िर् लनाऽ ज़ुनूबना३ इन्नाऽ कुन्नाऽ ख़ातिईन् ॥

वह कहने लगे—हे पिता! हमारे पापों को क्षमा करा; निस्सन्देह, हम अपराधी थे।

(५) क़ाऽला सउफ़ा अस्तग़्फ़िरु लकुम् रब्बी; इन्नहू हुवऽल् ग़फ़ूरुर्रहीम् ॥

कहा—ठहरे रहो, तुमको अपने पालनकर्त्ता से क्षमा कराऊंगा, वही क्षमा करने वाला दयालु है।

(६) फ़ लम्मा३ऽ दख़लूऽ अ़ला यूसुफ़ा आवा३

इलयहि अबवयहि व क़ाऽलऽदखुलूऽ मिस्रा इन्शाऽअऽ-ल्लाहु आमिनीन् ॥

जब यूसुफ़ के पास प्रविष्ठ हुये तो यूसुफ़ ने अपने माता पिता को अपने पास स्थान दिया और यदि अल्लाह ने चाहा तो मिस्र में आनन्द पूर्वक प्रविष्ठ हो।

(७) व रफ़आ अबवयहि अलऽल् अर्शि व ख़र्रूऽ लहू सुज्जदऽन्, व क़ाऽला याऽ अबति हाज़ा तअ्वीलु रुअ्याया मिन् क़ब्लु क़द् जअ़लहाऽ रब्बी हक़्क़ऽन्; व क़द् अह्सना बीऽ इज् अख़्रजनी मिन-स्सिज्नि व जाऽआ बिकुम्मिनऽल् बद्वि मिन् ... बअ़दि अन्नज़ग़-श्शयतानु बय्नी व बय्ना इख़्वती, इन्ना रब्बी लती़फ़ुल्लिमाऽ यशाऽउ; इन्नहू हुवऽल् अलीमुऽल् हकीम् ॥

और अपने पिता को सिंहासन पर ऊँचा बिठाया और सब उसके सन्मुख सिजदा (दण्डवत्) करने को गिर गये और उसने कहा—हे मेरे पिता! यह मेरे पहले स्वप्न का अर्थ है उसको मेरे पालनकर्त्ता ने सत्य सिद्ध किया और उसने मेरे साथ उपकार किया जब मुझको बन्दीगृह से निकाला और तुमको गांव से ले आया, इसके पीछे शैतान ने मुझमें और मेरे भाइयों में विवाद उत्पन्न कर दिया था; निस्सन्देह मेरा पा-

लनकर्त्ता जो चाहता है यत्न से करता है; निस्सन्देह वही ज्ञाता और बुद्धिमान् है।

(८) रब्बि क़द् आतय्तनी मिनऽल् मुल्कि व अ़ल्लम्तनी मिन् तअ्वीलिऽल् अ्हाऽदीसि, फ़ाऽतिर-स्समावाति वऽल् अर्ज़ि अन्तावल्लियी फ़ि-द्दुन्याऽ वऽल् आख़िरति, तवफ़्फ़नी मुस्लिमऽव्व अल्हिक़्नी बि-स्सालिहीन् ॥

हे पालनकर्त्ता! तूने मुझे कुछ शासन दिया और मुझे कुछ घटनाओं का आशय सिखलाया, हे आकाश और पृथ्वी के उत्पन्न करने वाले! तू ही लोक परलोक में मेरा प्रतिपालक है; मुझे इस्लाम में ही मृत्यु दे और मुझे शुभ कर्मियों में सम्मिलित कर।

(९) ज़ालिका मिन अन्बाऽइऽल् ग़य्बि नूहीहि इलय्का; व माऽ कुन्ता लदय्हिम् इज् अज्मऊ अम्रहुम् वहुम् यम्कुरून् ॥

यह परोक्ष के समाचार हैं: जिन्हें हम तुझको भेजते हैं और जब अपना कार्य्य निश्चित करने लगे और कपट करने लगे तो तू उनके पास न था।

(१०) वमाऽ अक्सरु-न्नाऽसि व लउ हरस्ता बि मुअ्मिनीन् ॥

और बहुतेरे मनुष्य विश्वास करने वाले नहीं यद्यपि तू ललचावे।

(११) व माऽ तस्अलुहुम् अलय् हि मिन् अजि्न् ; इन् हुवा इल्लाऽ ज़िक्रुल्लिल् आलमीन् ॥

और तू उनसे इस पर कुछ मूल्य नहीं मांगता; यह तो और कुछ नहीं परन्तु समस्त संसार को शिक्षा है।

[मं० ३ पारा १३ रु० १२।७]

(१) व कअय्यिम्मिन आयतिन् फ़ि-स्समावाति वऽल् अर्ज़ि यमुरूना अलय् हाऽ वहुम् अन्हाऽ मुअ्रिज़ून् ॥

और आकाश और पृथ्वी पर अनेकों चिह्न हैं जो उन पर से बीत जाते हैं और वे उन पर ध्यान नहीं देते।

[२] व माऽ युअ्मिनु अक्सरुहुम् बिऽल्लाहि इल्लाऽ वहुम्मुश्रिकून् ॥

और अनेकों पुरुष साथ में साझी किये बिना अल्लाह पर विश्वास नहीं करते।

[३] अफ़अमिनू२ अन्तअ्तियहुम् ग़ाऽशियतुम्मिन् अज़ाऽबिऽल्लाहि अउ् तअ्तियहुमुस्साऽअतु बग़्तत व्वहुम् लाऽ यश्उरून् ॥

क्या वह इस बात से निर्भय हो गये हैं कि उन पर अल्लाह

के प्रकोप की आपत्ति आ पड़े अथवा अकस्मात् प्रलय की घड़ी आ पहुंचे और उनको पता न हो।

[४] कुल् हाज़िही सबीली२ अद्ऊ२ इलऽल्लाहि अला बसीरतिन् अनाऽ व मनिऽत्तबअनी; व सुब्हानऽल्लाहि व मा२ अनाऽ मिनऽल् मुश्रिकीन् ॥

कहदे—यही मेरे पालनकर्त्ता का मार्ग है मैं अल्लाह की ओर से खुले प्रमाण के साथ बुलाता हूँ।

[५] वमा२ अर्सल्नाऽ मिन् क़ब्लिका इल्लाऽ रिजाऽलऽन्नूही२ इलय्हिम्मिन् अह्लिल् कुरा; अफ़लम् यसीरू२ फ़िऽल् अर्ज़ि फ़ यन्ज़ुरूऽ कय्फ़ा काऽना आक़िबतुऽल्लज़ीना मिन् क़ब्लिहिम्, व लदाऽरुऽल् आख़िरति ख़य्रुल्लि—ल्लज़ीनऽत्तक़ौऽ, अफ़लाऽ तअ्क़िलून् ॥

और हमने तुझसे पहले सिवाय मनुष्यों के और किसी को न भेजा कि हम उनकी ओर प्रेरणा करते थे और वह नगरों के निवासी थे, फिर क्या यह लोग देश में नहीं फिरे कि यह देख लेते कि उन लोगों का—जो उनसे पहले थे—क्या अन्त हुआ; निस्सन्देह अन्त के दिन का घर संयमियों के निमित्त उत्तम है तो क्या उनको समझ नहीं?

(६) हत्ता२ इज़ाऽऽस्तायअस रुसुलु व ज़न्नू२

अन्नहुम् क़द् कुज़िबूऽ जा३अहुम् नस्तु नाऽ फ़ नुज्जिया मन्नशा३उ; वलाऽ युरद्दु बअसुनाऽ अनिऽल् क़उमिऽल् मुज्रिमीन् ॥

यहां तक कि जब पैग़म्बर निराश होने लगे और न वि श्वास करने लगे कि उनसे झूठ कहा था तब उनको हमारी सहायता पहुंची; फिर जिनको हमने चाहा बचा दिया; और हमारा दण्ड पापी जाति से नहीं टरता।

(७) लक़द् काऽना फ़ी क़ससिहिम् इब्रतुल्लि उलिऽल् अल्बाऽबि; माऽ काऽना हदीसऽय्युफ़्तरा वलाऽकिन् तस्दीक़ऽल्लज़ी बय्ना यदय्हि व तफ़्सीला कुल्लि शय्इन्व हुदन्व रह्मतल्लिक़उमिय्युअमिनून् ॥

निस्सन्देह उनके समाचारों से बुद्धिमानों ने अपनी दशा का विचार करना है; कुछ गढ़ी हुई बात नहीं है किन्तु उनको जो उनसे पहले हैं, सिद्ध करती है और जो लोग विश्वास लाते हैं उनके निमित्त शिक्षा और दया है।

सूरये रअ़द*

[मंजिल ३ पारा १३, रु० १।७]

(१) अलिफ़् लाऽम्मीऽम्रा तिल्का आयातुऽल् किताबि; वऽऽलज़ीऽ उन्ज़िला इलय्का मिर्रब्बिकऽल ह़क़्कु वला किन्ना अक्सर-आऽसि लाऽ युअ्मिनून् ॥

अलिफ़् लाऽम्मीऽम्रा—यह पुस्तक की आयतें हैं; और जो तेरे पालनकर्त्ता से तुझपर उतरा वह सत्य है परन्तु अनेकों विश्वास नहीं करते।

(२) अल्लाहुऽल्लज़ी रफ़अ़-स्समावाति बि ग़यरि अ़मदिन् तरउ्नहाऽ सुम्मऽस्तवा अ़लऽल् अ़र्शि व सख़्ख़र-श्शम्सा वऽल् क़मरा, कुल्लुय्यजरी लि अजलिम्मु-सम्मन्; युदब्बिरुऽल् अम्रा युफ़स्सिलुऽल् आयाति लअ़ल्लकुम् बिलिक़ाऽइ रब्बिकुम् तुअ्क़िनून् ॥

देखते हो अल्लाह वह है जिसने स्तम्भ रहित उच्च आकाश रचे फिर अर्श पर स्थित हुआ और सूर्य और चन्द्रमा को काम लगाया; प्रत्येक एक निश्चित अवधि तक चलता

*सूरये रअ़द मक्के में उतरी इसमें ४३ आयतें और ६ रुकूअ़ हैं।

है; कार्य्य का प्रयत्न करता है चिह्नों को प्रगट करता है कदाचित् तुम अपने पालनकर्त्ता से मिलने का निश्चय करो।

(३) व हुवऽल्लज़ी मद्दऽल् अर्ज़ा व जअ़ला फ़ीहाऽर वाऽसिया व अन्हारऽन्; व मिन् कुल्लि-ऽस्समराति जअ़ला फ़ीहाऽ ज़उ्जयूनिऽस्नयूनि युग़्शि-ल्लयुल-न्नहाऽरा; इन्ना फ़ी ज़ालिका ल आयातिल्लि क़उ्मि य्यतफ़क्क़रून् ॥

और वही है जिसने पृथ्वी फैलाई और उसमें पहाड़ और नदियां निश्चत कीं; और प्रत्येक फल की दो दो क़िस्में पृथ्वी से उत्पन्न कर दीं; वह रात्रि को दिन से ढकता है; उनमें उन लोगों के निमित्त चिह्न हैं जो चिन्ता करने वाले हैं।

(४) व फ़िऽल् अर्ज़ि क़ितउ्म्मुतजाविरातु व्व जन्नातुम्मिन् अअ़्नाऽबि व्वज़उ् व्व नख़ीलुन् सिन्वाऽनु व्व ग़य्रु सिन्वाऽनिय्युस्क़ा बिमाऽइव्वाऽहिदिव्व नुफ़ज़्ज़िलु बअ़्ज़हाऽ अ़ला बअ़्ज़िन् फ़िऽल् उकुलि; इन्ना फ़ी ज़ालिका ल आयाति ल्लि क़उ मिय्यअ़्क़िलून् ॥

और भूमि से कई खेत मिले हुये हैं और अंगूर के बाग़ हैं और खेती और जड़ मिली और वे मिली खजूरें और वे दोनों एक ही पानी से सींची जाती हैं और हम एक को एक से फल में अधिक करते हैं; इसमें इनके लिए चिह्न है जो समझते हैं।

(५) व इन् तअ्जब् फ़ अजबुन् क़उलुहुम् अइज़ाऽ कुन्नाऽ तुराबऽन् अइन्नाऽ लफ़ी ख़ल् क़न् जिदीदिन् ; उलाऽइकऽल्लज़ीना कफ़रूऽ बि रब्बिहिम्, व उलाऽ-इकऽल् अग़्लालु फ़ीऽ अअ्नाऽक़िहिम्, व उलाऽइका अस्हाबु-न्नाऽरि, हुम् फ़ीहा ख़ालिदून् ॥

और यदि तू आश्चर्य की बात चाहे तो उनका यह कथन आश्चर्य है—क्या जब हम मिट्टी होगये; क्या हम नये बनेंगे? वही हैं जो अपने पालनकर्त्ता के अविश्वासी हुये; और वही हैं कि उनको गर्दनों में जंजीर है, और वह नर्क वाले हैं, वह उसीमें रहा करेंगे।

(६) व यस्तअ्जिलूनका बि-स्सयिअति क़ब्लऽल् .हसनति व क़द् ख़लत् मिन क़ब्लिहिमुऽल् मसुलातु; व इन्ना रब्बका लज़ू मग़्फ़िरतिल्लिन्नाऽसि अला ज़ुल्मि-हिम्, व इन्ना रब्बका ल शदीदुऽल् इक़ाऽब् ॥

और तुझसे शीघ्र* बुराई को भलाई से पहिले मांगते हैं और निस्सन्देह उनसे पहिले ऐसे दृष्टान्त हो चुके हैं; और निस्सन्देह तेरा पालनकर्त्ता लोगों को उनके पाप करने पर भी क्षमा करता है, और तेरे पालनकर्त्ता का दण्ड कठिन है।

(७) व यक़ूलुऽल्लज़ीना कफ़रूऽ लउ् लाऽ उन्ज़िला अलय्हि आयतुम्मिर्रब्बिही; इन्नमाऽ अन्ता मुन्ज़िरु व्व लि कुल्लि क़उ्मिन् हाऽद् ॥

और अविश्वासी कहते हैं—उस पर अपने पालनकर्त्ता की ओर से कोई चिह्न क्यों न उतरा ? तू तो भय सुनानेवाला और प्रत्येक जाति को मार्ग बताने वाला है ।

[मंजिल ३ पा० १३ रु० २।११]

(१) अल्लाहु यअ्लमु तह्मिलु कुल्लु उन्सा वमाऽ तग़ीजुऽल् अ.र्हाऽमु व माऽ तज़्दाऽदु; व कुल्लु शय् इन् .इन्दहू बि मिक़्दाऽर् ॥

अल्लाह जानता है जो प्रत्येक मादा पेट में रखती है और जो पेट सिकुड़ते हैं और जो बढ़ते हैं; और प्रत्येक वस्तु इसके पास है ।

(२) आलिमुऽल् ग़य्बि व–श्शहाऽदतिऽल् कबीरु-ऽल् मुतआऽल् ॥

गुप्त और प्रगट का वेत्ता सबसे बड़ा (और सबसे) ऊपर है ।

(३) सवाउम्मिन्कुम्मन् असर्रऽल् क़ौला व मन् जहरा बिही व मन् हुवा मुस्तख़्फ़िन् बि–ल्लयलि व साऽरिबुन् बि–न्नहाऽर् ॥

तुममें बराबर है जो चुपके बात कहे और जो पुकार कर कहे और जो रात में छिप रहा है और जो दिन को फिरता है ।

(४) लहू मुअ़क़्क़िबातुम्मिन् बय्नि यदय्हि व मिन् व ख़ल्फ़िही यह्फ़ज़ूनहू मिन् अम्रिऽल्लाहि; इन्नऽल्लाहा लाऽ युग़य्यिरु माऽ बि क़ौमिन् ,हत्ता युग़य्यिरूऽ माऽ बि अन्फ़ुसिहिम् ; व इज़ाऽ अराऽदऽल्लाहु बि क़ौमिन् सूऽअन् फ़ लाऽ मरद्दा लहू, वमाऽ लहुम्मिन्दूनिही मिव्वाऽल् ॥

उसके फेरे वाले (फ़रिश्ते*) हैं जो बन्दे के आगे और पीछे से उसको अल्लाह की आज्ञा से बचाते हैं; अल्लाह किसी जाति की दशा नहीं बदलता जब तक वह (स्वयं) न बदल ले जो उनके मनों में है; और जब अल्लाह किसी जाति पर बुराई चाहे, तो वह नहीं हटती; और उसके लिए उसके अतिरिक्त अन्य कोई सहायक नहीं।

(५) हुवऽल्लज़ी युरीकुमुऽल् बर्क़ा ख़ौफ़ऽन्व तमअ़ऽव्व युन्शिउ-स्सहाऽब-स्सिक़ाऽल् ॥

*यह आयत उस समय उतरी जब अमर इब्नल तफ़ील और लबीद का भाई अरबाद इब्न रबिया मुहम्मद के पास उसे मारने गये। अमर हज़रत से उनके सिद्धान्त के मुख्य अंश पर विवाद कर रहा था कि अरबाद कम्पास लेकर उसके पीछे उसे तलवार से मारने गया; परन्तु पैग़म्बर को ज्योंही उसके षड्यन्त्र का पता लगा उसने अल्लाह से रक्षा के निमित्त प्रार्थना की; जिस पर कि अरबाद पर विद्युत्पात हुआ और अमर के एक Pestilential boil लगा, जिससे वह बुरी दशा में तत्काल मर गया। —तफ़्सीर बेज़ावी

वही है कि जो तुम्हें भय (दिखाने) को विद्युत् दिखलाता है और आशा [उत्पन्न करने) के लिए घोर बादल उठाता है।

(६) व युसब्बिहु-र्रअ्दु बिहम्दिही वऽल् मला३इकतु मिन् खीफ़तिही; व युर्सिलु-स्सवाऽइक़ा फ़ युसीबु बिहाऽ मय्यशा३उ वहुम् युजाऽदिलूना फ़िऽल्लाहि, व हुवा शदीदुऽल् मिहाऽल् ॥

और (विद्युत् की) कड़क उसके गुणों का पाठ करती है और सब दूत भी उसके भय से; और (वह विद्युत् की) गरज भेजता है और जिस पर चाहता है डालता है, और यह लोग अल्लाह की बात में* झगड़ते हैं, और उसकी पकड़ दृढ़ है।

(७) लहू दअ्वतुऽल् हक़्क़ि; वऽल्लज़ीना यद्ऊना मिन्दूनिही लाऽ यस्तजीबूना लहुम् बिशयइन इल्लाऽ कबाऽसिति कफ़्फ़यहि इलऽल् मा३इ लि यब्लुग़ा फ़ाऽहु वमाऽ हुवा बिबाऽलिग़िही; वमाऽ दुआ३उऽल् काफ़िरीना इल्लाऽ फ़ी ज़लाल् ॥

---

*मुसल्मानों का विश्वास है कि दो संरक्षक फ़रिश्ते प्रत्येक मनुष्य के पास उसके कृत्यों को लिखने के लिए रहते हैं। यह 'मुअ़क़्क़िबत'—जो एक दूसरे के पश्चात् क्रमशः आते हैं इन्हें [१] करामन और [२] कातिबीन कहते हैं। इनका विशेष वर्णन पाठकों को 'क़ुरान कौतुक' में मिलेगा।

उसी को पुकारना सत्य है; और वह जो उसके अतिरिक्त दूसरों को पुकारते हैं उन्हें कोई उत्तर न दिया जायगा परन्तु जैसे कोई अपने हाथ पानी की ओर फैलाये जिससे वह उसके मुंह में पहुंच जाय और वह कभी न पहुंचेगा; और काफ़िरों की सब प्रकार भ्रम भरी है।

(८) व लिल्लाहि यस्जुदु मन् फ़ि-स्समावाति वऽल् अर्ज़ि तृउ्अऽन्व कर्हऽन्व ज़िलालुहुम् बिऽल् गुदु व्वि वऽल् असाऽल् ॥

और जो कोई आकाश और भूमि में है, प्रसन्नता और दुःख से अल्लाह को सिजदा करता है और प्रातः और सायं उनकी छाया है।

(९) कुल् मर्ब्बु-स्समावाति वऽल् अर्ज़ि; कुलिऽल्लाहु; कुल् अफ़ऽत्तख़ज़्तुम्मिन्दूनिही३ अउ्लिया३आ लाऽ यम्लिकूना लि अन्फ़ुसिहिम् नफ़्अऽन्व लाऽ ज़र्ऽन्, कल् हल् यस्तविऽल् अअ्मा वऽल् बसीरु अम् हल् तस्तवि ज़्ज़ुलुमातु व-न्नूरु, अम् जअ़लूऽ लिल्लाहि शुरका३आ ख़लक़ू, कख़ल्क़िही फ़ तशाऽ बहऽल् ख़ल्क़ु अलय्हिम्; कुलिऽल्लाहु ख़ाऽलिकु कुल्लि शय्इन्व हुवऽल् वाऽहिदुऽल् क़ह्हाऽर् ॥

पूछ—आकाश और पृथ्वी का पालनकर्त्ता कौन है; कह-

अल्लाह; कह—फिर तुमने उसके अतिरिक्त ऐसे सहायक स्वीकार किये हैं जो अपने भले बुरे के बचाने वाले नहीं; कह (क्या) कोई अन्धा और सूझता समान होता है अथवा कहीं उजाला और अंधेरा समान होता है, अथवा उन्होंने अल्लाह के कुछ ऐसे समांश निश्चित किये हैं कि उन्होंने कुछ बनाया है, जैसे अल्लाह ने बनाया है फिर उनको दृष्टि में सृष्टि मिलती जुलती है; कह—अल्लाह प्रत्येक वस्तु का रचयिता है और वही एकमात्र बली है।

(१०) अन्ज़ला मिन-स्समाऽइ मा अन् फ़साऽलत् अउ्दियतुन् बि क़द्रिहाऽ फ़ऽह्तमल-स्सय्लु ज़बदऽ राऽबियऽन्, व मिम्माऽ यूक़िदूना अलय्हि फ़ि-न्नाऽरिऽ ब्तिग़ाऽअा ह़िल्यतिन् अउ् मताऽइन् ज़बदुम्मि स्लुहू; कज़ालिका यज़्रिबुऽल्लाहुऽल् ह़क़्क़ा वऽल् बाऽतिला, ज़ अम्मऽ-ज़्ज़बदु फ़ यज़्हबु जुफ़ाऽअन् व अम्माऽमा; यन्फ़उ-न्नाऽसा फ़ यम्कुसु फ़िऽल् अर्ज़ि; कज़ालिका यज़्रिबुऽल्लाहुऽल् अम्स़ाऽल् ॥

आकाश से पानी उतारा फिर अपने अपने अनुसार धारायें बहीं फिर वह धारा फूला हुआ झाग ऊपर लाई; और जिस वस्तु को भूषण (बनाने) अथवा सम्पत्ति के निमित्त अग्नि में झोंकते हैं उसमें भी वैसा ही झाग है; इस प्रकार अल्लाह सत्य और असत्य निश्चित करता है; फिर वह जो

झाग है वह सूख जाता है; और वह जो मनुष्यों के उपयोग में आता है सो पृथ्वी में रहता है; यों अल्लाह दृष्टान्त बताता है।

(११) लिल्लज़ीनऽस्तजाऽबूऽ लि रब्बि.हिमुऽल .हुस्ना, वऽल्लज़ीना लम् यस्तजीबूऽ लहू लउ् अन्ना लहुम्माऽ फ़िऽल् अर्ज़ि जमीअऽव्व मि.स्लहू मअहू लऽफ़्त-दउ्ऽ बिही, उलाइका लहुम् सूउऽल् .हिसाऽबि व मअ्वाहुम् जहन्नमा; व बिअ्सऽल् मिहाऽद् ॥

जिन्होंने अपने पालनकर्त्ता का आदेश माना है उनको भलाई है और जिन्होंने उसकी आज्ञा न मानी यदि उनके पास जो कुछ पृथ्वी में है—सबका सब और इतना ही इसके साथ और भी हो तो, यह लोग अपने बदले में सब दें; इन लोगों का बुरा हिसाब है और उनका स्थान नर्क है; और वह बुरा स्थान है।

[मं० ३, पारा १३, रु० ३।१३]

(१-२) अफ़म्य-अ्लमु अन्नमाऽ उन्ज़िला इलयका मिर्रब्बिकऽल् .हक़्क़ु कमन् हुवा अअ्मा; इन्नमाऽ यतज़क्करु उलुऽल् अल्बाऽबिऽल्लज़ीना यूफ़ूना बि अह्दिऽल्लाहि व लाऽ यन्क़ुज़ूनऽल् मीसा़ऽक़् ॥

भला, जो मनुष्य जानता है कि जो कुछ तुझ पर तेरे पालनकर्त्ता की ओर से उतरा, सत्य है वह उसके समान होगा। जो नेत्र विहीन है; उन्हीं को बोध है जिनमें कि बुद्धि है—और जो अल्लाह की प्रतिज्ञा पूरी करते हैं और निश्चय को भंग नहीं करते।

(३) वऽल्लज़ीना यसिलूना मा३ अमरऽल्लाहु बिही३ अय्यूसला व यख़्शऊना रब्बहुम् व यख़ाऽफ़ूना मू३अऽल् ह़िसाऽब् ॥

और वह जो जोड़ते हैं जिसके जोड़ने की—अल्लाह ने आज्ञा दी है और अपने पालनकर्त्ता का भय करते हैं और बुरे हिसाब की आशंका रखते हैं।

(४) वऽल्लज़ीना सबरुऽऽब्तिग़ा३आ वज्हि रब्बिहिम् व अक़ाऽमु-स्सलाता व अन्फ़क़ूऽ मिम्माऽ रज़क़्नाहुम् सिर्रऽव्व अलाऽनियत व्व यद्रऊना बिऽल् ह़सनतिस्सय्यिअता उला३इका लहुम् उक़्बा-दाऽर् ॥

और वह जिन्होंने अपने पालनकर्त्ता का झुकाव चाहने को धैर्य रक्खा और नमाज़ (प्रार्थना) स्थिर रक्खी और हमारे दिये हुये में से प्रगट और गुप्त व्यय किया वह बुराई के मुक़ाबिले में भलाई करते हैं और इन्हीं लोगों को अन्त का घर है।

(५) जन्नातु अ़द्निय्यद्ख़ुलूनहाऽ व मन् सलह़ा

मिन् आबा३इहिम् व अज़्वाऽजिहिम् व ज़ुर्रियातिहिम् वऽल् मला३इकतु यद्ख़ुलूना अलय्हिम्मिन् कुल्लि बाऽब् ॥

उसमें सदा रहने को जन्नत (स्वर्ग) हैं वहां जायँगे और उनके पिता प्रपितामहों, और स्त्रियों और सन्तान में जो सुकर्मी होंगे उनके निकट प्रत्येक द्वार से फ़रिश्ते (स्वर्गीय दूत) आते हैं।

(६) सलामुन् अलय्कुम् बिमाऽ सबर्तुम् फ़निअ्मा उ़क़्ब-द्दाऽर् ॥

कहते हैं—इसके बदले कि तुम स्थिर रहे तुम पर शान्ति है अतः तुम्हें अन्त का घर भला मिला।

(७) वऽल्लज़ीना यन्क़ुज़ूना अह्दऽल्लाहि मिन्ँ बअ्दि मीसाऽक़िही व यक़्तऊ़ना मा३ अमरऽल्लाहु बिही३ अय्यूसला व युफ़्सिदूना फ़िऽल् अर्ज़ि; उला३इका लहुमु-ल्लअ्नतु व लहुम् सू३उ-द्दाऽर् ॥

और जो लोग अल्लाह की प्रतिज्ञा भंग करते हैं और जिस वस्तु को अल्लाह ने जोड़ना कहा उसे काटते हैं और पृथ्वी में उपद्रव उठाते हैं; ऐसे मनुष्य हैं कि उनको स्राप है और उनको दुःख का घर है।

(८) अल्लाहु यब्सुतु-रिज़्क़ा लि मय्यशा३उ व

यक़्दिरु, व फ़रिहू ऽ बिऽल् ह़याति-द्दुन्याऽ; व मऽऽल् ह़यातु-द्दुन्याऽ फ़िऽल् आख़िरति इल्लाऽ मताऽअ् ॥

अल्लाह जिसको चाहता है अनन्त भोजन देता है और (जिसको चाहता है) न्यून कर देता है; और यह सांसारिक जीवन परलोक की अपेक्षा कुछ नहीं परन्तु तुच्छ व्यवहार है।

[मंजिल ३ पारा १३ रु० ४।५]

(१) व यक़ूलुऽल्लज़ीना कफ़रूऽ लउलाऽ उन्ज़िला अ़लय्हि आयतुम्मिर्रब्बिही; क़ुल् इन्नऽल्लाहा युज़िल्लु मय्यशाउ व यह्दी इलय्हि मन् अनाऽब् ॥

और अविश्वासी कहते हैं कि उस पर कोई चिह्न उसके पालनकर्त्ता की ओर से क्यों नहीं उतरा; कह—जिसको चाहे अल्लाह मार्गभ्रष्ट करता है और वही उसको अपनी ओर मार्ग देता है जो उसकी ओर लौटा।

(२) अल्लज़ीना आमनूऽ व ततमइन्नु क़ुलूबुहुम् बिज़िक्रिऽल्लाहि; अलाऽ बिज़िक्रिऽल्लाहि ततमइन्नुऽल् क़ुलूब् ॥

उन्होंने विश्वास किया और उनके हृदय अल्लाह की कथा से शान्ति ग्रहण करते हैं; सुनते हो, हृदय अल्लाह की कथा से ही शान्ति ग्रहण करते हैं।

(३) अल्लज़ीना आमनूऽ व अमिलुऽ-स्सालिह.ाति तूबा लहुम् व .हुस्नु मआब् ॥

जिन्होंने विश्वास किया और सुकर्म-सम्पादन किया उनको प्रशंसा है और उनका स्थान अच्छा है।

(४) कज़ालिका अर्सल्नाका फ़ी३ उम्मतिन क़द् ख़लत् मिन् क़ब्लिहा३ उममुल्लि तत्लुवाऽ अलय्हिमुऽ-ल्लज़ी३अउ् .हय्ना३ इलय्का वहुम् यक्फुरूना बि-र्रह्.-मानि; .कुल् हुवा रब्बी ला३ इलाहा इल्लाऽ हुवा, अलय्हि तवक्कल्तु व इलय्हि मताऽब् ॥

इसी प्रकार हमने तुझको एक जाति के लिए भेजा कि उससे पहले (अनेक) जातियां हो चुकी हैं जिससे तू उनको वह आज्ञा सुनावे जो हमने तेरी ओर भेजी है और वह दयालु का विश्वास नहीं करते; तू कह—वही मेरा पालनकर्त्ता है उसके अतिरिक्त (अन्य) किसी की आराधना (योग्य) नहीं, मैंने उसी पर विश्वास किया है और मैं उसी की ओर छूटकर आता हूँ।

(५) व लउ् अन्ना .कुर्आनऽन् सुय्यिरत् बिहिऽल् जिबाऽलु अउ् .कुत्तिअत् बिहिऽल् अर्जु, अउ् कुल्लिमा बिहिऽल् मउ्ता, बल्लिल्लाहिऽल् अम्रु जमीअ़ऽन, अफ़लम् याऽय् असिऽल्लज़ीना आमन३ अल्लउ् यशा३-

उऽल्लाहु लहद्-न्नाऽसा जमीअऽन् ; वलाऽ यज़ाऽलुऽ-ल्लज़ीना कफ़रूऽ तुसीबुहुम् बिमाऽ सनऊ़ऽ क़ाऽरिअ़तुन् अउ् त.हुल्लु क़रीबऽम्मिन् दाऽरिहिम् .हत्ता यअ्तिया वअ्दुऽल्लाहि; इन्नऽल्लाहा लाऽ युख़्लिफुऽल् मीआऽद् ॥

और यदि कोई .कुरान ऐसा होता कि उससे पर्वत चलते अथवा उससे भूमि के खण्ड होजाते अथवा उससे मृतक बोलते किन्तु सब कार्य्य अल्लाह के हाथ में हैं; फिर क्या विश्वासियों को भरोसा नहीं कि यदि अल्लाह चाहे तो सब लोगों को मार्ग पर लाये: और अविश्वासियों को उनके कर्मों के कारण विपत्ति पहुंचती रहेगी और उनके घर के समीप उतरेगी: यहाँ तक कि अल्लाह की प्रतिज्ञा पहुंचे; निस्सन्देह अल्लाह प्रतिज्ञा के विरुद्ध नहीं करता।

[मं० ३, पारा १३, रु० ५।६]

(१) व लक़दिऽस्तुह्ज़िआ बि रुसुलिम्मिन् क़ब्लिका फ़ अम्लयतु लिल्लज़ीना कफ़रूऽ .सुम्मा अख़ज़्तुहुम् फ़ कयफ़ा काऽना इक़ाऽब् ॥

और तुझ से पूर्व कितने ही पैग़म्बरों से वे हँसी कर चुके हैं फिर मैंने काफ़िरों (उन अविश्वासियों) को अवसर दिया फिर उनको पकड़ा तो मेरा बदला कैसा था ?

(२) अफ़मन हुवा क़ाऽइमुन् अला कुल्लि नफ़्सिन बिमाऽ कसबत् , व जअ़लूऽ लिल्लाहि शुरकाऽअ़ा कुल् सम्मूहुम् , अम् तुनब्बिऊनहू बि माऽ लाऽ यअ़लमु फ़िऽल् अर्ज़ि अम् बिज़ाऽहिरिम्मिनऽल् क़ऽलि, बल् ज़ुय्यिना लिल्लज़ीना कफ़रूऽ मक्रुहुम् व सुद्दू अनि-स्सबीलि; व मय्युज़्लिलिऽल्लाहु फ़माऽ लहू मिन्हाऽद् ॥

क्या जो मनुष्य प्रत्येक मनुष्य के कर्मों का पता रखता है (इनको बिना दण्ड दिये छोड़ देगा , और यह लोग अल्लाह के साझी ठहराते हैं, (हे पैग़म्बर ! तुम इनसे) कहो कि तुम इनके नाम तो लो अथवा अल्लाह को ऐसे साझियों का समाचार देते हो कि जिनको वह जानता तक नहीं कि पृथ्वी में (कहां) रहते हैं अथवा ऊपरी बातें बनाते हो; बात यह है कि काफ़िरों को अपने कपटों का भी ज्ञान होता है और (इस प्रकार) सन्मार्ग से रुके हुये हैं, और जिसको अल्लाह मार्ग भ्रष्ट करे उसे कोई मार्ग दिखलाने वाला नहीं ।

(३) लहुम् अज़ाऽबुन् फ़िऽल् हयाति-द्दुन्याऽ व ल अज़ाऽबुऽल् आख़िरति अशक़्क़ु, वमाऽ लहुम्मिनऽ-ल्लाहि मिव्वाऽक़् ।

इन लोगों ... सांसारिक जीवन में प्रकोप है और

अन्तिम दिन का प्रकोप निश्चय अत्यन्त कठोर है और अल्लाह के प्रकोप से निश्चय इनकी रक्षा करने वाला कोई नहीं।

(४) म सलुऽल् जन्नतिऽल्लती वुइदऽल् मुत्तकूना; तजरी मिन्तह्‌ तिहऽऽल् अन्हारु; उकुलुहाऽ दाइमुव्व ज़िल्लुहाऽ; तिल्का उक्बऽल्लज़ीनऽत्तक़उ्ऽव्व उक्बऽल्का-फ़िरीन-न्नाऽर् ॥

संयमियों के लिए जिस (बहिश्त के) बाग़ की प्रतिज्ञा की जा रही है उसकी दशा यह है कि उसके निकट नहरें बह रही होंगी; उसके सदा फलनेवाले और फल (इसी प्रकार) उनकी छाया; यह उन लोगों के लिए पुरस्कार हैं जो संयमी हैं और काफ़िरों का फल दोज़ख है।

(५) वऽल्लज़ीना आतय्नाहुमुऽल् किताबा यफ़्रहूना बिमा३ उन्ज़िला इलय्का व मिनऽल् अह्ज़ाऽबि मय्यन्किरु बअ्ज़हू; कुल् इन्नमा३ उमितु अन् अअ्बुदऽ-ल्लाहा वला३ उश्रिका बिही; इलय्हि अद्ऊऽ व इलय्हि मआब् ॥

और जिनको हमने पुस्तक प्रदान की वे उससे, जो तेरी ओर उतरा, प्रसन्न होते हैं और कुछ समुदाय उसकी किसी बात को नहीं मानते; (उन्हें तू) कह कि मुझको यही आज्ञा हुई कि अल्लाह को आराधना करूं उसके साथ किसी को साझी

न करूं; उसी की ओर बुलाता हूं और उसी की ओर मेरा स्थान है।

(६) व कज़ालिका अन्ज़ल्नाहु ,हुक्मऽन् अरबिय्यऽन्; व लइनिऽत्तबअ्ता अह्वा३अहुम् बअ्दा माऽ जा३अका मिनऽल् ,इल्मि माऽलका मिनऽल्लाहि मिंव्वलिय्यि न्व लाऽ वाऽक् ॥

और ऐसे ही हमने इसको आदिष्ट भाषा अरबी में उतारा है और इसके पश्चात् भी कि तुम्हें बोध हो चुका है तुमने इनकी इच्छाओं का अनुसरण किया तो फिर अल्लाह के सामने न तो तुम्हारा कोई समर्थक होगा और न कोई रक्षक।

[मंजिल ३ पा० १३ रु० २।११]

(१) व लक़द् अर्सल्नाऽ रुसुलऽम्मिन् क़ब्लिका व जअ्ल्ना लहुम् अज़्वाजऽव्व ज़ुर्रियतन्; व माऽ काऽना लिरसूलिन् अय्यअ्तिया बि आयतिन् इल्लाऽ बि इज़्निऽल्लाहि; लिकुल्लि अजलिन् किताऽब् ॥

*और तुमसे पूर्व भी हमने (अनेक) पैग़म्बर भेजे और हमने उनको स्त्रियां भी दीं और सन्तान (भी), और किसी

*इस आयत के सम्बन्ध में mr Sell कहते हैं—This passage was revealed in answer to the reproaches which were cast on Muhammad on account of the great number of his wives अर्थात् यह आयत उन

ग़ ... ग्रक्ति न थी कि अल्लाह की आज्ञा के बिना मुअ-
न ... कार या करामात) दिखावे; प्रत्येक समय के
लिए हमारे ... लेखा है।

(२) यम्हुऽऽल्लाहु माऽ यशाउ व युस्बितु; व
इन्दहू उम्मुऽल् किताऽब् ॥

अल्लाह जिसको चाहता है नष्ट कर देता है और जिसको चाहता है उसके पास स्थिर रखता है, (हमारी आज्ञा का) पहुंचा देना तुम्हारा काम है और लेखा लेना हमारा।

(३) व इम्माऽ नुरियन्नका बअ्ज़ऽल्लज़ी न इदुहुम्
अउ् नतवफ़्फ़यन्नका फ़ इन्नमाऽ अ़लयकऽल् बलागु व
अ़लयनऽल् हिसाऽब् ॥

क्या यह लोग इस बात को नहीं देखते कि हम देश को सब ओर से दबाते चले आरहे हैं और अल्लाह आज्ञा देता है कोई उसकी आज्ञा की अवहेलना करने वाला नहीं।

(४) अवलम् यरउऽ अन्नाऽ नअ्तिऽल् अर्ज़ा
नन्कुसुहाऽ मिन अतराऽफ़िहाऽ, वऽल्लाहु यह्कुमु लाऽ
मुअक़्क़िबा लि हुक्मिही; व हुवा सरीउऽल् हिसाऽब् ॥

बदनामियों का उत्तर देने के लिये उतरी जो उनकी, अनेकों स्त्रियों के होने के कारण, होती थी। क्योंकि, जैसा कि येजाबी का कथन है, यदि वह सच्चा पैगम्बर होता तो उसका ध्यान स्त्रियों और सन्तान की उत्पत्ति के स्थान में किसी दूसरी ही ओर होता।

यह लोग इस बात को नहीं देखते कि हम देश को चारों ओर से दबाते चले आते हैं और अल्लाह आज्ञा देता है; कोई उसकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकता; और वह अति शीघ्र लेखा लेने वाला है।

(५) व क़द् मकरऽल्लज़ीना मिन क़ब्लिहिम् फ़लिल्लाहिऽल् मक्रु जमीअऽन्; यअ्लमु माऽ तक्सिबु कुल्लु नफ़्सिन; व सयअ्लमुऽल् कुफ़्फ़ारु लिमन् उक़्बदाऽर् ॥

और जो लोग इन (मक्के के काफ़िरों) से पहले हो चुके हैं उन्होंने भी (पैग़म्बरों की रक्षा में) अपने अपने प्रयत्न किये सो प्रयत्न तो सब अल्लाह ही के हैं; मनुष्य जो कुछ कर रहा है, अल्लाह को सब विदित है और काफ़िरों को शीघ्र विदित हो जायगा कि किसका परिणाम शुभ है।

(६) व यक़ूलुऽल्लज़ीना कफ़रूऽ लस्ता मुर्सलऽन; क़ुल् कफ़ा बिऽल्लाहि शहीदऽन बय्नी व बयनकुम् व मन् इन्दहू इल्मुऽल् किताब् ॥

और काफ़िर कहते हैं कि तुम पैग़म्बर नहीं हो तो तुम इनसे कहो कि मेरे और तुम्हारे मध्य अल्लाह और जिनके पास आकाशीय पुस्तकों का ज्ञान है, वह साक्षी पर्याप्त हैं।

सूरये इब्राहीम*

[मंजिल ३, पारा १३, रु० १।७]

(१-२) अलिफ् लाऽमृरा किताबुन् अन्ज़ल्नाहु इलय्का लि तुख़्रिज-न्नाऽसा मिन-ज़्ज़ुलुमाति इल-न्नूरि बि इज़्नि रब्बिहिम् इला सिराऽतिऽल् अज़ीज़िऽल् हमीदि-ऽल्लाहि-ऽल्लज़ी लहू माऽ फ़ि-स्समावाति व माऽ फ़िऽल् अर्ज़ि व वय्लुल्लिल् काफ़िरीना मिन् अज़ाऽबिन शदीद् ॥

अलिफ़ लाम्रा—एक पुस्तक है जो कि हमने तेरी ओर उतारी कि तू लोगों को अन्धकार से निकाल कर प्रकाश की ओर लावे उनके पालनकर्त्ता की आज्ञा से बलवान् और महिमा योग्य है। अल्लाह हीहै कि जिसका वह सब है जो कुछ आकाश और पृथ्वी में है और काफ़िरों को एक कठिन प्रकोप के कारण शोक है।

(३) (नि)ऽल्लज़ीना यस्तहिब्बूनऽल् हयात-द्दुन्याऽ अलऽल् आख़िरति व यसुद्दूना अन् सबीलिऽ-

*सूरये इब्राहीम मक्के में उतरी इसमें ७ रुकूअ और ५२ आयतें हैं।

ल्लाहि व यब्ग़ूनहाऽ ,इवजऽन्; उलाइ३का फ़ी ज़लालिन् बई,द् ॥

जो परलोक से सांसारिक जीवन को प्रिय समझते हैं और अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं और उसमें खोट खोजते हैं वह दूर भ्रम में पड़े हैं।

(४) वमा३ अर्सल्नाऽ मिर्रसूलिन् इल्लाऽ बिलिसाऽनि क़ौमिही लि युबय्यिना लहुम्; फ़ युज़िल्लुऽल्लाहु मय्यशा३उ व यह्दी मय्यशा३उ; व हुवऽल् अज़ीज़ुऽल् ,हकीम् ॥

और जब कभी हमने कोई पैग़म्बर प्रेषित किया तो (उसको) उसी की जातीय भाषा में* (वार्तालाप करता हुआ भेजा) जिससे वह उनको भली भांति समझा सके; फिर अल्लाह जिसको चाहता है, पथभ्रष्ट करता है और जिसको चाहता है उपदेश देता है; और वह बलवान् और बुद्धिमान् है।

(५) व लक़द् अर्सल्नाऽ मूसा बि आयातिना३ अन् अख़्रिज् क़ौमका मिन-ज़्ज़ुलुमाति इल-न्नूरि व ज़क्किर्हुम् बि अय्यामिऽल्ला,हि; इन्ना फ़ी ज़ालिका ल आयातिल्लि कुल्लि सब्बाऽरिन् शकूर् ॥

हमही ने मूसा को अपने चिह्न देकर भेजा कि अपनी

* पैग़म्बर अपनी जाति वालों की भाषा का प्रयोग करते हैं।

जाति को अन्धकार से निकाल कर प्रकाश में लाओ और उनको अल्लाह के वह दिवस स्मरण दिलाओ; क्योंकि उनमें से प्रत्येक सन्तोषी और कृतज्ञ के लिये चिह्न हैं।

(६) व इज़्क़ाऽला मूसा लिक़ौमिहिऽज़्कुरूऽ निअ्‌मतऽल्लाहि अ़लयकुम् इज़् अन्जाकुम्मिन् आलि फ़िर्‌औना यसूमूनकुम् सूअ् अऽल् अ़ज़ाऽबि व युज़ब्बिहूना अब्ना अकुम् व यस्तह्‌यूना निसाअकुम्, व फ़ी ज़ालिकुम् बलाउम्मिर्रब्बिकुम् अ़ज़ीम् ॥

और जब मूसा ने अपनी जाति से कहा—"अल्लाह के वह उपकार स्मरण करो जब कि उसने तुमको फ़िर्औन के मनुष्यों से बचाया कि जो तुमको बुरी तरह दण्ड देते और तुम्हारे पुत्रों को ढूंढ ढूंढ कर बध करते और तुम्हारी स्त्रीजाति (अर्थात् कन्याओं) को जीवित रखते थे और इसमें तुम्हारे पालनकर्त्ता की ओर से तुम्हारे सन्तोष की कठिन परीक्षा थी।

[मंज़िल ३ पारा १३ रु० २।६]

(७) इज़्तअज़्ज़ना रब्बुकुम् लइन् शकर्तुम् लअज़ीदन्नकुम् व लइन् कफ़र्तुम् इन्ना अ़ज़ाबी लशदीद् ॥

और जब तुम्हारे पालनकर्त्ता ने बता दिया था कि यदि तुम हमारा धन्यवाद करोगे तो हम तुमको और अधिक देंगे

और यदि तुमने कृतघ्नता की तो तुम पर हमारा कठिन कोप है।

(२) व क़ाऽला मूसा३ इन्तक्फ़ुरू३ अन्तुम् व मन् फ़िऽल् अर्ज़ि जमीअऽन् फ़ इन्नऽल्लाहा ल ग़निय्युन हमीद् ॥

और मूसा ने कहा—कि तुम और जितने मनुष्य पृथ्वी में हैं सब मिलकर भी अल्लाह की अवज्ञा करो तो भी अल्लाह निश्चिन्त और प्रशंसनीय है।

(३) अलम् यअ्तिकुम् नबउऽऽल्लज़ीना मिन क़ब्लिकुम् क़ उ् मि नूहि व्व आऽदिंव्व समूदा; वऽल्लज़ीना मिन् बअ्दिहिम् ; लाऽ यअ्लमुहुम् इल्लऽऽल्लाहु, जा३अत्हुम् रुसुलुहुम् बिऽल् बय्यिनाति फ़ रद्दू३ अय्दियहुम् फ़ी३ अफ़्वाऽहि हिम् व क़ाऽलू३ इन्नाऽ कफ़र्नाऽ बिमा३ उर्सिल्तुम् बिही व इन्नाऽ लफ़ी शक्किम्मिम्माऽ तद्ऊननाऽ३ इलयहि मुरीब ॥

क्या तुमको उन (लोगों) के समाचार नहीं पहुंचे जो तुमसे पूर्व की जातियों—नूह की, आद की और समूद की थे; और जो उनके पश्चात् उत्पन्न हुईं उनका ज्ञान केवल अल्लाह ही को है उनके समीप उनके पैगम्बर चिह्न लेकर आये तो उन्होंने अपने हाथ अपने मुंह में कर लिये और कहे

लगे—जो तुम्हारे हाथ भेजा गया, उसे हम नहीं मानते और जिसकी ओर तुम हमको बुलाते हो उसके विषय में हम बड़े सन्देह में पड़े हुये हैं।

(४) क़ाऽलत् रुसुलुहुम् अफ़िऽल्लाहि शक्कुन् फ़ाऽतिरि-स्समावाति वऽल् अर्ज़ि; यद्ऊकुम् लि यग़्फ़िरा लकुम्मिन् ज़ुनूबिकुम् व युअख़्ख़िर कुम् इला२ अजलिम्मुसम्मन् ; क़ाऽलू२ इन् अन्तुम् इल्लाऽ बशरुम्मि,स्लुनाऽ; तुरीदूना अन्तसुद्दूना अम्माऽ काऽना यअ्बुद् आबा२ उनाऽ फ़अ्तूनाऽ बिसुल्तानिम्मुबीन् ॥

उनके पैगम्बरों ने पूछा—"क्या अल्लाह (के विषय) में शंका है कि जिसने आकाश और पृथ्वी को उत्पन्न किया। वह तुमको बुलाता है जिससे तुम्हारे पाप क्षमा करदे और तुमको एक नियत समय तक वास करने दे; कहने लगे—तुम तो हमारे मानिन्द मनुष्य होने के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं, तुम चाहते हो कि हमें उससे रोक दो जिसको हमारे पुरुषा पूजते थे अतः हम रे पास कोई प्रत्यक्ष प्रमाण लाओ।

(५) क़ाऽलत् लहुम् रुसुलुहुम् इन्नह्नु इल्लाऽ बशरु म्मि,स्लुकुम् वला किन्नऽल्लाहा यमुन्नु अला मय्यशा२उ मिन् इबाऽदिही; व माऽ काऽना लना२ अन्न अ्तियकुम् बि सुल्तानिन् इल्लाऽ बि इज़्निऽल्लाहि; व अलऽल्लाहि फ़ ल् यतवक्कलिऽल् मुअ्मिनीन् ॥

उनको इनके पैग़म्बरों ने कहा—हम भी तुम्हारे मानिन्द मनुष्य हैं परन्तु अल्लाह अपने उपासकों में, जिस पर चाहे, उपकार करता है; और हमारा यह काम नहीं कि तुम्हारे पास अल्लाह की आज्ञा के बिना प्रमाण ले आवें; और विश्वासियों को अल्लाह पर विश्वास करना चाहिये।

(६) वमाऽ लना२ अल्लाऽ नतवक्कला अलऽल्लाहि व क़द् हदानाऽ सुबुलनाऽ व लनस्बिरन्ना अला मा२ आज़यतुमूनाऽ; व अलऽल्लाहि फ़ल् यतवक्कलिऽल् मुतवक्किलून् ॥

और हमको क्या हुआ कि अल्लाह पर विश्वास न करें और हमको हमारा मार्ग दिखा चुका और हम कष्टों पर, जो हमको देते हो, सन्तोष करेंगे; और विश्वासियों को अल्लाह पर विश्वास करना उचित है।

[मं० ३ पारा १३, रु० ३।६]

(१) व क़ाऽलऽल्लज़ीना कफ़रूऽ लिरुसुलिहिम् ल नुख़्रिजन्नकुम्मिन अर्ज़िना२ अउ् लतऊ़दुन्ना फ़ी मिल्लतिनाऽ; फ़ अउ्हा२ इलयहिम् रब्बुहुम् ल नुह्लिकन्नऽज़्ज़ालिमीन् ॥

और काफ़िरों ने अपने पैग़म्बरों से कहा कि हम तुमको अपने देश से अवश्य निकाल बाहर करेंगे अथवा तुम हमारे

मत में आ जाओगे; इस पर पैगम्बरों के पालनकर्त्ता ने उनकी ओर वही भेजी कि हम इन उद्दण्ड लोगों को अवश्य नष्ट करेंगे।

(२) व लनुस्किनन्नकुमुऽल् अर्ज़ा मिन् बअ्दि-हिम्; ज़ालिका लि मिन् ख़ाऽफ़ा मक़ाऽमी व ख़ाऽफ़ा वई.दू ॥

और इनके पश्चात् अवश्य तुमको इसी भूमि में बसायँगे, यह पुरस्कार उस मनुष्य का है जो हमारी सेवा में खड़े होने से डरा और हमारे प्रकोप से डरा।

(३-४-५) वऽस्तफ़्तहू.ऽ व ख़ाऽबा कुल्लु जब्बाऽ-रिन् अनीदि म्मि व्वराइही जहन्नमु व युस्क़ा मिम्माइ-इन् सदीदिय्यत जर्रउहू व लाऽ यकाऽदु युसीगुहू व यअ्तीहिऽल् मउ्तु मिन् कुल्लि मकाऽनि व्व माऽ हुवा बि मय्यितिन्; व मिव्वराइही अज़ाऽबुन् ग़लीज़ु ॥

और उन्होंने विजय कामना की और प्रत्येक विरोधी हठ करने वाला निराश रहा, उसके पीछे नर्क है और उसे पीव का पानी पिलाया जायगा, कि जिसको घूंट घूंट कर पीयेगा और गले से नहीं उतार सकेगा और उस पर प्रत्येक स्थान से मृत्यु चली आती है और वह नहीं मरता और उसके पीछे कठिन दण्ड है।

(६) मसलुऽल्लज़ीना कफ़रूऽ बिरब्बिहिम् अअ्-माऽलुहुम् करमाऽदि (नि)ऽश्तद्दत् बिहि-र्रीहु. फ़ी यउ्मिन् आऽसिफ़िन्; लाऽ यक़्दिरूना मिम्माऽ कसबूऽ अला शय्इन्; ज़ालिका हुव-.ज़्ज़लालुऽल् ब.ईद् ॥

जो लोग अपने पालनकर्त्ता को नहीं मानते उनका दृष्टान्त ऐसा है कि उनके आचरण मानो राख हैं कि आंधी के दिन उनको हवा ले उड़ी; जो (कर्म) यह लोग (संसार में) कर गये हैं उनमें से कुछ भी इनके हाथ नहीं आयगा, परले दर्जे की असफलता यही है।

(७-८) अलम् तरा अन्नऽल्लाहा ख़लक़-स्समा-वाति वऽल् अर्ज़ा बिऽल् .हक़्क़ि; इय्यशअ् युज़्हिब्कुम् व यअ्ति बि ख़ल्क़िन् जदीदि व्व माऽ ज़ालिका अलऽ-ल्लाहि बि अज़ीज़् ॥

क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह ने आकाश और पृथ्वी, जैसे चाहिएं, बनाये; वह यदि चाहे तो, तुमको मार दे और कोई नवीन उत्पत्ति करे; और यह अल्लाह के लिये कठिन नहीं।

(९) व बरज़ूऽ लिल्लाहि जमीअ़ऽन् फ़ क़ाऽल-ज़्ज़ुअ़फ़ाउऽ लिल्लज़ीनऽस्तक्बरूऽ इन्नाऽ कुन्नाऽ लकुम् तबअ़ऽन् फ़ हल् अन्तुम्मुग़्नूना अन्नाऽ मिन् अज़ाऽबिऽ-

ल्लाहि मिन् शय्इन् ; क़ाऽलूऽ लउ् हदानऽऽल्लाहु लहदय्ना कुम् ; सवा३उन् अलयना३ अजज़िअ्ना३ अम् सबर्नाऽ माऽ लनाऽ मिम्म हीस् ॥

और सब अल्लाह के सामने खड़े होंगे फिर निर्बल बलवानों से कहेंगे—"हम तुम्हारे पीछे थे अतः तुम हमसे अल्लाह का प्रकोप कुछ कम कराओगे" वह कहने लगे—यदि हमको अल्लाह मार्ग पर लाता तो निश्चय हम तुमको मार्ग पर लाते, अब हमारे निमित्त समान है चाहे हम अधीर हों अथवा सन्तोष कर हम को मुक्ति नहीं होती।

[मं० ३, पारा १३, रु० ४।६]

(१) व क़ाऽल-श्शय्तानु लम्माऽ कुज़ियऽल् अम्रु इन्नऽल्लाहा वअ़दकुम् वअ़्दऽल् हक़्क़ि व वअ़त्तुकुम् फ़ अख़्लफ़्तुकुम् ; व माऽ काऽना लिया अलय्कुम्मिन् सुल्तानिन् इल्ला३ अन् दअ़उ्तुकुम् फ़ऽस्तजब्तुम् ली, फ़ लाऽ तलूमूनी वलूमू३ अन्फ़ुसकुम् ; मा३ अनाऽ मुस्रिख़िकुम् वमा३ अन्तुम् बि मुस्रिख़िय्या; इन्नी कफ़र्तु बिमा३ अश्रक्तुमूनि मिन् क़ब्लु, इन्न-ज़्ज़ालिमीना लहुम् अज़ाऽबुन् अलीम् ॥

और जब कार्य पूर्ण हो चुकेगा तो शैतान कहेगा:—"अल्लाह

ने तुमको सत्य प्रतिज्ञा प्रदान की थी और फिर मैंने झूठी प्रतिज्ञा की, और मेरा तुम पर शासन न था परन्तु मैंने तुमको बुलाया था फिर तुमने स्वीकार कर लिया, अतः मुझ पर आक्षेप मत करो और अपने ऊपर आक्षेप करो; न मैं तुम्हारी पुकार को पहुंच सकता हूँ और न तुम मेरी पुकार को पहुंच सकते हो; मैं स्वीकार नहीं करता जो कि तुमने मुझे पूर्व साझी ठहराया था; निश्चय जो अत्याचारी है उन पर आपत्ति का दण्ड है।

(२) व उद्ख़िलऽल्लज़ीना आमनूऽ व अमिलुऽस्सालिहाति जन्नातिन् तज्री मिन्तह्तिहऽऽल् अन्हारु ख़ालिदीना फ़ीहा बि इज़्नि रब्बिहिम्; तहिय्यतु हुम् फ़ीहा सलाम् ॥

और जिन लोगों ने विश्वास किया और शुभ कर्म किये थे उनको (बहिश्त के) बागों में प्रविष्ट किया कि जिनके निकट नहरें बहती हैं उनमें अपने पालनकर्त्ता की आज्ञा से सर्वदा रहा करें; वहां उनकी पारस्परिक भेट सलाम है।

(३) अलम् तरा कय्फ़ा ज़रबऽल्लाहु मसलऽन् कलिमतन् तय्यिबतन् कशजरतिन् तय्यिबतिन् अस्लुहाऽ साऽबितु व्व फ़र्इहाऽ फ़िस्समाऽइ ॥

क्या तू नहीं देखता कि अल्लाह ने एक दृष्टान्त कैसा

वर्णन किया है ? पवित्र वचन मानो एक विशुद्ध वृक्ष है उसकी जड़ दृढ़ है और शाखाएं आकाश में (फैली हुई हैं)

(४) तुअ्ती उकुलहा कुल्लह़ीनिन् बि इज़्नि रब्बिहाऽ; व यज़्रिबुऽल्लाहुऽल् अम्स़ाऽला लिन्नाऽसि लअ़ल्लहुम् ततज़क्करून् ॥

(वह वृक्ष) समय पर अपना फल अपने पालनकर्ता की आज्ञा से देता है; और अल्लाह लोगों को दृष्टान्त वर्णन करता है कदाचित् वह विचार करें।

(५) व मस़लु कलिमतिन् ख़बीस़तिन् कशज-रतिन् ख़बीस़ति (नि) ऽज्तुस़्स़त् मिन् फ़ौक़िऽल् अर्ज़ि माऽ लहाऽ मिन् क़राऽर् ॥

और बुरे वचन का दृष्टान्त-जैसे निकृष्ट पेड़ जो पृथ्वी के ऊपर से उखाड़ लिया गया उसकी कुछ स्थिरता नहीं।

(६) युस़ब्बितुऽल्लाहुऽल्लज़ीना आमनूऽ बिऽल् क़ौलि-स़्स़ाऽबिति फ़िऽल् ह़याति-द्दुन्याऽ व फ़िऽल् आख़िरति व युज़िल्लुऽल्लाहु-ज़्ज़ालिमीना व यफ़्अ़लुऽल्लाहु माऽयशाऽउ ॥

अल्लाह विश्वासियों को सांसारिक जीवन में दृढ़ वचन से दृढ़ करता है और परलोक में अन्यायियों को विचलित कर देता है और अल्लाह जो चाहता है करता है।

[मंजिल ३ पारा १३ रु० ५।७]

(१) अलम् तरा इलऽल्लज़ीना बद्दलूऽ निअ्मतऽ-ल्लाहि कुफ़्ऽव्व अ़हल्लूऽ क़ौमहुम् दाऽरऽल् बवाऽर् ॥

क्या तूने उनकी ओर नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह के अनुग्रह का बदला कृतघ्नता किया और अपनी जाति को विनाश के गृह में उतारा।

(२) जहन्नमा, यस्लउ़नहाऽ; व बिअ्सऽल् क़राऽर् ॥

जो दोज़ख़ (नर्क) है, (वे) उसमें प्रविष्ट होंगे; और (वह) बुरा स्थान है।

(३) व जअ़लूऽ लिल्लाहि अन्दाऽदल्लि युज़िल्लूऽ अ़न् सबीलिही; क़ुल् तमत्तऊ़ऽ फ़ इन्ना मसीरकुम् इलन्नाऽर् ॥

और अल्लाह के सामने ठहराये कि लोगों को उसके मार्ग से भ्रष्ट करें; (हे पैग़म्बर ! इनसे) तू कह—भुगत लो फिर तुमको (नर्क की) अग्नि की ओर लौटना है।

(४) क़ुल्लि इ़बाऽदियऽल्लज़ीना आमनूऽ युक़ीमुऽ-स्सलाता व युन्फ़िक़ूऽ मिम्माऽ रज़क़्नाहुम् सिरऽव्व अ़लाऽ

नियतम्मिन् क़ब्लि अय्यअ्तिया यउमुल्लाऽ बयउन् फ़ीहि वलाऽ खि़लाल् ॥

(हे पैग़म्बर !) मेरे भक्तों को, जिन्होंने विश्वास किया है, कहदे कि वे नमाज़ को स्थिर रक्खें और गुप्त और प्रगट रूप से हमारे भोजन में से इससे पूर्व व्यय करें कि वह दिवस आवे कि जिसमें न व्यौपार है और न मैत्री भाव।

(५) अल्लाहुऽल्लज़ी ख़लक़-स्समावाति वऽल् अर्ज़ा व अन्ज़ला मिन-स्समाइ माअन् फ़ अख़्रजा बिही मिन-स्समराति रिज़्क़ऽल्लकुम्, व सख़्ख़र लकुमुऽल् फुल्का लि तज्रिया फ़िऽल् बहि्र बि अम्रिही, व सख़्ख़रा लकुमुऽल् अन्हार् ॥

अल्लाह वह है जिसने आकाश और पृथ्वी की रचना की और आकाश से पानी उतारा फिर उससे तुम्हारी मेवा-भोजन निकाला, और तुम्हारे काम में नौका दी कि नदी में अल्लाह की आज्ञा से चले और तुम्हारे लिये नदियों को उपयोगी सिद्ध किया।

(६) व सख़्ख़रा लकुमु-श्शम्सा व ऽल्क़मरा दाइबयनि, व सख़्ख़रा लकुमु-ल्लयला व-न्नहाऽर् ॥

और तुम्हारे सूर्य और चन्द्रमा एक नियम में नियुक्त किये; और तुम्हारे रात्रि और दिन नियुक्त किये।

(७) व आताकुम्मि कुल्लि माऽ सअल्तुमूहु; व इन् तउद्दूऽ निअ्मतऽल्लाहि लाऽ तह्सूहाऽ; इन्नऽल् इन्साऽना लज़लूमुन् कफ़्फ़ाऽर् ॥

और तुम्हें प्रत्येक वस्तु में से—जो तुमने मांगी—दिया; और यदि अल्लाह के उपकार गृहण करो तो पूर्ण नहीं कर सकोगे; निश्चय मनुष्य महान् अत्याचारी है।

[मं० ३, पारा १३, रु० ६।७]

(१) व इज़्क़ाऽला इब्राहीमु रब्बिऽज् अल् हाज़ऽऽल् बलदा आमिनऽव्वऽज्नुब्नी व बनिय्या अन्नअ्बुदऽल् अस्नाऽम् ॥

और जिस समय इब्राहीम ने कहा—"हे पालनकर्त्ता! इस शहर को शान्ति का कर और मुझको और मेरी सन्तान को मूर्तियों के पूजने से बचा।

(२) रब्बि इन्नहुन्ना अज़्लल्ना कसीरऽम्मिन-न्नाऽसि, फ़ मन् तबिअ्नी फ़ इन्नहू मिन्नी, व मन् असाऽनी फ़ इन्नका ग़फ़ूरुर्रहीम् ॥

हे पालनकर्त्ता! उन्होंने अनेकों मनुष्यों को बहकाया, अतः जो कोई मेरे मार्ग पर चला वह तो मेरा है, और जिसने मेरी आज्ञा पालन की तो क्षमा करने वाला दयालु है।

(३) रब्बनाऽ इन्नीऽ अस्कन्तु मिन जुर्रिय्यती बिवाऽदिन ग़ैरि ज़िर्इन इन्दा बैतिकऽल् मुहर्रमि रब्बनाऽ लि युक़ीमुऽस्सलाता फ़ऽज्अल् अफ़् इदतम्मिन-न्नाऽसि तह्वीऽ इलैहिम् वर्जुक़्हुम्मिन-स्समराति लअ़ल्लहुम् यश्कुरून् ॥

हे हमारे पालनकर्त्ता ! मैंने अपनी कुछ सन्तान बन में, जहां खेती नहीं होती, तेरे पवित्र गृह के निकट बसाई—हे हमारे पालन-कर्त्ता ! जिससे कि नमाज़ स्थिर रक्खें फिर लोगों में से कुछ के हृदय ऐसे करदे; कि उनकी ओर झुकें और उन्हें मेवा (फल आदि) भोजन दे कदाचित् यह कृतज्ञ हों।

(४) रब्बनाऽ इन्नका तअ़्लमु माऽ नुख़्फ़ी व माऽ नुअ़्लिनु; व माऽ यख़्फ़ा अ़लऽल्लाहि मिन शैइन् फ़िऽल् अर्ज़ि वलाऽ फ़ि-स्समाइअ् ॥

हे हमारे पालनकर्त्ता ! तू तो जानता है जो हम गुप्त रक्खे और जो हम प्रगट करें; और अल्लाह पर न पृथ्वी में कुछ छिपा है और न आकाश मे।

(५) अल्हम्दु लिल्लाहिऽल्लज़ी वहबा ली अ़लऽल् किबरि इस्माईला व इस्हाक़ा, इन्ना रब्बी ल समीउ-द्दुआइअ् ॥

अल्लाह को धन्यवाद है कि जिसने मुझे वृद्धावस्था में इस्माईल और इसहाक़ प्रदान किये; निस्सन्देह मेरा पालनकर्त्ता प्रार्थना सुनता है।

(६) रब्बिऽज् अल्नी मुक़ीम-स्सलाति व मिन ज़ुर्रिय्यती रब्बना वतक़ब्बल् दुआऽ ॥

हे मेरे पालनकर्त्ता! मुझे (इस योग्य) कर कि मैं नमाज़ स्थिर रक्खूं और हे पालनकर्त्ता! मेरी सन्तान को भी (इसी योग्य कर) और प्रार्थना स्वीकार कर।

(७) रब्बनऽऽग़्फ़िर्ली व लि वालिदय्या व लिल् मुअ्मिनीना यव्मा यक़ूमुल् हिसाऽब् ॥

हे हमारे पालनकर्त्ता! मुझको और मेरे माता पिता को और सब विश्वासियों को, जिस दिन लेखा स्थिर होवे, क्षमा प्रदान कर।

[मं० ३ पारा १३ रु० ७ ११]

(१) व लाऽ तह्सबन्नऽल्लाहा ग़ाऽफ़िलऽन् अम्माऽ यअ्मलु-ज़्ज़ालिमूना; इन्नमाऽ युअख़्ख़िरुहुम् लि यव्मिन् तश्ख़सु फ़ीहिऽल् अब्साऽर् ॥

और मत समझ कि अल्लाह इन कार्यों से-जो अत्याचारी करते हैं—अनभिज्ञ है; उनको तू उस दिन पर छोड़ रखता है जिस दिन उनकी आंखें ऊपर लग जावेंगी।

(२) मुह्तिई़ना मुक़्निई़ रुऊसिहिम् लाऽ यर्तद्दु इलय्हिम् तर्फ़ुहुम् व अफ़्इदतुहुम् हवा२अ् ॥

अपने शिर उठाये हुये दौड़ते होंगे और उनकी दृष्टि उनकी ओर न लौटेगी और उसके हृदय उड़ जायंगे।

(३-४) व अन्ज़िरि-न्नाऽसा यउ्मा यअ्तीहिमुऽल् अज़ाऽबु फ़ यकूलुऽल्लज़ीना ज़लमूऽ रब्बना२ अख़्ख़िर्ना२ इला२ अजलिन् क़रीबिन्नुजिब् दअ्वतका व नत्तबिइ-र्रुसुला; अवलम् तकूनू२ अक़्सम्तुम्मिन् क़ब्लु माऽ लकुम्मिन् ज़वाऽलिव्व सकन्तुम् फ़ी मसाकिनि ऽल्लज़ीना ज़लमू२ अन्फ़ुसहुम् व तबय्यना लकुम् कय्फ़ा फ़ अ़ल्नाऽ बिहिम् व ज़रब्नाऽ लकुमुऽल् अम्साऽल् ॥

और लोगों को उस दिन से भय दिलावे कि उनका प्रकोप आवेगा तब अत्याचारी कहेंगे—"हे हमारे पालनकर्ता! हमको कुछ समय की छुट्टी दे कि हम तेरा निमन्त्रण स्वीकार करें और पैग़म्बरों के साथ हों, तुम आगे शपथ न खाते थे; क्योंकि तुम्हारे निमित्त कोई न्यूनतना नहीं थी और तुम उन्हीं के नगरों में बसे थे जिन्होंने अपनी आत्मा पर अत्याचार किया और तुम पर प्रगट

हो चुका कि हमने उन पर कैसा किया और हमने तुमको दृष्टान्त बतलाये।

(५) व क़द् मकरूऽ मक्रहुम् व ' इन्दऽल्लाहि मक्रुहुम्; व इन् काऽना मक्रुहुम् लि तज़ूला मिन्हुऽल् जिबाऽल् ॥

और यह अपना छल कर चुके हैं और उनका छल अल्लाह के आगे है; और उनका छल ऐसा न होगा कि उससे पर्वत टल जावें।

(६) फ़लाऽ तह्सबन्नऽल्लाहा मुख़्लिफ़ा वअ़्दिही रुसुलहू; इन्नऽल्लाहा अ़ज़ीज़ुन् ज़ुऽन्तिक़ाऽम् ॥

अतः यह मत समझ कि अल्लाह अपने पैग़म्बरों से अपनी प्रतिज्ञा पृथक् करेगा; निस्सन्देह अल्लाह बलवान् और परिवर्त्तन करने वाला है।

(७) यउ्मा तुबद्दलुऽल् अ़र्ज़ु ग़य्रऽल् अर्ज़ि वस्समावातु व बरज़ूऽ लिल्लाहिऽल् वाऽहिदिऽल् क़ह्हाऽर् ॥

जिस दिन इस पृथ्वी से और पृथ्वी बदली जायगी और आकाश (भी) और मनुष्य एकमात्र बलशाली अल्लाह के सन्मुख निकल खड़े हों।

(८) व तरऽल् मुजि्मीना यउ्मा इज़िम्मुक़र्रनीना फ़िऽल् अस्फ़ाऽद् ॥

और उस दिन तू पापियों को जंजीरों में जकड़े हुये देखेगा।

(९) सराऽबीलुहुम्मिन् क़ति्राऽनि व्व तग़्शा वुजूहहुमु-न्नाऽर् ॥

उनके कुर्ते गंधक के हैं और उनके मुख को अग्नि ढांक लेती है।

(१०) लियज्ज़ियऽल्लाहु कुल्ला नफ़्सिम्माऽ कसबत् ; इन्नऽल्लाहा सरीउऽल् ह़िसाऽब् ॥

जिससे अल्लाह प्रत्येक प्राणी को उसकी कमाई का फल दे, निश्चय अल्लाह शीघ्र लेखा करने वाला है।

(११) हाज़ाऽ बला गु़ल्लिन्नाऽसि व लि युन्ज़रूऽ बिही व लि यअ़्लमूऽ अन्नमाऽ हुवा इलाहु व्वाऽह़िदुन्व लि-यज़्ज़क्करा उलुऽऽल् अल्बाऽब् ॥

और लोगों को यह समाचार दे देना है और जिससे उनको इसके द्वारा डराया जाय और जिससे सब यह जानलें कि केवल वही एक अल्लाह है, जिससे बुद्धिमान् लोग शिक्षित हों।

हिन्दुओ चेतो हिन्दुओ चेतो

संगठन के फूल।

कौन नहीं जानता कि आज हिन्दुओं पर विनाशकारी विपत्ति बादल सर्वनाश का सलिल वर्षा रहे हैं? खुदग़र्ज ख्वाजा की खतरनाक तबलीग़ी सेना, अय्यार आग़ाखां के अनुयायी, अमरीका, इंग्लैण्ड के भूरे रंग वाले ईसाई मिशनरी तथा अपने ही भोले भाई संगठन के विरोधी और कट्टरता का कान कतरने वाले कांग्रेस के वह कार्यकर्त्ता जो हिन्दुत्व की हत्या होते देखकर भी मुसल्मानों के मस्नूई मेल द्वारा स्वराज्य के स्वप्न देख रहे हैं—सभी हिन्दुओं के हित की हत्या करने पर तुले हुये हैं। हिन्दुओं की इस विपत्ति को बढ़ने से रोकने के लिये "हिन्दुओ चेतो" सचमुच संगठन संजीवनी है। पुस्तक को प्रस्तुत करते हुये मुहम्मद साहब के विचित्र जीवन और "देवदूत दर्पण" प्रभृति-ज़ब्त पुस्तकों के लेखक, कुरान के अनुवादक, आर्य प्रचारक श्रीयुत प्रेमशरणजी अपने वक्तव्य में लिखते हैं—

"संगठन के अभाव ने हिन्दुओं की हीन हालत कर रक्खी है। आये दिन उन्हें अत्याचारों के आघात सहन करने पड़ते हैं, उनके धार्मिक कृत्य रोके जाते हैं और उनके जातीय लाल उनकी गोद से बराबर छीने जाते हैं। इस पुस्तक में हिन्दुओं के उन दोषों का दिग्दर्शन कराके उनके दूर करने की युक्तियां बतलाने की कोशिश की गई है....... ....मैं चाहता हूँ कि इस पुस्तक का पूरा पूरा प्रचार हो।"